Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'आँखों-देखा महायुद्ध'

Aankun Dakha Mhayud.

पहला खंड

(All Quite on the Western Front

नामक अँगरेजीके सुप्रसिद्ध उपन्यासका अनुवाद)

अनुवादक

बाबू रामचन्द्र वर्म्मा

Ramcharan varma

प्रकाशक

देवेन्द्रचन्द्र विद्याभास्कर

विद्याभास्कर बुकडिपो, काशी।

प्रथम संस्करण २१०० | मई १९३३ | मूल्य २॥)

Davinder Vidha Bashkar Kasi. 1933

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

acc: no: 15232
Rs 2-8-0

मुद्रक
बजरंगबली गुप्त 'विशारद'
श्री सीताराम प्रेस, जालिपादेवी, काशी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूमिका

"आँखों-देखा महायुद्ध" का यह पहला खंड अँगरेजीकी एक बहुत प्रसिद्ध पुस्तक (All Quite on the Western Front) का अनुवाद है। इसकी मूल पुस्तक वास्तवमें एरिक मेरिया रिमार्क नामक एक जरमनकी लिखी हुई और जरमन भाषामें है और उसका अनुवाद युरोपकी प्रायः सभी भाषाओंमें हो गया है। इस पुस्तकके लिखे जानेका मुख्य उद्देश्य यह है कि लोगोंको यह समझाया जाय कि युद्धका वास्तविक स्वरूप कितना अधिक भीषण है और उसमें लोगोंको कैसी-कैसी यातनाएँ और यन्त्रणाएँ भोगनी पड़ती हैं। युरोपमें यह पुस्तक इतनी अधिक पसन्द की गई है कि प्रत्येक भाषामें इसके अनुवादके बीसियों संस्करण निकल गये हैं और प्रत्येक देशमें इसकी लाखों प्रतियाँ बिक गई हैं। जरमनीमें यह पुस्तक पहले-पहल जनवरी १९२९ में प्रकाशित हुई थी और उसके दो मासके अन्दर ही अर्थात् मार्च १९२९ के अन्तमें इसके अँगरेजी अनुवादका पहला संस्करण प्रकाशित हो गया था। इंग्लैंडमें इस पुस्तककी इतनी अधिक माँग हुई कि दूसरे ही मास अर्थात् अप्रैल १९२९ में वहाँ इसके आठ संस्करण हुए और पुस्तक प्रकाशित होनेके दो वर्षके अन्दर अर्थात् जनवरी १९३१ तक इसके कुल मिलाकर २७ संस्करण हुए जिनमें पौने चार लाखसे अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हुईं और बिकीं। इन अनुवादोंके साथ-ही-साथ इसकी घटनाओंकी चलती-फिरती और बोलती तसवीरें भी तैयार हुईं जो प्रायः संसारके सभी देशोंमें बहुत अधिक लोकप्रिय हुईं। मतलब यह कि किसी पुस्तककी उपयोगिता और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोकप्रियताके जितने अधिक प्रमाणपत्र आजकलके जमानेमें मिल सकते हैं, वे सभी इस पुस्तकने अब तक प्राप्त कर लिये हैं।

युरोपीय महायुद्धने संसारका कितना अधिक अपकार, कितनी अधिक हानि और कितना अधिक सर्वनाश किया है, इसके सम्बन्धके अब तक सैकड़ों-हजारों लेख प्रकाशित हो चुके हैं; और यहाँ तक कि भविष्यमें युद्ध-मात्रको रोकनेके लिए संसारव्यापी आन्दोलन भी उठ खड़े हुए हैं। पर वे आन्दोलन अभी तक बड़े बड़े लोगोंमें ही हुए हैं और साधारण जनता तक उनकी बातोंकी अपेक्षाकृत बहुत ही कम पहुँच हुई है। पर इस पुस्तकके द्वारा उस आन्दोलनको जितनी अधिक सहायता मिली है, उतनी शायद और किसी साधनसे न तो मिली है और न जल्दी मिल सकती है। इसका सबसे बड़ा रहस्य यही है कि यह पुस्तक उपन्यास रूपमें और इतने अच्छे ढंगसे लिखी गई है कि सारे संसारकी जनताने इसे हाथों-हाथ अपना लिया है और इसके विचारोंको बहुत कुछ हृदयंगम भी कर लिया है। इस पुस्तकके सम्बन्धमें हमारे एक मित्रकी तो यहाँ तक सम्मति है कि जो इसे एक बार पढ़ लेगा, वह फिर कभी युद्धका समर्थन करनेका कभी नाम भी न लेगा। यह ठीक है कि युद्ध छेड़ने और न छेड़नेमें, इस लोकतन्त्रके जमानेमें भी, साधारण जनताका बहुत ही कम हाथ रहता है; तो भी इसमें सन्देह नहीं कि इस पुस्तकने अपने पाठकोंमें यह भाव बहुत कुछ भर दिया है कि कुछ थोड़े से राजनीतिज्ञ और पूँजीदार मिलकर स्वयं अपने लाभके लिए हजारों-लाखों आदमियोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजकर कटवा देते हैं और युद्धसे साधारण जनताका कोई लाभ नहीं होता, बल्कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्हीं राजनीतिज्ञोंका नाम और पूँजीदारोंका लाभ होता है। बात भी बहुत से अंशोंमें ठीक ही है।

पिछले युरोपीय महायुद्धको ही लीजिये। सवा चार बरसमें उस महायुद्धने संसारमें जितने अधिक प्रकारके और जितने अधिक अनर्थ किये, उतने अधिक और उतने प्रकारके अनर्थ शायद दूसरे सैकड़ों कारणोंसे सैकड़ों वर्षोंमें भी न होते। उसमें पचासों लाख आदमी मरे और घायल हुए, हजारों नगर और लाखों गाँव तबाह हुए, संसारके प्रायः सभी देश ऋणके बोझसे इतने अधिक लद गये कि उस ऋणका ब्याज तक चुकाना भी उनके लिए बहुत ही दुष्कर हो गया; और तबसे संसारका जो आर्थिक कष्ट आरम्भ हुआ, वह आज तक बराबर बढ़ता ही चला जाता है। युद्धका तो जैसे-तैसे सवा चार बरसमें अन्त हो गया, पर उससे होनेवाली हानियोंका आज तक अन्त न हुआ, बल्कि उसके भीषण दुष्परिणाम दिन पर दिन अपना और भी अधिक विकराल रूप बराबर दिखलाते ही गये। प्रत्यक्ष रूपसे सारे संसार का वातावरण विषाक्त करके इन्फ्लुएन्जा आदि रोगोंके द्वारा भी उसने प्रायः साठ लाख आदमियोंके प्राण लिये! आजकल सारे संसार पर जो भीषण आर्थिक संकट आ पड़ा है, वह भी वस्तुतः इसी महायुद्धके भीषण और नाशक परिणामोंमें से एक है। यदि आप तालिका बनाने बैठें तो युद्धसे होनेवाली हानियोंकी संख्या सैकड़ों हजारों तक पहुँच जायगी और वे हानियाँ बतलानेवाले भी हजारों ही बड़े-बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् निकल आवेंगे। पर शायद सारे संसारमें ढूँढ़ने पर भी आपको एक भी ऐसा आदमी न मिलेगा जो शुद्ध हृदयसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्यतापूर्वक आपको यह बतला सके कि युरोपीय महायुद्धसे किसीको अमुक लाभ पहुँचा। और यदि किसी को कहीं कोई छोटा-मोटा लाभ पहुँचा भी हो तो वह उससे होनेवाली हानियों की तुलनामें नितान्त तुच्छ और नगण्य है। हाँ यदि वह दम्भ और मिथ्यात्वके फेरमें पड़कर कुछ अनाप-शनाप बातें आपको बतला जाय तो और बात है।

अब तक मनुष्यने जितनी विद्या और बुद्धि उपार्जित की थी और ज्ञान-विज्ञान आदिका जितना भांडार संचित किया था, उसका जितना अधिक दुरुपयोग पिछले महायुद्धमें हुआ, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि यदि वह सब विद्या-बुद्धि और ज्ञान-विज्ञान महायुद्ध आरम्भ होनेसे पहले ही नष्ट हो जाता तो संसारकी उतनी अधिक हानि न होती जितनी अधिक महायुद्धके कारण हुई। महायुद्ध छिड़ते ही मानों सब देशोंमें मनुष्य-नाशक उपकरण प्रस्तुत करनेकी होड़-सी लग गई। फ्रांस ने डेढ़ सौ मील तक गोले फेंकनेवाली तोप तैयार की तो अमेरिकाने एक ऐसा विष तैयार किया जिसकी एक बूँद यदि मनुष्य के शरीर पर कहीं पड़ जाय तो तुरन्त उसकी मृत्यु हो जाय! ऐसी-ऐसी जहरीली गैसें तैयार हुईं कि दो चार हवाई जहाज मिलकर यदि चाहें तो रात भरमें देश भरके सब प्राणियोंका नाश कर डालें। स्त्रियाँ और गोद के बच्चे भी जीते न बचें।

बड़े-बड़े विद्वानोंने हिसाब लगाकर बतलाया है कि महायुद्धमें एक खरब पाउंड या पन्द्रह खरब रुपये नष्ट हुए थे। यदि इतने रुपये कायदेसे बाँटे जाते तो संसार भरके आधेसे अधिक गृहस्थोंमेंसे प्रत्येकको सात आठ हजार रुपये लागतका एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मकान, प्रायः १५ बीघे जमीन और तीन चार हजार रुपयेका और सब ऊपरी सामान मिल जाता और साथ ही संसारके आधे देशोंमें काफी अस्पताल, स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय आदि खुल जाते। एक और विद्वानने हिसाब लगाया है कि महायुद्धमें सब मिलाकर ६ करोड़ सैनिक युद्ध-क्षेत्रमें भेजे गये थे जिनमेंसे ८० लाख आदमी मर गये और दो करोड़ आदमी घायल होकर बेकाम हो गये। और युद्ध-क्षेत्रमें जितने सैनिक लड़-भिड़कर मरे थे, उससे पाँच गुने अधिक आदमी युद्ध-क्षेत्र के आस-पासके गाँवों, नगरों और प्रदेशोंमें दरिद्रता और रोग आदि फैलनेके कारण मरे थे। इस प्रकार कोई चार पाँच करोड़ मनुष्योंके जीवन बिलकुल व्यर्थ नष्ट हुए। फिर इसके परिणाम-स्वरूप आगे जो जन्म-संख्या घटी, वह अलग। युद्ध आरम्भ होते ही बहुत से विचारवानोंने युरोपके राजनीतिज्ञ भाग्य विधाताओंको युद्धके भीषण दुष्परिणामोंसे सचेत करना चाहा था, परन्तु उन लोगों पर युद्धका जो भूत सवार था, वह उन्हें कुछ सुनने ही नहीं देता था। उसी समय क्यों, आज सब भीषण परिणाम अपनी आँखोंसे प्रत्यक्ष देखने पर भी किसीकी आँखें नहीं खुलतीं और फिर सब देश उसी तरह लड़ाईकी तैयारियाँ कर रहे हैं, जिस तरह महायुद्ध आरम्भ होनेसे पहले कर रहे थे। इस परम आर्थिक संकट, दरिद्रता, बेकारी और पतनके समय भी वही राष्ट्र अपनी आधेसे ज्यादा आमदनी लड़ाईकी तैयारीमें खर्च कर रहे हैं, जिनका बाल-बाल कर्जसे बँधा है और जिनके लाखों बच्चे बहुत ही बुरी तरहसे भूखों मर रहे हैं। आप जानते हैं कि यह सारा दुष्परिणाम किस बातका है ? संसार-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को वर्त्तमान दूषित सामाजिक व्यवस्था, कलुषित शासन-प्रणाली, परम निकृष्ट साम्राज्य-लिप्सा और अनर्थमयी भौतिक सभ्यता का, जो सारे संसारको बहुत ही तेजीके साथ सर्वनाशके भीषण गड्ढेकी ओर जबरदस्ती और बहुत ही तेजीके साथ खींचती हुई ले जा रही है।

इस पुस्तकमें बहुत ही मनोरंजक ढंगसे यह बतलानेका प्रयत्न किया गया है कि स्वयं युद्ध-क्षेत्रमें कौन कौन से काम किस किस तरह हुए थे और प्रत्यक्ष महायुद्धका क्या स्वरूप था। इस पुस्तककी सब बातें एक ऐसे नवयुवकसे कहलाई गई हैं जो सत्रह अठारह वर्षकी अवस्थामें एक स्कूलसे, अपने बहुत से सहपाठियोंके साथ, एक झूठे देशाभिमानी शिक्षकके बहकावेमें आकर सेनामें भरती हो गया था। लेखकने बड़ी ही चातुरीसे अपने इस कामके लिए एक ऐसे नवयुवकको चुना है जिसमें कुछ समझदारी भी है और कुछ अलहड़पन भी; जो अपने साथियोंके साथ सब बातों पर छोटे-मोटे विचार भी प्रकट कर सकता है और अपनी शरारतों और खेलवाड़ोंसे कथा-वस्तुको रोचक भी बना सकता है। युद्ध-क्षेत्रमें मनुष्यके मन, विचार और जीवन आदिकी जो अवस्था होती है, उसका इसमें बहुत ही सुन्दर, विशद और तात्विक निरूपण है। इसमें यह भी बतलाया गया है कि युद्ध-क्षेत्रकी भीषणता देखकर साधारण लोग किस तरह पागल हो जाते हैं और उनमें केवल योद्धाओंकी ही नहीं, बल्कि घायलों और यहाँ तक कि मुरदोंकी भी क्या क्या दुर्दशाएँ होती हैं।

यह पुस्तक वास्तवमें युद्धके प्रति नययुवकोंके मनमें घृणा उत्पन्न करानेके उद्देश्यसे लिखी गई है और इसी लिए इसमें यह दिखलाया गया है कि युद्धमें सम्मिलित होने पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवयुवकोंका जीवन किस बुरी तरहसे सदाके लिए नष्ट हो जाता है, वे सभी प्रकारकी सुन्दर वृत्तियों, भावों और विचारों आदिसे किस प्रकार रहित होकर हिंसक पशुओं की कोटिमें चले जाते हैं और फिर संसारमें आकर जीवन-निर्वाह करनेके लिए कितने अयोग्य और असमर्थ हो जाते हैं। यह ठीक है कि इसके मूल लेखकने महायुद्ध अपनी आँखोंसे देखा था और उसे भी बिलकुल ही लाचारी हालतमें और सरकारी आज्ञासे महायुद्धमें सम्मिलित होना पड़ा था; पर फिर भी इस पुस्तकमें उसने अपना जो रचना-कौशल और कल्पनाका चमत्कार दिखलाया है, वह सचमुच ही बहुत सुन्दर और प्रशंसनीय है। कहीं-कहीं तो इसमें ऐसे सुन्दर भाव और वह भी ऐसी सुन्दरता से व्यक्त किये गये हैं कि पढ़कर मन मुग्ध हो जाता है। और जिस उद्देश्य तथा जिस अभिप्रायसे यह मूल पुस्तक लिखी गई है, उसी उद्देश्य और उसी अभिप्रायकी सिद्धिके विचारसे उसका यह हिन्दी अनुवाद भी हिन्दी पाठकोंके सामने उपस्थित किया जाता है और आशा की जाती है कि इस पुस्तकके विचारोंका प्रचार संसारको भविष्यमें युद्ध आदिके संकटोंसे बचानेमें बहुत कुछ सहायक होगा।

अभी इस तरहकी और भी कई अच्छी किताबें हैं जिनके प्रचारकी बहुत अधिक आवश्यकता है। यदि हिन्दी पाठकोंने इस पुस्तकको अपनाया और इसका उचित आदर किया तो मैं उन सबके अनुवाद भी क्रमशः अन्य खंडोंके रूपमें उनके सामने रखनेका प्रयत्न करूँगा।

काशी
१ मार्च १९३२ } रामचन्द्र वर्म्मा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखों-देखा महायुद्ध

पहला परिच्छेद

हम लोग लड़ाईके मैदानसे पाँच मील पीछे आराम कर
रहे हैं [illegible] लोगोंको कल ही आराम करनेकी छुट्टी मिली है
और [illegible] लोग खा-पीकर खूब मस्त हैं। लड़ाईसे छुट्टी
पाकर [illegible] हुत सन्तुष्ट हैं। सबके पास शामके लिए
अपना [illegible] भोजन [illegible] हुआ है; और सबसे बढ़कर
[illegible] त यह [illegible] रोटि [illegible] तरकारियाँ दूनी-दूनी मिली
आदम [illegible] इससे बढ़कर और क्या
[illegible] ! इ [illegible] की किस्मत कभी ऐसी
[illegible] म लोगोंका रसोइया
[illegible] ाग्रह करता है। जो
[illegible] पकड़कर बैठा लेता
[illegible] स देता है। उसकी
[illegible] ह कैसे जल्दीसे
[illegible] म्यूलरने बड़ी-बड़ी
[illegible] तरह भरकर रख
[illegible] म्यूलरने अपनी
[illegible] नहीं जानता कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखों-देखा महायुद्ध

पहला परिच्छेद

हम लोग लड़ाईके मैदानसे पाँच मील पीछे आराम कर रहे हैं। हम लोगोंको कल ही आराम करनेकी छुट्टी मिली है और आज हम लोग खा-पीकर खूब मस्त हैं। लड़ाईसे छुट्टी पाकर हम लोग बहुत सन्तुष्ट हैं। सबके पास शामके लिए अपना अपना भरपूर भोजन रखा हुआ है; और सबसे बढ़कर बात यह है कि सबको रोटियाँ और तरकारियाँ दूनी-दूनी मिली हैं। आदमीको मौजमें रखनेके लिए इससे बढ़कर और क्या चाहिए! इधर बहुत दिनोंसे हम लोगोंकी किस्मत कभी ऐसी नहीं जागी थी जैसी कलसे जागी है। हम लोगोंका रसोइया हर एक आदमीसे खाने के लिए खूब आग्रह करता है। जो उसके सामनेसे आता जाता है, उसीको वह पकड़कर बैठा लेता है और जी खोलकर उसके आगे भोजन परोस देता है। उसकी समझमें ही नहीं आता कि इतना भोजन वह कैसे जल्दीसे खतम करे। मेरे साथियोंमेंसे जैडन और म्यूलरने बड़ी-बड़ी थालियाँ, तरह-तरहके भोजनोंसे खूब अच्छी तरह भरकर रख ली हैं। जैडनने तो भुक्खड़ होनेके कारण और म्यूलरने अपनी दूरदर्शिताके कारण ऐसा किया है; पर यह कोई नहीं जानता कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैडन ने अपनी थाली कहाँ छिपा रखी है। उसकी हमेशासे यह आदत है कि वह अपनी चीजें बहुत छिपाकर और हिफाजतसे रखता है।

यहाँ इससे भी बढ़कर मजेकी बात यह है कि सिगरेट भी जरूरतसे बहुत ज्यादा मिलते हैं। हर एक आदमीको दस सिगार और बीस सिगरेट मिलते हैं। साथ ही दो डिबिया खानेकी सुरती भी मिलती है। एक आदमीके लिए इतना बहुत है। मैंने अपनी खानेकी सुरती कैजिन्सकीको देकर बदलेमें उससे सिगरेट ले लिये हैं और इसका मतलब यह है कि मेरे पास चालिस सिगरेट हो गये हैं। दिन भरके लिये चालीस बहुत हैं।

यह ठीक है कि हम लोगोंको खाने-पीनेकी इतनी अधिक चीजें पानेका कोई अधिकार नहीं है। जरमन शासक इतने उदार नहीं हैं। हिसाबमें कुछ गलती हो जानेके कारण ही ऐसा हो रहा है।

चौदह दिन हुए, हम लोगोंको युद्ध-क्षेत्रमें जाना पड़ा था और वहाँके सिपाहियोंका स्थान इसलिए लेना पड़ा था कि वे कुछ दिनों तक आराम कर लें। हमारी टुकड़ीको इसलिए अधिक नहीं लड़ना पड़ा था कि हमारे सामने शत्रु बहुत कम थे। हम लोगोंको रसद पहुँचानेवालोंने खाने-पीनेकी उतनी सब सामग्री मँगवा ली थी जितनी डेढ़ सौ आदमियोंकी टुकड़ीके लिए आवश्यक होती है। लेकिन अन्तिम दिन बहुत अधिक अँगरेज सैनिक हम लोगोंके सामने आ पहुँचे थे जिन्होंने हम लोगों पर खूब गोले बरसाये थे। इससे हमारे बहुत से आदमी मारे गये और हम लोग केवल अस्सी आदमी वहाँसे लौटे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब वही डेढ़ सौ आदमियोंकी रसद अस्सी आदमियोंमें बँट रही है।

अभी कल रातको ही हम लोग पीछे हटे हैं और यहाँ खूब अच्छी तरह सोनेके लिए ठहरे हैं। कैजिन्सकी ठीक कहता है कि अगर आदमीको केवल सोनेके लिए कुछ और अधिक समय मिला करे तो लड़ाई इतनी बुरी चीज नहीं हो सकती। लड़ाईके मैदानमें हम लोग किसीसे कम नहीं थे; और एक बारमें लगातार चौदह दिनों तक लड़ना भी कुछ कम नहीं है।

हम लोग ठीक दोपहरके समय अपने स्थानसे निकले थे। आध घण्टेमें सब लोग खानेके बरतन लेकर रसोई-घरमें पहुँच गये। वहाँ खाने-पीनेकी चीजोंकी ऐसी बढ़िया सुगन्ध आ रही थी कि आपसे आप भूख लग आती थी। सबसे अधिक भूखे लोग ही सबसे आगे थे। उनमें एक तो एलबर्ट क्राप था जो हम लोगोंमें सबसे ज्यादा समझदार था और जो इसी लिए अभी तक जमादारके दरजेसे आगे नहीं बढ़ सका था। दूसरा म्यूलर था जो अपने पढ़नेकी स्कूली किताबें यहाँ तक साथ लाद लाया था, परीक्षाओंके स्वप्न देखा करता था और तोपोंसे गोले बरसनेके समय भी भौतिक विज्ञानके सिद्धान्त बड़बड़ाया करता था। और तीसरा लम्बी दाढ़ीवाला लीअर था जिसे अफ़सरों-के चकलेकी वेश्याओंसे मिलने-जुलनेका बहुत शौक था। वह कसम खाकर कहा करता है कि उन स्त्रियोंके लिए सेना-विभागकी यह आज्ञा है कि वे रेशमी कमीज़ पहना करें; और जब कप्तान या उससे ऊँचे दरजेके अफ़सर उनके यहाँ आवें, तब वे उन्हें प्रसन्न करनेके लिए उनके सामने अधनंगी होकर नहाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करें। और चौथा मैं खुद पाल वामर हूँ। हम चारोंकी अवस्था उन्नीस वर्षकी है; हम सब लोग एक ही दरजेमें पढ़ते थे और वहींसे हम लोग स्वयंसेवक बनकर सेनामें भरती हुए थे।

हम लोगोंके ठीक पीछे हमारे कई मित्र बैठे हुए थे। पहला जैडन था जो ताले बनाया करता था और हम्हीं लोगोंकी उम्रका था और जो हमारी कम्पनीमें सबसे ज्यादा खानेवाला था। वह जब खाने बैठता है, तब बिलकुल सुखंडीका रोगी जान पड़ता है; और जब खाकर उठता है, तब भैंसासुर मालूम होने लगता है। उसके बाद हेई वेस्थस है। वह भी उम्रमें हम लोगोंके बराबर ही है। वह बड़ीसे बड़ी रोटी बहुत सहजमें अपनी मुट्ठीमें दबा लेता है और सबसे कहता है—"भला बतलाओ तो मेरी मुट्ठीमें क्या है?" उसके बाद डेटेरिंग है जो एक किसान है और जिसे अपने खेतों तथा अपनी स्त्रीके सिवा कभी और किसी बातकी चिन्ता ही नहीं रहती। और उसके बाद कैजिन्सकी है जो हम लोगोंके दलका नेता है, जो बहुत चालाक और धूर्त है। वह पुराना खुर्राट है और उसकी उम्र चालीस सालकी है। उसकी आँखें नीली हैं, कन्धे झुके हुए हैं और उसकी नाक ऐसी विलक्षण है कि वह सूँघकर ही बतला सकता है कि मौसिम खराब होगा, खानेकी बढ़िया चीजें कहाँ रखी हैं और सबसे कम मेहनतका काम कौन सा है और कहाँ पहुँचने पर मिल सकता है।

हम सब लोग भोजनशालामें सबसे आगे ही बैठे हुए थे। पर रसोइया हम लोगोंकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था, इसलिए हम सब लोग अधीर हो रहे थे। अन्तमें कैजिन्सकीने उसे पुकारकर कहा—अरे भाई हेनरिक, अब खानेको दो। तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फलियाँ तो पककर तैयार हो गई हैं।

हेन०—(सिर हिलाकर) पहले सब लोग आ तो जायँ।

जैडन—सब लोग तो आ गये हैं।

पर भंडारीने उसकी बातपर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा—तुम लोग भले ही आ गये हो। बाकी और लोग कहाँ हैं ?

जैडन—और लोग आज तुम्हारे यहाँ खाने नहीं आवेंगे। या तो वे लोग अस्पतालमें मरहम-पट्टी करा रहे हैं और या फूल चुन रहे हैं।

भंडारी बिगड़ खड़ा हुआ और बोला—और यहाँ मैंने डेढ़ सौ आदमियों का भोजन तैयार किया है।

क्रापने उँगलीसे उसका पेट खोदते हुए कहा—तब तो आज हम लोग खूब डटकर भोजन करेंगे। चलो आओ, परोसो।

जैडनका चेहरा खुशीसे चमकने लगा। वह बोला—तब तो तुम्हारे पास डेढ़ सौ आदमियोंके लिए रोटियाँ भी होंगी ?

रसोइयेने कुछ अनमने होकर सिर हिलाया और कहा—हाँ।

जैडनने उसका कोट पकड़कर पूछा—और तरकारियाँ भी ?

रसोइयेने फिर सिर हिलाकर कहा—हाँ।

जैडन—और तम्बाकू भी ?

रसोइया—हाँ हाँ, सभी चीजें।

जैडन फूलकर कुप्पा हो गया और बोला—वाह ! तब तो आज बहुत बढ़िया दावत होगी। हम लोग खूब मजेमें खायँगे। सब लोग सब्र करो। आज सबको दूना दूना भोजन मिलेगा।

रसोइया—भला यह कैसे हो सकता है !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम सब लोगोंने कुछ उत्तेजित होकर रसोइये चारों ओरसे घेर लिया। कैजिन्स्कीने उससे पूछा—क्यों, ऐसा क्यों नहीं हो सकता ?

रसो०—डेढ़ सौ आदमियोंका खाना अस्सी आदमी नहीं खा सकते।

म्यूलर—हम लोग अभी खाकर दिखला देंगे।

रसो०—मैं तो अब अस्सी आदमियोंका भोजन दे सकता हूँ।

कैजिन्स्की बिगड़कर बोला—अजी तुम्हें उदारतासे काम लेना चाहिए। तुमने अस्सी आदमियों की रसद तो ली नहीं है। तुमने तो हमारी पलटन भरके लिए रसद ली है। बस सारा भोजन हम सब लोगोंके सामने रख दो। हमारी पलटन खा लेगी।

हम सब लोग रसोइयेको दिक करने लगे। कोई उसपर दया नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसीकी गलतीके कारण युद्ध-क्षेत्रमें हम लोगोंको बहुत देरमें और बिलकुल ठंढा भोजन मिला करता था। जिस समय गोलेबारी होती थी, उस समय वह अपना रसोई-घर हम लोगोंसे बहुत दूर रखता था और हमारी पलटनके आदमियोंको दूसरी पलटनोंके आदमियोंसे बहुत ज्यादा दूर जाकर भोजन लाना पड़ता था। हमारी पलटन दूसरी कम्पनी कहलाती थी। पहली कम्पनीका रसोइया, जिसका नाम बल्क था, बहुत अच्छा आदमी था। वह सावनके गधेकी तरह खूब मोटा था। पर वह सिपाहियोंके बहुत पास रहता था और उन्हें खूब भोजन कराता था।

हम लोग कुछ और दिल्लगी या बखेड़ा करना चाहते थे, पर इतनेमें ही हम लोगोंकी कम्पनीका कमांडर पहुँच गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब उसे मालूम हुआ कि यहाँ क्या गड़बड़ी मची है, तब उसने सिर्फ यही कहा—कल हमारे बहुत से आदमी नुकसान हुए। और तब उसने फलियोंकी ओर देखकर कहा—आज फलियाँ तो अच्छी बनी जान पड़ती हैं।

रसोइयेने सिर हिलाकर कहा—जी हाँ, ये गोश्त और चरबीके साथ पकाई गई हैं। लेफ्टिनेन्टने हम लोगोंकी ओर देखा। वह जानता था कि हम लोग क्या सोच रहे हैं। इसके सिवा वह और भी बहुत सी बातें जानता था, क्योंकि वह खुद भी पहले मामूली सिपाही था और तरक्की करके लेफ्टिनेन्ट बना था। उसने फिर एक बार देगका ढकना उठाकर देखा और फलियोंकी सुगन्ध ली। वह चलते समय बोला—एक थाली अच्छी तरह भरकर मेरे लिए लगा लाओ और बाकी सारा भोजन इन सब लोगों को परोस दो।

जैडन मारे प्रसन्नताके रसोइयेके चारों ओर नाचने लगा और रसोइयेका चेहरा बिलकुल उतर गया।

जैडन—इसमें तुम्हारा तो कुछ खर्च नहीं होता। अच्छा चलो, अब हम लोगोंको भोजन कराओ।

रसोइया जब देखता था कि कोई बात उसके बसकी नहीं है, तब वह खिजलाकर आपेसे बाहर हो जाता था। उसने बिगड़कर कहा—तुम लोगोंका सत्यानास हो। पर थोड़ी ही देरमें उसने ऐसा भाव प्रकट करना आरम्भ किया कि मानों कोई बात ही नहीं हुई और उसके लिए सब बराबर है। उसने हम लोगोंके सामने ढेर ढेर सा भोजन परोस दिया और साथ ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी खुशीसे हम लोगोंके आगे पाव पाव भर शहद भी रख दिया।

× × × ×

आज बहुत बढ़िया दिन है। डाक आ गई और सभी लोगों को कुछ न कुछ चिट्ठियाँ और अखबार मिले हैं। हम सब लोग पाखाना फिरनेके लिए खुले मैदानमें आ बैठे हैं जहाँ खूब हरियाली है।

मैदानमें दाहिनी तरफ एक बहुत बड़ा बम-पुलिस है जो खूब मजबूत बना है और ऊपरसे छायादार है। पर वह उन्हीं नये रंगरूटों के लिए है जो अभी अच्छी तरह यह नहीं जानते कि कठिन समयमें जो कुछ मिल जाय, उसीसे किस तरह काम चलाया जाता है। पर हम लोग कुछ और भी चाहते हैं। अलग अलग आदमियोंके पाखाने फिरनेके लिए थोड़ी थोड़ी दूर पर सन्दूक भी रखे हुए हैं। वे सन्दूक चौकोर और बहुत बढ़िया हैं और उनमें चारों ओर लकड़ी लगी है। उनमें बैठनेकी जगह भी बहुत अच्छी है। उनके दोनों तरफ पकड़नेके लिए कड़े भी लगे हैं जिसमें जरूरत पड़ने पर वे उठाकर एक जगहसे दूसरी जगह पहुँचाये जा सकें।

हम लोगोंने तीन-तीन आदमियोंकी टोली बना ली है और सब टोलियाँ घास पर आरामसे बैठी हुई हैं। अभी हम लोगोंको दो घण्टेकी फुरसत है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि जब पहले-पहल हम लोग नये नये भरती होकर आये थे और हम लोगोंको बम-पुलिसमें पाखाने जाना पड़ता था, तब हम लोगोंको कितनी तकलीफ होती थी। उनमें आगेकी तरफ दरवाजे नहीं होते और बीस बीस आदमियोंको एक कतारमें उसी तरह बैठना पड़ता है जिस तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोग रेलके डब्बेमें बैठते हैं। वहाँ सब लोग इस तरह बैठते हैं जिसमें वे आपसमें एक दूसरेको भी देख सकें और एक अफ़सर भी एक जगह खड़ा हुआ उन सबको बराबर देख सके। एक अफ़सर इसलिए उन सबके सामने खड़ा रहता है कि सिपाहियों को हमेशा और हर हालतमें किसी न किसीकी देख-रेखमें रहना पड़ता है।

तबसे हम लोगोंने ऐसी छोटी-छोटी बातोंमें आपसमें शर्म-हया करना छोड़ दिया है। आगे चलकर तो इससे भी कहीं बढ़कर खराब काम हम लोगोंके लिए मामूली बातोंमें शामिल हो गये थे।

यहाँ हम लोग बिलकुल खुले मैदानमें बैठे हुए थे, पर फिर भी हम लोगोंको इस तरह मिलकर पाखाना फिरनेमें बहुत आनन्द आता था। अब तो मेरी समझमें ही यह बात नहीं आती थी कि लोगोंको इस तरहके कामोंमें शर्म क्यों आती है। आखिर पाखाना और पेशाब भी तो मनुष्यके लिए उसी प्रकारके प्राकृतिक तथा स्वाभाविक कार्य हैं जिस प्रकार खाना-पीना आदि हैं। यदि हम लोगोंको इस तरहके कामोंमें लज्जा करना न सिखलाया जाता तो शायद हम लोग इन बातोंकी ओर कभी विशेष ध्यान ही न देते और न हमें इनमें कोई विलक्षणता ही जान पड़ती। बहुत पुराने जमानेके लोग भी तो इन सब कामोंको बिलकुल मामूली समझा करते थे। शर्म और हया तो बहुत बादमें आई है।

साधारण मनुष्योंकी अपेक्षा सैनिकोंको भूख भी खूब लगती है और पाखाना भी खूब साफ़ आता है। सैनिक लोग जितने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शब्दोंका व्यवहार करते हैं, उनके तीन चौथाई शब्द इन्हीं सब कामोंसे सम्बन्ध रखनेवाले होते हैं। वे अपनी प्रसन्नता प्रकट करना भी खूब जानते हैं और क्रोध भी। और फिर जितनी अधिक प्रसन्नता ऐसे कामोंके समय प्रकट की जा सकती है, उतनी अधिक प्रसन्नता और किसी समय प्रकट ही नहीं की जा सकती। जब हम लोग लौटकर घर जायँगे, तब हम लोगोंकी ऐसी ऐसी करतूतें सुनकर हमारे घरके लोग और शिक्षक आदि अवाक् रह जायँगे; पर यहाँ हम लोगोंके लिए ये सब बिलकुल मामूली बातें हैं।

यहाँ हम लोगोंसे इस तरहके काम जबरदस्ती खुले आम और सबके सामने कराये जाते हैं; इसलिए अब हम लोग समझने लग गये हैं कि किसीके सामने बैठकर पाखाना फिरनेमें नामको भी बुराई नहीं है—किसी तरहकी शर्म-हया करनेकी जरा भी जरूरत नहीं है। ये सब बातें हम लोगोंके लिए इतनी मामूली हो गई हैं कि खूब आरामसे और सबके सामने हम लोग उसी प्रकार इन कामोंसे निवृत्त होते हैं जिस तरह हम लोग खेलते कूदते हैं। कोई बात सुनकर लोग कह बैठते हैं—यह तो पाखानेकी गप है। (भारतकी चंडूखानेकी गपकी तरह।) यह कोई थोथी या निराधार बात नहीं है। सच पूछिए तो सबसे अधिक पाखानेके समय ही सिपाहियोंकी खूब गप लड़ती है। पाखाना ही मानों सैनिकोंका क्लब होता है।

इस समय यहाँ इस तरह बैठकर हम लोगोंको शौच-क्रिया में जितना अधिक आनंद मिल रहा है, उतना शायद किसी राज-महलके संगमरमरके पाखानेमें भी नहीं मिल सकता। वहाँका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाखाना तो केवल स्वास्थ्य-रक्षाके सिद्धान्तोंके आधार पर बना होगा। पर यहाँका पाखाना कैसा सुन्दर है!

ऐसे अवसरों पर हम लोग सबसे अधिक निश्चिन्त रहते हैं। हम लोगोंके सिर पर स्वच्छ नीला आकाश है। क्षितिजकी ओर सूर्यकी किरणों से चमकते हुए वे सुनहले गुब्बारे दिखाई दे रहे हैं जिनपर बैठकर गुप्तचर लोग शत्रुओंकी गति-विधिका निरीक्षण करते हैं, और जगह-जगह उन तोपोंके धूएँ सफेद बादलके समान दिखाई पड़ते हैं जो हवाई जहाजोंपर गोले चलाया करती हैं। जब वे गोले किसी हवाई जहाजका पीछा करते हैं, तब बहुत से गोलोंके धूएँ एक साथ छोटे-छोटे बादलोंके झुंडकी तरह चलते हैं। युद्ध-क्षेत्रमें बड़ी-बड़ी तोपोंसे जो गोले छूटते हैं, उनकी गड़गड़ाहट हमें ऐसी जान पड़ती है कि मानों बहुत दूरपर बादल गरज रहा हो। हमारे चारों ओर खूब हरियाली है जिसमें फूल खिले हुए हैं। बड़ी बड़ी घासें हवामें खूब लहरा रही हैं।

दूर पर एक बाजा बजता हुआ सुनाई पड़ रहा है। हम लोग ताश खेलते हैं, सुस्ताते हैं और गप लड़ाते हैं। फिर भी हम सभी लोग समझते हैं कि हम लोग एक भारी बंधनमें पड़े हैं। यह बात बिलकुल ठीक है और इसे कहकर समझाने की आवश्यकता नहीं है। बहुत सम्भव था कि हम लोग इस समय यहाँ इस तरह न बैठने पाते और कहीं युद्ध-क्षेत्रमें बन्दूकें चलाते होते। ऐसा होना कोई बड़ी बात नहीं थी। इसलिए यहाँकी सभी चीजें हम लोगोंके लिए बिलकुल नई और बहुत ही आनन्ददायक हैं।

क्रापने पूछा—क्यों भाई, इधर हालमें किसीने केमेरिकको भी देखा है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं—वह सेन्ट जोसफमें है।

म्यूलर—उसकी जाँघमें एक बड़ा घाव हो गया है।

हम लोगोंने निश्चय किया कि आज तीसरे पहर चलकर उसे देख आवेंगे।

क्रापने लिफ़ाफेमें से एक चिट्ठी निकालकर कहा—कैन्टोरक ने तुम सब लोगों का कुशल-मंगल पूछा है।

सब लोग हँस पड़े। म्यूलरने अपना सिगरेट फेंककर कहा—इस समय यदि वह यहाँ होता तो बड़ा आनन्द आता।

कैम्टोरेक किसी समय हम लोगों को स्कूलमें पढ़ाया करता था। वह कदमें बहुत नाटा था और लम्बा कोट पहना करता था। उसका चेहरा बिलकुल छछूँदरका-सा था। वह भी ऊँचाई में हिम्मेलस्टोसके बराबर ही था जिसके डरके मारे लोग थरथर काँपा करते थे। यह एक बड़ी अद्‌भुत बात है कि संसारमें बहुत से दुःख और कष्ट प्रायः नाटे आदमियोंके कारण ही उत्पन्न होते हैं। लम्बे और मोटे आदमियोंकी अपेक्षा नाटे आदमी अधिक उद्योगी और हठी होते हैं। जहाँ तक हो सकता है, मैं कम्पनियोंके नाटे कमांडरोंसे बहुत बचने और दूर रहनेका प्रयत्न करता हूँ। ऐसे लोग किसी बातको समझते कम हैं और दुष्टता बहुत करते हैं।

स्कूलमें जब कवायद करनेका समय होता था, तब कैन्टोरक हम लोगोंके सामने खूब व्याख्यान झाड़ा करता था। उसके व्याख्यानोंका परिणाम यह हुआ कि मेरे दरजेके सभी लड़के उसकी बातोंमें आकर उसके साथ जिलेके कमांडरके पास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जा पहुँचे और सेनामें काम करनेके लिए स्वयंसेवकके रूपमें भरती हो गये।

मुझे उस समयका उसका चेहरा अब तक याद है जब वह चश्मेके अन्दरसे देखता हुआ कहा करता था—अरे यारो, क्या तुम लोग सेनामें भरती न होगे?

इस प्रकारके शिक्षक अपने मनोभाव सदा अपनी जेबमें मौजूद रखा करते थे और उपयुक्त अवसर आते ही सबके सामने पेश करने लग जाते थे। पर उस समय हम लोगोंका ध्यान इस बातकी ओर नहीं गया था।

हम लोगोंमें एक लड़का ऐसा भी था जो कुछ आगा-पीछा करता था और हम लोगोंके साथ सेनामें भरती होना नहीं चाहता था। उसका नाम जोसफ बेहम था और वह शरीरसे मोटा-ताजा और भद्दा था। उसे किसी तरह राजी नहीं किया जा सकता था; पर न जाने क्या समझ-बूझकर वह स्वयं ही तैयार हो गया। सच पूछिये तो हममेंसे बहुतेरे लड़के ऐसे ही थे जो उसकी तरह सेनामें भरती होना नहीं चाहते थे; पर हाँ वह जितना अड़ा था, उतना और कोई लड़का अड़ नहीं सकता था; क्योंकि उन दिनों कुछ ऐसी हवा ही बह गई थी कि जो लड़का लड़ाईपर जानेसे इन्कार करता था, स्वयं उसके माता-पिता ही उसे 'कायर' और 'डरपोक' कहनेके लिए तैयार रहते थे। हम लोगोंमेंसे कोई यह नहीं जानता था कि सेनामें भरती होनेपर हमें क्या करना पड़ेगा और वहाँ हम लोगोंपर कैसी बीतेगी। जो लोग गरीब और सीधे-सादे थे, वही सबसे समझदार भी थे। वे जानते थे कि युद्ध छिड़नेपर भाग्य फूट जाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और सैंकड़ों प्रकार की विपत्तियाँ आती हैं। पर जिन लोगों की स्थिति कुछ अच्छी होती थी और जिन्हें युद्धके परिणामोंको और भी अच्छी तरह समझना चाहिए था, वे युद्धका नाम सुनकर फूले नहीं समाते थे।

कैजिन्स्की कहा करता था कि मध्यम श्रेणीके लोग इसलिए युद्धसे प्रसन्न होते हैं कि उन्हें बाल्यावस्थासे ही ऐसी शिक्षा दी जाती है और उनके मनमें ऐसा संस्कार ही उत्पन्न करा दिया जाता है। उनकी शिक्षा ही उन्हें गधा बना देती है। कैजिन्स्की जो कुछ कहता था, वह समझ-बूझकर कहता था।

एक विलक्षण बात यह है कि हम लोगोंमें सबसे पहले हमारा शिक्षक बेहम ही घायल हुआ था। एक आक्रमणमें उसकी आँखमें चोट आ गई थी और हम लोगोंने उसे मरनेके लिए छोड़ दिया था। हम लोग उसे अपने साथ उठाकर नहीं ला सके थे, क्योंकि हम लोगोंको बहुत ही अव्यवस्थित अवस्थामें लौटना पड़ा था। तीसरे पहर हम लोगोंने अचानक सुना कि वह पुकार रहा है। हम लोगोंने देखा कि वह उस स्थानपर रेंग रहा है जो दोनों पक्षोंकी सेनाओंके बीचमें खाली पड़ा रहता है और जिसे हम 'बिना मालिककी जमीन' कह सकते हैं। असलमें वह बेहोश होकर गिर पड़ा था। वह उस समय कुछ देख नहीं सकता था और मारे दरदके व्याकुल हो रहा था; इसलिए वह रक्षित स्थानमें न रह सका। जब तक कोई उसके पास पहुँचे और उसे उठाकर लावे, तब तक उसे गोली लग गई थी।

हम लोग इसके लिए कैन्टोरकको तो दोषी ठहरा ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकते थे। यदि इसी प्रकार लोगोंको दोषी ठहराने लगें तो फिर संसारका कहाँ ठिकाना लगे! कैन्टोरककी तरहके हजारों शिक्षक थे जो इस प्रकार लड़कोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेज भेजकर समझते थे कि हम सबसे अच्छा काम कर रहे हैं। यह बात दूसरी है कि इस प्रकार लड़कोंको भेजनेमें स्वयं उनकी कुछ भी हानि न होती हो। और ठीक यही कारण है कि वे हम लोगों को इस बुरी तरह से भाड़में झोंक देते हैं।

हम सभी अठारह वर्षके थे। हमारे शिक्षकोंको उचित था कि वे हमें ऐसा मार्ग दिखलाते जिससे हम लोग बड़े होकर संसारमें कुछ काम कर सकते, अपनी उन्नति और संस्कार कर सकते और आगे चलकर किसी योग्य हो सकते। हम लोग प्रायः उनकी हँसी उड़ाया करते थे। शिक्षक सब तरहसे मान्य होते हैं और हम लोग समझते थे कि वे जो कुछ कहें, वह हमें करना चाहिए। हम लोग समझते थे कि वे अधिक दूरदर्शी होते हैं और उनमें विशेष मानवोचित बुद्धिमत्ता होती है। पर ज्योंही हम लोगोंने युद्ध-क्षेत्रमें पहले-पहल एक आदमीको मरते देखा, त्योंही हम लोगोंका यह सारा विश्वास जाता रहा। हम लोगोंको यह मानना पड़ा कि हम लोगोंकी पीढ़ीके अर्थात् नवयुवक लोग उन बड़े-बूढ़े शिक्षकोंकी अपेक्षा अधिक विश्वसनीय हैं और उनकी अपेक्षा हम लोगों पर अधिक भरोसा किया जा सकता है। हमारी समझमें यह भी आ गया कि शिक्षक-वर्गके लोग सिर्फ लम्बी-चौड़ी बातें बघारने और चालाकियाँ करनेमें ही हम नवयुवकोंसे बढ़कर हैं। पहली ही गोलेबारीमें हम लोगोंको अपनी भूल मालूम हो गई और हमारे शिक्षकोंने संसारका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो स्वरूप हम लोगोंके सामने उपस्थित किया था, वह छिन्न-भिन्न हो गया।

इस समय वे शिक्षक लोग तो अपने घरमें आरामसे बैठे हुए लिखते-पढ़ते और बातें करते थे और हम सब लोग यहाँ लोगोंको घायल होते और मरते हुए देख रहे थे। उन्होंने तो हम लोगोंको यह सिखलाया था कि अपने देशकी सेवा करना ही संसारमें सबसे बड़ा काम है; और हम लोग समझते थे कि लोग कैसे-कैसे कष्ट भोगकर मरते हैं। लेकिन इतना सब कुछ होनेपर भी हम लोग कायर नहीं थे, विद्रोह नहीं करते थे और युद्ध-क्षेत्रसे भागते नहीं थे। हम लोग भी अपने देशसे उतना ही प्रेम करते थे, जितना प्रेम वे शिक्षक करते थे। सभी कामोंमें हम लोग बहुत ही साहसपूर्वक आगे बढ़ते थे, पर साथ ही अचानक हम लोग यह भी समझने लग गये थे कि सत्य क्या है और मिथ्या क्या है। हम लोगोंने समझ लिया कि संसारका जो स्वरूप उन्होंने हम लोगोंके सामने उपस्थित किया था, उसमें कुछ भी तत्व नहीं था। हम लोग बहुत बुरी तरहसे बिलकुल अकेले पड़ गये थे और अकेले ही हमें उस परिस्थितिमें निर्वाह करना पड़ता था।

× × × ×

कैमेरिकसे मिलने जानेके पहले हम लोगोंने उसका सब असबाब बाँध लिया, क्योंकि हम जानते थे कि इन सब चीजोंकी उसे लौटते समय आवश्यकता पड़ेगी।

अस्पतालमें खूब चहल-पहल थी। वहाँ चारों ओरसे कारबोलिक, मवाद और पसीनेकी बदबू आ रही थी। युद्ध-क्षेत्रमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिन घरोंमें हम लोग रहते थे, उनमें भी हम लोग इस प्रकारकी दुर्गन्धके बहुत कुछ अभ्यस्त हो चुके थे; पर यहाँ तो उस दुर्गन्ध से हम लोगोंकी जान निकली जाती थी। हम लोगोंने कैमेरिकका पता लगाया। वह एक बहुत बड़े कमरेमें पड़ा हुआ था। वह हम लोगोंको देखकर हुआ तो बहुत प्रसन्न, पर उसके शरीरमें बल बिलकुल नहीं था, इसलिए वह अपनी प्रसन्नता बहुत ही कम प्रकट कर सका; लाचारीकी हालतमें छटपटाकर रह गया। जिस समय वह बेहोश पड़ा था, उस समय किसीने उसकी घड़ी चुरा ली थी।

म्यूलरने सिर हिलाकर कहा—मैं तो बराबर तुमसे कहा करता था कि ऐसी बढ़िया घड़ी कभी किसीको अपने पास नहीं रखनी चाहिए।

म्यूलर कुछ बेशऊर और उजड्ड था, नहीं तो वह कभी ऐसी बात न कहता; क्योंकि कैमेरिककी दशा देखकर हर एक आदमी समझ सकता था कि वह कभी इस जगह से जीता-जागता न निकलेगा। अब यदि उसकी घड़ी मिले तो क्या और न मिले तो क्या! यदि वह घड़ी किसी तरह मिल भी जाती तो अधिकसे अधिक यही हो सकता था कि वह उसके घर भेज दी जाती।

क्रापने पूछा—कहो, क्या हाल है?

कैमेरिकका सिर कुछ लटक गया। वह बोला—अच्छा हाल है............पर मेरे पैरमें बहुत सख्त दर्द है।

हमने उसके बिस्तरकी ओर देखा। उसका पैर तारकी एक टोकरीके नीचे था जिसके ऊपर बिस्तरकी चादर पड़ी थी। हम लोगोंने बाहर चपरासियोंसे ही सुन लिया था कि कैमेरिकका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैर काट डाला गया है। म्यूलर यह बात कैमेरिकसे कहना ही चाहता था, पर मैंने उसकी जाँघ में चुटकी काटकर उसे दबाया और इस प्रकार संकेतसे वह बात कहनेसे रोक दिया। कैमेरिक बिलकुल लट गया था और पीला पड़ गया था। उसके चेहरेपर अब भी वे रेखाएँ दिखलाई पड़ती थीं जो हम लोग बहुत दिनोंसे देखते आते थे। उसके शरीरमें अधिक दम नहीं रह गया था और उसके प्राण शरीरकी सीमाओंके बाहर निकल चुके थे। उसके शरीरमें मौत अन्दर-ही-अन्दर अपना काम कर रही थी। आँखोंपर तो मानों उसने अपना पूरा अधिकार जमा लिया था। हम लोगोंका जो साथी कैमेरिक कुछ ही समय पहले हम लोगोंके साथ घोड़ेका मांस भून रहा था और गोलोंके कारण पड़े हुए गड्ढोंमें बैठा हम लोगोंके साथ बातें करता था, वह कैमेरिक इस समय यहाँ मौतके मुँहमें पड़ा था। वह लेटा तो अवश्य था, पर अब उसमें पहलेकी कोई बात नहीं रह गई थी। अब कोई उसका चेहरा देखकर उसे जल्दी पहचान ही नहीं सकता था और उसकी अवस्था फोटोग्राफ के उस प्लेटके समान हो गई थी जिसपर दो तसवीरें ले ली गई हों। यहाँ तक कि उसकी आवाज में भी कोई दम नहीं रह गया था।

मुझे वह समय याद है जब हम सब लोग साथ ही अपने शहरसे रवाना हुए थे। उसकी माँ, जो अच्छी मोटी-ताजी थी, उसे स्टेशन तक पहुँचाने आई थी। वह बहुत अधिक रोती थी और रोते-रोते उसकी आँखें सूज गई थीं। उसकी रुलाई देखकर कैमेरिक भी बहुत विकल हो गया था। जब उसने मुझे देखा तो मेरा हाथ पकड़ लिया था और मुझसे कई बार कहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था कि कैमेरिकका ध्यान रखना। कैमेरिकका चेहरा भी बिलकुल छोटे लड़कोंका-सा और भोला-भाला था और वह इतना दुर्बल था कि एक महीनेमें ही बिलकुल बेदम हो गया था। पर युद्ध-क्षेत्रमें भला कौन किसका ध्यान रख सकता था और कौन किसे देख सकता था!

क्रापने कहा—घबराओ मत, अब तुम जल्दी ही घर भेज दिये जाओगे। यदि तुम घायल न होते तो अभी तीन चार महीने बाद कहीं जाकर तुम्हें छुट्टी मिलती।

कैमेरिकने सिर हिला दिया। मुझसे उसके हाथोंकी तरफ देखा नहीं जाता था। उसके हाथ बिलकुल मोमकी तरह हो रहे थे। उसके नाखूनोंमें खाइयोंकी मैल जमी हुई थी। वह ऊपरसे जहरके समान और नीली-काली दिखाई पड़ती थी। मुझे कुछ ऐसा जान पड़ा कि कैमेरिकके मर जानेके बाद भी ये नाखून छोटे पौधोंकी तरह बढ़ते रहेंगे। उसका भावी रूप मेरी आँखोंके सामने फिरने लगा। मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि वे नाखून बढ़कर कई बल खा गये हैं और उसके सड़े हुए सिरपर उसी तरह बाल बहुत बढ़ गये हैं जिस तरह अच्छी जमीनपर घास बढ़ती है। उस समय मेरी समझमें यह न आया कि भला ऐसा किस प्रकार सम्भव है।

म्यूलरने उसके मुँहके पास झुककर कहा—हम लोग तुम्हारा सब सामान लेते आये हैं।

कैमेरिकने हाथसे संकेत कर दिया जिसका मतलब यह था कि सामान पलंगके नीचे रख दो।

म्यूलरने सब सामान उसके पलंगके नीचे रख दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैमेरिकने फिर घड़ीका जिक्र छेड़ा। अब यदि कोई उसे शांत करना चाहता तो अवश्य ही उसके मनमें कुछ संदेह उत्पन्न होता।

थोड़ी देर बाद म्यूलरने उसके पलंगके नीचेसे एक जोड़ी ऐसा जूता निकाला जिसे हवाई जहाज चलानेवाले लोग पहनते हैं। वे जूते इंग्लैंडके बने हुए, बहुत बढ़िया और मुलायम थे। उनका चमड़ा पीला था और वे घुटनों तक ऊँचे थे। उनमें ऊपरसे नीचे तक बराबर फीता लगा था। सचमुच उसे देखते ही ले लेनेको जी चाहता था।

म्यूलर वह जूता देखकर बहुत ही प्रसन्न था। उसने अपने भद्दे जूतेके साथ उस जूतेका मुकाबला किया और कहा—क्यों जी कैमेरिक, तुम यह जूता भी अपने साथ लेते जाओगे?

हम तीनों भी वह जूता अपने लिए हथियाना चाहते थे। सब यही सोचते थे कि यदि कैमेरिक अच्छा भी हो जायगा तो भी वह ये जूते पहन तो सकेगा ही नहीं, क्योंकि उसका एक पैर कट ही गया है। उसके लिए ये जूते बेकार होंगे। उस समय वहाँकी जो परिस्थिति थी, उसे देखते हुए उस जूतेका वहाँ रहना भी ठीक नहीं था, क्योंकि हम लोग जानते थे कि ज्योंही कैमेरिकका दम निकलेगा, त्योंही अस्पतालके अरदली वह जूता उठा ले जायँगे।

म्यूलरने फिर पूछा—तुम यह जूता हम लोगोंके पास नहीं छोड़ जा सकते?

पर कैमेरिक वह जूता किसी तरह देना नहीं चाहता था। वह उसकी सबसे अधिक प्यारी चीज थी।

म्यूलरने फिर कहा—और नहीं तो यह जूता हमसे बदल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही लो। हम लोग इसका कुछ-न-कुछ उपयोग कर ही डालेंगे।

पर फिर भी कैमेरिक वह जूता देनेके लिए किसी तरह तैयार नहीं हुआ।

मैंने अपने पैरसे म्यूलरका पैर दबाया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उस अवस्था में कैमेरिकको बार बार उस जूतेके लिए तंग किया जाय। इसपर म्यूलरने बड़े संकोचसे वह जूता फिर कैमेरिकके पलंगके नीचे रख दिया।

इसके बाद कुछ देर तक इधर-उधरकी बातें करनेके उपरान्त हम लोग कैमेरिकसे बिदा हुए। मैंने उससे वादा किया कि कल सवेरेमें फिर तुम्हें देखने आऊँगा। म्यूलरने भी मेरे साथ आनेके लिए कहा। उस समय भी उसका ध्यान केवल उस जूते पर ही था और वह किसी-न-किसी तरह उसे लेना चाहता था; और इसी लिए वह दूसरे दिन भी मेरे साथ वहाँ आनेको तैयार हुआ था।

कैमेरिक कराह रहा था। उसे ज्वर चढ़ा था। बाहर निकलकर हम लोगोंने एक अरदलीसे कहा कि कैमेरिकको थोड़ा अफीमका सत्त दे दो जिसमें उसे नींद आ जाय और वेदना न हो।

पर अरदलीने हम लोगोंकी बात माननेसे इन्कार कर दिया। वह बोला—अगर हम लोग इसी तरह सब लोगोंको अफीमका सत्त देने लगें तो कहीं ठिकाना न लगे।

क्रापने दुष्टतापूर्वक कहा—हाँ भाई, तुम लोग सिर्फ अफ़सरोंकी ही अच्छी तरह सेवा-शुश्रूषा करते हो।

पर मैंने जल्दीसे आगे बढ़कर उस अरदलीको एक सिगरेट दिया जो उसने तुरन्त ले लिया। मैंने पूछा—पर फिर भी आखिर तो तुम्हीं लोग सबको दिया करते होगे?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह कुछ खिजला-सा गया। उसने कहा—अगर तुम समझते हो कि हमें अफीमका सत्त किसीको देनेका अधिकार ही नहीं है तो फिर मुझसे कहते क्यों हो ?

मैंने थोड़े से और सिगरेट उसके हाथ में देकर कहा—तो फिर हम लोगों पर दया करके उस बेचारेको भी········।

वह बोला—अच्छा दे दूँगा।

जब वह अन्दर जाने लगा, तब क्राप भी उसके पीछे-पीछे चला। उसे अरदलीकी बातका विश्वास नहीं था और वह अपने सामने कैमेरिकको अफीमका सत्त दिलवाना चाहता था। हम सब लोग बाहर ही उसके आसरे खड़े रहे।

म्यूलरने फिर उन्हीं जूतोंका जिक्र छेड़ा। वह बोला—वे जूते मेरे पैरमें बिलकुल ठीक आवेंगे। जो जूते मैं पहने हूँ, इनसे तो मेरे दोनों पैर छालोंसे भर गये हैं। क्या तुम लोग समझते हो कि कल कवायदके समयके बाद तक भी वह जीता रहेगा ? अगर वह आज ही रातको मर जाय तो वे जूते कोई न कोई··।

इतनेमें क्राप लौट आया। म्यूलरने उससे पूछा—क्या तुम समझते हो········।

म्यू०—मैं सब इन्तजाम कर आया हूँ।

हम लोग अपनी झोंपड़ियोंकी तरफ लौटे। रास्तेमें मैं सोच रहा था कि कल मैं कैमेरिककी माँको एक पत्र लिखूँगा। मैं मारे सरदीके ठिठुरा जाता था। यदि उस समय कुछ शराब मिल जाती तो गरमाहट आ जाती। रास्तेमें क्राप अचानक बहुत उत्तेजित हो गया था। शायद उसकी यह अवस्था कैमेरिककी दशाका स्मरण करके हुई थी। हम लोगोंको बहुत दूर जाना

15232

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था ; अतः हम जल्दी-जल्दी चल रहे थे। थोड़ी देर बाद क्राप फिर शान्त हो गया। यहाँ सभी लोगोंकी कभी-कभी ऐसी ही दशा हो जाती है।

म्यू०—हाँ जी, तो कैन्टोरेकने तुम्हें क्या लिखा है ?

क्राप—(हँसकर) यही कि हम सब लोग बड़े भारी "बहादुर नवयुवक" हैं।

सब लोग हँस पड़े। उस समय देशमें ऐसे-ऐसे सैकड़ों हजारों कैन्टोरेक पड़े थे जो लड़कोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजकर समझते और कहते थे कि वे बड़े भारी "बहादुर नवयुवक" हैं। हमारी बहादुरीका क्या पूछना है ! और युवावस्था ? यह ठीक है कि हममेंसे किसीकी अवस्था बीस वर्षसे अधिक नहीं है। पर क्या हम लोग युवक हैं ? हमारी युवावस्थाका तो बहुत दिन हुए, अन्त हो चुका था। अब तो हम सभी लोग बुड्ढे हो गये थे।

दूसरा परिच्छेद

जिन दिनों मैं अपने मकान पर रहता था, उन दिनों कभी-कभी कुछ कविताएँ लिखा करता था। मैंने एक नाटक लिखना भी आरम्भ किया था जो बहुत थोड़ा सा लिखा गया था। कभी-कभी मुझे याद आता था कि मेरा लिखा वह अधूरा नाटक और कुछ कविताएँ मेरे टेबुलके दराजमें पड़ी हैं। मैंने कई महीनों तक सन्ध्याके समय बड़े परिश्रमसे वह नाटक और कविताएँ तैयार की थीं। मेरे और साथी भी प्रायः इसी प्रकारका कुछ-न-कुछ साहित्यिक कार्य किया करते थे। पर अब तो मेरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए उन सब कामोंकी वास्तविकताका मानों अन्त ही हो गया है और मैं उनकी ठीक-ठीक कल्पना भी नहीं कर सकता। ज्यों ही हम लोग यहाँ पहुँचे, त्यों ही हम लोगोंके उस आरम्भिक जीवनका बिलकुल अन्त हो गया था। और यह अन्त भी ऐसे ढंगसे हुआ था जिसका हम लोग तनिक भी विरोध न कर सके थे। हम लोग प्रायः इस बीती हुई बात पर विचार करते हैं और सोचते हैं कि हमारे आरम्भिक जीवनका क्यों और कैसे अन्त हो गया, पर हमें कभी इसका कोई ठीक और समाधान-कारक उत्तर नहीं मिलता। कैन्टोरेक लिखता है कि हम सब बड़े 'बहादुर युवक' हैं और हम लोग हैं भी बीस वर्षसे कम अवस्थाके; परन्तु हम लोगोंके लिए प्रत्येक बात और प्रत्येक पदार्थ इतना अधिक अस्पष्ट है कि हम लोगोंकी समझमें कुछ आता ही नहीं कि संसार कैसा है और उसमें क्या हो रहा है। सभी वृद्ध पुरुषोंका उनके पूर्व जीवनके साथ एक शृंखलाके द्वारा सम्बन्ध होता है। उन लोगोंकी स्त्रियाँ और बच्चे होते हैं, रोज-गार या पेशे और स्वार्थ होते हैं। इस प्रकार उन लोगोंके लिए एक ऐसा दृढ़ आधार या भूमिका होती है जिसे युद्ध कभी मिटा नहीं सकता। हम सभी अठारह-बीस वर्षके नवयुवक हैं। हम लोगोंके केवल माता-पिता हैं। शायद कुछ लोगोंकी कोई प्रेमिका हुई तो उसका भी उनपर कोई विशेष प्रभाव या अधिकार नहीं होता। इस प्रकार मानों हम लोग सभी बन्धनोंसे मुक्त होते हैं। हाँ, हम लोगोंमें कुछ साहस अथवा उत्साह होता है, हमें कुछ बातोंका शौक होता है और हम लोगोंका स्कूल होता है। बस यही हमारे जीवन का क्षेत्र है—इस क्षेत्रकी सीमाके बाहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे लिए संसारमें और कुछ भी नहीं है। और तमाशा यह है कि इस समय युद्ध-क्षेत्रमें हमारे लिए हमारी ये थोड़ी सी चीजें भी नहीं रह गई हैं। यहाँ आने पर उन सबका भी अन्त हो गया है।

यदि हम यह बात कैन्टोरेकसे कहें तो वह कहेगा कि तुम नवयुवक लोग जीवनके प्रवेश-द्वारपर खड़े हो। देखनेमें भी कुछ ऐसा ही जान पड़ेगा। अभी तक हम लोगोंने जड़ ही नहीं पकड़ी है और इस बीचमें युद्ध आकर हम सब लोगोंको हमारे स्थानसे बहा ले गया है। पर जो लोग वयस्क हो चुके हैं, उनके सम्बन्धमें यह बात नहीं है। वे बाल-बच्चे और काम-धन्धेवाले हैं और इस प्रकार संसारमें जड़ पकड़ चुके हैं। वे युद्ध-क्षेत्रके बाहरकी ओर भी बहुत सी बातों पर विचार कर सकते हैं और उनकी चिन्ता कर सकते हैं। पर हम लोग तो होश सँभालते ही संसारसे अलग कर दिये गये हैं और हम नहीं जानते कि अन्त कैसा होगा। हम तो केवल यही जानते हैं कि एक बहुत ही विलक्षण और दुःखद प्रकारसे हमारा सारा जीवन एक ऊसरके समान बना दिया गया है। पर फिर भी हम लोग प्रायः दुःखी नहीं रहते, प्रसन्न ही रहते हैं।

× × × ×

यद्यपि कैमेरिकके जूते पाकर म्यूलर बहुत प्रसन्न होगा, पर इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उसके मनमें कैमेरिकके प्रति सहानुभूति नहीं है। कैमेरिककी दशासे उसे भी बहुत दुःख हुआ है। बात केवल इतनी है कि वह सब चीजोंको बहुत ही स्पष्ट रूप से देखता है। यदि कैमेरिक अच्छा होकर वह जूते पहन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता तो म्यूलर नंगे पैर रहकर काँटेदार तारों पर भी चलना पसन्द करता, पर उसके जूते प्राप्त करनेका कोई ढंग न लगाता। पर अवस्था यह है कि वे जूते अब कैमेरिकके किसी काम नहीं आ सकते और म्यूलर उनका अच्छा उपयोग कर सकता है। कैमेरिक तो मर ही जायगा, अब उसके जूते चाहे कोई ले। और यदि यही बात है तो फिर दूसरा कोई वह जूते क्यों ले? म्यूलर ही क्यों न ले? अस्पतालके अरदलीकी अपेक्षा म्यूलरका उन पर ज्यादा हक है। लेकिन जब कैमेरिक मर जायगा, तब जूते किसी तरह मिल न सकेंगे। इसलिए वह अभीसे होशियार है और दूसरेके हाथमें पड़नेसे पहले ही जूते अपने हाथमें कर लेना चाहता है।

अब हम लोग और तरहकी बातोंका कोई विचार नहीं करते, क्योंकि उन्हें हम कृत्रिम और फालतू समझते हैं। अब तो केवल वास्तविक और तत्वकी बातोंका ही हम लोगोंके लिए महत्व रह गया है। और ऐसे बढ़िया जूते यहाँ दुर्लभ हैं।

उस समयकी बात कुछ और ही थी। जिस समय हम लोग अपने जिलेके कमांडरके पास फौजमें भरती होनेके लिए अपना नाम लिखाने गये थे, उस समय हम सब मिलकर बीस लड़के थे। हममें से कई लड़कोंने उस समय फौजी बैरकमें प्रवेश करनेसे पहले बड़े अभिमानसे अपने जीवनमें पहली बार दाढ़ी बनाई थी। भविष्यके सम्बन्धमें हम लोगोंकी कोई निश्चित योजना या कार्यक्रम नहीं था। तब तक हममेंसे किसीने भली भाँति यह निश्चित ही नहीं किया था कि हम बड़े होकर अमुक व्यापार या पेशा करेंगे। मतलब यह कि हम लोगोंके जीवनका कोई क्रम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही ठीक नहीं हो पाया था। जीवनके सम्बन्धमें, और साथ ही युद्धके सम्बन्धमें भी, हम लोगोंके विचार बहुत ही अटकल-पच्चूके और अस्पष्ट थे; पर फिर भी हम उन्हें आदर्श और अद्भुत घटनाओं से पूर्ण समझते थे। हम लोगोंको केवल दस सप्ताह तक सैनिक कामोंकी शिक्षा मिली थी; पर उस शिक्षाका हम लोगों पर जितना अधिक प्रभाव पड़ा था, उतना शायद स्कूलकी दस वर्षोंकी शिक्षाका भी प्रभाव नहीं पड़ा था। यहाँ आकर हम लोगोंने सीखा था कि एक अच्छे, साफ और चमक-दार बटनका महत्व दर्शन-शास्त्रके चार बड़े-बड़े पोथोंसे भी अधिक है। पहले हम लोगोंने कुछ आश्चर्य के साथ, तब दुःख के साथ और अन्तमें उदासीन भावसे यही सीखा और समझा कि हमारा मन कोई चीज नहीं है, असल कामकी चीज जूता साफ करनेका बुरुश है। हमने यह भी सीखा कि समझदारी या स्वतन्त्रता कोई चीज नही है; जो कुछ है, वह व्यवस्था और कवायद है। तीन सप्ताहके अन्दर ही हम लोगोंको यह समझ लेनेमें कोई कठिनता नहीं हुई कि पहले हम लोगों पर हमारे माता-पिता, शिक्षक और प्लेटोसे लेकर गाथे तक बड़े-बड़े विद्वानोंका जो अधिकार था, उसकी अपेक्षा वरदी पहने हुए उस सिपाहीका हमपर कहीं अधिकार है जो युद्ध-क्षेत्रमें किसी नाकेपर खड़ा होकर पहरा देता है। हम लोगोंने जवानी की नई और खुली हुई आँखोंसे देखा कि हमारे शिक्षकोंने हमारे पैतृक देशके महत्वके सम्बन्धमें जो भाव हम लोगोंके मनमें अंकित किये थे, उनका मतलब यही था कि यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें आकर हम अपने व्यक्तित्वका पूर्ण रूपसे परित्याग कर दें और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इशारा पाते ही ऐसे-ऐसे काम तक करने लग जायँ जो साधारण अवस्थामें एक नीच सेवक भी नहीं कर सकता। अर्थात् संकेत होते ही हम लोग फौजी सलाम करें, उछलकर कायदेसे खड़े हो जायँ, परेड और कूच करें, निरीक्षणके लिए बन्दूकें सामने करें, कभी दाहिनी एड़ीके बल और कभी बाईं एड़ीके बल घूमें और मुड़ें और इसी प्रकारके सैकड़ों हजारों अपमान सहें। पहले हम समझते थे कि युद्धक्षेत्रमें हम लोगोंको कुछ और ही तरहके काम सिखलाये जायँगे; पर यहाँ आकर हमने देखा कि हमें वीरतापूर्ण काम करनेकी उसी प्रकार शिक्षा दी जाती है जिस प्रकार सरकसके घोड़ोंको दी जाती है। लेकिन फिर भी हम लोगोंने अपने आपको बहुत जल्द इस नवीन परिस्थितिका अभ्यस्त बना लिया। पर वास्तवमें हम लोगोंकी समझमें यही आया कि इनमेंसे कुछ थोड़ी सी बातें तो आवश्यक हैं और बाकी सब बातें केवल दिखौआ है। सैनिकोंमें इस प्रकारकी बातोंका विवेक करने और उनकी उपयोगिता या अनुपयोगिता आदि समझनेकी बहुत अच्छी शक्ति होती है।

हमारे साथियोंमें से तीन-तीन और चार-चार लड़के अलग-अलग ऐसी पलटनोंमें बाँट दिये गये थे जिनमें मछुए, किसान और मजदूर आदि सैनिकके रूपमें काम करते थे। हमने उन लोगोंके साथ बहुत शीघ्र मित्रता स्थापित कर ली। क्राप, म्यूलर, कैमेरिक और मैं ये चारो आदमी ९ नम्बरकी टुकड़ीमें भेजे गये थे जिनका अफसर जमादार हिम्मेल्सटोस था।

हमारी छावनी भरमें यह बात प्रसिद्ध थी कि हिम्मेल्सटोस बहुत कड़ा आदमी है और सैनिक मर्यादाके पालनका पूरा-पूरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्यान रखता है। स्वयं हेम्मिल्सटोस को अपनी इस प्रसिद्धिका बहुत कुछ अभिमान था। वह छोटे कदका और नाटा आदमी था और मोम लगाकर अपनी मूछें सदा खड़ी और तावदार रखता था। वह पहले डाकखानेका चिट्ठी-रसाँ था और बारह बरस तक नौकरी कर चुका था। वह क्राप, जैडन और वेस्थसमे और साथ ही मुझसे भी असन्तुष्ट रहता था, क्योंकि वह समझता था कि हम लोग उसकी आज्ञाओंका बहुत कुछ विरोध करते हैं।

एक दिन सवेरेके समय मुझे उसका बिछौना चौदह बार ठीक करके लपेटना पड़ा था। जब मैं उसे लपेटकर तैयार करता था, तब वह उसमें एक ऐब निकालकर उसे बिलकुल खोल देता था और फिरसे बाँधनेके लिए कहता था। उसके पास बाबा आदमके वक्तका एक जोड़ी पुराना जूता था जो सूखकर बिलकुल लोहे की तरह कड़ा हो गया था। मुझे उसपर मसाले आदि लगाकर उसे मुलायम करनेके लिए चौबीस घण्टे खर्च करने पड़े थे (बीच-बीच में कुछ और कामोंके लिए फुरसत भी मिलती थी) और अन्तमें मैंने उन जूतोंको मक्खनके समान ऐसा मुलायम कर दिया कि हिम्मेल्सटोसको भी कुछ कहने या करनेकी जगह बाकी न रह गई। मतलब यह कि उसकी सभी आज्ञाएँ बहुत ही बेढंगी और विकट होती थीं। एक बार उसने क्रापसे और मुझसे कहा था कि बैरकके आस-पास पड़ी हुई सारी बरफ झाड़ू देकर साफ कर डालो। इस कामके लिए हम लोगोंको एक झाड़ू मिली थी और कूड़ा फेंकनेकी एक दौरी। भला मामूली झाड़ूसे बरफ कहाँ तक साफ की जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकती थी ! वह काम करते-करते हम लोगोंके हाथ-पैर बिलकुल ठिठुरकर बेकाम हो गये थे। पर फिर भी हम लोग वह काम बिना पूरा किये छोड़ नहीं सकते थे। वह तो खैरियत हुई कि संयोगसे एक लेफ्टिनेन्टने हम लोगोंको यह काम करते हुए देख लिया और समझ लिया कि यह बिलकुल फजूल काम कराया जा रहा है जिससे हम लोगोंको बहुत अधिक कष्ट हो रहा है। उसने कृपाकर हम लोगोंका पीछा उस कामसे छुड़ाया और हम लोगोंसे ऐसा काम लेनेके लिए हेम्मिलस्टोसको खूब फटकारा। पर इसका भी परिणाम केवल यही हुआ कि हिम्मेलस्टोस हम लोगोंसे और भी अधिक घृणा करने लगा। एक बार लगातार छः हफ्तों तक ऐसा हुआ था कि हर एतवारको मुझे पहरा भी देना पड़ता था और साथ ही बराबर सैनिकोंके निवास-स्थान पर अरदलीका भी काम करना पड़ता था। सारी वरदी और सामान आदिसे लदकर और हाथमें बन्दूक लेकर मुझे एक ऐसे खेतमें कवायद सीखनी पड़ी थी जो बिलकुल हालका जोता हुआ और बहुत गीला था। वहीं मुझे कूच करने की, आगे बढ़नेकी और जमीनपर लेटकर बन्दूक चलानेकी शिक्षा लेनी पड़ी थी। इसका परिणाम यह हुआ था कि मेरा सारा शरीर और कपड़े कीचड़से लथपथ हो गये थे और यहाँ तक कि अन्तमें मैं बिलकुल शिथिल होकर गिर भी पड़ा था। उस समय मेरे हाथोंमें जगह-जगह जख्म हो गये थे और उनमें से खूब खून बह रहा था। पर फिर भी मुझे आज्ञा मिली कि चार घण्टेके अन्दर तुम नहा-धोकर और अपने कपड़े अच्छी तरह साफ करके और सुखाकर हिम्मेलस्टोसके सामने हाजिर हो। एक बार ऐसा हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि आप, वेस्थस, जैडन और मैं चारो आदमी पन्द्रह मिनट तक ऐसे स्थान पर खड़े किये गये थे कि जहाँ बरफ पड़ रही थी। उस समय हम लोगोंके हाथमें दस्ताने भी नहीं थे और सामने खड़ा हिम्मेलस्टोस यह देखता था कि बन्दूक पर रखे हुए हमारे हाथोंकी उँगलियाँ कहीं इधर-उधर हिलती तो नहीं हैं। हम लोगोंको एक छोटी चौकी मिली थी जिसपर एक खानेमें हम लोग अपने कपड़े और सब समान रखते थे। एक बार ऐसा हुआ कि निरीक्षणके समय मेरा वह खाना उस चौकीसे तीन इंच बाहर निकला हुआ पाया गया। इस अपराधका मुझे यह दंड मिला कि रातको दो बजे खाली एक कमीज पहनकर मुझे आठ बार बैरककी छत पर जाना और वहाँसे उतरकर नीचे आँगनमें आना पड़ा। मेरे साथ हिम्मेल्सटोस भी दौड़ता था और बीच बीचमें मेरे नंगे पैर उसके बूटोंसे कुचले भी जाते थे। जब मुझे किरिचकी लड़ाई का अभ्यास कराया जाने लगा, तब मुझे बराबर हिम्मेल्सटोससे लड़ना पड़ता था। मेरे हाथमें तो लोहेका एक भारी हथियार रहता था और उसके हाथमें एक हलकी लकड़ी रहती थी। वह उस लकड़ीसे बहुत सहजमें मेरी बाँहों पर आघात किया करता था जिससे मेरे शरीर पर नीले और काले दाग पड़ गये थे। एक बार तो मुझे उसपर इतना अधिक गुस्सा आया कि मैंने उसके पेटपर खूब कसकर एक हाथ जमाया और धक्केसे उसे जमीनपर गिरा दिया। जब उसने कमांडरसे मेरी शिकायत की, तब कमांडर हँस पड़ा और उससे बोला कि आँखें खोलकर सब काम किया करो। वह हिम्मेल्सटोसको अच्छी तरह पहचानता था और उसकी इस दुर्गतिसे अप्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हुआ था। मैं कई प्रकार के व्यायाम करनेमें बहुत निपुण हो गया था। अक्सर हम लोग उसकी आवाज सुनकर काँप उठते थे, पर फिर भी वह गधा कभी हम लोगोंसे खुश न हुआ।

एक एतवार की बात है। मैं और क्राप दोनों मिलकर एक लग्घेपर पाखानेसे भरी हुई एक बालटी रखकर बैरकके आँगने से बाहर फेंकनेके लिए ले जा रहे थे। उस समय कहींसे हिम्मे-ल्सटोस भी खूब साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए सामने आ गया। हम लोगोंने उसके ठीक सामने शरारतसे वह बालटी इस तरह टेढ़ी कर दी कि उसमेंका सारा मल उसके पैरोंपर गिर पड़ा। वह बेहद बिगड़ा, पर अब कर ही क्या सकता था।

हिम्मे०—यह तुम लोगोंकी शरारत है। तुम्हें इसके लिए सजा दी जायगी।

पर क्राप भी पूरा छँटा हुआ था। वह बोला—पहले इस बातकी जाँच होगी कि इसमें हमारा क्या कसूर था।

हिम्मे०—जरा समझ-बूझकर बातें करो। मैं तुम्हारा अफ-सर हूँ। क्या तुम लोगोंको कुछ भी होश नहीं रह गया था? ठहरो, मैं तुमसे समझूँगा।

पर हम लोगोंका रुख देखकर हिम्मेलस्टोस चुप हो गया और वहाँ से बिना कुछ अधिक कहे-सुने चला गया। चलते समय वह बड़बड़ाता हुआ इतना अवश्य कह गया कि जो पाखाना तुम लोगोंने मेरे बदन पर गिराया है, वही मैं तुम्हें खिलाकर छोड़ूँगा। पर उसकी सारी हुकूमतका वहीं अन्त हो गया। हाँ, एक बार उसने फिर हम लोगोंसे उसी कीचड़ भरे खेतमें खूब कवायद कराई थी और हम लोगोंका सारा शरीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और कपड़े कीचड़से लथ-पथ किये थे। पर हम लोगोंने उस समयकी उसकी समस्त आज्ञाओंका पालन किया था, क्योंकि आज्ञा "आज्ञा" ही है और उसका पालन करना ही पड़ता है। पर उसकी आज्ञाओंका पालन करनेमें हम लोगोंने इतनी अधिक सुस्ती की कि वह भी खूब ही तंग हुआ। हम लोग बहुत ही धीरे-धीरे नीचेकी तरफ झुकते थे, बहुत ही धीरे-धीरे ऊपर उठते थे और इस तरहके सभी कामोंमें बहुत देर लगाते थे। इसी बीचमें वह गुस्सेसे भरकर एक दूसरी आज्ञा दे बैठता था। लेकिन अभी हम लोगोंके शरीरमें पसीना भी नहीं आया था कि बकते-बकते उसका गला बैठ गया। तब उसने हम लोगों को आराम करनेके लिए छोड़ दिया। वह हम लोगोंको सदा "सूअर" कहा करता था; पर फिर भी उसकी ध्वनिमें आदरका कुछ भाव होता था।

उसके दरजेके और भी बहुत से जमादार थे, पर उनमेंसे अधिकांश उसकी अपेक्षा बहुत अधिक भले आदमी थे। पर सभी जमादार यही चाहते थे कि हम सदा इसी पदपर बने रहें; और यह बात तभी हो सकती थी जब वे रंगरूटोंके साथ खूब सख़्तीका बर्ताव करते।

जितनी तरहसे हो सकता था, उतनी तरहसे हम लोगोंको मैदानमें कवायद और सैनिकोंके सब काम सिखलाये जाते थे और हम लोगोंसे इतना अधिक परिश्रम कराया जाता था कि हम लोग मारे क्रोधके बौखला जाते थे। हममें से बहुतेरे तो उस शिक्षाके परिणाम-स्वरूप बीमार पड़ गये थे। हमारा एक साथी, जिसका नाम बुल्फ था, इस परिश्रमके कारण मर ही

3

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया; क्योंकि उसके फेफड़ेमें सूजन आ गई थी। पर यदि हम लोग विद्रोह करते अथवा वहाँसे भाग जाते तो सब लोग हमारी हँसी उड़ाते। हम लोग बहुत ही कठोर, शक्की, निर्दय और दुष्ट हो गये थे; और एक तरहसे यह अच्छा ही हुआ था, क्योंकि हम लोगोंमें इन्हीं सब बातोंकी कमी थी। यदि हम लोग बिना इस प्रकारकी शिक्षा पाये ही खाइयोंमें लड़नेके लिए पहुँच जाते तो वहाँकी दुरवस्था देखकर हममेंसे बहुतेरे अवश्य ही पागल हो गये होते। मतलब यह कि हम लोग इस प्रकार लड़ाई लड़नेके लिए तैयार किये गये थे। हम लोग वहाँसे छोड़कर भागे नहीं, बल्कि हमने अपने आपको उन परिस्थितियोंके अनुकूल बना लिया। हम लोगोंकी अवस्था कम थी, इसलिए हम लोग इस बुरे ढाँचेमें और भी जल्दी ढल गये। पर इन सब बातोंका एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि हम लोगोंमें आपसदारी और सहयोगका एक बहुत प्रबल भाव उत्पन्न हो गया, जिसके परिणाम-स्वरूप हम लोग आपसमें एक दूसरे को भाई और साथी समझने लग गये। और यदि युद्धका कोई सबसे अच्छा परिणाम हुआ था, तो वह यही था।

× × × ×

मैं कैमेरिकके पलंगके पास बैठा था। उसका दम बराबर निकला जा रहा था। हम लोगोंके चारो ओर खलबली-सी मची थी। अभी अस्पतालकी एक रेल-गाड़ी आई थी और उसमेंसे वे घायल चुने जा रहे थे जो चल-फिर सकते थे। एक बार डाक्टर भी उधरसे गुजरा था, पर वह कैमेरिकके पलंगकी ओर बिना देखे ही आगे बढ़ गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने कैमेरिकसे कहा—अच्छा दोस्त, अब मैं चलता हूँ। फिर मिलूँगा।

वह अपनी कोहनीके सहारे खिसककर तकियेके सहारे ही बैठा और बोला—मेरा पैर काट डाला गया है।

उसे पैर कटनेका पता उसी समय लगा था। मैंने सिर हिलाकर कहा—तुम यही खैरियत समझो कि इतनेमें ही तुम्हारा छुटकारा हो गया।

कैमेरिकने कोई उत्तर न दिया। मैंने फिर कहा—अभी तो एक ही पैर कटा है; दोनों पैर कट सकते थे। वेगलरका तो दाहिना हाथ ही काट डाला गया है। और फिर अब तो तुम जल्दी घर भेज दिये जाओगे।

उसने बहुत आतुरतासे मेरी ओर देखकर पूछा—क्या सचमुच तुम समझते हो कि मैं घर भेज दिया जाऊँगा?

मैं—जरूर। बस जहाँ एक बार और तुम्हारा आपरेशन हो गया कि तुम घर भेज दिये जाओगे।

उसने मुझे कुछ झुकनेके लिए संकेत किया। मैं झुककर अपना मुँह उसके मुँहके पास ले गया। उसने कहा—मैं तो नहीं समझता कि वे मुझे घर भेजेंगे।

मैं—ये व्यर्थके विचार छोड़ दो। दस पाँच दिनोंके अन्दर तुम स्वयं देख लोगे कि मैं जो कुछ कहता हूँ, वह ठीक है या नहीं। तुम्हारा तो खाली पैर ही कटा है न! यहाँ तो इससे कहीं बड़े-बड़े अंग काट दिये जाते हैं और फिर ठीक कर दिये जाते हैं।

उसने अपना हाथ उठाकर दिखलाते हुए कहा—जरा मेरी उँगलियाँ देखो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं—आपरेशन होने पर तो ऐसा होता ही है। जरा दस-पाँच दिन अच्छी तरह खाओ-पीओगे तो बिलकुल अच्छे हो जाओगे। यहाँ लोग तुम्हारी देख-रेख तो ठीक तरहसे करते हैं न?

उसने इशारेसे मुझे एक तश्तरी दिखलाई। उसमेंका आधा खाना वह खा चुका था और बाकी आधा अभी तक उसमें बचा पड़ा था। मैंने कुछ उत्तेजित होकर कहा—तुम्हें खूब अच्छी तरह पेट भरकर खाना चाहिए। खाने-पीनेसे ही तो सब कुछ है। यहाँका भोजन तो बहुत अच्छा जान पड़ता है।

वह करवट बदलकर धीरे-धीरे बोला—एक समय था जब कि मैं सोचता था कि मैं जंगलातके महकमेका अफसर बनूँगा।

मैंने उसे तसल्ली देनेके लिए कहा—वह काम तो तुम अब भी कर सकते हो। आजकल बाजारोंमें बहुत अच्छे बने हुए नकली हाथ-पैर आदि अंग मिलते हैं। यदि तुम नकली पैर लगा लोगे तो फिर तुम्हें पता भी न चलेगा कि कभी तुम्हारा पैर काटा गया था। आजकल तो ऐसे नकली हाथ बनते हैं जिनसे आदमी लिख तक सकता है।

थोड़ी देर तक चुपचाप पड़े रहनेके बाद वह बोला—अब तुम म्यूलरके लिए मेरे बूट ले जा सकते हो।

मेरी समझ में न आया कि उसे धीरज बँधानेके लिए और क्या कहूँ। उसके होंठ लटक गये थे, मुँह कुछ फैलकर बड़ा हो गया था और दाँतोंकी सारी चमक जाती रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि मानो वे दाँत खड़िया मिट्टी के बने हुए हैं। उसके शरीरका मांस गल गया था और माथे तथा गालपर की हड्डियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाहर निकल आई थीं। सारे शरीरमें ठठरी ही बाहर निकली हुई दिखलाई पड़ती थी और आँखें बिलकुल धँस गई थीं। कुछ घण्टोंके अन्दर ही उसका शरीरान्त होनेको था।

यह कोई पहला अवसर नहीं था जब कि मैंने इस प्रकार किसी को मरते हुए देखा हो। पहले और भी कई आदमियोंकी मैंने यह दशा देखी थी। पर उसके सम्बन्धमें बात यह थी कि वह मेरा बचपनका साथी था, अतः और लोगों की ऐसी अवस्थाका मुझपर जो प्रभाव पड़ा था, उसकी अपेक्षा उसकी अवस्था देखकर मैं कहीं अधिक विह्वल हो गया था। मैंने उसके लिखे हुए कई निबन्धोंकी प्रतिलिपियाँ तैयार की थीं। हम लोगोंमें वही एक ऐसा था जो कई तरहकी बहुत बढिया बढ़िया कसरतें करना जानता था। जब वह कसरत करता था, तब उसके रेशम से मुलायम बाल उसके चेहरे पर लहराया करते थे। कैन्टोरेक उसकी बहुत प्रशंसा करता था। पर वह सिगरेटसे बहुत घृणा करता था। उसके शरीरका वर्ण बहुत उज्वल था और उसमें कुछ बातें लड़कियोंकी सी थीं।

मैंने अपने जूतोंकी ओर निगाह डाली। वे बड़े और भद्दे थे। उनका ऊपरी भाग बिलकुल नलके समान था और उन्हें पहनकर आदमी खूब हृष्ट-पुष्ट दिखाई पड़ता था। पर ज्यों ही हम लोग नहाने आदिके समय वे जूते उतार देते थे, त्यों ही हम लोगोंकी दुबली टाँगें फिर निकल पड़ती थीं और हम लोग फिर वही सींकिया पहलवान रह जाते थे। हम लोग सिपाही तो थे नहीं, साधारण बच्चोंसे कुछ ही बड़े थे। कोई यह विश्वास नहीं कर सकता था कि हम लोग बड़े-बड़े बोझ ढो सकते हैं। जिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय हम लोग वरदी उतारकर नंगे होते थे, उस समय हम सैनिक नहीं, बल्कि साधारण नागरिक जान पड़ते थे और प्रायः अपने आपको नागरिक ही समझते भी थे। नहाने के समय कैमेरिक बहुत ही दुबला-पतला और बिलकुल बच्चोंके समान जान पड़ता था। वही कैमेरिक इस समय मृत्यु-शय्या पर पड़ा था। पर क्या ? उसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति यही कहता कि यह उन्नीस वर्षका लड़का है और मरना नहीं चाहता। इसे मरने मत दो।

मेरी समझमें कुछ भी ठीक-ठीक नहीं आता था। यहाँ चारों ओर कारबोलिक आदि दवाओंकी दुर्गन्ध भरी हुई थी जिससे आदमीका दम घुटता था।

धीरे-धीरे अँधेरा होने लगा। कैमेरिकके चेहरेका रंग बदलने लगा। एक बार उसने तकियेपरसे सिर उठाया। उसका चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया था। धीरे-धीरे उसका मुँह हिलता हुआ जान पड़ा जिससे मैंने समझा कि वह मुझसे कुछ कहना चाहता है। मैं उसके और पास हो गया। उसने बहुत ही धीरेसे कहा—अगर तुम्हें कहीं मेरी घड़ी मिल जाय तो मेरे घर भेज देना।

वह कुछ और भी कहना चाहता था, पर उससे बोला न गया।

मैंने उसे कोई उत्तर न दिया। अब उससे कुछ कहने-सुनने का कोई फल भी नहीं था। अब उसे कोई सान्त्वना नहीं दे सकता था। अपनी असमर्थताका ध्यान करके मेरी दशा बहुत ही खराब हो गई थी। एक ओर तो मैं उसका चेहरा देखता था जिसपर पूरी तरहसे मुरदनी छाई हुई थी। उसके मुँहमें दाँतोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिवा और कुछ दिखाई ही न देता था और लम्बी-सी नाक बाहर निकली हुई थी। उधर मुझे उसकी माताका ध्यान हो रहा था जो इस समय अपने पुत्रके वियोगमें रोती होगी। मैं सोचता था कि उसी रोती हुई माताको मुझे कैमेरिककी मृत्युका समाचार लिखना होगा।

अस्पतालके अरदली बोतलें आदि लिये हुए इधर उधर घूम रहे थे। एक अरदलीने एक बार पास आकर कैमेरिकके मुँहकी ओर देखा और फिर आगे बढ़ गया। उसके रंग ढंगसे साफ मालूम होता था कि वह कैमेरिकके मरनेकी प्रतीक्षा कर रहा है और सोच रहा है कि यह जल्दी मरे तो यह पलंग और बिछौना खाली हो। उसे इन दोनों चीजोंकी जरूरत थी।

मैंने कैमेरिकके मुँहके पास अपना मुँह ले जाकर इस प्रकार बातें करना आरम्भ किया कि मानों मैं इस समय उसके प्राण बचा ही लूँगा। मैंने कहा—कैमेरिक, शायद तुम किसी ऐसे स्थानमें भेजे जाओगे जहाँ तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत जल्दी सुधर जायगा। वहाँ तुम बढ़िया बँगलेमें रखे जाओगे और उसकी खिड़कियोंसे दूरके हरे-भरे खेत और वृक्ष आदि देख सकोगे। आजकलकी ऋतु भी बहुत ही सुन्दर है। खेतोंमें पकी हुई फसलें खड़ी हैं। जब सन्ध्याको सूर्य अस्त होने लगता है, तब हरे-भरे खेत सीपके समान जान पड़ते हैं। वहाँ तुम फिर एक छोटा-सा गड्ढा खोद सकोगे और उसमें मछलियाँ रख सकोगे। वहाँ तुम बिना किसीसे पूछे आनन्दसे बाहर निकलकर टहल सकोगे और अगर चाहोगे तो पियानो भी बजा सकोगे।

मैंने फिर झुककर उसे देखा। उस समय उसका चेहरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अँधेरेमें था। वह अभी तक साँस ले रहा था, पर बहुत ही धीरे-धीरे। उसका सारा चेहरा आँसुओंसे भींग गया था। मैंने भी मूर्खताकी अनेक बातें कहकर उसके सामने कैसे हवाई किले बाँधे थे!

मैंने अपना हाथ उसकी गरदनमें डालकर और उसके मुँहके पास अपना मुँह ले जाकर कहा—लेकिन कैमेरिक, अब तुम सो जाओ।

उसने कोई उत्तर न दिया। उसके गालोंपरसे आँसुओंकी धारा बह रही थी। मैं उसके आँसू पोंछना चाहता था, पर मेरा रूमाल बहुत गन्दा था।

एक घंटा और भी बीत गया। मैं चुपचाप बैठा हुआ इसलिए टकटकी लगाये उसकी ओर देख रहा था कि शायद वह कुछ कहे। मैं सोचता था कि यदि वह जोर जोरसे रोने और चिल्लाने लगेगा तो मैं क्या करूँगा। पर वह चिल्लाता नहीं था, सिर्फ रोता ही था। उसका सिर एक ओर लटक गया। अब वह अपनी माँ या भाई-बहनोंका भी कोई जिक्र नहीं करता था। अब वह कुछ भी न बोलता था और सब बातोंका ध्यान छोड़ बैठा था। इस समय उसे केवल अपने प्राणों और युवावस्थाका ध्यान था और ऐसी अवस्थामें मरनेके दुःखसे दुःखी होकर ही वह रो रहा था। जिस समय मैंने टिजेनको मरते देखा था, उस समय भी मुझे बहुत अधिक दुःख हुआ था। उसने अपने हाथमें एक कटार ले रखी थी और उसीसे डराकर वह डाक्टरको अपने बिस्तरके पास नहीं आने देता था। अन्तमें वह उसी अवस्थामें मर गया था। पर उसे मरते देखकर मुझे जो दुःख हुआ था, उसकी अपेक्षा कैमेरिकको मरते देखकर मुझे कहीं अधिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुःख हुआ था। उस समय मारे शोकके मेरी बहुत ही बुरी दशा हो रही थी।

अचानक कैमेरिक कराहने लगा और उसके गलेसे घरघराहटका शब्द सुनाई दिया। मैं दौड़कर कमरेसे बाहर निकल आया और एक अरदलीसे पूछने लगा कि डाक्टर कहाँ हैं। इतनेमें मुझे सामनेसे सफेद कपड़े पहने हुए डाक्टर आता दिखाई दिया। मैंने झपटकर उसका कपड़ा पकड़ लिया और उससे कहा—जल्दी चलिये, कैमेरिक मर रहा है।

उसने मेरे हाथसे अपना कपड़ा छुड़ाकर पास खड़े हुए अरदलीसे पूछा—यह कैमेरिक कौन है?

अरदली—२६ नम्बरका पलंग। उसकी जाँघ काट दी गई है।

डाक्टरने खिजलाकर कहा—भला इतनेसे मैं क्या समझ सकता हूँ! मैंने आज पाँच आदमियोंके पैर काटे हैं।

डाक्टरने मुझसे चले जानेका संकेत किया और अरदलीसे कहा—जाओ देखो। बस इतना कहकर वह जल्दी-जल्दी उस कमरेकी ओर चला गया जिसमें घायलोंकी चीर-फाड़ की जाती थी।

जब मैं अरदलीके साथ लौटने लगा, तब मेरा शरीर मारे क्रोधके काँप रहा था। अरदलीने मेरी ओर देखकर कहा—आज सवेरे पाँच बजेसे अभी तक बराबर एक-पर-एक आपरेशन ही हो रहा है। आज सवेरेसे यहाँ सोलह आदमी मर चुके हैं और तुम्हारा साथी सत्रहवाँ है। मैं समझता हूँ कि रात होते-होते एक कोड़ी पूरी हो जायगी।

मेरी बुद्धि और शरीर दोनों ही बेकाम हो गये थे, पर उस समय मैं कुछ कर ही नहीं सकता था। मुझे ऐसा जान पड़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था कि अब मैं गिर पड़ूँगा और गिरते ही मर जाऊँगा।

हम लोग कैमेरिकके पलंगके पास पहुँचे। तब तक उसके प्राण निकल चुके थे। उसका चेहरा अभी तक आँसुओंसे भींगा हुआ था। उसकी आँखें आधी खुली हुई थीं और बिलकुल पीली पड़ गई थीं।

अरदलीने मेरी पसलीमें उँगली गड़ाते हुए पूछा—क्या तुम इसका सब सामान अपने साथ ले जाओगे?

मैंने सिर हिलाकर स्वीकृति सूचित की।

अरदली—हम इसे यहाँ से अभी उठा ले जायँगे, क्योंकि हमें पलंग और बिस्तरकी जरूरत है। बाहर बहुत से लोग जमीन पर पड़े हैं।

मैं कैमेरिककी सब चीजें सँभालने लगा। अरदलीने पूछा–इसकी वह किताब कहाँ है जिसमें तनख्वाह दर्ज होती है? मैंने कहा कि वह शायद दफ्तर में होगी। इतना कह कर मैं वहाँ से चल पड़ा। लोग कैमेरिककी लाश वहाँ से हटाने का प्रबन्ध करने लगे।

बाहर निकलते ही मैंने देखा कि बहुत अधिक अँधेरा है और बहुत तेज हवा चल रही है। मैंने खूब अच्छी तरहसे गहरा साँस लेना आरम्भ किया। उस समयकी हवा मुझे ऐसी अच्छी और कुछ-कुछ गरम मालूम हुई, जैसी पहले और कभी नहीं हुई थी। अचानक मुझे युवतियों, हरे-भरे खेतों और गोरे-गोरे बालकोंका ध्यान हो आया। मैं बहुत जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगा। रास्तेमें सामनेसे आते हुए मुझे अनेक सैनिक मिले। मुझे उनकी आवाज तो सुनाई पड़ती थी, पर मैं उनकी कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात समझ नहीं पाता था। ऐसा जान पड़ता था कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे जबरदस्ती बहुत तेजीके साथ आगे बढ़ाये चलती है। रह-रहकर आकाशमें बिजलीकी-सी चमक होती थी और सामने ऐसी गरज सुनाई पड़ती थी जो बहुत दूर पर बजते हुए ढोलोंके समान जान पड़ती थी। मुझे भूख मालूम हुई और वह भूख साधारणसे बहुत तेज थी।

झोंपड़ेके बाहर म्यूलर खड़ा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने उसे कैमेरिकके जूते दे दिये। अन्दर चलकर उसने वे जूते पहनकर देखे। वे उसके पैरोंमें बहुत ठीक आते थे।

म्यूलरने बहुत बढ़िया जलपान निकालकर मेरे सामने रखा। उसके साथ गरम चाय और जौकी शराब भी चलने लगी।

तीसरा परिच्छेद

हम लोगोंकी सहायताके लिए कुमककी नई सेना आ पहुँची है। जो स्थान खाली हुए थे, उनकी पूर्त्ति हो गई है। कुछ लोग तो पुराने ही हैं, पर पचीस आदमी नये आये हैं। वे उमरमें हम लोगोंसे भी दो-दो बरस छोटे हैं। उन्हें पहले-पहल देखकर क्रापने मुझसे पूछा—तुमने उन बच्चोंको देखा?

मैंने सिर हिलाकर सूचित किया कि हाँ देखा है। हम लोगोंने बाहर मैदानमें बैठकर हजामत बनाई और तब ठाठसे फिर एक बार उन नये रंगरूटोंको देखने निकले। उन्हें देखकर हमें ऐसा जान पड़ता था कि मानों हम बहुत पुराने और तजरुबेकार सिपाही हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैजिन्स्की भी आकर हम लोगोंके साथ शामिल हो गया। हम लोग अस्तबलके पाससे होते हुए और आगे वहाँ पहुँचे जहाँ उन नये आये हुए बालकोंके ठहरनेका स्थान था। उन लोगोंको जहरीली गैससे बचनेके लिए मुँहपर लगानेका थैला और कहवा बाँटा जा रहा था।

कैजिन्स्कीने उनमें से एक लड़केसे पूछा—क्यों जी, तुम लोगोंको तो बहुत दिनोंसे अच्छा भोजन न मिला होगा ?

वह बहुत बुरी तरह मुँह बनाकर बोला—सवेरेसे सन्ध्या तक गाजरकी ही रोटी, गाजरकी ही तरकारी और गाजरका ही साग मिलता रहा है।

कैजि०—गाजरकी रोटी ! तब तो तुम बड़े भाग्यवान् हो। अरे यहाँ तो लकड़ीके बुरादेकी रोटियाँ मिला करती हैं। तुम्हें फलियों की तरकारी अच्छी लगती है ? अगर कहो तो मैं तुम्हें थोड़ी सी दे सकता हूँ।

लड़का बहुत प्रसन्न हुआ। कैजिन्स्कीने उससे कहा–अच्छा तो फिर जाओ, कोई बरतन ले आओ।

जब वह बरतन ले आया, तब हम लोग कैजिन्स्कीके पीछे-पीछे यह देखनेके लिए चले कि वह क्या करता है और क्या देता है। उसका बिस्तर पुआलका था और उसके पास ही एक छोटा सा टाँका रखा था। उसमें कुछ मांस और फलियाँ आदि रखी थीं। कैजिन्स्की उसके सामने इस तरह डटकर खड़ा हो गया जिस तरह कोई बहुत बड़ा सेनापति अपनी सेनाके सामने खड़ा होता है। वह फलियाँ और मांस देखकर हम लोगोंको बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें इस प्रकार का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बढ़िया भोजन कहुत कम मिलता है। मैंने कैजिन्स्कीसे पूछा—क्यों जी, यह माल तुम कहाँ से मार लाये ?

कैजि०—जिसने मुझे दिया था, उसे मैंने गुब्बारेके रेशमके तीन टुकड़े दिये थे। उसने यह चीज स्वयं ही मुझे प्रसन्नतासे दी थी। ये फलियाँ खानेमें बहुत स्वादिष्ट हैं।

इसके बाद कैजिन्स्कीने बड़ी शानसे उस बालकको उसमें से थोड़ी सी फलियाँ और मांस दिया और उससे कहा—अबकी वार जब तुम फिर फलियाँ लेने आना, तब अपने साथ दूसरे हाथमें कुछ सिगार या तम्बाकू भी जरूर लेते आना। इसके बाद वह हम लोगोंकी ओर घूमकर बोला—अच्छा, अब आप लोग भी अपना रास्ता लीजिये।

× × × ×

बिना कैजिन्स्कीके हम लोगोंका काम ही नहीं चल सकता। सबको पाँच ही इन्द्रियाँ होती हैं, पर उसमें एक छठी इन्द्रिय भी है। इस तरहके लोग प्रायः सभी जगह होते हैं, पर पहले कोई उनकी कदर नहीं करता। हर एक टुकड़ीमें कैजिन्स्कीकी तरह के एक दो आदमी जरूर होते हैं। मैं जानता हूँ कि कैजिन्स्की सबसे अधिक चलता पुरजा और चालाक है। पेशेके विचारसे तो वह मोची है, पर इससे क्या होता है ? वह सभी तरहके पेशोंका काम बहुत अच्छी तरह जानता और समझता है। जो लोग उसके साथ दोस्ती कर लेते हैं, वे बहुत मजेमें रहते हैं; जैसे क्राप और मैं। वेस्थसके साथ भी उसकी थोड़ी बहुत पटरी बैठती है। वेस्थससे वह एक और काम भी लेता है। जब कभी कहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार-पीट या लात-घूँसे की नौबत आती है, तब कैजिन्स्की उसे आज्ञा देकर आगे बढ़ा देता है। वेस्थस भी खूब मजेमें भिड़ जाता है। मार-पीट करने में वह बहुत तेज है।

एक बारकी बात है कि रातके समय हम लोग एक ऐसे स्थानमें पहुँचे, जहाँ पहले कभी नहीं गये थे। वह स्थान गोलेबारी के कारण बहुत नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। हम लोग एक ऐसी छोटी अँधेरी कोठरीमें ठहरे जिसमें पहले कोई कारखाना था। उसकी दीवारोंमें गोलोंसे बड़े-बड़े छेद हो गये थे। वहाँ काठके कुछ बक्सोंमें लोहेका जाल फँसाकर सोनेके लिए इन्तजाम किया गया था। पर लोहेका जाल बहुत कड़ा था और शरीरमें गड़ता था। उसपर बिछानेके लिए भी हम लोगोंके पास कोई चीज न थी। हम लोगोंके मोमजामे बहुत पतले थे। कम्बल हम लोग ऊपर ओढ़ना चाहते थे, क्योंकि सरदी बहुत थी। कैजिन्स्कीने पहले इधर-उधर देखा और तब वेस्थससे कहा—जरा तुम मेरे साथ चलो। दोनों आदमी कुछ तलाश करनेके लिए निकले। आध घण्टेके अन्दर ही वे दोनों बहुत ढेर-सा पुआल लेकर आ पहुँचे। वह पुआल उन्हें घोड़ोंके रहनेके खानेमें मिला था। अब यदि हम लोगोंको बहुत तेज भूख न लगी होती तो हम लोग आनन्दसे सो सकते थे। पर कठिनता यह थी कि सबको बहुत अधिक भूख लगी थी।

एक गोलन्दाज था जो कुछ दिनों तक क्रापके पड़ोसमें रह चुका था। क्रापने उससे पूछा—क्यों जी, यहाँ कहीं पासमें सेना-विभागका बावर्चीखाना भी है?

वह खूब जोरसे हँसकर बोला—वाह! बावर्चीखानेकी खूब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कही ! अजी यहाँ तो रोटीका एक छिलका भी कहीं नहीं मिल सकता।

कैजि०—क्या यहाँ पासमें कोई बस्ती भी नहीं है ?

गोलन्दाज—यहाँ कुछ लोग रहते तो हैं, पर वे आप ही इतने दरिद्र हैं कि बावर्चीखानोंके चारों तरफ चक्कर लगाया करते हैं और किसी तरह भीख माँगकर पेट भरते हैं।

कैजि०—यह तो बहुत बुरा हुआ। तब तो अब हम लोगों को कमर खोल देनी चाहिए और किसी तरह रात काटनी चाहिए। अब जब सवेरे खानेको आवेगा, तभी कुछ मिलेगा।

लेकिन फिर भी मैंने देखा कि कैजिन्स्कीने अपनी टोपी उठा कर पहनी। मैंने पूछा—कहाँ चले ?

कैजि०—जरा चलूँ, घूम-फिरकर देख आऊँ कि यह जगह कैसी है और यहाँका क्या हाल-चाल है।

गोलन्दाजने कुछ तानेके तौरपर कहा—अच्छी बात है; जाओ घूम-फिर आओ। पर खाने-पीनेका बहुत ज्यादा सामान मत उठा लाना।

हम लोग निराश होकर लेट गये और सोचने लगे कि अगर हो सके तो बावर्चीखाने तक चलकर खानेको ले आवें। पर इस समय वहाँ जाना और वहाँसे लौटकर आना बहुत जोखिमका काम था। इसलिए हम लोगोंने चाहा कि एक झपकी ले लें।

क्रापने एक सिगरेटके दो टुकड़े किये और उनमेंसे एक टुकड़ा मुझे दे दिया। जैडन बतलाने लगा कि उसके देशमें लोग कैसा भोजन करते हैं। वह बोला कि अगर सूअर के मांसके साथ फलियाँ और आलू मिलाकर बनाये जायँ तो वह बहुत स्वादिष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होते हैं; और तीनों चीजोंको अलग-अलग रखनेसे उनका सारा मजा ही जाता रहता है। इतनेमें किसीने उससे कहा कि अब तुम चुपचाप सो जाओ, नहीं तो तुम्हारी खबर ली जायगी। इसके बाद उस बड़े कमरेमें पूरी शान्ति हो गई। बोतलोंके मुँह-पर रखी हुई कुछ मोमबत्तियाँ जल रही थीं और गोलन्दाज रह-रहकर खाँसता और खखारता था।

हम लोगोंको कुछ नींद आ ही रही थी कि इतनेमें दरवाजा खुला ओर कैट (कैजिन्स्कीका संक्षिप्त नाम) आता हुआ दिखाई दिया। उसे देखकर मुझे ऐसा जान पड़ा कि मानों मैं स्वप्न देख रहा हूँ। उसकी बगलमें दो बड़ी-बड़ी रोटियाँ थीं और हाथमें घोड़ेके ताजे गोश्तसे भरा हुआ एक थैला था जिसमेंसे खून टपक रहा था।

खानेका यह सब सामान देखते ही गोलन्दाजके मुँहसे तम्बाकू पीनेका पाइप गिर पड़ा। रोटियोंको देखकर वह बोला—अरे ये तो रोटियाँ हैं! गरमा-गरम!

कैटने कोई उत्तर न दिया। उसके पास रोटियाँ थीं; फिर चाहे वे गरम हों या ठंढी, इसकी किसीको परवा नहीं थी। मुझे यह दृढ़ निश्चय है कि यदि वह किसी बड़े रेगिस्तानके बीचमें भी ले जाकर खड़ा कर दिया जाता तो वह आध घंटेके अन्दर ही कहीं से खाने भरको भुने हुए गोश्त, छुहारों और शराबका कोई-न-कोई प्रबन्ध अवश्य कर लेता।

कैटने हेई वेस्थससे कहा—थोड़ी लकड़ी काटो।

इसके बाद उसने तुरन्त अपने कोटके अन्दरसे एक कड़ाही निकाली और साथही जेबमेंसे थोड़ा सा नमक और चरबी भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकाली। उसने सब बातोंका पहले ही इन्तजाम कर लिया था। हेईने जमीनपर आग जलाई। उससे सारे कमरेमें प्रकाश हो गया। हम सब लोग अपने अपने बिस्तरपरसे उठ बैठे।

गोलन्दाज सोच-विचारमें पड़ गया। वह सोचता था कि यदि मैं इस समय कैटकी प्रशंसा करूँ तो मुझे भी कुछ खानेको मिल जायगा। पर कैजिन्स्कीने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं और अपने काममें लगा रहा।

घोड़ेका गोश्त भूनना और पकाना कैजिन्स्कीको बहुत अच्छी तरह आता है। उसका भुना और पकाया हुआ गोश्त बहुत मुलायम होता है। घोड़े का गोश्त तुरन्त ही कड़ाहीमें नहीं छोड़ देना चाहिए। इससे तो वह और भी सख्त हो जाता है। उसे पहले थोड़े पानीमें उबाल लेना चाहिए। हम सब लोग हाथमें एक-एक चाकू लेकर एक घेरा बनाकर बैठ गये और पेट भरने लगे।

कैट भी बड़ा ही अद्भुत आदमी है। यदि कभी ऐसा अवसर आवे कि साल भरमें केवल एक ही घंटेका ऐसा समय मिले जब कि किसी एक ही स्थानमें खानेकी कोई चीज मिले, तो उस एक घंटेके अन्दर ही वह सिरपर टोपी रखकर निकल खड़ा होगा और खाना मिलनेकी ठीक जगह पर सीधा इस प्रकार पहुँचेगा कि मानों वह दिग्दर्शक यन्त्र देखकर चला जा रहा है। ऐसा जान पड़ेगा कि मानों उसे बैठे-बैठे ईश्वरकी ओर से ऐसा आभास हुआ है कि इस समय अमुक स्थान पर पहुँचते ही भोजन मिल जायगा।

उसे सब जगह सभी चीजें मिल जाती हैं। यदि कड़ाकेका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाड़ा पड़ता हो तो वह दमचूल्हा और लकड़ियाँ, सूखी घास और पुआल, सभी कुछ ले आवेगा। यहाँ तक कि टेबुल और कुर्सियाँ भी ले आवेगा। और इन सबके सिवा खाने-पीनेका सामान तो वह अवश्य ही लावेगा। ऐसा जान पड़ेगा कि मानों उसने जादूके जोरसे ये सब चीजें हवामेंसे पैदा कर ली हैं।

इस समय सबसे बड़ी बात यह थी कि उसके पास चार बक्स केंकडे थे।

हम लोग झोंपड़ेमें उस तरफ बैठे हैं जिधर धूप आती है। अलकतरे और पैर के पसीनेकी बदबू आ रही है। कैजिन्स्की भी मेरे पास ही बैठा है। उसे बातें करना बहुत अच्छा लगता है। जैडन एक मेजरको ठीक तरहसे सलाम नहीं कर सका था; इसके दंड-स्वरूप हम लोगोंको एक घंटे तक सलाम करनेकी कवायद करनी पड़ी थी। कैजिन्स्की बराबर इसी दंडकी बात सोच रहा है। वह बात उसके दिमागसे निकलती ही नहीं।

थोड़ी देर बाद वह बोला—तुम मेरी बात याद रखो; हम लोग लड़ाई में हार रहे हैं, क्योंकि हम लोग बहुत अच्छी तरह सलाम कर सकते हैं।

क्राप उठकर खड़ा हो गया। उसके हाथमें लपेटा हुआ पायजामा था और उसके पैर नंगे थे। अपने धोये हुए मोजे उसने घास पर सूखनेके लिए फैला दिये। कैटने आकाशकी ओर देखकर ईश्वरसे प्रार्थना करते हुए कहा—वह सब राई-रत्ती देखता है और सबका छोटे-से-छोटा कष्ट सुनता है।

कैट और क्रापमें बहस होने लगी। उस समय हम लोगोंके सिर पर दो हवाई जहाज लड़ रहे थे। प्रश्न हुआ दोनोंमेंसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन जीतेगा। क्राप और कैटमें इसी बात पर एक एक बोतल जौ की शराबकी शर्त लगी। उसे एक बहुत पुराना वाक्य याद था जिसका आशय यह था कि (सबको समान भोजन और समान वेतन दो; युद्ध आप-से-आप एक दिनमें बन्द हो जायगा।) बस वह बार-बार यही बात दोहराता था।

लेकिन क्राप बहुत विचारशील आदमी है। वह कहता है कि जिस समय युद्धकी घोषणा हो, उस समय एक मेला-सा लगना चाहिए। वह मेला वैसा ही हो जैसा साँड़ोंकी लड़ाईके समय होता है। खूब बाजे बजने चाहिएँ और दर्शकोंके लिए टिकट बिकने चाहिएँ। बीचमें एक बहुत बड़ा अखाड़ा होना चाहिए जिसके चारो ओर तमाशा देखनेवाले दर्शक बैठें। जो देश आपसमें युद्ध करना चाहते हों, उनके मन्त्रियों और सेनापतियोंको उस अखाड़ेमें उतार देना चाहिए और सबके हाथमें एक-एक गदा दे देनी चाहिए। बस वही मन्त्री और सेनापति आपसमें लड़-भिड़कर युद्धका निपटारा कर लें। जिस देशके मन्त्री और सेनापति जीते बच जायँ, उसी देशकी जीत मानी जाय। यह व्यवस्था एक तो बहुत उचित और न्यायसंगत होगी और दूसरे इसमें कुछ खर्च भी नहीं होगा। उलटे बहुत कुछ आमदनी हो रहेगी। आज-कलकी लड़ाईमें तो जबरदस्ती ऐसे लोग पकड़कर भेजे जाते हैं जिनका लड़ाईसे कोई हानि-लाभ नहीं होता। इस लड़ाईकी अपेक्षा वह लड़ाई बहुत अच्छी और ठीक होगी।

यह विषय यहीं छोड़ दिया गया और इसके बाद कवायदके सम्बन्धकी बात-चीत शुरू हुई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी आँखोंके सामने एक चित्र सा खिंच गया। बैरकके सामने का खुला हुआ मैदान है जो दोपहरके सूर्यकी किरणोंसे खूब तप रहा है। सारे मैदानमें मानों आग बरस रही है। सब बैरकें खाली पड़ी हैं। पशु-पक्षी और पेड़-पत्ते तक सो रहे हैं। कहीं किसीका कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ता। पर ऐसे समयमें भी बाजा बजानेवाले अपने बाजों पर रियाज़ कर रहे हैं। कैसा अच्छा सामंजस्य और स्वर-साम्य है! दोपहर की तपिश, बैरकका मैदान और बाजोंका रियाज!

बैरकोंकी खिड़कियाँ बन्द हैं। उनमें से कुछ खिड़कियों पर सूखने के लिए पाजामें लटक रहे हैं। कमरोंमें बहुत कुछ ठंढक है और सब लोग उनमें जाकर आराम करनेके लिए लालसा भरी दृष्टिसे देख रहे हैं।

यदि ये कमरे आराम करनेके लिए न मिलें तो इन्हें भी जाने दीजिए। युद्धक्षेत्रमें सिपाहियोंके रहनेके लिए छोटी छोटी झोपड़ियाँ बनती हैं जो प्रायः अँधेरी और गन्दी होती हैं। यहाँ उन्हीं झोपड़ियोंको लोग गनीमत समझते हैं और उन्हींमें घरका सा सुख अनुभव करते हैं। पर यहाँ तो वह भी मयस्सर नहीं है।

कैजिन्स्कीने इन सबका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचा। यदि इस प्रकारका एक भी स्थान हम लोगोंको आराम करनेके लिए मिल जाता तो उसके बदलेमें हम लोग अपना सर्वस्व दे देते। यहाँ तक तो हम लोग पीछे हट आये। अब इससे और अधिक पीछे हटनेका विचार हम लोग अपने मनमें भी नहीं ला सकते।

यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें तो तड़का होते ही अनेक प्रकारकी शिक्षाएँ शुरू हो जाती हैं। आरम्भमें सब रंगरूटोंको मैदानमें खड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके शिक्षक पूछने लगता है—"९८ नं० वाली बन्दूकके अंगों के नाम बताओ।" दोपहरकी जलती धूपमें कसरत कराई जाती है। "एक क़दम आगे।" "दाहिने घूमो।" "होशियार।" और न जाने क्या क्या अट्ट-सट्ट। सन्ध्या हुई तो बावरचीखानेमें जाकर खाने-पीनेकी खबर लाओ।

अब कुछ पिछली घटनाओंका जिक्र छिड़ा। क्राप अचानक हँस पड़ा और बोला—लोनेमें गाड़ी बदलो।

हम लोगोंके जमादारका यह एक प्यारा खेल सा था। लोने वास्तवमें रेलवेके एक जंकशनका नाम था जहाँ लोगोंको गाड़ी बदलनी पड़ती थी। हिम्मेलसटोस प्रायः बैरकके कमरोंमें ही हम लोगोंसे यह अभ्यास कराया करता था कि वहाँ किस तरह गाड़ी बदलनी चाहिए। इसमें उसका उद्देश्य यह था कि हम लोगोंमेंसे जो सैनिक छुट्टी पर जायँ, वे वहाँ गाड़ी बदलनेके समय रास्ता न भूल जायँ। वहाँ गाड़ी बदलकर दूसरी लाइन पर जानेके लिए एक ऐसे रास्ते से होकर जाना होता था जो जमीनके नीचेसे होकर गया था। वहाँ रास्ता बदलनेका अभ्यास करानेके लिए सब लोगोंको अपने-अपने पलंगकी बाईं तरफ खड़ा कराया जाता था। पलंग मानों जमीनके नीचेका रास्ता होता था। जब सब लोग कायदेसे खड़े हो जाते थे, तब हिम्मेलसटोस हुकुम देता था—"लोनेमें गाड़ी बदलो।" बस सब लोग झटसे पलंगके नीचे घुसकर उस पार निकल जाते थे। गाड़ी बदलनेका यह अभ्यास हम लोगोंसे घंटों कराया जाता था।

इसी बीचमें एक जरमन हवाई जहाज पर गोला लगा। वह फटकर पुच्छल तारेकी तरह नीचे गिरा। उसके चारो तरफ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत दूरतक धूँआँ फैला हुआ था। क्रापकी शराबकी बोतल खो गई थी। वह घबराकर मनी बेगमें से पैसे निकालकर गिनने लगा।

मैंने कहा—जिस समय हिम्मेल्सटोस डाकिया था, उस समय उसकी कुछ और ही बात थी। लेकिन यहाँ आकर सरजेंट होते ही उसे न जाने क्या हो गया।

क्राप—तुम यह न समझना कि यहाँ यही एक हिम्मेल्सटोस है। यहाँ इसके जैसे सैकड़ों हजारों भरे पड़े हैं। यहाँ ज्यों ही किसी आदमीको कोई पद या बिल्ला मिलता है, त्यों ही उसकी सब बातें बदल जाती हैं। उसकी आँखोंमें चरबी छा जाती है।

मैं—यह सब इसी वरदीका प्रभाव है।

कैजि०—हाँ, कुछ तो वरदीका भी प्रभाव होता है, पर इसका मूल कारण कुछ और ही है। अब मान लो कि तुम्हारे पास एक कुत्ता है। जन्मसे ही तुम उसे आलू या रोटी खिलाकर रखते हो। अब यदि तुम किसी दिन उसके सामने गोश्तका एक टुकड़ा फेंक दो तो वह तुरन्त उसपर झपट पड़ेगा, क्योंकि वह उसका स्वाभाविक भोजन है। यही बात मनुष्यके सम्बन्धमें भी है। यदि उसे अपने सामने जरा सा अधिकार दिखाई दे तो वह भी उसपर उसी कुत्तेकी तरह झपटता है। मनुष्य भी वास्तवमें एक प्रकारका पशु ही है। जिस तरह रोटीके ऊपर थोड़ा सा मक्खन या घी लगाकर उसका बाहरी रूप कुछ सुन्दर और कोमल कर दिया जता है, उसी प्रकार मनुष्य रूपी रोटी पर भी शिष्टताका मक्खन लगा रहता है। और फिर सारी सैनिक व्यवस्थाका आधार ही यह अधिकार ठहरा। इसमें सदा एक आदमी का दूसरों पर अधिकार रहेगा ही। यहाँ सबसे बड़ी खराबी यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि हर एक आदमीके हाथमें आवश्यकतासे कहीं अधिक अधिकार होता है। सिपाहीको जमादार तंग करता है; जमादारको लेफ्टिनेन्ट तंग करता है; और लेफ्टिनेन्टको कप्तान तंग करता है। बस इसी तरह एक दूसरेको तंग करनेमें लोग अपने आपको भूल जाते हैं। सभी लोग जानते हैं कि हम अधिकार पाकर अपने मातहतोंको तंग कर सकते हैं; इसी लिए जल्द ही उन्हें दूसरोंको तंग करनेकी कुछ न कुछ आदत सी हो जाती है। एक सीधा सा उदाहरण लो। हम लोग कवायदके मैदानसे बेहद थककर लौट रहे हैं। आते ही हुकुम होता है—गाना शुरू करो। भला उस वक्त कोई गावे क्या, खाक़! जैसे तैसे मुरदोंकी तरह कुछ गा-गूकर बला टाली जाती है। बस तुरन्त ही किसी अपराधके कारण सारी टुकड़ी फिर मैदानमें निकाल दी जाती है और दंड-स्वरूप उससे फिर घन्टे भर कवायद कराई जाती है। कवायद करके लौटने पर फिर गाने का हुकुम मिलता है और फिर गाना शुरू होता है। आखिर इन सब बातोंका मतलब क्या है? मतलब सिर्फ यही है कि बहुत अधिक अधिकार मिल जानेके कारण अफसरका दिमाग खराब हो जाता है। इसके लिए कोई उसे दोषी नहीं ठहरा सकता। उलटे लोग यह कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं कि वह अपनी टुकड़ीकी बहुत अच्छी व्यवस्था करता है। यह तो एक बहुत छोटी सी और मामूली बात है। हर काममें इसी तरहकी और भी बहुत-सी बड़ी-बड़ी बातें हुआ करती हैं। अतः मैं तुमसे एक बात कहता हूँ। भला बतलाओ तो शान्ति-कालमें कौन सा ऐसा काम या पद हो सकता है जिसपर ऐसे आदमी नियुक्त होकर अपने मातहतोंसे इसी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का बरताव कर सकते हैं ? यदि वहाँ ये इस तरहके काम करें और इस तरह के हुकुम जारी करें तो इनकी नाक साबुत बच सकेगी ? यह सब नादिरशाही तो सेनामें ही चल सकती है। और फिर एक बात यह भी है कि सामान्य जीवनमें जो आदमी जितना ही सामान्य और तुच्छ होता है, सेनामें आने और अधिकार पाने पर उसका दिमाग उतना ही ज्यादा खराब हो जाता है।

क्राप—लेकिन फिर भी सेनामें व्यवस्था और मर्यादाका पालन तो होना ही चाहिए।

कैजि०—जरूर और इसीकी तो वे व्यवस्था करते हैं। मैं यह कब कहता हूँ कि व्यवस्था न रहे। पर व्यवस्थाके नाम पर अधिकारका दुरुपयोग तो नहीं होना चाहिए। तुम किसानों, मजदूरों और लोहारों आदिको व्यवस्था और नियम-पालनका महत्व सिखलाना चाहते हो। वे बेचारे और कुछ तो जानते नहीं; सिर्फ इतना समझते हैं कि हम लोग जबरदस्ती पकड़कर यहाँ लड़नेके लिए भेज दिये गये हैं। तो भी इतना वे अवश्य जानते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यहाँ साधारण सिपाहियोंके साथ जैसे कठोर व्यवहार और उग्र अत्याचार होते हैं, उन्हें देखते हुए यह एक परम आश्चर्यकी ही बात है कि सिपाही फिर भी यहाँ टिके रहते हैं।

कैजिन्स्कीकी यह बात सभी लोग मान लेते हैं। कोई उसका विरोध नहीं करता। सभी लोग जानते हैं कि कवायद वहीं नहीं होती, जहाँ सिपाही लोग लड़ते हैं। उस स्थान से दो चार मील पीछे हटते ही फिर कवायद होने लगती है और फिर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वही बेहूदा सलाम और बेहूदा उछल-कूद शुरू हो जाती है। यहाँका यह एक बहुत ही कठोर नियम है कि सिपाहियोंको सदा और प्रत्येक परिस्थितिमें किसी-न-किसी काममें लगे रहना चाहिए, उन्हें कभी खाली न रहना चाहिए।

इतनेमें जैडन वहाँ आ पहुँचा। उस समय वह बहुत ही प्रसन्न जान पड़ता था। वह आते ही मारे प्रसन्नताके उछलकर बोला—हिम्मेल्सटोस यहाँ लड़ाईके मैदानमें आ रहा है। वह वहाँसे चल पड़ा है।

× × × ×

जैडन अपने मनमें हिम्मेल्सटोससे बहुत ही बुरा मानता है और इसका कारण यह है कि बैरकमें रहनेके समय हिम्मेल्स-टोसने बहुत ही बुरी तरह जैडनको एक शिक्षा दी थी। जैडनको एक रोग यह था कि वह रातके समय सोये-सोये बिस्तर पर पेशाब कर दिया करता था। हिम्मेल्सटोस कहता था कि यह रोग नहीं है, बल्कि जैडनकी सुस्ती है। वह रातके समय उठकर पेशाबखाने तक नहीं जाना चाहता; और उसने जैडनका यह आलस्य छुड़ानेके लिए एक ऐसा उपाय निकाला था जो स्वयं उसीके उपयुक्त था।

हिम्मेल्सटोसने कहींसे एक और ऐसा सिपाही ढूँढ़ निकाला जो जैडनकी ही तरह रातको सोये-सोये बिस्तरपर पेशाब कर दिया करता था। उस सिपाहीको उसने लाकर जैडनवाली झोपड़ीमें रख दिया। झोपड़ियोंमें दो आदमियोंके सोने की जगह होती थी। एक आदमीका बिस्तर तो नीचे होता था और दूसरेका बिस्तर उसके ठीक ऊपर होता था। सोनेकी जगह लोहे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की जालीकी होती थी। हिम्मेलसटोसने एक दिन तो जैडनको नीचे सुलाया और उस दूसरे सिपाहीको उसके ऊपर; और दूसरे दिन उस सिपाहीको नीचे सुलाया और जैडनको ऊपर। इस प्रकार मानों हिम्मेलसटोसने उन दोनोंको ही यह शिक्षा दी थी कि रातके समय यदि पेशाब मालूम हो तो आलस्य नहीं करना चाहिए और उठकर बाहर पेशाबखानेमें जाना चाहिए।

हिम्मेलसटोसकी यह तरकीब थी तो बहुत नीचे दरजेकी, पर कुछ ऐसी बुरी नहीं थी। कम-से-कम उसकी यह एक अच्छी सूझ थी। लेकिन दुर्भाग्यवश उसकी इस तरकीबका कोई नतीजा नहीं निकला; क्योंकि हिम्मेलसटोसने जो अनुमान किया था, वह अनुमान ही मूलतः भ्रमपूर्ण था। वास्तवमें दोनोंमें से कोई आलस्यके कारण बिस्तर पर पेशाब नहीं करता था। दोनोंको ही यह रोग था जो इस प्रकारके उपायोंसे दूर नहीं हो सकता था। इसलिए शीघ्र ही हिम्मेलसटोसको अपनी यह तरकीब बन्द करनी पड़ी। अन्तमें हुआ यही कि दोनोंमेंसे किसी एकको नित्य लोहेके जालपर और दूसरेको नीचे जमीन पर सोना पड़ता था जिसके कारण उन लोगों को प्रायः सरदी हो जाया करती थी।

इस बीचमें हेई मेरे बहुत ही पास बैठा हुआ था। हम लोगोंने अपने सैनिक जीवनका सबसे अच्छा दिन एक साथ रहकर बिताया था। वह दिन वही था जब कि हम लोगोंने युद्ध-क्षेत्रके लिए कूच किया था। हम लोग एक ऐसी रेजिमेन्टमें भरती किये गये थे जो अभी हालमें बनी थी। पर युद्ध-क्षेत्रमें भेजे जानेसे पहले हम लोग उस स्थानपर भेजे जानेको थे, जहाँ हम लोगोंको वरदी, बन्दूक और दूसरी आवश्यक सामग्री

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलनेको थी। हम लोगोंको दूसरे ही दिन तड़के वहाँसे प्रस्थान करना था। इसलिए सन्ध्याको हम सब लोग एक साथ मिलकर बैठे और यह सोचने लगे कि हिम्मेल्सटोससे किस प्रकार बदला चुकाना चाहिए।

हम लोग हफ्तों पहलेसे यह कसम खाये हुए बैठे थे कि हिम्मेल्सटोससे उसकी इस दुष्टताका बदला अवश्य चुकावेंगे। क्रापने तो यहाँ तक सोच रखा था कि जब मैं लड़ाईसे छुट्टी पाऊँगा और शान्ति स्थापित होगी, तब मैं जाकर पोस्ट आफिस में नौकरी करूँगा। उस समय हिम्मेल्सटोस फिर डाकिया बनकर काम करेगा और मैं उसका अफसर बनकर उससे इसका बदला चुकाऊँगा। वह हर दम यही सोचा करता था कि मैं किस तरह हिम्मेल्सटोसको पीस डालूँ। इसी तरह बाकी और सब लोग भी इसी प्रकारकी और तरकीबें सोच रहे थे कि युद्ध समाप्त होने पर किस तरह हिम्मेल्सटोससे बदला लिया जायगा।

इस बीचमें हम लोगोंने यही निश्चय किया कि कोई ऐसा उपाय किया जाय जिसमें हिम्मेल्सटोसको हम लोगोंका पता न लगे। हम लोगोंने सोचा कि यदि हम लोग यहाँसे सवेरे ही निकल चलें और उसे हम लोगोंका पता न चले और वह हम लोगोंको पहचान न सके तो वह हमारा क्या कर सकेगा?

हम लोग पहलेसे ही यह जानते थे कि वह नित्य सन्ध्याके समय कहाँ घूमने जाया करता है। वहाँसे लौटकर जब वह बैरक में आता था, तब एक ऐसे रास्तेसे आता था जो बहुत ही अँधेरा था और जिसमें बहुत ही निराला रहता था। हम लोग उसी रास्ते पर पहुँचकर पत्थरोंके एक ढेरके पीछे छिप गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे पास एक ऐसा ओढ़ना था जो मैं रातके समय ओढ़ा करता था। कुछ देर तक प्रतीक्षा करनेके उपरान्त हम लोगोंको उसके पैरोंका शब्द सुनाई पड़ा। वह शब्द हम लोगोंने बहुत सहजमें पहचान लिया; क्योंकि उससे हम लोग बहुत पहलेसे और बहुत अच्छी तरह परिचित थे। वह रोज सवेरे हम लोगोंको जब जगाने आया करता था, तब उसके पैरोंका इसी प्रकारका शब्द हुआ करता था।

क्रापने धीरेसे कहा—वह अकेला ही है।

मैं खिसककर जैडनके और पास हो गया।

हिम्मेलसटोस उस समय कुछ तना हुआ सा जान पड़ता था। वह गाता हुआ आ रहा था। उसकी पेटी चमक रही थी। वह बिलकुल निःशंक भावसे आगे बढ़ता चला जा रहा था।

हम लोगोंने पीछेसे झपटकर वह ओढ़ना इस प्रकार उसके सिरपर डाल दिया कि मानों वह एक बोरेमें बन्द हो गया। उस समय वह अपने हाथ भी ऊपर नहीं उठा सकता था। उसका गाना बन्द हो गया। तुरन्त हेई वेस्थस वहाँ आ पहुँचा और उसने अपनी दोनों बाँहें फैलाकर हम लोगोंको दूर रहनेका संकेत किया। उसका मतलब यह था कि वही पहले हिम्मेलसटोसकी खबर लेना चाहता था। वह बहुत इतमीनानसे हिम्मेलसटोसके सामने खड़ा हो गया। उसने अपना हाथ बिलकुल सिकन्दरेकी तरह उठा लिया और हिम्मेलसटोसके सिरपर इतने जोरसे एक घूँसा मारा कि अगर उसकी जगह साँड़ होता, तो शायद वह भी गिर पड़ता।

हिम्मेलसटोस जमीन पर गिर गया और कुछ दूर तक लुढक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर चिल्लाने लगा। लेकिन हम लोग पहलेसे ही सब तैयारियाँ कर चुके थे और अपने साथ एक गद्दा भी ले आये थे। हेईने जमीन पर बैठकर वह गद्दा अपने घुटनों पर रख लिया। इसके बाद उसने उसी गद्दे और घुटनोंसे हिम्मेल्सटोसका सिर खूब जोरसे नीचे की ओर दबाया। तुरन्त ही उसकी आवाज बन्द हो गई और ऐसा जान पड़ने लगा कि उसका दम घुट रहा है। हेईने अपने घुटने कुछ ऊपर उठाकर उसे साँस लेनेका अवसर दिया और उसके बाद फिर उसी तरहसे उसे दबाया। इस प्रकार उसने कई बार किया। बीच बीचमें जरा सा अवकाश पाकर हिम्मेल्सटोस चिल्लाता था, पर तुरन्त ही फिर उसका मुँह दबा दिया जाता था।

जैडनने हिम्मेल्सटोसकी पेटीके बटन खोल दिये और उसका पाजामा उतार डाला। उस समय उसने अपने हाथका कोड़ा मुँहमें लेकर दाँतोंसे अच्छी तरह दबा रखा था। इसके बाद उसने खड़े होकर अपना दूसरा काम शुरू किया।

उस समयका वह अद्भुत दृश्य देखनेके ही काबिल था। हिम्मेल्सटोस जमीन पर पड़ा हुआ था। उसका सिर हेईके घुटनों पर था और वह झुककर खूनकी प्यासी नजर से हिम्मेल्सटोसकी ओर देख रहा था। हिम्मेल्सटोसकी उस समय बहुत ही बुरी दशा हो रही थी। उसका नीचेका शरीर बिलकुल नंगा था। जब-जब उसके सिरपर घुटनोंका आघात लगता था, तब-तब उसके शरीरकी गति और अंगोंका संचालन बहुत ही अद्भुत और दर्शनीय होता था। जैडन उसके ऊपर देवकी तरह सवार था। अन्तमें हम लोगोंने जैडनको इसलिए जबरदस्ती पकड़कर खींच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया कि हम लोग भी अपना अपना बदला चुकाना चाहते थे।

इसके बाद हेईने हिम्मेल्सटोसको फिर उठाकर खड़ा किया। वह उसपर अन्तिम प्रहार करना चाहता था। जब उसने घूँसा जमानेके लिए अपना दाहिना हाथ ताना, तब ऐसा जान पड़ता था कि मानों वह उड़कर आकाश पर पहुँचना चाहता है। उस घूँसेके आघातसे हिम्मेल्सटोस फिर जमीनपर गिर पड़ा और हेईने फिर उसे उठाकर खड़ा किया। इसके बाद उसने बाएँ हाथसे ऐसी खूबसूरतीसे एक घूँसा जड़ा कि देखते ही बनता था। हिम्मेल्सटोस फिर चिल्लाता हुआ जमीन पर गिर पड़ा। चन्द्रमाकी चाँदनीमें उस डाकियेकी नंगी पीठ खूब ही चमक रही थी।

हम लोग पूरी तेजीसे वहाँसे भागकर गायब हो गये।

हेईने फिर एक बार पीछे घूमकर देखा। उसकी आकृतिसे ऐसा जान पड़ता था कि यद्यपि वह बदला चुकाकर कुछ सन्तुष्ट हुआ है, पर फिर भी अभी तक गुस्सेसे भरा हुआ है।

इस घटनासे हिम्मेल्सटोसको प्रसन्न होना चाहिए था, क्योंकि वह प्रायः हम लोगोंसे कहा करता था कि तुम लोगोंको आपसमें एक दूसरेको शिक्षा देनी चाहिए। हम लोगोंके प्रति उसका यह उपदेश स्वयं उसीके लिए फलप्रद हुआ था।

हिम्मेल्सटोसको कभी यह पता न चला कि किन लोगोंने उसके साथ यह कार्रवाई की थी और इसके लिए उसे किन लोगोंको धन्यवाद देना चाहिए। और चाहे कुछ न हो, पर उसे इतना लाभ अवश्य हुआ था कि एक ओढ़ना मिल गया था; क्योंकि दो तीन घण्टे बाद जब हम लोग फिर वहाँ पहुँचे, तब हम लोगोंको वह ओढ़ना वहाँ नहीं मिला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस सन्ध्याको हम लोगोंने जो कार्रवाई की थी, उससे इतना अवश्य हुआ था कि दूसरे दिन हम लोग वहाँसे कुछ सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर प्रस्थान कर सके थे। एक पुराने सिपाहीने यह सब हाल सुनकर हम लोगोंको खूब शाबाशी दी थी।

चौथा परिच्छेद

सन्ध्याके समय बहुत सी लारियाँ आ मौजूद हुईं और हम सब लोग उसपर सवार हुए। उस दिन सन्ध्याको कुछ गरमी भी थी। हम सब लोग कन्धेसे कन्धा सटाये हुए और अचार की तरह कसे खड़े थे, क्योंकि लारीमें बैठनेकी जरा भी जगह नहीं थी। हम लोगोंने पहलेसे यह आशा भी नहीं की थी कि लारी में हम लोगोंको बैठनेकी जगह मिलेगी। आज म्यूलर बहुत प्रसन्न जान पड़ता था, क्योंकि वह अपने नये बूट पहने हुए था।

लारियों और इंजनोंके चलनेका जोरोंका शब्द और घड़-घड़ाहट हो रही थी। सड़कें बहुत ही रद्दी थीं और उनमें बहुत बड़े-बड़े गड्ढे पड़े हुए थे। लारियोंमें इस भयसे रोशनी नहीं जलाई जा सकती थी कि कहीं उस प्रकाश पर लक्ष्य करके ही शत्रु हम पर गोलाबारी न करने लगे। उन्हीं टूटी-फूटी सड़कों पर अँधेरेमें लारियाँ लुढ़कती और हचकोले खाती हुई चली जा रही थीं। लेकिन इससे हम लोगोंको कोई विशेष कष्ट नहीं होता था। हम लोग सोचते थे कि यदि इस अँधेरेमें हम कहीं गिर पड़ें और हम लोगोंके हाथ-पैर टूट जायँ तो अच्छा ही होगा। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार हाथ-पैर टूटनेसे बहुतसे लोग इसलिए प्रसन्न हो सकते थे कि उन्हें घर जानेके लिए एक अच्छा अवसर तो मिल सकता था। युद्ध-क्षेत्रमें गोलोंकी मारसे बोटी-बोटी उड़नेकी अपेक्षा एकाध हाथ-पैर टूट जाना और घर जानेकी छुट्टी मिल जाना कहीं अच्छा है।

हम लोगोंके पाससे होकर बारूद, गोलियाँ और गोले आदि लड़ाईके सामानोंसे भरी हुई गाड़ियाँ जा रही थीं। उनकी चाल हम लोगोंसे कुछ तेज थी। उनपरके आदमियोंसे हम लोग बीच-बीचमें मजाक भी कर लिया करते थे जिसका वे लोग हमें उत्तर भी देते थे।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर हम लोगोंको एक दीवार दिखाई दी। वह दीवार एक ऐसे मकान की थी जो सड़कके किनारे ही पड़ता था। अचानक मेरे कान खड़े हो गये। मैं सोचने लगा कि कहीं मुझे धोखा तो नहीं हुआ। मुझे फिर स्पष्ट रूपसे हंसों की बोली सुनाई पड़ी। मैंने कैजिन्सकीकी ओर देखा। उसने फिर उत्तरमें मेरी ओर देखा। हम लोगोंने आपसमें एक दूसरेका मतलब समझ लिया।

मैंने कहा—दोस्त, ये तो हम लोगोंकी कड़ाहीमें भुननेके उम्मैदवार मालूम होते हैं।

कैजिन्स्कीने सिर हिलाकर कहा—हाँ, हम लोग लौटकर इनकी खबर लेंगे। मैंने समझ लिया है कि यहाँ कितने हंस हैं।

इसमें संदेह नहीं कि कैजिन्स्कीने मन-ही-मन अवश्य समझ लिया होगा कि वहाँ कितने हंस हैं; यहाँ तक कि उसने उनकी गिनती भी कर ली होगी। वह जहाँ रहता है, उसके चारों ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पन्द्रह मीलके घेरेके अन्दर के सभी हंसोंकी गिनती जान लेता है। हम लोगोंकी लारियाँ उस स्थानपर पहुँच गईं जहाँसे तोपखाना शुरू होता है। बड़ी-बड़ी तोपोंके ऊपर पेड़-पौधे और डालियाँ आदि इसलिए लगा दी गई थीं जिसमें ऊपरसे हवाई जहाज उन्हें देख न सकें। यदि उन पौधों और टहनियोंके नीचे तोपें न छिपी हुई होतीं तो वे पौधे और टहनियाँ बहुत ही भली जान पड़तीं।

हवामें तोपोंकी गन्ध भरी हुई थी। साँस लेनेमें जबान तक पर बारूदका कड़ुवा स्वाद आता था। तोपोंकी गरजसे हम लोगोंकी लारियाँ तक हिल रही थीं। हम सब लोगोंके चेहरेकी रंगत आप-से-आप बदल गई। हम लोग अभी तक युद्धकी सबसे आगेवाली पंक्ति तक नहीं पहुँचे थे, बल्कि उसी पंक्ति तक पहुँचे थे जहाँसे जरूरत पड़ने पर आगेवाली पंक्तिके लिए सैनिक भेजे जाते हैं। परन्तु हममें से प्रत्येक व्यक्तिके चेहरेसे उस स्थानका आतंक स्पष्ट रूपसे प्रकट होता था। सब लोग अच्छी तरहसे जान गये थे कि हम लोग लड़ाईके मैदानके बहुत ही पास पहुँच गये हैं—भीषण युद्ध-क्षेत्रने हम लोगोंको अपनी गोदमें ले लिया है।

पर फिर भी किसीके मनमें कोई विशेष भय नहीं था। ऐसे स्थानों पर पहुँचकर मनुष्य बहुत जल्दी उनका अभ्यस्त हो जाता है और उसकी मानसिक अवस्था ऐसी हो जाती है कि उसमें भय आदिका संचार ही नहीं होने पाता। केवल नये रंगरूट पहले-पहल कुछ उत्तेजित होते हैं। कैजिन्स्कीने एक तोपकी ओर संकेत करके कहा—यह बारह इंचवाली तोप है। इसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवाजसे ही तुम इसे पहचान लोगे। अच्छा सुनो, अभी इसमें से गोला छूटता है।

लेकिन उस तोपका कोई अलग और स्पष्ट शब्द हम लोगों को इसलिए नहीं सुनाई पड़ा कि वहाँ वैसी सैकड़ों हजारों तोपें चल रही थीं। उन्हीं सबके शब्दोंमें उसका शब्द भी मिलकर रह गया। कैजिन्स्की बोला—मालूम होता है कि आज रातको खूब जबरदस्त गोलावारी होगी।

हम लोग फिर वही भीषण शब्द सुनने लगे। क्रापने कहा—मालूम होता है कि उधर अँगरेजोंकी तरफसे अभीसे गोलाबारी हो रही है।

गोलेबारीकी आवाज साफ सुनाई पड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि हम लोगोंकी दाहिनी तरफ अँगरेजोंका तोपखाना था। उन्होंने निश्चित समयसे एक घण्टा पहले ही गोलेबारी शुरू कर दी थी। जहाँ तक हम लोग जानते थे, अँगरेज लोग सदा रातको ठीक दस बजे गोलेबारी शुरू करते थे।

म्यूलर—आज इन अँगरेजोंको हो क्या गया है? जान पड़ता है कि शायद उनकी घड़ी आज कुछ तेज चल रही है।

कैजिन्स्कीने कन्धा हिलाते हुए कहा—देखो, मैं पहलेसे वतला देता हूँ। आज रातको जरूर खूब जबरदस्त गोलेवारी होगी। यह बात मेरे अंग अंगसे निकल रही है।

हम लोगोंके बहुत ही पाससे तीन तोपोंने गोले बरसाना आरंभ किया। उस समय जो कोहरा पड़ रहा था, उसे भेदता हुआ तोपों का धूआँ सीधा ऊपर जा रहा था। तोपोंकी गड़गड़ा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हट खूब जोरों पर थी। हम लोग सरदीसे काँप रहे थे और यह सोचकर मन-ही-मन प्रसन्न हो रहे थे कि हम लोग दूसरे दिन तड़के ही झोपड़ियोंमें लौट जायँगे।

उस समय न तो हम लोगोंके चेहरे पहलेकी अपेक्षा कुछ विशेष पीले ही पड़े हुए थे और न उनपर कोई विशेष चमक ही थी। न तो उनसे विशेष चिन्ता ही झलकती थी और न विशेष प्रसन्नता ही। लेकिन फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि हम लोगोंके चेहरोंकी रंगत बिलकुल बदली हुई थी। हम लोग यह अनुभव कर रहे थे कि हमारे शरीरके रक्तमें एक विशेष प्रकारकी गति हो रही है। यह कोई आलंकारिक वर्णन नहीं है, बल्कि एक वास्तविक घटनाका यथातथ्य वर्णन है। हम लोगोंके रक्तमें यह विशेष प्रकारकी गति केवल इस बातके अनुभवके कारण हो रही थी कि हम लोग ठीक युद्ध-क्षेत्रमें आ पहुँचे हैं। हम लोगोंके सामने मूर्तिमान् युद्ध-क्षेत्र था और उसीने हम लोगोंकी यह दशा कर रखी थी। ज्यों ही हम लोगोंके सामने उन तीनों तोपोंसे पहले-पहल गोले छूटे और उनकी गड़गड़ाहट हवामें फैली, त्यों ही अचानक हम लोगोंकी रग रगमें रक्तका संचार एक विशेष और नये प्रकारसे होने लगा। हम लोगोंके सब अंग स्तब्ध हो गये, हमारी इन्द्रियोंमें एक विशेष प्रकारकी उत्तेजना उत्पन्न हो गई और हम लोग बहुत ही चौकन्ने होकर देखने लगे कि अब क्या होता है।

मुझे प्रायः ऐसा जान पड़ता है कि वह भीषण प्रकम्पयुक्त वायु ही निःशब्द रूपसे हम लोगों पर प्रहार करती थी अथवा स्वयं युद्ध-क्षेत्रसे ही एक ऐसा विद्युत्-प्रवाह निकलता था जो हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंके अज्ञात स्नायु-केन्द्रोंको जाग्रत और क्षुब्ध कर दिया करता था।

हर बार तोप छूटने पर ऐसा ही होता था। उस समय वहाँ चाहे कोई प्रसन्न भावसे पहुँचता और चाहे दुःखी भावसे, लेकिन तोपोंके पास पहले पहल पहुँचते ही उसकी भी अवश्य ही वही दशा हो जाती जो हम लोगोंकी हुई थी। उस समय हम लोगोंके मुँहसे निकलनेवाले प्रत्येक शब्दकी ध्वनि एक विशेष और नये प्रकारकी होती थी।

जिस समय कैजिन्सकी झोपड़ीके सामने खड़ा होकर कहता कि आज गोलेबारी होगी, तो हम लोग यही समझते कि वह अपना एक साधारण विचार प्रकट कर रहा है। पर जब वह कहता कि आज यहाँ गोलेबारी होगी, तब उसका वह कथन हम लोगोंके हृदयमें तीरकी तरह लगता था। उस चाँदनी रातमें उसका वह कथन तीरकी तरह आकर हम लोगोंके विचारोंको भेदता हुआ हम लोगोंके हृदयमें एक ऐसी चंचलता और क्षोभ उत्पन्न करता जिसका पहले हम लोगोंने कभी अनुभव ही नहीं किया था। "आज यहाँ गोलेबारी होगी।" उसके इस वाक्यमें न जाने कौन सी भीषण शक्ति भरी हुई थी। ऐसा जान पड़ता था कि हमारे गूढ़तम भीतरी प्राण काँप उठते हैं और किसी भारी विपत्तिकी आशंकासे चौकन्ने हो जाते हैं।

मुझे तो सारा युद्ध-क्षेत्र एक ऐसे गूढ़ जलाशयके समान जान पड़ता था जिसमें असंख्य भँवर पड़ रहे थे और जिसका रहस्य मैं किसी प्रकार समझ ही नहीं सकता था। यद्यपि मैं उस जलाशयके केन्द्र और भँवरोंसे बहुत दूर और ऐसे स्थान पर था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जहाँका जल अपेक्षाकृत बहुत ही शान्त और स्थिर था, तो भी मुझे ऐसा जान पड़ता था कि उसमेंके भँवर आपसे-आप धीरे-धीरे और इस प्रकार जबरदस्ती मुझे निगलनेके लिए अपनी ओर खींच रहे हैं कि मैं उनसे किसी प्रकार अपनी रक्षा ही नहीं कर सकता।

नीचेकी जमीनसे भी और आस-पासकी हवासे भी कुछ ऐसी शक्तियाँ निकलकर हम लोगोंमें भर रही थीं जो हम लोगोंमें बहुत कुछ सहनशीलता उत्पन्न करती थीं। पर हवाकी अपेक्षा जमीनसे ही वे शक्तियाँ अधिक निकलती थीं। जमीनसे जितना अधिक काम एक सैनिकका निकलता है, उतना अधिक काम शायद और किसीका नहीं निकलता। जब सैनिक जमीन पर लेट जाता है और अपनी सारी शक्तिसे उसके साथ चिपट जाता है, जिस समय वह गोलोंकी मारसे अपने प्राण बचानेके लिए अपना मुँह और हाथ-पैर उसके अन्दर छिपा लेता है, उस समय वह जमीन ही उसके लिए सबसे बड़े मित्र, भाई और माता-पिताका काम देती है। सैनिक अपना सारा भय और सारी वेदना उस पृथ्वी के मौन और दृढ़तामें छिपा लेता है। उस समय पृथ्वी ही उसे शरण देती है और उसे दस सेकेंड तक जीवित रहनेका अथवा अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए भागनेका समय देती है। उस समय पृथ्वी ही कभी तो उसे दस बीस सेकेंडके लिए और कभी सदाके लिए अपने गर्भमें स्थान देती है।

पृथ्वी! पृथ्वी! तू धन्य है!

उस पृथ्वीमें बहुत से बड़े-बड़े गड्ढे और सूराख होते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिनके अन्दर आदमी अपने प्राण बचानेके लिए छिप जाता है। जिस समय लोग मारे भय और आतंकके काँपने लगते हैं, जिस समय मृत्यु चारों ओर बड़ी ही निर्दयता और भीषणतासे अपना नाशक कार्य करती रहती है और जिस समय बड़े-बड़े घातक विस्फोट होते हैं, उस समय पृथ्वी ही हम लोगोंकी रक्षा करके हमें नये सिरसे जीवन प्रदान करती है। उस जबर-दस्त आँधीमें पड़कर पहले हमारी जो जान निकल जाती है, वह इस पृथ्वीकी कृपासे ही लौटकर फिर हमारे शरीरमें आती है। उस समय हम लोग अपने होंठों और दाँतोंसे उस पृथ्वीको ही पकड़े रहते हैं।

ज्यों ही तोपोंसे पहले-पहल गोलेके छूटनेका शब्द सुनाई पड़ता है, त्यों ही हम लोग मानव जातिकी उस अवस्था तक पहुँच जाते हैं जो आजके हजारों बरस पहले थी। हम लोगोंमें पशुओंकी-सी जो सहज वृत्ति होती है, वही उस समय जाग्रत होकर हमारी रक्षा करती है और हमें प्राण बचानेका उपाय बतलाती है। यह काम ज्ञान और चेतना-शक्तिसे नहीं होता। चेतना शक्तिकी सहायतासे और जान-बूझकर जो काम किया जाता है, उसकी अपेक्षा प्राण बचानेका यह काम कहीं ज्यादा जल्दी होता है। साथ ही यह काम उसकी अपेक्षा कहीं अधिक निश्चित रूपसे भी होता है। चेतना-शक्तिकी सहायतासे और जान बूझकर जो काम किया जाता है, उसमें तो प्रायः कुछ भूल या गड़बड़ी भी हो जाती है, पर इस आन्तरिक या सहज शक्तिकी सहायतासे होनेवाले काममें कभी कोई भूल-चूक नहीं होती। मनुष्य कभी इस आन्तरिक शक्ति और इसके द्वारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होनेवाले कामका पूरा और ठीक वर्णन ही नहीं कर सकता। प्रायः ऐसा होता है कि आदमी चुपचाप विना कुछ सोचे-विचारे युद्ध-क्षेत्रमें कहीं चला जा रहा है। अचानक और आपसे आप वह अपने आपको जमीन पर गिरा देता है और तोपोंके गोलोंके कारण उड़नेवाले बहुत से लोहे, पत्थर और ढेले उसके ऊपरसे होकर निकल जाते हैं और वह उनके आघातसे साफ़ बच जाता है। उस समय यदि मनुष्य सोचे तो उसे यह याद नहीं आता कि मैंने जमीनपर गिरनेसे पहले गोलेके आनेका शब्द सुना था या अपने आपको जमीनपर गिरानेका कभी कोई विचार भी किया था। पर यदि उस समय उसकी वह आन्तरिक प्रेरणा काम न करती तो इस समय तक वह एक निर्जीव मांसके लोथड़े का ढेर ही हो जाता। बस यही दूसरी और भीतरी दृष्टि हम लोगोंको जमीनपर गिराकर हमारी रक्षा करती है और हम लोग यह जानने भी नहीं पाते कि हम किस प्रकार जमीनपर गिरे और कैसे हमारे प्राणोंकी रक्षा हुई। यदि यह बात न होती तो सारे युद्ध-क्षेत्रमें इस सिरेसे उस सिरे तक एक भी आदमी जीता न दिखाई देता।

चाहे दुःखित हृदयसे हो और चाहे प्रसन्न हृदयसे हो, हम सब लोग इसी तरह आगे बढ़ते चलते हैं। और जब हम लोग उस स्थान पर पहुँच जाते हैं जहाँसे ठीक युद्ध-क्षेत्रका आरम्भ होता है, तब हम लोग मनुष्य रहनेपर भी बिलकुल पशुके समान हो जाते हैं।

× × × ×

हम लोग एक जंगलमें पहुँचे। रास्तेमें हम लोगोंको बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से बावर्चीखाने मिले। वहीं लारियाँ हम लोगोंको उतारकर वापस चली गईं। तड़का होनेसे पहले ही वे फिर हम लोगोंको लेनेके लिए आने को थीं।

सामनेके मैदानोंमें कोहरा और तोपोंका धूआँ छाती तक ऊँचा भरा हुआ था। चन्द्रमाकी चाँदनी चारो ओर छिटकी हुई थी। सड़कके किनारे-किनारे सैनिकोंकी पंक्तियाँ खड़ी हुई थीं। चन्द्रमाके प्रकाशमें उनके खोद चमक रहे थे। उन सैनिकों के धड़ तक नीचेके सब अंग उसी कोहरे और धूएँमें छिपे हुए थे और ऊपर सिर्फ उनके सिर और बन्दूकें निकली हुई थीं। सिर हिल रहे थे और बन्दूकें चल रही थीं।

कुछ दूर और आगे दृष्टि डालने पर कोहरा नहीं दिखाई देता था। वहाँ सैनिकोंके सिरोंके बदलेमें सारे शरीर दिखाई पड़ते थे। उनके कोट, पाजामे और जूते ऐसे जान पड़ते थे कि मानों दूधके जलाशयसे धुलकर निकले हैं। सब सैनिकोंने मिल-कर कुछ पंक्तियाँ बनाईं और वे पंक्तियाँ सीधी आगेकी ओर बढ़ने लगीं। पहले जो आकृतियाँ अलग-अलग दिखाई पड़ती थीं, अब वे एक सम्मिलित समूहके रूपमें हो गईं। अब पृथक् पृथक् व्यक्ति नहीं पहचाने जाते थे। वह समूह बराबर आगे बढ़ता चला जा रहा था। ऐसा जान पड़ता था कि कोहरेके कारण दूधके जलाशयमें बहुत से सिर और बन्दूकें तैरती हुई आगे बढ़ रही हैं। उन सैनिकोंका समूह एक स्तम्भ ही जान पड़ता था; वे लोग आदमी मालूम ही नहीं होते थे।

आगे दाहिने-बाएँ गई हुई एक और सड़क दिखाई पड़ी जिसपर तोपें और गोले-बारूदसे भरी हुई गाड़ियाँ चली जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रही थीं। चन्द्रमाके प्रकाशमें घोड़ोंकी पीठें चमक रही थीं। उनकी गति बहुत ही सुन्दर जान पड़ती थी। उनके सिर हिलते थे और आँखें चमकती थीं। उस मैदानमें कुछ दूर आगे चलकर चन्द्रमाके प्रकाशका अन्त हो गया था और उसके बाद बहुत दूर तक अँधेरा पड़ता था। तोपें और गोले-बारूदकी गाड़ियाँ उस चाँदनीवाले क्षेत्रसे निकलकर अँधेरे मैदान में चली गई थीं। लोहे के खोद पहने हुए घुड़-सवार प्राचीन कालके नाइटों या सरदारोंके समान जान पड़ते थे। वह दृश्य बहुत ही अद्भुत, सुन्दर और आकर्षक था।

हम लोग बराबर आगे बढ़ते चले जा रहे थे। हममेंसे कुछ लोगोंके कन्धोंपर लोहेके नुकीले और ऐंठे हुए छड़ थे और कुछ लोगोंके कन्धोंपर लोहेके छड़ोंमें पहनाये हुए तारके गोले थे। सभीको यह बोझ बहुत ही भद्दा और भारी जान पड़ता था।

ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते जाते थे, त्यों त्यों जमीनमें बड़े बड़े गड्ढे मिलते थे। सामनेसे सचेत करनेवाले कुछ पहरेदारों की आवाज आ रही थी—"होशियार बाईं तरफ तोपके गोलों के गड्ढे हैं।" "खाइयोंसे बचना।" आदि।

हम लोग अपने पैरों और छड़ियोंसे टटोलते हुए आगे बढ़ रहे थे। अचानक सब लोग रुक गये। मेरे आगे-आगे जो आदमी तारका गोला लिये हुए चल रहा था, उसके गोलेसे मेरा सिर टकरा गया।

सड़कपर कुछ ऐसी लारियाँ पड़ी हुई थीं जो तोपके गोलेसे टूट गई थीं। हम लोगोंको दूसरी आज्ञा मिली—"सिगरेट और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पाइप बुझा दो"। अब हम लोग युद्धस्थलके बहुत समीप पहुँच रहे थे।

अब चारो ओर घोर अन्धकार छा गया था। एक छोटा-सा जंगल पार करने पर हम लोग ठीक उस स्थलपर पहुँच गये जहाँ लड़नेवाले योद्धा खड़े हुए थे।

क्षितिजमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक एक प्रकारकी मद्धिम लाली फैली हुई थी। उसमें बराबर गति हो रही थी। उसके बीच-बीचमें तोपोंसे निकलनेवाली लपटें दिखाई पड़ती थीं। प्रकाशके पुंज या गोले ऊपर आकाशमें उठते थे जिनमेंसे कुछ सफेद और कुछ लाल होते थे। कुछ दूर ऊपर जाकर वे फूट जाते थे और उनमेंसे बड़ी फुलझड़ियोंकी तरह लाल, सफेद और हरे तारोंकी वर्षा होती थी। फ्रान्सीसी बाण छूटकर ऊपर जाते थे और उनमेंसे रेशमी छाते खुलकर धीरे-धीरे नीचे की ओर उतरते थे। उनके कारण चारो ओर दिनका-सा प्रकाश फैल जाता था और वही प्रकाश हम लोगोंपर पड़कर चमकता था। हम लोगोंको जमीन पर अपनी परछाँही साफ दिखाई पड़ती थी। जल उठनेसे पहले वे प्रायः एक मिनट तक आकाशमें हम लोगोंके सिरपर मँड़राते थे। तुरन्त ही इस प्रकार और भी बहुत से नये बाण छूटकर आकाशमें पहुँच जाते थे और फिर उनमेंसे वही हरे, लाल और नीले सितारोंकी वर्षा होती थी।

कैजिन्स्की बोला—यह गोलेबारी हो रही है।

बहुत सी तोपोंकी गड़गड़ाहट मिलकर एक भीषण गरजका रूप धारण कर रही थी और तब फिर उनमें से अलग-अलग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विस्फोटोंके भीषण शब्द होते थे। मशीनगनोंमें ऐसा विस्फोट तो नहीं होता था, पर उनकी गड़गड़ाहट भी अलग सुनाई पड़ती थी। हम लोगोंके सिर पर अदृश्य वेगसे वायु चल रही थी जिसमें कुछ और ही प्रकारका सर्राटेका शब्द भरा हुआ था। वायुकी यह तीव्र गति और सर्राटा छोटे-छोटे गोलोंके कारण होता था। उनके साथ-साथ और भी कई तरहके संहारक अस्त्र चल रहे थे। कुछ अस्त्रोंमें से सीटीका भी शब्द होता था जो और प्रकारके शब्दोंसे बिलकुल अलग और स्पष्ट सुनाई पड़ता था। उनके वे सब शब्द सुनकर मुझे ऐसा जान पड़ता था कि मानों मैं जंगली हंसोंका शब्द सुन रहा हूँ। पिछली वसन्त ऋतुमें तो गोलोंके रास्ते के बीचमें से होकर नित्य ही जंगली हंसोंके दल उड़ते हुए दिखाई देते थे।

थोड़ी देरमें उस अन्धकारपूर्ण आकाशमें बड़े-बड़े अन्वेषक प्रकाश दिखाई पड़ने लगे। वे बहुत बड़े-बड़े रूलोंके समान इधरसे उधर आते जाते थे। कभी-कभी उनमेंसे कोई प्रकाश कुछ देरके लिए ठहर जाता था और उसमें एक प्रकारका कम्प होता था। एक बार तुरन्त ही वैसा एक और प्रकाश उसके पास आ गया। दोनों प्रकाशोंके बीचमें एक काला कीड़ा सा फँस गया। वह कीड़ा और कोई नहीं, हवाई जहाज था! उसका चालक कुछ दुबिधामें पड़ गया। उस भीषण प्रकाशके कारण उसकी आँखें चौंधिया गईं। उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था, इसलिए वह नीचे गिर पड़ा।

कुछ निश्चित अन्तर पर हम लोग लोहेके छोटे-छोटे खम्भे गाड़ रहे थे। दो आदमी तारका एक गोला पकड़े हुए थे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाकी लोग उनमें से कँटीला तार खोल रहे थे। उन तारोंको खोलना बहुत ही कष्टप्रद था, क्योंकि उसमें बहुत बड़े-बड़े नुकीले काँटे लगे हुए थे। मुझे आज तक कभी ऐसे तारोंको खोलनेका काम नहीं पड़ा था, इसलिए मेरे दोनों हाथ क्षत-विक्षत हो गये थे।

कई घन्टोंमें जाकर तार लगानेका यह कार्य समाप्त हुआ। लेकिन अभी लारियोंके आनेमें कुछ देर बाकी थी। हममें से बहुतेरे वहीं जमीन पर लेट गये और कुछ सो भी गये। मैंने भी सोनेका प्रयत्न किया, पर उस समय बहुत ठंढ पड़ रही थी। हम लोग समझते थे कि हम समुद्रसे बहुत अधिक दूर नहीं हैं, क्योंकि बराबर बीच बीचमें ठंढी हवाके झोंके आकर हम लोगोंको जगा दिया करते थे।

एक बार मैं गहरी नींदमें सो गया। जब अचानक मेरी नींद खुली, तब मेरी समझमें ही न आया कि मैं कहाँ हूँ। मुझे आकाशमें बाण और उनसे निकलनेवाले सितारे दिखाई देते थे और ऐसा जान पड़ता था कि मैं किसी ऐसे बागमें सोया था जहाँ आतिशबाजी छूट रही है। मुझे पता ही नहीं चलता था कि इस समय सवेरा है या सन्ध्या। मैं पीले धुँधले प्रकाशमें ज़मीनपर पड़ा हुआ था। मुझे कुछ ऐसे कोमल शब्द सुनाई पड़ रहे थे जो क्रमशः मेरे पास आते हुए जान पड़ते थे। मुझे सन्देह होने लगा कि कहीं मैं रो तो नहीं रहा हूँ। मेरा हाथ किसी बहुत ही चिकनी और कोमल त्वचापर पड़ा। इसके बाद मुझे कैजिन्सकीका अस्पष्ट-सा चेहरा दिखाई पड़ा। वह मुँहसे पाइप लगाये हुए चुपचाप बैठा तम्बाकू पी रहा था। उसका वह पाइप ऊपरसे ढका हुआ था। जब उसने देखा कि मेरी नींद खुल गई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है, तब वह बोला—तुम शायद इससे डर गये। यह गैससे बचनेके लिए नाकपर पहनने की टोपी है। यह सामनेवाली झाड़ियोंपर गिरी थी। वहाँसे लाकर मैंने तुम्हें पहना दी।

मैं उठकर बैठ गया। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि मैं बिलकुल अकेला हूँ। यही खैरियत थी कि कैजिन्सकी मेरे पास मौजूद था। युद्ध-स्थलकी ओर बहुत ही ध्यानपूर्वक देखकर वह बोला—यदि ये बड़ी-बड़ी आतिशबाजियाँ इतनी भीषण और नाशक न होतीं तो देखनेमें अवश्य ही बहुत सुन्दर थीं।

एक गोला हम लोगोंके पीछेकी ओर आकर गिरा। कुछ ही मिनटोंके बाद एक दूसरा गोला आया जो हम लोगोंके और भी पास गिरा। कैजिन्सकीने अपने पाइपका तम्बाकू फेंक दिया। हम लोग जल्दी-जल्दी जमीनपर लेटकर रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। इतनेमें एक और गोला आया। इस बार तो वह हम लोगों के ठीक बीचमें ही आकर गिरा। दो आदमी बहुत जोरसे चिल्ला उठे। फिर क्षितिजसे हरे बाण छूटते हुए दिखाई देने लगे। जमीनसे खुद-खुदकर मिट्टीके ढेर बहुत बहुत ऊँचाई तक उड़ते थे और गोलोंके बीचमें भरे हुए टुकड़े चारों ओर सन्नाटेसे निकल रहे थे। गोलोंके फटनेके बहुत बाद तोपोंसे उनके छूटनेकी आवाज सुनाई पड़ती थी।

हम लोगोंके पास ही एक रंगरूट पड़ा हुआ था जो बहुत अधिक डर गया था। उसके सिरपरका खोद गिर गया था और वह दोनों हाथोंसे अपना मुँह छिपाये हुए था। मैं उसका खोद उठाकर उसके सिरपर पहनाना चाहता था। उसने सिर उठाकर ऊपरकी ओर देखा, खोदको खिसकाकर अलग गिरा दिया और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बच्चोंकी तरह रेंगता हुआ मेरी बाँहके नीचे आ गया। उसका सिर मेरी छातीसे सट गया था। उसके छोटे-छोटे कन्धे काँप रहे थे। मैंने उसे आरामसे अपनी बाँहके नीचे पड़े रहने दिया। मैंने सोचा कि यह खोद आगे चलकर फिर इसके काम आवेगा, इसलिए उसे उठाकर उसकी पीठपर रख दिया। मैंने यही सोचा था कि इससे अनेक प्रकारके आघातोंसे बचत हो सकती है।

चारो ओर गोले गिर-गिरकर फट रहे थे और सिपाहियोंके रोने-चिल्लाने और कराहनेकी आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

बहुत देरके बाद जाकर कुछ शान्ति हुई। अब हम लोगों पर गोलोंकी वर्षा बन्द हो गई थी और दूसरी ओर उन लोगों पर गोले बरसने लगे थे जो रक्षित अंशमें थे और जहाँसे आवश्यकता पड़ने पर युद्ध-क्षेत्रके घायलों और मृतकोंके स्थानपर नये आदमी भेजे जाते थे। यद्यपि उधरका दृश्य देखना भी बहुत जोखिमका काम था, तो भी हम लोग साहस करने लगे। लाल बाण छूटकर आकाशमें ऊपरकी ओर जा रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि अब आक्रमण होनेवाला है।

हम लोग जिस स्थानपर थे, वहाँ इस समय पूरी शान्ति थी। मैं उठकर बैठ गया और उस रंगरूटका कन्धा पकड़कर हिलाने लगा। मैंने उससे कहा—अब उठकर बैठ जाओ। गोलेबारी खतम हो गई। अब डरकी कोई बात नहीं है।

वह चकपकाकर चारो ओर देखने लगा। मैंने कहा—तुम जल्दी ही इन सब बातोंके अभ्यस्त हो जाओगे।

उसने अपना खोद देखकर उठाया और सिरपर रख लिया। धीरे-धीरे उसका होश कुछ ठिकाने होने लगा। पर फिर शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही उसका चेहरा बहुत अधिक लाल हो गया और वह बहुत ही घबराया-सा जान पड़ने लगा। उसने अपना हाथ अपनी पीठ की ओर बढ़ाया और बहुत ही निराश भावसे मेरी ओर देखा।

मैं तुरन्त ही समझ गया कि क्या बात है। उसे मारे भयके पतलूनमें पाखाना हो गया था। मैंने धीरज दिलाते हुए कहा—यह कोई लज्जाकी बात नहीं है। जब लोग पहले-पहल युद्ध-क्षेत्र में आते हैं और यहाँकी गोलेबारी देखते हैं, तब उनमेंसे बहुतेरोंकी पतलूनें इसी तरह खराब हो जाया करती हैं। तुम सामनेवाली झाड़ीमें चले जाओ और अन्दरकी छोटी पतलून उतारकर फेंक दो। जाओ, जल्दी हो आओ।

× × × ×

मेरे कहनेके अनुसार वह रंगरूट वहाँसे उठकर उस झाड़ीमें चला गया। अब पहलेकी अपेक्षा बहुत कुछ शान्ति हो गई थी, पर फिर भी रोने-चिल्लाने और कराहनेकी आवाजें कम नहीं होती थीं। मैंने—पूछा क्यों जी एलबर्ट, ये आवाजें कहाँसे आ रही हैं ?

उसने उत्तर दिया—वह सामने कुछ टुकड़ियोंपर गोले बरस रहे हैं।

पर रोने-चिल्लानेकी आवाजें अभी तक बराबर आ रही थीं। वह आवाजें आदमियोंकी नहीं थीं, क्योंकि आदमी कभी इतनी तेजीसे नहीं चिल्ला सकते।

कैजि०—यह घायल घोड़ोंके चिल्लानेकी आवाजें हैं।

मनुष्य वह चिल्लाहट सुनकर शान्त नहीं रह सकता था। ऐसा जान पड़ता था कि सारा संसार, सारी हत और निहत सृष्टि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परम भयभीत और पीड़ित होकर चिल्ला और कराह रही थी।

वह चिल्लाहट सुनकर हम लोग पीले पड़ गये। हमारे एक साथीने चिल्लाकर कहा—ईश्वरके लिए इन सबको गोली मारकर खतम कर दो।

उस साथीका नाम डेटेरिंग था। वह एक किसान था और घोड़ोंका बहुत शौकीन था। घोड़ोंका कष्ट देखकर वह बहुत अधिक दुःखी हो रहा था। इसके बाद कुछ देर तक ऐसा जान पड़ने लगा कि गोलेबारी जान-बूझकर बन्द कर दी गई है। उस समय घोड़ोंकी चिल्लाहट और भी बढ़ गई थी। यद्यपि उस समय तोपों और गोलोंके शब्द नहीं हो रहे थे और कुछ शान्ति थी, फिर भी समझमें नहीं आता था कि यह चिल्लानेकी आवाज कहाँसे और किधरसे आ रही है। ऐसा जान पड़ता था कि भूत-प्रेत चिल्ला रहे हैं। वह भीषण शब्द चारो ओरसे ही आ रहा था। जमीन और आसमानके बीचका सारा स्थान उस चिल्लाहटसे ही भरा हुआ था। डेटेरिंगरने फिर जोरसे चिल्लाकर कहा—अरे कम्बख्तो, क्या तुम इन सबको गोली भी नहीं मार सकते हो?

कैजिन्सकीने बहुत ही शान्त भावसे कहा—पहले उन लोगोंको आदमियोंकी देख-रेख करनी पड़ती है।

हम लोग यह देखनेके लिए उठकर खड़े हो गये कि वे सब घायल घोड़े कहाँ हैं। यदि हम लोगोंको वे घोड़े दिखलाई पड़ जाते तो हम लोग उनका वह करुण चीत्कार सुनने और सहन करनेमें शायद कुछ अधिक समर्थ होते। म्यूलरके पास एक दूरबीन थी। उसकी सहायतासे हम लोगोंने देखा कि कुछ दूर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर एक काल सा समूह है। वह समूह युद्ध-क्षेत्रसे घायलोंको उठानेवालोंका था। उनके पास ही एक और बहुत बड़ा समूह था जो कुछ हिल-डुल रहा था। यही समूह घायल घोड़ोंका था। पर वे सबके सब घोड़े घायल नहीं थे। उनमें से कुछ ऐसे थे जो कुछ दूर तक चौकड़ियाँ भरते थे, गिर पड़ते थे और फिर उठकर दौड़ने लगते थे। प्रायः साजके खुल जाने और उसमें पैर आदि फँस जानेके कारण ही वे गिरते थे, और उठकर भागते थे। डेटेरिंगने अपनी बन्दूक उठाकर निशाना साधा। कैजिन्स्कीने उसका हाथ इस प्रकार हिला दिया कि उसकी गोली निकलकर ऊपर हवामें चली गई। उसने डेटेरिंगसे कहा—क्या तुम पागल हो गये हो ?

डेटेरिंग काँप गया और उसने अपनी बन्दूक जमीनपर फेंक दी।

हम लोगोंने बैठकर कान बन्द कर लिये। पर चिल्लाने और कराहनेके वे भीषण शब्द प्रत्येक वस्तुको भेदते हुए अन्दर पहुँचते थे।

हम लोगोंको कुछ ऐसा अभ्यास सा हो गया था कि हम लोग सभी कुछ सहन कर सकते थे; पर वह चिल्लाहट सुनकर हम लोगोंको पसीना छूटने लगा। हम लोग चाहते थे कि भागकर किसी ऐसी जगह चले जायँ जहाँ ये शब्द बिलकुल न सुनाई दें। और फिर भी यह चिल्लाहट केवल घोड़ोंकी थी, आदमियोंकी नहीं थी।

घायलोंको उठानेवाले लोग फिर चलते फिरते हुए दिखाई दिये। कुछ देर बाद रह रहकर एक दो घोड़ोंकी चिल्लाहट सुनाई देने लगी। एक बार वह काला ढेर फिर काँपा और ज़मीन पर गिर पड़ा। हम लोगोंने समझा कि अब उन सबका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्त हो गया। लेकिन नहीं, अभी तक पूर्ण रूपसे उनका अन्त नहीं हुआ था। उनमेंसे बहुत से घायल घोड़े शारीरिक वेदनाके कारण उठकर इतनी तेजीसे भागने लगे कि आदमी किसी तरह उनका पीछा ही नहीं कर सकते थे। उनके बड़े-बड़े मुँह भीषण वेदनाके कारण बिलकुल खुले हुए थे। उनके आस-पास कई आदमी थे। एक आदमी घुटनोंके बल बैठकर गोली चलाता था और एक घोड़ा गिरकर मर जाता था। इसी तरह एकके बाद एक करके बहुत से घोड़े गिरते और मरते थे। एक घोड़ा बच गया था जो अपने पिछले दोनों पैरों पर उठकर खड़ा हो गया और उस मैदानमें एक घेरेमें चक्कर लगाने लगा। ऐसा जान पड़ता था कि उसके अगले पैर बिलकुल जकड़ गये हैं और पीठ टूट गई है। एक सैनिकने दौड़कर उस पर भी गोली चलाई जिससे वह धीरेसे गिरकर ढेर हो गया।

हम लोगोंने अपने कानों पर से हाथ हटाये। अब वह भीषण चिल्लाहट नहीं सुनाई पड़ती थी। इस समय हवामें केवल एक ही कराहनेका लम्बा शब्द था जो यह सूचित कर रहा था कि यह घोड़ा भी दम तोड़ रहा है। अब फिर वही बाण उड़ रहे थे, गोले चल रहे थे और सितारे गिर रहे थे। इन सबका सम्मिलित दृश्य बहुत ही अद्भुत था।

डेटेरिंग खड़ा होकर टहलने लगा और उन हत्यारोंको कोसने लगा। वह बोला—"मेरी तो समझमें ही नहीं आता कि इन बेचारोंने क्या नुकसान किया था।" उसकी आवाजसे मालूम होता था कि वह बहुत अधिक उत्तेजित हो गया है। उसने एक खास शानसे कहा—मैं तो कहता हूँ कि युद्धमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घोड़ोंका उपयोग करना सबसे बड़ी नीचता है ।

× × × ×

अब हम लोगोंके लौटकर लारियों पर जानेका समय आ गया। आकाशमें कुछ अधिक सफेदी आ गई थी। प्रभातका समय था। कोई तीन बजे थे। उस समय ताजी और ठंढी हवा चलने लगी थी। हम लोग आगे पीछे होकर और एक लम्बी कतार बनाकर चलने लगे। रास्तेमें खाइयाँ और गोलोंसे बने हुए बड़े-बड़े गड्ढे मिलते थे। उन सबको पार करते हुए हम लोग फिर उस मैदानमें पहुँचे जो कोहरेसे भरा हुआ था। वहाँ कैजिन्स्की कुछ ताक-झाँकमें लगा। उसके ये लक्षण अच्छे नहीं थे।

क्रापने पूछा—क्यों जी, क्या बात है ?

कैजि०—मैं चाहता हूँ कि अब मैं घर लौट जाऊँ।

यहाँ घरसे कैजिन्सकीका मतलब अपनी झोपड़ीसे था।

क्राप—हम लोग बहुत जल्द इस स्थानको पार कर लेंगे और यहाँसे निकल जायँगे।

ऐसा जान पड़ता था कि वह कुछ घबरा गया है। वह बोला—मैं यह सब कुछ भी नहीं जानता।

कुछ दूर और आगे बढ़ने पर हम उन खाइयोंके पास पहुँचे जिनमें से होकर रसद आदि जाती थी; और उसके बाद खुले खेतोंमें पहुँचे। वह छोटा-सा जंगल हम लोगोंको फिर दिखाई दिया। हम लोग वहाँकी चप्पा चप्पा जमीनसे भली भाँति परिचित थे। वहीं एक कब्रिस्तान भी था जिसमें बहुत-सी कबरें थीं और जिनके पास बहुतसे शिलालेख लगे हुए थे।

अब हम लोगोंको फिर गरज, गड़गड़ाहट और चिल्लाहट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदि सुनाई पड़ती थी। यहाँ आकर फिर एक बार भीषण शब्द हुआ। हम लोगोंके सामने कोई सौ गजकी दूरी पर लपटों और धूएँका बादल-सा दिखाई दिया। उसके बाद तुरन्त ही एक और धड़ाका हुआ जिसके साथ उस जंगलका कुछ अंश धीरे-धीरे ऊपर हवामें उठने लगा। तीन चार पेड़ जड़से उखड़ गये और छिन्न-भिन्न होकर जमीन पर गिर पड़े। फिर वही गोलोंके चलनेके सर्राटे सुनाई पड़ने लगे। मालूम होता था कि फिर जबरदस्त गोलेबारी शुरू हुई है।

किसीने जोरसे चिल्लाकर कहा—सब लोग आड़में हो जाओ।

मैदान और खेत बिलकुल समतल और सपाट थे। जिस स्थान पर हम लोग थे, वहाँसे जंगल कुछ दूर भी था और जंगलमें जाकर छिपना खतरेसे खाली भी नहीं था, क्योंकि सम्भव था कि वहाँ बड़े-बड़े पेड़ कटकर हम लोगोंके ऊपर गिरते और हम लोग उन्हींके नीचे दब मरते। हम लोगोंको आड़के लिए वही कब्रिस्तान अच्छा जान पड़ा। हम लोग अँधेरेमें टटोलते हुए कुछ दूर आगे बढ़े और कब्रोंकी आड़में छिप गये। एक-एक आदमी एक-एक कब्रसे खूब अच्छी तरह चिपटकर लेट गया।

थोड़ी ही देर में इतना घना अँधेरा छा गया कि पसारा हुआ हाथ भी नहीं सूझता था। न जाने ऐसा बलाका अँधेरा कहाँसे आकर छा गया था। बीच-बीचमें धड़ाका होनेके समय जो लपटें उठती थीं, उनसे रह-रहकर वह कब्रिस्तान प्रकाशित हो उठता था। वहाँसे हटकर निकलने या भागनेकी कोई जगह नहीं थी। गोलोंके प्रकाशमें मैंने खेतों और मैदानका दृश्य देखना चाहा। वह सारा क्षेत्र एक जलते हुए समुद्रके समान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जान पड़ता था। गोलोंके गिरनेके कारण आगकी बड़ी-बड़ी लपटें इस प्रकार निकल रही थीं मानों सारे मैदानमें उन लपटोंके बड़े-बड़े फुहारे लगे हुए थे। मनुष्यके लिए उनके बीचमेंसे होकर निकल जाना असम्भव था।

पहले जो छोटा सा जंगल हम लोगोंको रास्तेमें पड़ा था, अब उसका कहीं नाम भी नहीं रह गया था। उसके सब पेड़ कटकर गिर गये थे और उनकी धज्जियाँ उड़ गई थीं। इसलिए हम लोगोंको लाचार होकर उसी कब्रिस्तानमें रुकना पड़ा।

हम लोगोंके सामनेकी जमीन फट गई और ऊपरसे मिट्टी और ढेलोंकी अच्छी खासी वर्षा होने लगी। मुझे एक झटका लगा। मेरे कोटकी आस्तीन फट गई। मैंने अपनी मुट्ठी बाँधी। मुझे कहीं कोई दर्द नहीं जान पड़ा। लेकिन इतने पर भी मेरा पूरा असन्तोष नहीं हुआ। इस प्रकार के जख्मोंमें तुरन्त ही दर्द नहीं होने लगता, कुछ देर बाद पीड़ा जान पड़ती है। मैंने सारी बाँह पर हाथ फेरा। वह बहुत कुछ छिल गई थी, पर फिर भी कहींसे टूटी नहीं थी और न उसमें कोई घाव ही हुआ था। इतनेमें मेरे सिर पर एक आघात लगा और सिर फट गया। मैं धीरे-धीरे बेहोश होने लगा। तुरन्त ही बिजलीकी तरह एक विचार मेरे मनमें उत्पन्न हुआ। मैंने अपने आपको सँभाला और सोचा कि मुझे अपने आपको बेहोश नहीं होने देना चाहिए। मैं नीचे गड्ढेमें गिर गया, लेकिन तुरन्त ही सँभलकर ऊपर आ गया। कोई टुकड़ा फिर आकर मेरे खोदमें लगा, पर वह इतनी जल्दीसे पार निकल गया कि मेरे सिरमें कोई चोट नहीं आने पाई। मेरी आँखोंमें जो मिट्टी पड़ गई थी, वह मैंने पोंछ डाली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे सामने जमीनमें एक बहुत बड़ा गड्ढा हो गया। मैं बहुत अच्छी तरह जानता था कि एक बार जिस स्थान पर गोला गिर कर जमीनमें गड्ढा कर देता है, उस गड्ढेमें फिर दोबारा जल्दी दूसरा कोई गोला आकर नहीं गिरता। इसलिए मैं खिसक कर उसी गड्ढेमें चला गया। उसीमें मैं मछलीकी तरह लम्बा पड़ गया और जल्दीसे कोई आड़ ढूँढ़ने लगा। मुझे बाईं ओर कोई चीज पड़ी हुई मालूम हुई। मैं उसे ऊपर उठाकर उसके नीचेकी ओर खिसका। पृथ्वी मानों उछल रही थी और कान फाड़नेवाली गड़गड़ाहट और धड़ाके हो रहे थे। मैं जल्दीसे खिसककर उसी चीजके नीचे छिप गया और उसे खींचकर मैंने और भी अच्छी तरह अपने ऊपर कर लिया। मैं नहीं जानता था कि वह लकड़ी है, कपड़ा है या क्या है। मुझे तो उस समय केवल आड़ करनेके लिए किसी चीजकी जरूरत थी; फिर चाहे वह कुछ भी हो।

कुछ ही क्षणोंके बाद मैंने आँखें खोलीं। हाथोंसे टटोलने पर मुझे ऐसा जान पड़ा कि कोई आस्तीन है और उसके अन्दर एक हाथ है। मैंने सोचा कि शायद यह भी मेरी तरह कोई घायल ही है। मैंने उसे पुकारा, पर कोई उत्तर नहीं मिला। तब मैंने समझा कि वह कोई लाश है। मैंने कुछ और आगे हाथ बढ़ाया। वहाँ सब जगह सिर्फ लकड़ियोंके टुकड़े-ही-टुकड़े थे। अब मुझे फिर याद आया कि हम लोग एक कब्रिस्तान में पड़े हुए हैं।

लेकिन गोलेबारी सबसे अधिक प्रबल होती है; उसके समान शक्ति और किसीमें नहीं होती। मैं धीरेसे कुछ और आगे खिसककर ताबूतके नीचे चला गया। मैंने समझ लिया कि यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसके अन्दर स्वयं मृत्यु ही पड़ी हुई है, तो भी इस समय वह अवश्य मेरी रक्षा करेगी।

मुझे अपने सामने बहुत बड़ा गड्ढा दिखाई देता था। वह इतना पास था कि एक ही कुदानमें मैं उसके अन्दर पहुँच सकता था। मेरे मुँह पर कोई चीज लगी और तुरन्त ही मेरे कन्धे पर एक हाथ फिरता हुआ जान पड़ा। मैं सोचने लगा कि क्या यह मुरदा भी जी उठा। उस हाथने मुझे हिलाया। मैंने सिर घुमाकर देखा तो सामने मुझे कैजिन्स्कीका चेहरा दिखाई पड़ा। उसका मुँह बहुत खुला हुआ था और वह कराह रहा था। उस गड़गड़ाहटमें कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता था, इसलिए वह कुछ और भी खिसककर मेरे पास आ गया। जब फिर बीचमें क्षण भरके लिए गड़गड़ाहट कुछ कम हुई, तब बड़ी कठिनतासे उसके ये शब्द मेरे कानों तक पहुँच सके—गैस—गैस—गैस! मुँहपर थैली लगा लो।

मैं जल्दी जल्दी जेबसे वह थैली निकालने लगा जो गैससे बचनेके लिए मुँहपर लगाई जाती है। थोड़ी ही दूरपर एक और आदमी पड़ा हुआ था। उस समय मुझे गैसके सिवा और किसी बातका ध्यान ही नहीं रह गया था। मैंने सोचा कि वह भी जानता होगा कि घातक गैस आ रही है।

मैंने उस आदमीको कई बार पुकारा, बहुत हिलाया-डुलाया, पर न तो वह कुछ बोलता ही था और न आँखें ही खोलता था। वह रंगरूट था। और यहाँ बिलकुल नया ही आया था। मैंने कैजिन्स्कीकी ओर देखा। वह गैससे बचानेवाली थैली अपने मुँह पर लगाये हुए था। मैंने भी अपनी थैली निकाली। मेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खोद सिर परसे नीचे गिर पड़ा। अपनी थैली लगाकर मैं उस आदमीके पास पहुँचा और उसकी थैली निकालकर मैंने उसके मुँह और सिर पर पहना दी। वह भी समझ गया। इसके बाद मैं फिर झट कूदकर उसी गड्ढेमें जा पहुँचा।

अब बड़े-बड़े और गोलोंके साथ गैससे भरे हुए गोले भी आकर गिरने लगे। जब जब धड़ाकोंके बीचमें कुछ शान्ति होती थी, तब तब बड़े-बड़े घंटे आदि बजते थे। उन घंटोंके बजनेका यही मतलब था कि सब लोग सावधान हो जायँ और मुँहपर थैलियाँ लगा लें, क्योंकि जहरीली गैस आ रही है।

इतनेमें मुझे ऐसा जान पड़ा कि कोई आदमी कूदकर मेरे पीछे आया है। उसके बाद ही और भी दो एक आदमियोंके कूदनेकी आहट सुनाई पड़ी। मैंने थैलीके साथ लगा हुआ चश्मा उतारकर पोंछा, क्योंकि कोहरे और साँससे वह बिलकुल धुँधला हो गया था और उसमें से कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। फिर चश्मा लगाकर मैंने देखा तो वहाँ कैजिन्स्की, क्राप और उनके साथ एक और आदमी था। उस परम संकटके समय हम लोग बहुत ही चिन्तित, पर साथ ही सचेत, होकर वहीं लेट रहे। हम लोग यथा-सम्भव बहुत ही धीरेसे साँस ले रहे थे।

जब गैससे बचनेकी थैली पहले-पहल मुँह पर पहनी जाती है, तब कुछ मिनटों तक बहुत अधिक कष्ट होता है; यहाँ तक कि प्राणोंपर आ बनती है। ऐसा सन्देह होने लगता है कि इसमें कहींसे हवा आनेकी जगह ही नहीं है। मैंने अस्पतालमें ऐसे अनेक रोगियोंके बहुत ही भीषण दृश्य देखे थे जो अधिक समय तक गैसकी थैली लगाये रहनेके कारण बीमार हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिन दिन भर इसी तरह दम घुटनेके कारण उनके फेफड़े बिलकुल जल गये थे; और जब वे खाँसते थे, तब उनके मुँहसे बलगम के साथ फेफड़ेके टुकड़े भी कट कटकर निकलते थे।

थैलीमें साँस लेनेके लिए जो यन्त्र लगा रहता है, उसे बहुत ही सावधानीके साथ मुँहसे लगाकर मैंने धीरे-धीरे साँस लेना आरम्भ किया। अभी तक जमीन पर चारो ओर गैस फैली हुई थी और सभी गड्ढों और विवरोंमें घुस रही थी। हम लोग जिस गड्ढेमें पड़े हुए थे, उसमें भी वह इसी तरह आ रही थी। मैंने कैजिन्स्कीको हिलाकर संकेत किया। मेरा मतलब यह था कि हम लोग यहाँसे रेंगते हुए निकलकर ऊपर चले चलें, क्योंकि नीचे गड्ढोंमें गैस सबसे ज्यादा जमा होती है और ऊँचे स्थानोंमें वह अपेक्षाकृत बहुत ही कम होती है। लेकिन अभी हम लोग रास्तेमें ही थे और उस ऊँचाई तक पहुँचे भी नहीं थे कि फिर नये सिरसे गोलेवारी आरम्भ हुई। इस वारकी गोलेबारी और भी अधिक भीषण थी। अब की यह नहीं जान पड़ता था कि गोले बरस रहे हैं, बल्कि यह जान पड़ता था कि पृथ्वी ही कुपित होकर फट रही है।

इतनेमें कुछ धमाका हुआ और कोई काली-सी चीज आकर हम लोगोंके पास गिरी। वह चीज हम लोगोंके बहुत ही पास आकर पड़ी थी। देखने पर मालूम हुआ कि वह एक ताबूत था जो गोलेके आघातसे अपने स्थानसे उड़कर यहाँ आ गिरा था।

मैंने कैजिन्स्कीको खिसकते हुए देखा; अतः मैं भी एक ओर खिसक गया। वह ताबूत उस चौथे आदमीकी फैली हुई बाँह पर पड़ा था जिससे उसे कुछ चोट भी आई थी। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने दूसरे हाथसे अपने मुँह परकी थैली फाड़ डालना चाहता था। पर उस थैलीके फटनेसे पहले ही आपने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे उमेठकर उसकी पीठकी ओर करके जकड़ रखा।

मैं और कैजिन्स्की दोनों बढ़कर उस ताबूतके नीचेसे उसका घायल हाथ निकालने लगे। ताबूतके ऊपरका ढकना टूट गया था, इसलिए वह जोरसे नीचे गिर पड़ा। हम लोगोंने उसके अन्दरसे लाश निकाली। लाश लुढ़ककर नीचे गड्ढेमें चली गई। अब हम लोग उस ताबूतके नीचेवाला भाग खोलने लगे। उसी अवसर पर सौभाग्यवश वह आदमी बेहोश हो गया जिससे आपका हाथ खाली हो गया और वह भी हम लोगों की सहायता करने लगा। अब हम लोगोंको अधिक सावधानी करने की आवश्यकता नहीं रह गई। तो भी बहुत कठिनतासे हम लोगोंने उस ताबूतके नीचेवाला हिस्सा तोड़ा। उसके कई टुकड़े हो गये थे, इसलिए वह पहलेकी अपेक्षा बहुत हलका हो गया था। कैजिन्स्कीने उसमेंसे काठका एक छोटा टुकड़ा निकाला और उसे उसकी टूटी हुई बाँहके नीचे रखकर कपड़ेसे अच्छी तरह कसकर उसे बाँध दिया। उस समय इससे अधिक हम लोग और कुछ भी नहीं कर सकते थे।

गैसवाली थैलीके अन्दर मेरा सिर फटा जाता था। साँसके साथ बाहर निकली हुई गन्दी हवामें ही मुझे बराबर साँस लेना पड़ता था जिससे मेरी कनपटी परकी नसें फूल गई थीं और मुझे ऐसा जान पड़ता था कि मेरा दम घुट रहा है।

इतनेमें कुछ हलका सा प्रकाश आता हुआ दिखाई दिया। मैं उस गड्ढेके ऊपरी किनारे पर चढ़ कया। उस मलिन प्रकाशमें मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरीरसे कटकर बिलकुल अलग गिरी हुई एक टाँग दिखाई दी। उसमें साबुत बूट भी पहना हुआ था। मैंने एक ही निगाहमें सब कुछ देख लिया। थोड़ी ही दूरपर मुझे एक आदमी खड़ा हुआ दिखाई दिया। मैंने चश्मेके शीशे साफ किये, पर घबराहटमें वे फिर तुरन्त ही धुँधले हो गये। मैंने उन्हीं शीशोंमें से देखा कि उस आदमीके चेहरे पर थैली नहीं थी। मैंने समझ लिया कि अब गैस नहीं रह गई है। पर फिर भी मैं क्षण भर तक उसे देखता रहा। मैंने देखा कि वह आदमी ज्योंका त्यों खड़ा है और जमीन पर गिर नहीं पड़ा। वह अच्छी तरह चारो तरफ देख रहा था और दो-चार कदम इधर उधर चला-फिरा भी था। मैंने भी अपने मुँह परकी थैली फाड़कर फेंक दी। हवा बिलकुल ठंढे पानीकी तरह आ आकर नाक और मुँहके द्वारा मेरे शरीरमें भरने लगी। मेरी आँखें फटी जा रही थीं। हवाके झोंके आते थे और मुझे शीतल करते हुए मेरे ऊपरसे निकल जाते थे।

× × × ×

अब गोलेबारी बन्द हो गई थी। मैं फिर गड्ढेमें उतरकर और लोगोंके पास पहुँचा। उन लोगोंने भी अपनी अपनी थैलियाँ निकाल डालीं। हम सब लोगोंने मिलकर उस घायल आदमीको उठाया। एक आदमीने सिर्फ उसकी टूटी हुई बाँह पकड़ी। हम लोग जल्दी-जल्दी वहाँसे आगे बढ़े।

वह सारा कब्रिस्तान बिलकुल खँड़हर हो गया था। चारो ओर छिन्न-भिन्न होकर ताबूत और लाशें बिखरी हुई थीं। वे शरीर एक बार तो पहले ही मर चुके थे, इस बार मानों दोबारा उनकी हत्या की गई थी। पर इसमें सन्देह नहीं कि उन लाशोंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार दोबारा निहत होकर ही हम लोगोंके प्राण बचाये थे।

काँटेदार तारोंकी बाढ़ भी नष्ट हो गई थी और रेलकी लाइनें बहुत ही बुरी तरहसे उखड़-पुखड़ गई थीं। यहाँ तक कि कुछ लाइनें तो उठकर इस प्रकार एक दूसरीके सहारे खड़ी हो गई थीं कि उनके नीचे मेहराबें सी बन गई थीं। रास्तेमें एक जगह हम लोगोंको एक आदमी जमीन पर पड़ा हुआ दिखाई दिया। हम लोग रुक गये। क्राप आगे बढ़कर उसके पास पहुँचा। वह आदमी भी रंगरूट था। उसकी कमर और चूतड़ खूनसे तर थे। वह बहुत अधिक शिथिल हो गया था, अतः मैं सोचने लगा कि उसे कुछ पानी या शराब पिलाऊँ। मैं अपनी बोतल टटोलने लगा, पर कैजिन्स्कीने मुझे रोक दिया और उसके ऊपर झुककर पूछा—क्यों दोस्त, तुम्हे कहाँ चोट लगी ?

उसकी पुतलियाँ हिलीं। उसमें उत्तर देनेकी शक्ति नहीं थी।

हम लोगोंने बहुत ही सावधानीसे उसका पाजामा खोला। उसने कराहते हुए कहा—धीरे...धीरे...अरे इससे तो यही अच्छा है..................।

यदि उसके पेटमें चोट लगी हो तो उस समय उसे कुछ भी नहीं पिलाना चाहिए था। उसमें एक अच्छा लक्षण यह था कि उसे कै नहीं हो रही थी। उसकी कमर और चूतड़ बिलकुल खुले हुए थे और उस स्थान पर केवल मांसके कटे-फटे लोथड़े और हड्डियोंके टुकड़े ही दिखाई पड़ते थे। उसकी कमरके जोड़पर ही भीषण आघात लगा था। हम लोगोंने समझ लिया कि यह लड़का बच भी गया तो भी अब यह कभी उठकर खड़ा होने या चलने-फिरनेके लायक न होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उसके माथे और कनपटी पर गीला हाथ फेरा। उसकी आँखे फिर हिलीं। अब हम लोगोंने देखा कि उसके दाहिने हाथमें से भी खून बह रहा है।

कैजिन्स्कीने कपड़ों के दो टुकड़े इतने चौड़े करके फैलाये कि उनसे उसका जखम अच्छी तरह ढक जाय। मैं कोई ऐसी चीज ढूँढ़ने लगा जिससे वह पोला-पोला बाँधा जा सके। लेकिन हम लोगोंके पास और कोई कपड़ा नहीं था, इसलिए मैंने उस घायल के पाजामेका पैर इसलिए और भी फाड़ डाला कि उसके अन्दर की छोटी पतलून निकाल लूँ और उसीको फाड़कर पट्टी बनाऊँ। लेकिन पाजामा फाड़ने पर मैंने देखा कि वह अन्दर छोटी पतलून नहीं पहने था। उसी समय मैंने बहुत पाससे और ध्यानपूर्वक उसका चेहरा भी देखा। यह वही लड़का था जिसे पतलून में पाखाना हो गया था और जिसे मैंने सलाह दी थी कि सामने की झाड़ीमें जाकर भीतरी छोटी पतलून उतारकर फेंक दो।

इस बीचमें कैजिन्स्कीने एक मृतकके जेबसे पट्टी निकाली जो हम लोगोंने बहुत ही सावधानीसे उसके जखम पर बाँध दी। वह लड़का हम लोगोंकी ओर टक लगाये हुए देख रहा था। हमने उससे कहा—तुम यहीं पड़े रहो। हम लोग तुम्हें उठा ले चलनेके लिए स्ट्रेचर लाने जा रहे हैं।

उसने बहुत कठिनतासे कहा—नहीं, यहीं रहो........।

कैजि०—नहीं, हम लोग बहुत जल्दी आवेंगे। हम लोग तुम्हारे लिए सिर्फ स्ट्रेचर लाने जा रहे हैं।

ईश्वर जाने हमारी बातोंका मतलब उसकी समझमें आया या नहीं; पर वह बच्चोंकी तरह फूट-फूटकर रोने लगा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोला—नहीं, तुम लोग यहाँ से मत जाओ।

कैजिन्स्कीने इधर-उधर देखकर बहुत धीरेसे मुझसे कहा—क्यों जी, यदि हम लोग रिवाल्वरसे यहीं इसका अन्त कर दें तो कैसा?

इसमें सन्देह नहीं कि उस समय उस लड़केकी दशा बहुत ही खराब हो रही थी; और यदि हम लोग उसे वहाँसे उठा ले जाते तो सम्भवतः रास्तेमें ही उसका दम निकल जाता। और फिर अधिकसे अधिक दो चार दिन ही वह जीता बचता; इसके अन्दर ही वह अवश्य मर जाता। अब तक उसे जो पीड़ा हुई थी, वह वास्तवमें कुछ भी नहीं थी। उसके लिए घोर पीड़ाका समय तो अब आ रहा था; और यह प्रायः निश्चित था कि जब तक वह मर न जायगा, तबतक बहुत अधिक कष्टमें रहेगा। अभी तो उसमें पीड़ाकी अनुभूति बहुत ही कम है। एक घन्टे भरमें वह असह्य वेदनाका एक गट्ठर और भार हो जायगा। वह जितने दिन जीता रहेगा, उतने दिन उसके लिए घोर कष्ट और वेदनाके होंगे। और फिर चाहे अभी उसके प्राण निकल जायँ और चाहे दो चार दिन बाद निकलें, उसके इस समय बच रहनेका ही किसीको क्या सुख हो सकता है!

कैजिन्स्कीकी बात सुनकर मैंने भी सिर हिलाकर अपनी सम्मति प्रकट की और कहा—हाँ भाई, हम लोगोंको उचित है कि जहाँ तक जल्दी हो सके, इस कष्टसे इसको मुक्त कर दें।

कैजिन्स्की क्षण भर तक चुपचाप खड़ा रहा। ऐसा जान पड़ता था कि उसने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर लिया है। हम लोग अपने आस-पास और इधर-उधर देखने लगे। पर तबतक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोग अकेले नहीं रह गये थे। गड्ढों आदिमें से और भी बहुत से आदमी निकल आये थे जो इधर-उधर जमा हो रहे थे। इसके सिवा खाइयोंमें से भी बहुत से सिर निकलते हुए दिखाई दे रहे थे।

हम लोग एक स्ट्रेचर (दो लम्बे डंडोंके बीचमें बँधा हुआ कपड़ा जिस पर घायल उठाकर एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पहुँचाये जाते हैं) ले आये।

कैजिन्स्कीने सिर हिलाकर कहा—हाय बेचारा ऐसा अच्छा लड़का ! न जाने ऐसे कितने निरपराध नवयुवक...........।

हम लोग तो समझते थे कि हमारे बहुत अधिक आदमी घायल हुए होंगे और बहुत अधिक मरे होंगे। लेकिन नहीं, हमारे यहाँ घायलों और मृतकोंकी संख्या अपेक्षाकृत कम ही थी। हम लोगोंमें से केवल पाँच आदमी मरे थे और आठ घायल हुए थे। वास्तवमें यह गोलेबारी बहुत ही थोड़े समय तक हुई थी। हमारे साथियोंमें से दो आदमी मरे हुए ऐसी कब्रोंमें पड़े थे जो गोला लगनेके कारण बिलकुल उलट गई थीं। हम लोगोंने उन पर और थोड़ी मिट्टी डाल दी।

हम लोग वहाँसे लौटे। सब लोगोंने आगे पीछे होकर एक लम्बी कतार बना ली थी। रास्तेमें सब लोग बिलकुल चुपचाप थे। कोई किसीसे कुछ भी नहीं बोलता था। घायल लोग अस्पतालमें पहुँचा दिये गये। उस दिन सवेरे आकाशमें कुछ बादल छाये हुए थे। अस्पतालके आदमी कुछ देर तक नम्बरों और टिकटों आदिके बखेड़े करते रहे और घायल लोग चीखते-चिल्लाते रहे। इतनेमें पानी बरसने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक घंटेके बाद हम लोग अपनी लारियों पर पहुँचे और उनपर सवार हुए। इस बार भी लारियोंमें स्थानकी उतनी ही तंगी थी जितनी आनेके समय थी। पानी और भी जोरोंसे बरसने लगा। हम लोगोंने मोमजामेवाली चादरें निकालकर सिरसे ओढ़ लीं। इधर-उधर पानीके नाले बहने लगे। गड्ढों और ऊबड़-खावड़ जगहमें चलनेके कारण खूब झटके लगते थे और हम लोग ऊँघते हुए एक दूसरे पर गिर रहे थे।

प्रत्येक लारी पर आगे दो अदमी हाथमें लम्बे-लम्बे लग्घे लिये हुए बैठे थे। रास्तेमें जहाँ कहीं टेलीफोनके तार कटे और झूलते हुए दिखाई पड़ते थे, उन्हें वे उन लग्घों पर उठाकर ऊपर कर देते थे जिसमें उन तारोंसे हम लोगोंके सिर न कट जायँ। जब सामने ऐसे तार दिखाई पड़ते थे, तब वे चिल्लाकर कहते थे—"होशियार, तार है।" यह सुनते ही हम लोग उस ऊँघनेकी दशामें ही सिर झुकाकर घुटनोंके अन्दर कर लेते थे और तार पारकर लेनेपर फिर सिर ऊपर कर लेते थे।

लारियाँ बराबर चली चलती थीं। बीच बीचमें इसी तरह बराबर आवाजें लगती थीं और पानी भी बरसता था। वर्षाका पानी हम लोगोंके सिर पर पड़ता था, मुरदों और घायलोंके सिरपर पड़ता था, उस घायल लड़के पर पड़ता था जिसकी कमर पर बहुत बड़ा जख्म था और हम लोगोंके हृदयपर पड़ता था।

इतनेमें कहींसे एक धड़ाकेका शब्द सुनाई पड़ा। हम लोग तुरन्त ही चौकन्ने हो गये और हाथ टेककर इस प्रकार खड़े हो गये कि जिसमें आवश्यकता पड़ते ही कूदकर लारीसे उतर सकें और पासके गड्ढोंमें जा छिपें। लेकिन सौभाग्यवश कुछ भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ। फिर वही आवाज आई—"होशियार ! तार है ।" फिर हम लोगोंने सिर और घुटने झुका लिये—फिर हम लोग ऊँघने लगे।

पाँचवाँ परिच्छेद

जब आदमीके सिर और कपड़ोंमें सैंकड़ों हजारों जूएँ हों, तब उनमें से एक एकको पकड़कर मारना भारी जहमतका काम है। ये छोटे-छोटे कीड़े बहुत कड़े होते हैं; और जब आदमीको उनमें से एक एकको पकड़कर और नाखून पर रखकर बराबर घंटों तक मारना पड़ता है, तब उसकी तबीयत घबरा जाती है। इसलिए जैडनने जूएँ मारनेकी एक नई और बढ़िया तरकीब निकाली है। उसने मोमबत्ती जलानेके एक आधार पर तारसे कसकर जूते की पालिशका एक ढकना बाँध दिया है। बस वह जूएँ पकड़ पकड़कर उसी डिब्बेमें डालता चलता है। टिक्क टिक्क आवाज होती चलती है और जूएँ आपसे-आप मरती चलती हैं।

हम सब लोग धूपमें एक घेरेमें बैठे हुए और अपनी अपनी कमीज अपने घुटनों पर रखे हुए जूएँ मार रहे हैं। हेईके कपड़ोंमें एक खास तरहकी और बढिया जूएँ पड़ी हैं। उनके सिर पर एक खास तरहका लाल निशान है। उसका कहना है कि वह इन जूओंको थारहाउटके अस्पतालसे अपने साथ लाया है और वहाँ ये जूएँ डाक्टरों और सरजनोंके एक बहुत बड़े अफसरके कपड़ोंमें थीं। वह यह भी कहता है कि मैं इसी ढकनेमें इन जूओंकी चरबी जमा करूँगा। और अपनी इस दिल्लगी पर आप-ही आप घंटों हँसता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन आज हम लोग उसकी इस प्रकारकी बातोंपर बहुत ही कम ध्यान देते हैं, क्योंकि हम लोगोंका ध्यान पहलेसे ही एक और बातकी तरफ है।

बहुत जोरोंसे जो यह अफवाह फैली थी कि हिम्मेल्सटोस आ रहा है, वह अफवाह अब बिलकुल ठीक उतरी है। हिम्मेल्सटोस आ गया है। कल ही उसकी तशरीफ यहाँ आई है। हम लोगोंने उसका परिचित स्वर भी सुन लिया है। जान पड़ता है कि जुते हुए खेतोंमें कुछ रंगरूटोंके साथ उसे बहुत अधिक बकना पड़ा है; और उसके सब रंग-ढंग एक स्थानीय मजिस्ट्रेट के लड़केने छिपकर देख लिये हैं।

अब यहाँ उसे बहुत ही अद्भुत और नई बात दिखाई देगी। जैडन घंटोंसे सोच रहा है कि जब उसका सामना हो, तब उससे क्या कहना चाहिए। हेई बार बार अपनी बँधी हुई मुट्ठी और घूँसोंकी तरफ देखा है और बीच बीचमें मुझे आँखोंसे संकेत भी करता चलता है। उस दिन उसने हिम्मेल्सटोसको जैसे घूँसे लगाये थे, वैसे घूँसे उसने अपने जीवनमें और कभी किसीको नहीं लगाये थे। वह प्रायः मुझसे कहा करता है कि मुझे स्वप्नमें भी यही दिखाई देता है कि मैं हिम्मेल्सटोसको घूँसे जड़ रहा हूँ। क्राप और म्यूलर अलग आनन्द कर रहे हैं। न जाने कहाँ से, पर सम्भवतः बड़े बावर्चीखानेसे, क्राप फलियोंसे भरा हुआ एक बहुत बड़ा टिन उठा लाया है। म्यूलर बड़ी लालसाकी दृष्टिसे उन फलियोंको देख रहा है, पर फिर भी अपने आपको रोकता हुआ कहता है—क्यों जी, यदि अचानक युद्ध बन्द हो जाय और फिर शान्ति स्थापित हो जाय तो तुम क्या करोगे?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपने बहुत ही तीखे स्वरसे उत्तर दिया—शान्ति-काल तो कभी आ ही नहीं सकता।

म्यूलर—लेकिन फिर भी मान लो कि यदि किसी तरह शान्ति स्थापित हो जाय तो तुम क्या करोगे?

आप—इस भीषण लड़ाई पर और शान्ति?

म्यू०—हाँ हाँ, मान लो कि यदि किसी प्रकार हो ही जाय तो क्या करोगे?

आप—तब मैं तो खूब शराब पीऊँगा।

म्यू०—ये वाहियात बातें जाने दो और ठीक-ठीक बतलाओ।

आप—मैं भी तो मजाक नहीं कर रहा हूँ। भला तुम्हीं बतलाओ कि इसके सिवा आदमी और कर ही क्या सकता है।

इसी बीचमें कैजिन्स्कीने आपके टीनमें से कुछ फलियाँ निकालकर खूब तारीफ करते हुए खा डालीं और तब कुछ देर तक सोचनेके बाद कहा—हाँ, यह ठीक है कि युद्ध समाप्त होते ही तुम खूब शराब पीओगे। पर शराब पीते ही तुम पहली गाड़ीसे घरके लिए रवाना होगे और अपनी माँके पास जा पहुँचोगे। अरे भाई, शान्ति-काल कुछ........।

इसके बाद उसने अपने जेबसे नोट बुक निकाली और उसमें से एक चित्र निकालकर सबको दिखलाते हुए कहा—देखो, यह मेरी बुढ़ियाका चित्र है। इसके बाद वह चित्र और नोट बुक फिर जेबमें रखकर बोला—इस जूओंवाली लड़ाईका तो सत्यानाश ही हो जाय।

मैंने कहा—हाँ भाई, तुम इस तरहकी बातें क्यों न करोगे। तुम्हारी स्त्री है, बच्चे हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह सिर हिलाकर बोला—हाँ जरूर है; और मुझे इस बात की चिन्ता है कि मैं किस तरह उनका पेट भरूँगा।

हम सब लोग हँस पड़े। मैंने कहा—खानेके बिना तुम्हारे बाल-बच्चे कभी भूखे नहीं मर सकते। वह तो तुम कहीं-न-कहीं से ढूँढ़ ही लाओगे।

पर म्यूलरको किसी प्रकार शान्ति नहीं मिलती। वह हेई वेस्थसका स्वप्न भंग करके उससे पूछता है—क्यों जी, यदि युद्ध समाप्त हो जाय तो तुम क्या करोगे ?

मैं—तुम्हारी इस तरहकी बातोंके लिए तुम्हें एक खासी ठोकर दी जायगी।

पर म्यूलर उस समय हेईसे बिना अपने प्रश्नका उत्तर पाये मान ही नहीं सकता था, इसलिए उसने फिर उससे वही प्रश्न किया।

हेई—तुम यही जानना चाहते हो न कि जब युद्ध बन्द हो जायगा, तब मैं क्या करूँगा ?

म्यू०—हाँ, सिर्फ यही जानना चाहता हूँ।

हेई—उस समय संसारमें औरतें तो रहेंगी न ?

यह प्रश्न करते ही मानों हेईके मुँहमें पानी भर आया था।

म्यू०—हाँ हाँ, जरूर। भला औरतोंकी क्या कमी होगी। वे तो और भी अधिकतासे मिल सकेंगी।

हेई—तो बस फिर मैं एक बहुत बढ़िया और मालदार औरत तजवीज करूँगा और खूब पेट भर भोजन करके सीधा बिस्तर पर जा पडूँगा। बढ़िया, मजेका, कमानीदार पलंग होगा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसपर परोंसे भरा हुआ गद्दा होगा। आनन्दसे सोऊँगा और हफ्तों तक पाजामा भी न पहनूँगा।

हेईने जो चित्र खींचा था, वह बहुत ही सुन्दर था; इसलिए सब लोग कुछ देरके लिए बिलकुल चुप हो गये। सभी लोगोंका मन चंचल हो गया। अन्तमें म्यूलरने फिर अपने आपको सँभालकर पूछा—अच्छा तो फिर उसके बाद क्या होगा ?

फिर कुछ देर तक सब लोग चुप रहे। इस बार हेई बोला—अगर सेना विभागमें मुझे कोई अच्छा पद मिल गया तो मैं उसी पदपर रहकर अपना सारा जीवन बिता दूँगा।

मैं—हेई, जान पड़ता है कि तुम्हारा दिमाग जरूर कुछ खराब हो गया है।

हेई हँसकर बोला—तुमने कभी खेत कोड़ा है ? जरा एक दफे कोड़नेकी कोशिश तो करो।

इतना कहकर हेई उठ खड़ा हुआ और धीरेसे फिर क्रापके उसी फलियोंवाले टीनके पास जा पहुँचा।

मैंने कहा—वह खाइयाँ खोदनेसे तो बुरा नहीं हो सकता।

हेई—खाइयाँ खोदनेसे तो फिर भी कभी न कभी छुट्टी मिल जाती है, पर खेत कोड़नेसे कभी छुट्टी ही नहीं मिलती।

मैं—जो हो, लेकिन उसमें घरपर तो रहना मिलता है।

हेई—जैसा रहना मिलता है, वह तो रहनेवालोंका जी ही जानता है।

यह कहकर हेई मुँह बाकर किसी गहरी चिन्तामें पड़ गया। उसकी वह मुद्रा देखते ही हम लोग समझ गये कि वह क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोचता है। उसकी आँखोंके सामने देहाती मकानका दृश्य फिर रहा था। वह सोचता था कि गाँवके एक कोनेमें मिट्टीका बना हुआ एक छोटा सा गन्दा मकान है। उसीमें आदमीको रहना पड़ता है और सवेरेसे सन्ध्या तक खेतों और जंगलोंमें कठिन परिश्रम करना पड़ता है। चाहे जेठ-बैसाखकी धूप हो और चाहे पूस-माघका कड़ाकेका जाड़ा हो; अपने पास कोई काम होता नहीं। नाम मात्रका वेतन लेकर दूसरोंकी मजदूरी करनी पड़ती है। गन्दे और फटे हुए कपड़े पहननेको मिलते हैं और रूखा सूखा अन्न भी पेट भर खानेको नहीं मिलता।

थोड़ी देर तक यही सब बातें सोचनेके बाद वह फिर बोला—यदि शान्ति-काल हो और कहीं लड़ाई न हो तो फिर सेना विभागमें बहुत ही आनन्दसे समय बीतता है। दिन भर कोई काम नहीं करना पड़ता। रोज बढ़िया पका-पकाया भोजन मिलता है; और यदि किसी दिन भोजनमें जरा भी देर हो जाय तो बैरा को ठोकर लगाई जाती है। सोनेको बढ़िया बिस्तर मिलता है और पहननेको हर हफ्ते साफ और बढ़िया धुले हुए कपड़े मिलते हैं। सन्ध्या समय आनन्दसे घूमो-फिरो और क्लबमें जाकर सुन्दर स्त्रियोंसे गप्पें लड़ाओ।

हेई अपने इन्हीं सब विचारोंमें बहुत मग्न है। वह इसी प्रकारका जीवन बहुत पसन्द करता है। कुछ देर बाद वह फिर कहना आरम्भ करता है—बस, इस तरह जहाँ तुमने बारह बरस विताये, तहाँ तुम्हारी पेन्शन हो गई। फिर अपने गाँवमें जाकर आनन्दसे अपने घर रहो। यदि दिन भर खाली घूमा करो तो भी कोई तुम्हें कुछ कहनेवाला नहीं है। एक तरफ गोश्त रखा है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो दूसरी तरफ शराव पड़ी है। भला इससे बढकर सुख और क्या हो सकता है!

कैजि०—लेकन बच्चा याद रखो, तुम्हें सेनामें कभी ऐसी अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी।

कैजिन्सकीकी ओर वहुत ही उदासीनतापूर्ण दृष्टिसे देखकर हेई चुप रह गया, पर उसके मनमें अभी तक वही विचार भरे हैं। वह मन-ही-मन स्वप्न देख रहा है कि वसन्त ऋतु हो, सन्ध्याका समय हो, गाँवमें घरका मकान हो, चुहुलबाजीके लिए दो-चार दासियाँ और मजदूरनियाँ हो, भुना हुआ गोश्त और शराब हो, सुन्दर स्त्री हो...........।

वह इस प्रकारके सुख-स्वप्नोंसे किसी तरह अपना पीछा छुड़ा ही नहीं सकता। अब आपने उसका पीछा छोड़कर जैडनको घेरा और उससे पूछा—क्यों जी, युद्ध समाप्त हो जाने पर तुम क्या करोगे?

लेकिन जैडनके सिर पर तो एक ही भूत सवार था। वह बोला—बस मैं तो सदा इसी प्रयत्नमें रहूँगा कि हिम्मेल्सटोस मेरी मातहतीमें रहे और मुझसे किसी तरह आगे न बढ़ने पावे।

ऐसा जान पड़ता था कि हिम्मेलसटोसको जैडन एक पिंजड़ेमें बन्द करके अपने पास रखना चाहता है और दिन-रात डंडोंसे उसकी खबर लेना चाहता है। कुछ देर तक चुप रहनेके बाद वह कुछ उत्तेजित होकर बोला—यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होऊँ तो मैं लेफ्टिनेन्ट बननेका प्रयत्न करूँगा। और उस दशामें उसे ऐसा पीसूँगा कि उसे भी छठीका दूध याद आ जाय।

इसके बाद म्यूलरने डेटेरिंगसे पूछा—और क्यों जी, तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या करोगे ? ऐसा जान पड़ता था कि म्यूलर किसी स्कूलका मास्टर है और सब लड़कोंसे उनकी परीक्षा लेनेके लिए प्रश्न कर रहा है।

यों तो डेटेरिंग बहुत कम बोलता है, पर इस विषयमें उसने तुरन्त बहुत ही थोड़े शब्दोंमें अपना विचार प्रकट कर दिया। उसने आकाशकी ओर देखकर केवल एक ही वाक्य कहा—मैं तो यहाँसे छूटते ही सीधा घर जाकर अपना खेती-बारीका काम करूँगा।

इतना कहकर डेटेरिंग उठकर वहाँसे कुछ दूर चला गया। वह इसलिए बहुत ही चिन्तित है कि उसकी अनुपस्थितिमें उसकी स्त्रीको ही खेती-बारीके सब काम देखने पड़ते हैं। अभी हालमें उसके घरसे चिट्ठी आई है जिसमें लिखा है कि सरकारी आदमी उसके दो घोड़े जबरदस्ती खोलकर ले गये हैं। रोज जब अखबार आते हैं, तब उनमें पहले वह यही देखता है कि उसके जिलेमें पानी बरसा है या नहीं। पानीकी चिन्ता उसे इसलिए है कि अभी तक उसकी घास और पुआल आदि खलिहानमें ही है, घरमें नहीं आई है।

इतनेमें हम लोगोंको हिम्मेल्सटोस आता हुआ दिखाई दिया। क्षण भरमें ही वह सीधा हम लोगोंके पास आ पहुँचा। उसे देखते ही जैडनका चेहरा मारे क्रोधके लाल हो गया। वह बहुत अधिक उत्तेजित हो गया था, इसलिए अपनी उत्तेजना दबानेके लिए आँखें बन्द करके चुपचाप घास पर लेट गया।

हम लोगोंके पास पहुँचते ही हिम्मेल्सटोसकी चाल कुछ धीमी पड़ गई। ऐसा जान पड़ता था कि वह हम लोगोंके पास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आनेमें कुछ झिझक रहा है। तो भी वह जैसे तैसे हम लोगोंके पास पहुँच ही गया। उसका अदब करनेके लिए किसीके मनमें उठकर खड़े होनेका ध्यान भी न आया। क्राप उसे बहुत ही ध्यानसे देखने लगा।

हिम्मेल्सटोस हम लोगोंके सामने आकर चुपचाप खड़ा हो गया। शायद वह सोच रहा था कि हम लोग खड़े होकर उसका स्वागत करेंगे या कम-से-कम उससे कुशल-समाचार पूछेंगे। पर जब उसने देखा कि कोई उससे कुछ भी नहीं बोलता, तब उसने स्वयं ही पूछा—क्यों जी, तुम लोगोंका क्या हाल है ?

कुछ क्षण योंही बीत गये। ऐसा जान पड़ता था कि हिम्मेल्सटोसकी समझमें ही नहीं आता था कि क्या करे। शायद वह फिर हम लोगोंको पहलेकी ही तरह धूपमें दौड़ाना और हम लोगोंसे कठोर परिश्रम कराना चाहता था। पर साथही वह यह भी समझ गया था कि यह युद्ध-क्षेत्र है, कवायदका मैदान नहीं है। जब उसने देखा कि हम सभी लोग चुप हैं और किसीने उसके प्रश्नका कोई उत्तर नहीं दिया, तब उसने सोचा कि सब लोगोंसे एक साथ ही कोई प्रश्न करनेसे अधिक उत्तम यही है कि किसी एक आदमीसे एक प्रश्न किया जाय। क्राप ही उसके अधिक पास था, इसलिए उसने उसीसे पूछा—क्योंजी, तुम भी यहाँ आ गये ?

लेकिन क्राप भी उसका कुछ कम शत्रु नहीं था। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया—जी हाँ, मैं भी यहाँ आ पहुँचा; और वह भी आपसे पहले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिम्मेल्सटोस अपनी लाल मूछें उमेठता हुआ बोला—शायद तुम लोग मुझे भूल गये हो।

जैडनने आँखें खोलकर कहा—जी हाँ, और मैं तो आपको बिलकुल भूल गया हूँ।

हिम्मेल्सटोस ने उसकी ओर मुड़कर कहा—कौन जैडन?

जैडनने सिर उठाकर पूछा—आप जानते हैं कि आजकल आप क्या हैं?

हिम्मलस्टोसकी समझमें नहीं आता था कि इस समय वह क्या करे। उसे कभी यह आशा नहीं थी कि हम लोग उसके साथ इस प्रकार स्पष्ट रूपसे उद्दंडतापूर्वक बातें करेंगे।

हिम्मेल्सटोसने कुछ दुखी होकर कहा—क्यों जी, हमारी तुम्हारी इतनी घनिष्ठता कबसे हुई जो तुम इस तरहकी बातें करते हो? मुझे तो नहीं याद आता कि मैं कभी तुम्हारे साथ किसी पनालेमें पड़ा था।

पनालेकी बात सुनते ही जैडन मारे क्रोधके और भी पागल हो गया। वह मसखरा भी कम नहीं था, इसलिए बोला—जी नहीं, आप तो पनालेमें अकेले ही पड़े थे।

हिम्मेल्सटोसका खून खौलने लगा। उसी अवसर पर जैडन ने उसे और भी अधिक कुढ़ाना चाहा। उसने अपने अपमानका बदला चुकानेके लिए कहा—आप जानते हैं कि आप कौन हैं? मैं आपको बतलाये देता हूँ, आप दोजखी कुत्ते हैं। बहुत दिनोंसे मैं आपको यह बात बतलाना चाहता था।

महीनोंसे जैडनके मनमें जो गुबार भरा हुआ था, वह आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ निकला था। जिस समय उसने हिम्मेल्सटोसको "[illegible] कुत्ता" कहा था, उस समय उसके चेहरे पर जो चमक आई थी, उसीसे जान पड़ता था कि वह उसे यह गाली देकर बहुत ही सन्तुष्ट और प्रसन्न हुआ है।

जैडनकी यह बात सुनते ही हिम्मेल्सटोस तो बिल्कुल जामेसे बाहर हो गया। वह बोला—कमीना, सुअर कहीं का। उठकर खड़ा हो! देखता नहीं कि सामने तेरा अफसर खड़ा है!

जैडन—अजी जाओ, तुम्हारे सरीखे बन्दर-घुड़कियाँ दिखाने वाले अफसर बहुत देखे हैं।

हिम्मेल्सटोस अपने आपको सेना-विभागके नियमोंका बहुत बड़ा ज्ञाता और बहुत बड़ा अफसर समझता था। वह क्रोधसे भरकर बोला—जैडन, मैं तुम्हें तुम्हारे अफसरकी हैसियतसे हुकुम देता हूँ कि तुम उठकर खड़े हो जाओ।

जैडन—बस! या कुछ और भी कहना चाहते हो!

हिम्मे०—तुम मेरा हुकुम मानोगे या नहीं!

जैडनने यह कहकर करवट बदल ली कि मैं तो तुम्हें पहचानता ही नहीं।

हिम्मे०—मैं तुम्हें सैनिक न्यायालयमें ले जाऊँगा और वहाँ से तुम्हें इस गुस्ताखी की सजा दिलवाऊँगा।

इतना कहकर क्रोधसे भरा हुआ हिम्मेल्सटोस दफ्तरकी ओर चला गया। उसके जाते ही सब लोग ठहाका मारकर हँस पड़े। हेई तो इतना अधिक हँसा कि उसका जबड़ा ही अपनी जगहसे खिसक गया और मुँह खुला ही रह गया। जब क्राप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने उसके मुँह पर एक घूँसा जमाकर उसका जबड़ा ठीक किया, तब कहीं जाकर उसका मुँह बन्द हुआ।

कैजिन्स्की कुछ चिन्तित भावसे बोला—यदि उसने दफ्तरमें जाकर रिपोर्ट कर दी तो बुरा होगा।

जैडन—क्या तुम यह समझते हो कि वह दफ्तरमें जाकर रिपोर्ट करेगा ?

मैंने कहा—हाँ, वह जरूर रिपोर्ट करेगा।

कैजि०—उस दशामें कम-से-कम पाँच दिन की सजा तो तुम्हें जरूर मिलेगी।

पर यह सुनकर जैडन तनिक भी चिन्तित नहीं हुआ; बल्कि वह और भी प्रसन्न होकर बोला—चलो, आराम करनेके लिए पाँच दिन तो मिलेंगे।

म्यू०—लेकिन अगर तुम किलेमें भेज दिये जाओ तो क्या होगा ?

जैडन—तो फिर कम-से-कम मेरे लिए तो युद्धका अन्त ही हो जायगा।

जैडन बहुत ही हँसमुख आदमी है। चिन्ता और दुःख करना तो वह जानता ही नहीं। वह उठकर हेई और लीयरके साथ चल दिया जिसमें लोग यह न देख सकें कि वह कुछ उत्तेजित या चिन्तित हुआ है।

× × × ×

म्यूलर पहले जो बात कह रहा था, वह अभी पूरी नहीं हुई थी; इसलिए उसने क्रापसे फिर बातें करना आरम्भ किया। उसने पूछा—क्यों जी, यदि इस समय तुम सचमुच अपने मकान पर होते तो क्या करते ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्राप—अब इन सब बातोंको जाने दो और यह बतलाओ कि हम लोगोंके दरजे में कितने लड़के थे और उनमें से कितने हम लोगोंके साथ यहाँ आये थे।

हम लोग गिनने लगे। बीसमें से सात लड़के तो अब तक मर चुके थे, चार घायल हो चुके थे और एक पागलखाने भेज दिया गया था। इस प्रकार सब मिलाकर बारह लड़के हुए।

म्यूलर बोला—हम लोगोंके बाकी साथियोंमेंसे तीन आजकल लेफ्टिनेन्ट हैं। अब मान लो कि यदि उन्हें फिर उसी स्कूलमें जाना पड़े तो क्या वे कैन्टोरेकसे पहलेकी तरह कुछ पढ़ना पसन्द करेंगे?

इसपर एक और ही मजाक छिड़ गया। सब लोग एक दूसरेसे इतिहास, विज्ञान और साहित्य आदिके इस प्रकार प्रश्न करने लगे जिस प्रकार दरजेमें शिक्षक लोग विद्यार्थियोंसे प्रश्न किया करते हैं।

क्राप—तुम "मधुर वंशी" वाली कविताका क्या अभिप्राय समझते हो?

म्यू०—मध्य युगके तीन सर्वश्रेष्ठ कवियोंके नाम बतलाओ।

मैं धीरेसे पूछ बैठा—गंजे चार्ल्सके कितने लड़के थे?

म्यू०—बस तुम भी जनम भर इसी तरह गधे रहोगे।

क्राप—पेरिसकी आखिरी लड़ाई कब हुई थी?

मैं—तुम कुछ नहीं जानते। चुप रहो; दूसरे लड़केको बोलने दो।

म्यूलरने ऐसी मुद्रा बनाई कि मानों वह अपना चश्मा उतारकर टेबुलपर रख रहा है और पूछा—राज्यके किन-किन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पदोंको लाइकरगस सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझता था ?

क्राप—यह कथन कहाँ तक ठीक है कि हम जरमन लोग सारे संसारमें एक ईश्वरको छोड़कर और किसीसे नहीं डरते ?

मैं—हम जरमन लोग ईश्वरसे डरते हैं और............।

स्यूलर—मेलबोर्नकी आबादी बतलाओ।

मैंने कुछ तेजीके साथ क्रापसे पूछा—सजातीय आकर्षण किसे कहते हैं ?

सच तो यह है कि ये सब वाहियात बातें हम लोग बहुत कुछ भूल गये थे। और फिर स्कूलमें रहकर हम लोगोंने जो ये सब और इसी प्रकारकी और भी बहुत सी बातें सीखी थीं, उनका कभी हम लोगोंको कोई काम ही नहीं पड़ा था। हम लोगोंको स्कूलमें कभी किसीने यह नहीं सिखलाया था कि यदि बहुत तेज आँधी चलती हो और उसके साथ पानी भी बरसता हो तो सिगरेट किस तरह जलाना चाहिए; और न किसीने यही सिखलाया था कि यदि लकड़ियाँ गीली हों तो उन्हें कैसे सुलगाना चाहिए। यहाँ तक कि किसीने यह भी नहीं सिखलाया था कि किरिच पेटमें भोंकनी चाहिए, क्योंकि पेटमें वह फँसकर रुक नहीं जाती; और पसलियोंमें नहीं भोंकनी चाहिए, क्योंकि वहाँ वह फँसकर अटक जाती है।

स्यूलर बहुत ही विचारशीलोंकी तरह बोला—हम लोग ये सब बातें भूल तो गये, पर आखिर हम लोगोंको चलकर फिर उसी स्कूलमें भरती होना पड़ेगा और इन सब बातोंका हमें फिर काम पड़ेगा।

पर मेरी समझमें इन सब बातोंको याद रखनेकी कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवश्यकता ही नहीं थी; इसलिए मैंने कहा—हम लोग विशेष परीक्षामें बैठेंगे।

म्यू०—लेकिन आखिर उसके लिए भी तो कुछ तैयारीकी जरूरत होगी। और यदि मान लो कि तुम परीक्षामें पास भी हो गये तो भी क्या? विद्यार्थियोंका जीवन और लोगोंके जीवनकी अपेक्षा कभी अच्छा नहीं होता? यदि तुम्हारे पास धन न हो तो तुम्हें राक्षसों की तरह परिश्रम करके काम करना पड़ेगा।

मैं—राक्षसोंकी तरह काम करना तो फिर भी कुछ अच्छा है। पर स्कूलोंमें हम लोगोंको जो बातें पढ़ाई और सिखलाई जाती हैं, वे सब फजूल और वाहियात होती हैं और जीवनमें उनका कुछ भी उपयोग नहीं होता।

क्रापने भी मेरी बातका समर्थन करते हुए कहा—भला जब एक बार हम लोग यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें भेज दिये गये तो फिर हम लोग इन सब बातों पर गम्भीरतापूर्वक कैसे विचार कर सकते हैं?

म्यू०—लेकिन फिर भी अपने जीवनमें तुम्हें कोई-न-कोई पेशा तो करना ही पड़ेगा।

म्यूलरने यह बात इस ढंगसे कही थी कि मानों वह हम लोगोंका शिक्षक कैन्टोरेक ही है।

क्राप एक चाकूसे अपने नाखून काट और साफ कर रहा था। उसकी इस नजाकत पर हम लोगोंको बहुत ताज्जुब हुआ। लेकिन यह भी एक तरहसे समझदारीका ही काम था। वह चाकू रखकर बोला—तुमने बहुत ठीक कहा। कैजिन्स्की, डेटेरिंग और हेई तो अपने घर जाकर फिर अपने-अपने काममें लग जायँगे, क्योंकि उनके पास पहलेसे ही घरका काम मौजूद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। हिम्मेल्सटोस भी फिर अपनी पुरानी नौकरीपर चला जायगा। लेकिन हम लोग न तो पहले ही कोई काम करते थे और न अब हमारे पास कोई काम है। यहाँ इतने दिनों तक रहनेके बाद हम लोग घर जाकर क्या करेंगे?

मैं—हम लोगोंकी तो कोई निजी आय होनी चाहिए; और तब हम लोग यदि चाहेंगे तो जंगलमें भी सुखसे रह सकेंगे।

यों कहनेको तो मैं यह बात कह गया, पर तुरन्त ही मैं अपने मनमें लज्जित भी हुआ; क्योंकि मैं जानता था कि इस प्रकारकी आय होना कोई हँसी-खेल नहीं है। और न हम लोगोंके पास बाप-दादाकी छोड़ी हुई कोई ऐसी आय ही है।

म्यूलरने कुछ चिन्तित भावसे पूछा—लेकिन जब हम लोग यहाँसे अपने घर जायँगे, तब आखिर क्या करेंगे?

क्राप उपेक्षापूर्वक बोला—यह सब मैं कुछ भी नहीं जानता। पहले हम लोग घर तो पहुँचें; फिर काम भी ढूँढ लेंगे।

लेकिन फिर भी किसीकी समझमें नहीं आता था कि हम लोग क्या करेंगे। मैंने पूछा—आखिर हम लोग कर ही क्या सकते हैं?

क्राप कुछ दुःखी होकर बोला—मैं कुछ भी नहीं करना चाहता। आखिर एक-न-एक दिन सबको मरना तो है ही; फिर ऐसी व्यर्थकी बातोंसे क्या लाभ! मैं तो समझता हूँ कि हम लोगोंके लिए यहाँसे लौटकर घर जानेकी नौबत ही नहीं आवेगी।

थोड़ी देर बाद मैं लेटकर बोला—जब मैं शान्ति-कालका नाम सुनता हूँ और उस समय होनेवाली बातोंपर विचार करता हूँ तो मेरा सिर चकराने लगता है। यदि सचमुच फिरसे शान्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्थापित हो गई तो मैं समझता हूँ कि मैं कोई ऐसा काम करूँगा जो कभी किसीके ध्यानमें भी न आया होगा। आखिर इतने दिनों तक जो हम लोग यहाँ पड़े सड़ते रहे हैं, उसका भी तो कुछ उपयोग होना चाहिए। लेकिन कठिनता तो यह है कि अभी इस तरहकी कोई बात मेरे ध्यानमें ही नहीं आती। इस समय तो मैं यही जानता हूँ कि पेशे, पढ़ाई और नौकरी आदिके सम्बन्धकी जितनी बातें और विचार हैं, वे सब मुझे बहुत ही बुरे लगते हैं और सदासे ही मुझे इस प्रकारके विचारोंसे घृणा रही है। क्राप, सच तो यह है कि भविष्यके सम्बन्धमें मुझे कुछ भी दिखाई ही नहीं पड़ता।

अचानक मेरे मनका भाव ऐसा हो गया कि कोई बात मेरी समझमें ही नहीं आती थी और मुझे चारों ओर घोर निराशाके सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता था।

क्रापके मनका भाव भी कुछ ऐसा ही हो गया था। वह बोला—घर लौटने पर हम लोगोंको बहुत बड़ी कठिनताका सामना करना पड़ेगा। लेकिन जो लोग इस समय भी अपने घरपर हैं, उन्हें इस प्रकारकी बातोंकी कोई विशेष चिन्ता नहीं है। इधर लगातार दो वर्षोंसे हम लोगोंने तोपोंके गोलों और बमोंके सिवा और कुछ भी नहीं देखा है। इन दृश्यों और इन स्मृतियोंसे मनुष्य सहजमें अपना पिंड नहीं छुड़ा सकता।

इस विषयमें हम सभी लोग सहमत थे कि हम सबकी दशा प्रायः एक सी है। और यह बात केवल हमारे सरीखे उन्हीं विद्यार्थियों और नवयुवकोंकी नहीं थी जो यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें आये हुए थे, बल्कि हमारी अवस्थाके उन सभी लोगोंकी थी जो युद्ध-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षेत्रके बाहर अपने घर पर या और कहीं रहते है। हाँ, यह हो सकता है कि किसीके लिए यह बात कम हो और किसीके लिए ज्यादा। पर सारे संसारकी नई पीढ़ीकी प्रायः एक सी ही दशा थी।

क्रापने इन सब बातोंका सारांश यही प्रकट किया कि युद्धने हम सब लोगोंको चौपट कर डाला और किसी कामका न रखा।

उसका यह कथन बहुत ही ठीक था। अब हम लोग नव-युवक रह ही नहीं गये थे। साधारणतः युवक लोग जिस आवेश और जिस फुरतीके साथ संसारमें प्रवेश करते हैं, वह आवेश और वह फुरती हम लोगोंमें नामको भी बाकी नहीं रह गई थी। हम लोग उड़े चले जा रहे थे और अपनी प्रकृत अवस्थासे बहुत दूर निकल गये थे।/ हम लोग स्वयं अपने आपसे और अपने जीवनसे बहुत दूर निकल गये थे। जिस समय हम सब लोग सोलह-अठारह वर्षके थे और जिस समय हमने जीवन और संसारके साथ प्रेम करना सीखा था, उसी समय हम लोगोंको अपने जीवन और संसारका सदाके लिए अन्त करके युद्ध-क्षेत्रमें आना पड़ा था। यहाँ आते ही जो पहला बम गिरा था, वह हम लोगोंके हृदय पर गिरा था और जो पहला धड़ाका हुआ था, वह हम लोगोंके मनमें हुआ था। हम लोग सभी प्रकारके कार्यों, उद्योगों और उन्नतियोंसे बिलकुल पृथक् कर दिये गये थे। अब इन सब बातोंका हमें कोई ध्यान ही नहीं रह गया था। हम लोग युद्धके सिवा और कुछ जानते ही न थे।

ऐसा जान पड़ता है कि हम लोगोंके विभागका नियन्त्रण करनेवाले दफ्तरोंमें फिरसे जान आ गई है। हिम्मेल्सटोसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहाँ पहुँचकर खलबली मचा दी है। हम लोगों की टुकड़ीके सिरे पर मोटा सरजेन्ट-मेजर आ पहुँचा है। यह एक अद्भुत बात है कि प्रायः सभी सरजेन्ट-मेजर बहुत मोटे आदमी हैं।

सरजेन्ट-मेजरके पीछे-पीछे हिम्मेल्सटोस भी लगा हुआ है। जान पड़ता है कि हम लोगोंसे बदला चुकानेके लिए वह बेचैन हो रहा है। धूपमें उसके बूट चमक रहे हैं।

सरजेन्ट-मेजरके पास आते ही हम सब लोग उठकर खड़े हो गये। सरजेन्टने पूछा—जैडन कहाँ है ?

लेकिन यहाँ तो सचमुच किसीको मालूम नहीं था कि जैडन कहाँ चला गया। हिम्मेल्सटोस हम लोगोंकी ओर बहुत ही क्रोध-पूर्ण दृष्टिसे देख रहा था। उसी क्रोध भरी दृष्टिसे देखता हुआ वह बोला—तुम सब लोग अच्छी तरह जानते हो कि वह कहाँ है। पर मैं खूब समझता हूँ कि तुम लोग उसका पता नहीं बत-लाओगे। खैर, पता लग जायगा।

मोटा सरजेन्ट एक एकको बहुत ध्यानसे देखने लगा। लेकिन जैडन तो वहाँ था ही नहीं; इसलिए उसे दिखाई कहाँसे देता। तब उसने दूसरी तरकीब की। वह बोला—जैडन जहाँ हो, वहाँसे दस मिनटके अन्दर आकर दफ्तरमें हाजिर हो।

इतना कहकर सरजेन्ट चला गया। उसके पीछे पीछे हिम्मे-ल्सटोस भी चला गया।

उन लोगोंके दूर निकल जानेपर क्राप बोला—मैं तो सोचता हूँ कि अबकी बार जब हम लोगोंको काँटेदार तार लगानेके लिए भेजा जायगा, तब मैं तारका गट्ठर हिम्मेल्सटोसके पैरों पर गिरा दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

म्यूलर हँसता हुआ बोला—अजी इस बार तो उसे ऐसा बनाया जायगा कि वह भी जनम भर याद करेगा।

उस समय हम सब लोगोंके मनमें सबसे बड़ी यही एक इच्छा थी कि जैसे हो, इस डाकियेका घमंड दूर करके इसका दिमाग ठीक कर देना चाहिए।

मुझे पता लग गया कि जैडन झोंपड़ीमें है, इसलिए मैंने वहाँ पहुँचकर उसे सचेत कर दिया। वह तुरन्त ही वहाँसे चम्पत हो गया।

इसके बाद हम लोग मुद्रा बदलकर ताश खेलने बैठ गये। हम लोग खूब अच्छी तरह जानते थे कि ताश कैसे खेला जाता है, कसमें कैसे खाई जाती हैं और लड़ाई-झगड़ा कैसे किया जाता है। यों बीस बरसके जवान लड़कोंके लिए ये कोई बड़ी बातें नहीं हैं; पर विचार कीजिए तो हैं बहुत बड़ी बातें।

कोई आध घन्टे बाद हिम्मेलसटोस फिर आ पहुँचा, पर इस बार किसीने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। वह जैडन का पता पूछने लगा। हम लोग सिर्फ कन्धे हिलाकर रह गये।

हिम्मे०—अगर तुम लोग जैडनका पता नहीं जानते हो तो जाकर उसका पता लगाओ। क्या तुम लोगोंमें से कोई अभी तक उसे ढूँढ़ने नहीं गया था?

क्रापने घासपर लेटकर उससे पूछा—क्या आप यहाँ कभी पहले भी आये थे?

हिम्मे०—इन सब बातोंसे तुम्हें क्या मतलब? मैं सिर्फ अपनी बातका जवाब चाहता हूँ।

क्राप उठकर खड़ा हो गया और बोला—अच्छी बात है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आप जवाब लीजिए। वह देखिए ऊपर छोटे छोटे सफेद बादल दिखाई देते हैं। वहींसे हवाई जहाजोंपर गोले बरसते हैं। हम लोग कल वहाँ गये थे। हम लोगोंमें से पाँच आदमी मर गये और आठ घायल हुए। लेकिन यह हानि कोई हानि नहीं है। अबकी बार जब आप हम लोगोंके साथ चलेंगे, तब लोग मरनेसे पहले आपके पास आँवेगे और आपके पैर पकड़ कर आपसे पूछेंगे कि क्यों सरकार, अब हम मरें न ? आप हुकुम देते हैं न ? हम लोग यहाँ बहुत देरसे आप ही सरीखे किसी महापुरुषकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

इतना कहकर क्राप फिर आनन्दसे बैठ गया और हिम्मेल्स-टोस पुच्छल तारेकी तरह वहाँसे चलता बना।

कैजि०—तीन दिनकी कड़ी सजा तुम्हें भी मिल रहेगी।

मैंने क्रापसे कहा—यदि अबकी वह फिर आया तो उसे मैं बनाऊँगा।

लेकिन इसके बाद हिम्मेल्सटोस फिर हम लोगोंके पास नहीं आया। सन्ध्या समय मुकदमा शुरू हुआ। हम लोगोंकी टुकड़ी-के लेफ्टिनेन्टने, जिसका नाम बरटिंक था, दफ्तरमें बैठकर हम लोगोंको एक एक करके बुलाना शुरू किया।

मुझे वहाँ गवाहकी तरह पेश होना पड़ा और यह बतलाना पड़ा कि जैडनने क्यों गुस्ताखी की थी।

मैंने सारा किस्सा सुना दिया कि हिम्मेल्सटोसने किस तरह एक ऐसे आदमी को ढूँढ़ा था जिसे रातके समय सोये-सोये पेशाब करनेका रोग था और उसे किस प्रकार जैडनके ऊपर सुलाया था। मेरे इस कथनका लेफ्टिनेन्ट पर अच्छा प्रभाव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ा। उसने हिम्मेल्सटोसको बुलवा भेजा। उसके आने पर मुझसे फिर वह सारा हाल कहलाया गया। मैंने भी सब बातें साफ साफ कह दीं।

बरटिंकने हिम्मेल्सटोससे पूछा—क्यों जी, यह बात ठीक है?

पहले तो उसने इस प्रश्नका ठीक-ठीक उत्तर देनेसे बचना चाहा और इधर उधर की बातें करने लगा, पर अन्तमें उसे मानना ही पड़ा कि हाँ, मैंने ऐसा किया था। वह इन्कार भी कैसे कर सकता था! क्योंकि झापने भी तो दोनोंके झगड़ेका मूल कारण यही बतलाया था।

इस पर बरटिंकने पूछा—तो इस मामलेकी किसीने कोई रिपोर्ट क्यों नहीं की?

लेकिन उसके इस प्रश्नका हम लोगोंने कोई उत्तर न दिया। लेफ्टिनेन्ट स्वयं ही यह समझ सकता था कि ऐसे मामलोंकी रिपोर्ट करनेका कोई नतीजा नहीं होता। और फिर सेनामें इस तरह बात बात पर रिपोर्ट करनेका रिवाज भी नहीं है। लेफ्टिनेन्टने सब बातोंका बिलकुल ठीक-ठीक मतलब समझ लिया और उलटे हिम्मेल्सटोसको कुछ फटकारते हुए कहा—यह युद्ध-क्षेत्र है, कवायदका मैदान नहीं है।

इसके बाद जैडन की पारी आई। उसे भी लेफ्टिनेन्टने बहुत लम्बा-चौड़ा उपदेश दिया और तीन दिन तक अहातेमें बन्द रखनेका हुकुम दिया। यह हुकुम सुनाते समय लेफ्टिनेन्टने कुछ दुःखी होकर कहा था—"मैं तुम्हें दंड देनेके लिए बाध्य हूँ। किसी तरह छोड़ नहीं सकता।" लेफ्टिनेन्ट बहुत भला आदमी था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकार खुले अहातेमें बन्द रहनेमें भी बहुत आनन्द आता है। हम लोगोंकी टुकड़ीके पास जो अहाता था, वह पहले किसी समय मुरगीखाना था। जो लोग वहाँ कैद करके रखे जाते हैं, उनसे हम लोग अच्छी तरह मिल-जुल सकते हैं। हम लोग खूब जानते हैं कि वहाँ कैदियोंके साथ कैसे मुलाकात कर ली जाती है। हाँ, यदि जैडन को बन्द कोठरीमें रहनेकी सजा दी जाती, तो उससे मुलाकात नहीं हो सकती थी।

पहले उस अहातेमें कैदियोंको पेड़ोंके साथ बाँध दिया जाता था। पर अब यह प्रथा उठ गई है। अब बहुत सी बातोंमें हम लोगोंके साथ मनुष्योंका सा व्यवहार होने लगा है।

जैडनके साथ साथ क्रापको भी यही सजा मिली थी, क्योंकि उसने भी गुस्ताखी की थी। जब वे लोग तारसे घिरे हुए उस अहातेमें बन्द किये गये, उसके एक घन्टे बाद हम लोग भी उनके पास जा पहुँचे। जैडनने कौएकी बोली बोलकर हम लोगोंका स्वागत किया। वहाँ हम लोग बहुत रात तक बैठे हुए ताश खेलते रहे। जैडन हम लोगोंसे कई बाजियाँ जीता।

× × × ×

जब हम लोग उठकर चलने लगे, तब कैजिन्स्कीने मुझसे पूछा—क्यों जी, तुम्हें हंसका भुना हुआ गोश्त कैसा लगता है?

मैं—अच्छा ही होता है, कुछ बुरा नहीं होता।

हम लोग गोला-बारूद ढोनेवाली एक बहुत ऊँची गाड़ी पर चढ़ गये। उसपर चढ़नेके लिए हम लोगोंको दो सिगरेट देने पड़े थे। कैजिन्स्कीने मुझे वह स्थान ठीक तरहसे बतला दिया था। वहाँ रेजिमेन्टोंकी रसदका एक केन्द्र था और उसीमें एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छप्परके नीचे बहुत से हंस और बत्तखें आदि थीं। वह छप्पर बाहरकी तरफ था और उसके आगे एक दीवार थी। उस छप्परका दरवाजा एक मामूली छोटी-सी लकड़ीसे अड़ाकर बन्द कर दिया जाता था।

कैजिन्स्कीने मुझे पकड़कर ऊपर उठाया। मैं उसके हाथों पर पैर रखकर दीवार पर चढ़ गया। कैजिन्स्की नीचे खड़ा देखता रहा कि कोई आता-जाता तो नहीं है। उस समय वहाँ बहुत अँधेरा था, इसलिए दीवार पर चढ़नेके बाद मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। पहले मैं वहाँ थोड़ी देर तक चुपचाप खड़ा रहा जिसमें आँखें उस अन्धकारकी अभ्यस्त हो जायँ और कुछ दिखाई पड़ने लगे। थोड़ी देर तक उसी प्रकार खड़े रहनेके बाद मुझे वह छप्पर दिखाई देने लगा। मैं धीरेसे उतर कर उसके पास पहुँच गया और वह लकड़ी हटाकर मैंने दरवाजा खोल लिया।

मुझे वहाँ दो हंस दिखाई पड़े। लेकिन दो हंसोंका वहाँ एक साथ होना बहुत ही बुरा था, क्योंकि यदि मैं एक को पकड़ता तो दूसरा चिल्लाने लगता। इसलिए मैंने सोचा कि यदि मैं थोड़ी फुरती करूँ और दोनोंको एक साथ ही पकड़ सकूँ तो बहुत अच्छा हो। फिर पकड़े जानेका कोई डर न रहेगा।

मैंने झपटकर पहले एकको और फिर तुरन्त ही दूसरेको भी पकड़ लिया। साथ ही पागलोंकी तरह मैंने उनके सिर बहुत जोरसे दीवार पर पटके जिसमें वे बेहोश हो जायँ और चिल्ला न सकें। पर मुझमें उतनी अधिक शक्ति नहीं थी, इसलिए वे पैर पटकने और पर फड़फड़ाने लगे। मैंने उन्हें दबाये रखनेका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत प्रयत्न किया, पर उनमें भी बलाकी ताकत थी। वे मेरे हाथोंसे छूटनेका और भी प्रयत्न करने लगे। अँधेरेमें वे सफेद पक्षी बहुत ही भीषण जान पड़ते थे। यद्यपि मैंने अपनी मुट्ठीमें दो-दो गुब्बारे पकड़ रखे थे, पर फिर भी मुझे वहाँसे उठकर दीवार पर जानेका साहस नहीं होता था।

मेरी मुट्ठी कुछ ढीली पड़ गई और एक हंसको साँस लेनेका कुछ अवसर मिल गया। बस फिर क्या था! उसने बहुत जोरों से चिल्लाना शुरू किया। मैं उसका कुछ उपाय करना ही चाहता था कि इतनेमें बाहरसे कोई आता हुआ दिखाई दिया। मैं तुरंत वहीं जमीनपर लेट गया। इतनेमें मैंने देखा कि अभी जो आया है, वह कुत्ता है। आते ही वह कुत्ता जोर-जोरसे भूँकने लगा। वह झपटकर मेरे गलेपर आ पहुँचा। मैं चुपचाप पड़ा रहा और अपनी ठुड्डी मैंने अपने गलेके कालरमें फँसा ली।

वह कुत्ता भी मामूली कुत्ता नहीं था, बल्कि बुलडॉग था। बहुत देर बाद उसने अपना सिर पीछे हटाया और मेरे पास ही बैठ गया। यों तो वह चुपचाप रहता था, पर ज्योंही मैं जरा भी हिलता था, त्योंही वह फिर गुर्राने लगता था। मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। इतनेमें मुझे ध्यान आया कि किसीके यहाँ आ पहुँचनेसे पहले ही मुझे अपनी छोटी रिवाल्वरका उपयोग करना चाहिये। मैं बहुत ही धीरे-धीरे अपना हाथ रिवाल्वर निकालनेके लिए जेबकी ओर बढ़ाने लगा।

इन सब बातोंमें मुझे वहाँ कोई एक घण्टा बीत गया। ज्योंही मैं जरा सा भी हिलता था, त्योंही वह भीषण रूपसे गुर्राने लगता था। मैं कुछ देर तक चुपचाप पड़ा रहता था और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर रिवाल्वर निकालने का प्रयत्न करता था। जब अन्तमें मैंने अपनी रिवाल्वर निकाल ली, तब मेरा हाथ काँपने लगा। मैंने रिवाल्वरको जमीनके साथ सटाकर सोचा कि कुत्तेके झपटनेसे पहले ही मुझे उसपर अपनी रिवाल्वर चला देनी चाहिए और तब यहाँसे झपटकर निकल चलना चाहिए।

मैंने धीरेसे एक गहरा साँस लिया और अधिक शान्त हो गया। कुछ देर बाद मैंने रिवाल्वर चलाई और कुत्ता गुर्राता हुआ उछलकर एक ओर जा गिरा। मैं भी तुरन्त छप्परके दरवाजेकी तरफ लपका। उसी समय मेरे हाथसे एक हंस छूटकर जमीन पर गिर गया और उसके सिर पर मेरा पैर पड़ गया। मैं बहुत तेजीसे भागा और एक हंस को मैंने दीवार परसे उछालकर बाहरकी तरफ फेंक दिया। इसके बाद मैं स्वयं भी दीवार पर चढ़ गया। ज्योंही मैं दीवारके ऊपर पहुँचा, त्योंही मैंने देखा कि वह कुत्ता फिर उछलकर मेरी तरफ आ रहा है। पर मैं बहुत ऊँचाई पर था, इसलिए वह मेरे पास तक न पहुँच सका। मैं दूसरी तरफ कूद गया। दस कदमकी दूरी पर कैजिन्स्की हाथमें हंसको दबाये हुए खड़ा था। हम दोनों ही वहाँसे बहुत तेजीके साथ दौड़े।

बहुत दूर जाकर हम लोगोंको साँस लेनेका अवसर मिला। कैजिन्स्कीने एक ही दृष्टिमें देखकर समझ लिया कि वह हंस मर गया है। हम लोग चाहते थे कि जहाँ तक जल्दी हो सके, इसे भून डालें जिसमें किसीको इस बातकी कानों-कान खबर भी न होने पावे। मैं जल्दीसे झोंपड़ेके अन्दरसे एक देगची और कुछ लकड़ियाँ उठा लाया। दोनों आदमी एक एकान्त स्थान में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जा पहुँचे। हम लोग इस तरह की कार्रवाइयोंके लिए प्रायः इसी स्थान पर आया करते थे। वहाँ एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें एक खिड़की भी थी। उस खिड़कीके आगे परदा पड़ा हुआ था। वहाँ कुछ ईंटों पर एक तवा सा रखा हुआ था। हम लोगोंने उस तवेके नीचे तुरन्त ही आग सुलगाई।

कैजिन्स्कीने हंसको काटकर उसकी खाल उतारी और उसे साफ किया। उसके पर हम लोगोंने बहुत सावधानीसे एक कोनेमें रख दिये। हम लोग उन परोंको भरकर छोटी-छोटी दो गद्दियाँ बनाना चाहते थे और उन पर लिख देना चाहते थे—"तोपोंकी वर्षामें भी मधुर निद्रा।" युक्त-क्षेत्रसे तोपोंके छूटनेके भीषण शब्द उस एकान्त स्थानमें भी हम लोगोंके कानों तक पहुँच रहे थे। उस अग्निके प्रकाशमें हम लोगोंके चेहरे चमक रहे थे और लोगोंकी परछाँहीं दीवारपर नाच रही थी। कभी-कभी बहुत ही जोरका धड़ाका होता था जिससे वह सारी कोठरी काँप जाती थी। यह धड़ाका हवाई जहाजोंसे गिरनेवाले बमोंके कारण होता था। एक बार हम लोगोंको बहुत ही जोरों की चिल्लाहट सुनाई पड़ी। हमने समझ लिया कि किसी झोंपड़ी पर आकाशसे बम गिरा है।

ऊपर आकाशमें हवाई जहाज मँड़रा रहे हैं और उनकी मशीन गनोंके चलनेका कड़-कड़ शब्द सुनाई दे रहा है।

कैजिन्स्की और मैं दोनों आमने-सामने बैठे हैं और बीचमें हंसका गोश्त बन रहा है। प्रायः आधी रातका समय है। हम लोग आपसमें बहुत कम बातें करते हैं; लेकिन फिर भी मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समझता हूँ कि हम दोनोंमें जितना अधिक प्रेम है, उतना शायद किसी प्रेमी और प्रेमिकामें भी न होगा।

हम लोग दो आदमी हैं—जीवनके दो छोटे स्फुलिंग हैं। बाहर चारों ओर घोर अँधेरी रात और मृत्युका साम्राज्य फैला है। हम लोग उसी मृत्यु-मंडलके एक कोने पर इस प्रकार बैठे हुए हैं कि प्रत्येक क्षण हम लोगोंके मृत्यु-मुखमें पड़नेकी आशंका है। यद्यपि हम लोग एक दूसरेसे कुछ दूरी पर बैठे हैं, तो भी हम लोगोंके हृदय आपसमें एक दूसरेसे मिले हुए—बिलकुल सटे हुए हैं। वह मेरे सम्बन्धमें क्या जानता है और मैं उसके सम्बन्धमें क्या जानता हूँ ? पहले एक ऐसा समय भी था जब कि हम लोग किसी बातमें भी एक दूसरेसे सहमत नहीं थे। पर इस समय हम लोग मिलकर इतने एक हो गये हैं कि एक दूसरेसे बात भी नहीं करता।

हंस चाहे बच्चा ही क्यों न हो, पर उसका मांस बहुत देरमें गलता है। इसलिए हम लोग पारी-पारीसे उसे देखते और चलाते हैं। जब एक आदमी उसे भूनता है, तब दूसरा थोड़ी देर लेटकर आराम करता है। अब गोश्त भुन गया और धीरे-धीरे उसकी महक सारे कमरे में भर गई।

कमरेके बाहर होनेवाले भीषण शब्द बराबर बढ़ते चले जा रहे हैं। हमारे कानोंमें वे शब्द स्वप्नके शब्दोंके समान आते हैं, पर फिर भी मनमें उनकी स्मृति बराबर बनी रहती है। मुझे बहुत नींद आ रही है। मैं ऊँघता हुआ देखता हूँ कि कैजिन्स्कीने देगचीमें कलछी डालकर उसमें से कुछ गोश्त उठाया है। उसके प्रति मेरा बहुत अधिक प्रेम है। उसकी सभी बातें मुझे बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भली जान पड़ती हैं। उसके पीछे जो खिड़की पड़ती है, उसमेंसे जंगल और तारे दिखाई पड़ते हैं। जब वह अपने स्पष्ट और मधुर स्वरमें कुछ कहता है, तब मेरे हृदयको बहुत अधिक शान्ति मिलती है। क्या इस समय मेरा चेहरा आँसुओंसे तर है? मैं कहाँ हूँ? कैजिन्स्की मेरे सामने खड़ा है और उसकी परछाँही मेरे ऊपर पड़ रही है। वह बहुत कोमलतापूर्वक कुछ कहता है है और मुस्कराता हुआ फिर चूल्हेके पास चला जाता है।

थोड़ी देर बाद वह बोला—अब यह तैयार हो गया।

मैं—हाँ, मैं भी यही समझता हूँ।

मांसकी रिकाबी कमरेके बीचमें रख दी गई और हम दोनों आदमी छुरी, काँटा और चम्मच आदि लेकर उसके दोनों ओर बैठ गये। हम लोगोंने उसकी एक एक टाँग काट ली। रोटियाँ हम लोगोंके पास थीं ही। हम लोग धीरे-धीरे खाने और गप लड़ाने लगे।

मैं—क्यों जी मांस कैसा बना है?

कैजि०—बहुत बढ़िया। और तुम्हें कैसा लगता है?

मैं—बहुत बढ़िया।

मांसका जो टुकड़ा मुझे अच्छा लगता है, वह मैं उसे दे देता हूँ और उसे जो अच्छा लगता है, वह मुझे दे देता है। इसके बाद मैं सिगरेट पीने लगता हूँ और वह एक सिगार सुलगाता है। अभी देगचीमें बहुत सा मांस बचा पड़ा है।

मैं—क्यों जी, अगर इसमें से थोड़ा-थोड़ा क्राप और जैडन के लिए भी ले चलें तो कैसा हो?

वह—बहुत अच्छी बात है।

हम लोगोंने उसमें से थोड़ा सा मांस निकालकर बहुत साव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धानीसे अखबारमें लपेट लिया। यह क्राप और जैडनके लिए था। हम लोगोंने यह भी सोचा कि बाकी बचा हुआ मांस हम लोग अपने लिए अपने साथ झोंपड़ीमें ले चलेंगे। पर फिर यह सोचा गया कि जैडन बहुत अधिक खाता है, इसलिए यही निश्चय हुआ कि सारा मांस उन्हीं लोगोंके लिए ले चलना चाहिए। इसके सब पर भी हम लोगोंने अच्छी तरह बाँध लिये और तब हम लोग उस मुरगीखानेकी तरफ चले जिसमें जैडन आदि बन्द थे। हम लोग जानते थे कि इस समय वे लोग सो रहे होंगे और उन्हें चलकर जगाना होगा।

जब वहाँ पहुँचकर हम लोगोंने क्राप और जैडनके सामने वह मांस रखा, तब उनके आश्चर्यकी सीमा न रही। उन्हें ऐसा जान पड़ा कि हम लोगोंने इन्द्रजालका सा खेल किया है। वे लोग भी जल्दी-जल्दी खाने लगे। जैडनने एक बड़ी बोटी दोनों हाथोंसे पकड़कर मुँहमें लगाई और उसे नोचना तथा चिचोड़ना आरंभ किया। बीच-बीचमें वह रिकाबी उठाकर शोरबा भी पीता जाता था और होंठ भी चाटता जाता था। अन्तमें उसने कहा—भाई, तुम लोग मुझे कभी नहीं भूलोगे।

जब वे लोग अच्छी तरह खा चुके, तब हम लोग अपनी झोंपड़ीकी ओर चले। आकाशमें तारे छिटके हुए थे और ऐसा जान पड़ता था कि तड़का हुआ ही चाहता है। झोंपड़ियोंमें सब लोग सो रहे थे, इसलिए किसीको पता भी न चला कि हम लोग वहाँ कब पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छठा परिच्छेद

बहुत जोरोंसे यह अफवाह फैली है कि जल्दी ही बहुत जबरदस्त हमला होनेवाला है। हम लोग नियत समयसे दो दिन पहले ही खास युद्ध-स्थल पर पहुँच गये हैं। रास्तेमें हम लोगोंको एक ऐसी इमारत मिली जिसमें पहले स्कूल था और जो अब गोलोंकी मारसे बिलकुल टूट-फूट गई थी। उसके सामने पीले रंगके बिना पालिश किये हुए और बिलकुल नये ताबूतोंकी एक बहुत बड़ी और ऊँची दीवार सी खड़ी हुई थी। उनमें से अभी तक चीढ़ और गोंदकी महक आती थी। ऐसा जान पड़ता था कि इनकी लकड़ी बहुत हालमें जंगलसे काटी गई है। संख्यामें वे ताबूत कम-से-कम एक सौ होंगे।

म्यूलरने चकित होकर कहा—आक्रमणके लिए यह तैयारी बहुत बढ़िया है।

डेटेरिंगने झुँझलाकर कहा—ये सब ताबूत हम्हीं लोगोंके लिए हैं।

कैजि०—(कुछ क्रुद्ध होकर) फजूलकी वाहियात बातें मत करो।

जैडन—यदि तुम लोगोंको इस तरहका ताबूत मिले तो तुम्हें अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझना चाहिए। तुम लोगों पर तो यदि किसी पुरानी लाशपरका मोमजामा भी ओढ़ा दिया जाय तो वही बहुत है।

सभी लोग इस प्रकारकी विनोदपूर्ण बातें कर रहे हैं, पर वह विनोद कुछ अप्रिय सा है। लेकिन इसके सिवा और हो ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या सकता है ? आखिर ये सब ताबूत हैं तो हम्हीं लोगोंके लिए । शायद इतने अधिक ताबूत और इतने अच्छे ढंगसे और कभी कहीं सजाकर न रखे गये होंगे।

यहाँ चारो तरफ बहुत अधिक चहल-पहल है। पहली रातको ही हम लोगोंने यहाँका सब हाल-चाल समझ लिया। जिस समय कुछ शान्ति होती है, उस समय हम लोगोंको शत्रु-पक्षकी उन गाड़ियोंके आने-जानेका शब्द भी स्पष्ट सुनाई पड़ता है जिनपर युद्ध-सामग्री लदकर आती है। कैजिन्सकीका कहना है कि ये सब गाड़ियाँ सिपाहियों, गोलों और तोपोंसे लदी हुई चली आ रही हैं।

यह बात हम लोगोंकी समझमें बहुत ही सहजमें आ गई है कि अँगरेज लोग अपना तोपखाना बहुत बढ़ा रहे हैं और उसे खूब मजबूत कर रहे हैं। नौ इंचवाली तोपोंके कमसे कम चार और नये तोपखाने आकर लगे हैं। ये सब तो दाहिनी ओर हैं और उधर बाईं ओर खाइयोंपर गोले फेंकनेवाली बहुत सी छोटी तोपें हैं। इसके सिवा बहुत सी फ्रान्सीसी तोपें भी आकर हम लोगोंके सामने लगी हैं। ये जल्दी छूटती हैं।

हम लोगोंका उत्साह बहुत कुछ मन्द पड़ गया है। केवल दो घण्टे युद्ध होनेके बाद ऐसा होने लगा कि हमारी तोपोंके गोले स्वयं हमारी ही खाइयोंमें आकर गिरने लगे और हम्हीं लोगोंका संहार करने लगे। इधर एक महीनेके अन्दर यह तीसरी बार ऐसा हुआ है। अगर यह बात सिर्फ निशानेबाजीकी गलतीके कारण हुई होती, तो किसीको कुछ कहनेकी जगह ही नहीं थी। पर असल बात यह है कि हम लोगोंको तोपोंके नल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही बिलकुल पुराने और रद्दी हैं। उनकी मार इतनी अनिश्चित होती है कि प्रायः उनके गोले स्वयं हम्हीं लोगों पर आकर गिरते हैं। आज रातको हमारे भी आदमियोंको इनके कारण भारी चोट आई थी।

× × × ×

युद्ध-क्षेत्र एक ऐसा पिंजड़ा है जिसमेंसे कोई निकलकर कहीं जा नहीं सकता; और जो कुछ वहाँ सिरपर आवे, वह सब झेलना ही पड़ता है। हम लोगोंके सिरपर बरसनेवाले गोलोंकी सैंकड़ों-हजारों मेहरावें बनी रहती हैं और उन्हीं मेह-रावोंके नीचे हम लोग पड़े हुए हैं। कोई नहीं जानता कि कब कौन सा गोला आकर हम लोगों पर गिरेगा। यदि कोई गोला आता हुआ दिखाई दे तो हम लोग सिर्फ सिर झुका सकते हैं। इसके सिवा और कुछ कर ही नहीं सकते। न तो हम यह जानते ही हैं और न समझ ही सकते हैं कि वह कहाँ आकर गिरेगा। यहाँ सब बातें केवल संयोगपर निर्भर हैं।

बस यह संयोग ही ऐसा है जो हम लोगोंको यहाँ मृत्युकी ओर से बिलकुल उदासीन रखता है। दो तीन महीनेकी बात है। हम लोग एक गड्ढेमें बैठे हुए ताश खेल रहे थे। थोड़ी देर में मैं वहाँसे उठा और अपने कुछ मित्रोंसे मिलनेके लिए एक दूसरे गड्ढेमें चला गया। जब वहाँसे लौटा, तब मुझे अपने उस पहले गड्ढे और उसमेंके साथियोंका कहीं नाम-निशान भी न दिखाई दिया। उस जगह के बिलकुल धुर्रे उड़ गये थे, क्योंकि एक गोला सीधा आकर उसी जगह गिरा था। जब मैं वहाँसे लौटकर फिर उस दूसरे गड्ढेके पास पहुँचा, तब देखा कि वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसका भी वैसा ही सफाया हो गया है। उसके नीचे मिट्टीमें कई आदमी दब गये थे और बाहर खड़े हुए कुछ लोग ऊपरसे मिट्टी हटा रहे थे। लाचार मुझे भी मिट्टी हटानेमें उन लोगोंकी सहायता करनी पड़ी।

बस यह भी केवल एक संयोग ही है कि मैं अभी तक जीता बचा हूँ; और नहीं तो अब तक उसी संयोगके चक्करमें पड़कर मैं अब तक कभीका मारा गया होता। एक बात और है। यहाँ कुछ गड्ढों पर इस प्रकारकी छाया कर दी जाती है कि यदि ऊपरसे उन पर बम गिरे तो उस छत पर कोई प्रभाव नहीं होता। लेकिन यह भी एक बहुत ही अद्भुत और संयोगकी ही बात है कि यदि ऐसे गड्ढों पर तोपका गोला आकर गिरे तो उसके अन्दरके आदमियोंकी बोटी बोटी उड़ जाय। और यदि कोई बाहर खुले मैदानमें दस घन्टे तक लगातार गोलोंकी वर्षामें खड़ा रहे तो उसका बाल तक बाँका न हो। ऐसा कोई सैनिक नहीं होता जो हर बार इस तरह संयोगसे बराबर बचता रहे। पर फिर भी प्रत्येक सैनिक संयोग पर विश्वास रखता है और अपने भाग्यके भरोसे ही जीता है।

× × × ×

हम लोगोंको अपने भोजनकी भी बहुत अधिक रक्षा करनी पड़ती है। आजकल यहाँ चूहोंका उपद्रव बहुत बढ़ गया है, क्योंकि खाइयोंकी दशा अच्छी नहीं है। डेटेरिंग कहता है कि चूहोंका बढ़ना भीषण गोलबारीका बहुत ही निश्चित लक्षण है।

यहाँके चूहे भी बहुत बड़े-बड़े और काफी जबरदस्त हैं। चूहे काहेको हैं, बिलकुल कुत्तोंके बच्चे हैं। हम लोग इन्हें मुरदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खानेवाले चूहे कहते हैं। इन चूहोंके चेहरे बहुत ही भीषण होते हैं और इनकी लम्बी दुम देखकर तो जी मिचलाने लगता है।

ऐसा जान पड़ता है कि इन चूहोंका पेट कोई बहुत बड़ा और कभी न भरनेवाला गड्ढा है। इनकी भूख कभी मिटती ही नहीं। शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसकी रोटियों पर इनके दाँत न लगे हों। क्रापने अपनी रोटियाँ मोमजामेके एक टुकड़ेमें लपेटकर अपने सिरहाने रख ली थीं और उसीपर सिर रखकर वह सोया था। नतीजा यह हुआ कि रात भर चूहे उसके मुँह और सिर पर उन्हीं रोटियोंके लालचसे दौड़ते रहे और उसे उन्होंने किसी तरह सोने न दिया। डेटेरिंगने उन चूहोंसे अपनी रोटियाँ बचानेके लिए एक नई तरकीब निकाली। उसने लोहेके एक तारमें बाँधकर रोटियाँ छतमें लटका दीं। रातको जब वह एक बार उठा और टार्च जलाकर उस तारकी तरफ देखने लगा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह तार इधर-उधर हिल रहा था और उस पर एक मोटा चूहा चढ़ा हुआ था।

अन्तमें हम लोगोंने चूहोंसे बचनेकी एक तरकीब ढूँढ़ ही निकाली। रोज-रोज हम लोग अपनी रोटियाँ इस तरह फेंक तो सकते ही नहीं थे। यदि फेंक देते तो हम लोगोंको भूखों मरना पड़ता। इसलिए हम लोगोंने चूहोंकी कुतरी हुई सब रोटियाँ इकट्ठी कीं और उनके टुकड़े-टुकड़े करके जमीन पर बीचमें उनका एक बड़ा ढेर लगा दिया। हर एक आदमीकी पारी बँध गई। सब लोग थोड़ी-थोड़ी देर तक जागकर पहरा देने लगे। पहरा देनेवालेके हाथमें एक बहुत बड़ी लकड़ी रहती थी। इसके सिवा डेटेरिंग, क्राप और कैजिन्स्की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीनों अपने जेबी लैम्प लिये सदा तैयार रहते थे। कुछ ही मिनटोंके बाद हम लोगोंको चूहोंकी खड़खड़ाहट सुनाई पड़ी। ऐसा जान पड़ता था कि बहुत से छोटे-छोटे पैर इधर-उधर चल रहे हैं। तीनों आदमियोंने अपनी-अपनी टार्च जलाई और सब लोग डंडोंसे रोटियोंका वह ढेर पीटने लगे। रोटियाँ इधर-उधर बिखर गईं। इस तरकीबका नतीजा भी बहुत अच्छा हुआ। बहुत से चूहे मारे गये। इसके बाद हम लोग फिर लेटकर चूहोंकी प्रतीक्षा करने लगे।

यह क्रिया हम लोगोंने कई बार की। अन्तमें चूहोंने या तो इस तरकीबका मतलब समझ लिया और या उन्हें चूहोंके रक्तकी गन्ध आने लगी। इसलिए अब हम लोगोंके यहाँ चूहोंका आना बन्द हो गया। लेकिन इतना होनेपर भी सवेरे हम लोगोंने देखा कि रातको जमीन पर रोटियोंके जो टुकड़े बिखरे हुए थे, वे अब वहाँ नहीं रह गये थे।

हम लोगोंके रहनेके स्थानके पास ही एक और टुकड़ीके रहनेका स्थान था। वहाँ इन चूहोंने दो बड़ी-बड़ी बिल्लियों और एक कुत्ते पर आक्रमण किया था और उन्हें काट-काटकर बिलकुल खा ही डाला था।

दूसरे दिन सैनिकोंमें एक प्रकारका पनीर बँटा। प्रत्येक सैनिकको कोई पाव-पाव भर पनीर मिला। एक तरहसे तो उस पनीरका बँटना अच्छा ही हुआ, क्योंकि वह पनीर बहुत स्वादिष्ट था। पर एक और दृष्टिसे उसका बँटना बहुत ही बुरा था, क्योंकि वह आनेवाली विपत्तिका एक बड़ा और निश्चित लक्षण था। इसके बाद जब जौकी शराब बँटी, तब हम लोगोंकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आशंका और भी बढ़ गई। हम सबने वह शराब पी तो डाली, पर उससे हम लोगोंको कोई विशेष आनन्द नहीं हुआ।

दिनके समय हम लोग इधर-उधर घूमते और चूहोंकी हत्या करते रहे। इस बीचमें जगह-जगह गोले-बारूद और सैनिक सामग्रीके ढेर लग गये। हम लोगोंने अपनी बन्दूकें और किरचें साफ कीं। हमारी किरचें एक विशेष प्रकारकी थीं। उनके सिरे पर आरेकी तरह दाँतियाँ बनी हुई थीं। इन किरचोंसे जिसपर वार किया जाता है, वह तुरन्त ही मर जाता है। अपने पासवाले विभागमें हम लोगोंने कुछ ऐसे आदमी भी देखे थे जिनकी नाकें और आँखें अपनी इन्हीं किरचोंके कारण साफ हो गई थीं। उनके मुँह और नाकमें लकड़ीका बुरादा भर दिया गया था जिसके कारण उनका दम घुट गया।

कुछ रंगरूटोंके पास भी इसी तरहकी किरचें थीं। हम लोगोंने उनकी वे किरचें ले लीं और उन्हें साधारण किरचें दे दीं।

पर अब इन किरचोंका कोई महत्व नहीं रह गया है। अब तो साधारणतः बमों आदिसे ही आक्रमण किया जाता है। इसके सिवा एक प्रकार की कुल्हाड़ियोंसे भी आक्रमण किया जाता है। उन कुल्हाड़ियोंकी धार बहुत तेज होती है, उनके चलानेमें बहुत आसानी होती है और उनसे और भी अनेक प्रकारके काम लिये जा सकते हैं। कुल्हाड़ियाँ बहुत भारी होती हैं, इसलिए उनका अच्छा वार बैठता है। यदि उनसे गरदन और कन्धेके बीचमें वार किया जाय तो वे उतरकर कलेजे तक पहुँच जाती हैं। यह कुल्हाड़ी जहाँ बैठती है, वहाँ प्रायः जम सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाती है, इसलिए घायलके पेट पर जोरकी ठोकर लगाकर उसे खींचना पड़ता है और जब तक वह कुल्हाड़ी खींचकर निकाली जाय, तब तक यह भी सम्भव है कि मारनेवाले पर ही उधरसे एक कुल्हाड़ी आ बैठे। इस कुल्हाड़ीमें एक खराबी यह भी है कि यह प्रायः टूट जाती है।

रातके समय गैस छोड़ी जाती है। हम लोगोंको इस प्रकारके आक्रमणकी भी आशंका रहती है, इसलिए हम लोग थैलियाँ मुँह पर लगाकर लेट जाते हैं और जब गैस निकल जाती है, तब कुछ आदमी चारो तरफ लोगोंको इस बातकी सूचना देने निकलते हैं। उनकी छाया देखते ही हम लोग अपनी थैलियाँ फाड़ डालते हैं।

आजकी रात यों ही बीत गई और तड़का हो गया, पर कोई आक्रमण नहीं हुआ। हाँ, शत्रुओंकी ओरसे बराबर रेल-गाड़ियों और लारियों आदिके आने-जानेकी ऐसी घड़घड़ाहट अवश्य सुनाई पड़ती थी जिससे कान फटते थे और कलजा दहलता था। हम लोगोंकी समझमें ही नहीं आता था कि वे लोग कौन सी सामग्री इकट्ठी कर रहे हैं। हमारी तरफके तोप-खानेसे बराबर उनपर गोलेबारी होती थी, पर वह घड़घड़ाहट किसी तरह कम नहीं होती थी।

हम लोगोंके चेहरेसे ही थकावट झलकती थी और हम लोग आपसमें निगाह तक नहीं मिलाते थे। कैजिन्स्कीने कुछ दुःखित भावसे कहा—"जैसी भीषण लड़ाई सोम (एक स्थानका नाम) में हुई थी, वैसी ही भीषण लड़ाई यहाँ भी होगी।" वहाँ लगातार सात दिनों तक दिन और रात हम लोगों पर गोले बरसे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोग जबसे यहाँ आये हैं, तबसे कैजिन्स्कीका सारा मजाक बन्द हो गया है। हम लोग इसे बहुत ही बुरा लक्षण समझते हैं, क्योंकि इन सब बातोंमें उसका अनुभव हम सबकी अपेक्षा बहुत बढ़ा-चढ़ा है; और जब कोई भारी विपत्ति आनेको होती है, तब वह पहलेसे ही बतला देता है। पर यहाँ खूब ढेर सा भोजन मिलता है और साथ ही पीनेके लिए जौकी शराब भी खूब मिलती है, इसलिए केवल जैडन बहुत प्रसन्न है। उसका कहना है कि यह भी सम्भव है कि यहाँ लड़ाई बिलकुल ही न हो और हम लोगोंको यहाँसे यों ही लौट जाना पड़े।

हम लोगोंको भी जैडनकी यह बात कुछ-कुछ ठीक मालूम होने लगी। एक-एक करके कई दिन बीत गये। यहाँ कुछ ऐसे स्थान बना दिये जाते हैं, जहाँ बैठकर शत्रुओंकी रेल-गाड़ियों और लारियों आदिके शब्दोंकी आहट ली जाती है। मैं रात-रात भर उसी स्थान पर बैठा रहता हूँ। वहाँ मैं देखता हूँ कि आकाशमें खूब बाण छूटते हैं और अनेक प्रकारके प्रकाश होते हैं। मेरा कलेजा दहलता रहता है और मैं बहुत सचेत रहता हूँ। रह रहकर मेरी दृष्टि अपनी उस घड़ी पर जाती है जिससे अँधेरेमें भी समयका पता चलता है। पर मैं बहुत जल्दी-जल्दी घड़ी देखता हूँ, इससे ऐसा जान पड़ता है कि घड़ी बन्द है। पर सच बात तो यह है कि वहाँ समय बहुत ही कठिनतासे बीतता है। मेरी आँखोंमें नींद भरी रहती है और जागे रहनेके लिए मैं अपने बूटके अन्दर पैरोंकी उँगलियाँ हिलाता रहता हूँ। जब तक मैं वहाँ रहता हूँ, तब तक कुछ भी नहीं होता। सिर्फ जोरोंकी घड़घड़ाहट सुनाई पड़ती है। धीरे-धीरे हम लोगोंकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिन्ता बहुत कुछ कम हो जाती है। अब हम लोगोंने कई तरहके खेल खेलने आरम्भ कर दिये हैं। ऐसा जान पड़ता है कि अन्तमें हम लोग भाग्यवान् सिद्ध होंगे।

दिन भर वे गुब्बारे हम लोगोंके सिर पर मँडराया करते हैं जो शत्रु-पक्षसे हमारी टोह लेनेके लिए आते हैं। अब यह अफवाह फैलती है कि शत्रु हम लोगों पर टैंकों (पहियों पर चढ़े हुए एक प्रकारके बहुत बड़े बड़े सन्दूक या कमरे जिनके अन्दर बैठकर तोपें और मशीनगनें चलाई जाती हैं) और हवाई जहाजोंसे आक्रमण करेंगे। पर इन टैंकों और हवाई जहाजों के आक्रमण की ओर इसलिए कोई ध्यान नहीं देता कि साथ ही यह भी खबर फैलती है कि आगकी लपटें फेंकनेवाले नये यन्त्र तैयार हुए हैं और अब उन्हीं यन्त्रोंसे हम लोगों पर आक्रमण होगा।

आधी रातके समय हम लोगोंकी नींद खुल गई। ऐसा जान पड़ता था कि सारी पृथ्वी हिल रही है और फटना चाहती है। हम लोगों पर बहुत जोरोंसे गोले बरसने लगे। सब लोग कोनोंमें दबक गये। हम लोगोंको ऐसा अन्दाज हो गया है कि आवाज सुनकर ही समझ लेते हैं कि यह गोला किस तरहका और कितना बड़ा है और किस तरहकी तोपसे छोड़ा जा रहा है।

हर एक आदमी अपनी सब चीजें अपने पास रख लेता है और एक एक मिनट पर ध्यानसे देखता है कि वे सब चीजें ज्योंकी त्यों मौजूद हैं या नहीं। जमीनके अन्दरके गड्ढे तक काँपते हैं और क्षण-क्षण पर कान फाड़नेवाले धड़ाके सुनाई पड़ते हैं। उन्हीं धड़ाकोंके बीच-बीचमें प्रकाश भी होता है और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसी प्रकाशमें हम लोग आपसमें एक दूसरेको देखते हैं। सबके चेहरे पीले पड़े हुए हैं और जबानें बन्द हैं। सिर्फ थोड़ी-थोड़ी देर पर लोगोंके सिर हिल जाते हैं।

खाइयोंके ऊपर आड़के लिए चबूतरे बने हुए हैं और उनके आगे जो बाँध बँधे हैं, वे गोलोंकी मारसे बराबर ढहते जा रहे हैं। जब कोई गोला आकर खाईमें गिरता है, तब वह उसी प्रकार भीषणतासे अपना काम करता है जिस प्रकार भीषणतासे शेरका पंजा अपने शिकार पर करता है। सवेरा होने पर हम लोगोंने देखा कि बहुत से रंगरूटोंकी तो मारे भयके ही बहुत बुरी दशा हो गई है और वे कै कर रहे हैं। बात यह है कि उन्होंने इससे पहले कभी इस तरहकी गोलेबारी देखी ही नहीं थी।

ज्यों-ज्यों दिनका प्रकाश फैलने लगा, त्यों-त्यों गोलोंसे निकलनेवाला प्रकाश पीला पड़ने लगा। किसी तरह सवेरा हो ही गया। अब तोपोंके धड़ाकोंके साथ-साथ सुरंगोंके उड़नेके धड़ाके भी सुनाई पड़ने लगे। इन सुरंगोंका आघात सबसे अधिक भीषण होता है। जिस जगह कोई सुरंग उड़ाई जाती है, उसके आस-पास कुछ दूर तक एक बहुत बड़ी कब्र ही बन जाती है। वहाँ जितने आदमी होते हैं, वे सब जमीनके अन्दर दबकर मर जाते हैं, उनमें से किसीके बचनेकी आशा नहीं रह जाती।

जो लोग घायलोंकी सहायता करने और शत्रुओंकी टोह लेनेके लिए निकलते हैं, उनका सारा शरीर धूल और मिट्टीसे भर जाता है। उनमें से बहुतेरे थर-थर काँपते हुए भी दिखाई देते हैं। कहीं कोई कोनेमें दबककर चुपचाप रोटी खाने लगता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और कहीं कोई नया आदमी बैठकर रोने और सिसकने लगता है। एक बार इसी तरहका एक आदमी एक चबूतरे पर खड़ा था। उसी चबूतरे पर आकर गोला लगा। वह आदमी जमीन पर गिर पड़ा। जब वह सँभलकर खड़ा हुआ, तब एक और गोला आया। वह फिर पहलेकी तरह गिर पड़ा और उठ खड़ा हुआ। दोनों वारमें एक बार भी उसके शरीरमें कोई चोट नहीं आई। हाँ, उसे कुछ धसक सी अवश्य लगी। दूरसे कुछ रंग-रूट उसे बहुत ध्यान से देख रहे थे। युद्ध-क्षेत्र में इस प्रकारके दृश्य भी बहुत आकर्षक हुआ करते हैं।

यह अच्छा हुआ कि अब दिन चढ़ आया था। ऐसा जान पड़ता था कि दोपहरसे पहले ही फिर भीषण आक्रमण होगा।

गोलेबारी अभी तक कम नहीं हुई थी। अब तो हम लोगों-के पीछेकी ओर तक जाकर गोले गिरने लगे थे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक लोहेके टुकड़ों और मिट्टीके ढेलोंके बड़े-बड़े फुहारों और वर्षाके सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता था। हम लोगों पर शत्रुके सैनिकोंका आक्रमण तो नहीं हुआ, पर गोलेबारी बराबर होती रही। धीरे-धीरे यह हालत हो गई कि सब लोगोंके मुँह बन्द हो गये। किसीके मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकलता था। हम लोग किसी पर अपने मनका भाव भी नहीं प्रकट कर सकते थे।

जिस खाईमें हम लोग थे, वह प्रायः बिलकुल ही नष्ट हो गई थी। बहुत सी जगहों पर तो वह केवल फुट डेढ़ फुट ही ऊँची रह गई थी। उसमें जगह जगह बड़े बड़े छेद हो गये थे और बहुत से स्थानोंमें मिट्टीके ऊँचे-ऊँचे ढेर लग गये थे। एक गोला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोगोंके ठीक सामने आकर गिरा। उसके गिरते ही चारों तरफ अँधेरा छा गया। हम लोग मिट्टीके एक छोटे से ढेरके नीचे दब गये और बड़ी कठिनतासे उसके बाहर निकलनेका प्रयत्न करने लगे। कोई घ टे भर बाद मिट्टी हट जाने पर इधर-उधर आने जानेका रास्ता हुआ। एक घन्टे तक हम लोगोंको कुछ काम करना पड़ा था, इसलिए अब हम लोग पहलेकी अपेक्षा कुछ शान्त हो गये थे।

हमारी कम्पनीके कमांडरने आकर खबर दी कि दो खाइयाँ तो बिलकुल ही नष्ट हो गई हैं। उसे देखकर रंगरूटोंकी जानमें जान आई। उसने यह भी कहा था कि आज सन्ध्या तक खाने-पीनेका सामान यहाँ तक लानेका प्रयत्न किया जायगा। उसकी यह बात सुनकर हम लोगोंको भी कुछ धैर्य हुआ; क्योंकि हम लोगोंको आशा हुई कि गोलेबारी कुछ कम होगी। खाने-पीनेकी बात सुनकर जैडन बहुत प्रसन्न हुआ। अब तक उसे छोड़कर और किसीको खाने-पीनेका कोई ध्यान ही नहीं था। अब ऐसा जान पड़ता था कि बाहरी जगत खिंचकर हम लोगोंके कुछ पास आ रहा है। रंगरूट यह समझते थे कि जब खाने खाने-पीनेका सामान यहाँ तक पहुँच सकेगा, तब विशेष भय या चिन्ताकी कोई बात न रह जायगी।

उनकी इस प्रकारकी धारणाके लिए हम लोग उनकी निन्दा नहीं करते। आखिर हम लोगोंके लिए भोजन भी तो उतना ही आवश्यक है, जितना आवश्यक गोला-बारूद है; और सिर्फ इसी लिए जैसे हो, वैसे भोजन यहाँ तक पहुँचना चाहिए।

सन्ध्याके समय खाने-पीनेका कुछ सामान आया, पर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहीं और चला गया। फिर कुछ और आदमी रसद लानेके लिए भेजे गये, पर वे भी खाली हाथ लौट आये। अन्तमें कैजिन्स्की रसदकी तलाशमें निकला, पर वह भी बैरंग लौट आया। असल बात यह थी कि गोलेबारी इतनी जबरदस्त हो रही थी कि उसके नीचेसे होकर कोई आ-जा ही नहीं सकता था। और तो और, शायद मक्खीके निकलनेके लिए भी रास्ता नहीं रह गया था।

मारे भूखके सब लोगोंका बुरा हाल था। सबके पास रोटीके एक दो छोटे मोटे टुकड़े थे। थोड़ा-थोड़ा करके सब लोग वही टुकड़े खाते थे और भोजनकी प्रतीक्षामें बहुत ही कष्टसे किसी प्रकार समय विताते थे।

× × × ×

रातके समय जो दशा हुई, वह बिलकुल ही असह्य थी। हम लोग किसी तरह सो ही नहीं सकते थे। बराबर बैठे हुए सामनेकी ओर देखते रहते थे और बीच-बीचमें जरा ऊँघने भी लगते थे। इस समय जैडनको सबसे बड़ा दुःख इस बातका था कि चूहे हमारी बहुत सी रोटियाँ खा गये थे। यदि इस समय वे रोटियाँ होतीं तो हम लोगोंके काम आतीं। अब हम लोगोंके पासका पानी भी कम हो चला था; पर फिर भी पानीकी उतनी कमी नहीं थी, जितनी खानेकी थी।

अभी सवेरा होनेमें कुछ देर थी कि एक नई दिल्लगी खड़ी हुई। हम लोगोंके रहनेके स्थानमें अन्दर आनेका जो रास्ता था, उस रास्तेसे चूहोंकी एक बहुत बड़ी फौज भागती हुई आई और दीवारों पर चढ़नेका प्रयत्न करने लगी। बहुत अधिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय तक भारी कष्टमें रहनेके कारण हम सब लोग बहुत खिजलाये हुए थे, इसलिए सब लोग मारे क्रोधके पागल होकर उन्हीं चूहों पर टूट पड़े और सारा गुस्सा उन्हीं पर निकालने लगे। बहुत से चूहे मरे और घायल हुए। अन्तमें जब यह नौबत दिखाई देने लगी कि हमारे डंडे आपसमें ही एक दूसरे पर पड़ने लगेंगे, तब कहीं जाकर चूहोंके साथका वह युद्ध समाप्त हुआ। पर इस युद्धके कारण हम लोग और भी अधिक थक गये थे, इसलिए बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े और फिर चूहोंके आक्रमणकी प्रतीक्षा करने लगे। यह एक आश्चर्यकी ही बात थी कि इधर कई दिनोंकी गोलेबारीमें हमारी टुकड़ीका एक भी आदमी जख्मी नहीं हुआ था और न मरा ही था। हम लोगोंका निवास-स्थान जमीनमें कुछ अधिक गहराईमें भी नहीं था।

इतनेमें एक जमादार कुछ रोटियाँ लेकर आया। रातके समय तीन आदमी बहुत कठिनतासे बाहर गये और खाने-पीनेका कुछ सामान लाये। उन्होंने यह भी बतलाया कि उधर हम लोगोंके तोपखानों तक बराबर उसी भीषणतासे गोलेबारी हो रही है। हम लोगोंकी समझमें ही नहीं आता था कि शत्रुओंके पास इतने गोले कहाँसे आते हैं।

हम लोग प्रतीक्षा करते रहे। ठीक दोपहरके समय वही बात हुई जिसकी मुझे पहलेसे ही आशंका थी। हम लोगोंमें से एक रंगरूट बेहोश हो गया। मैं कई दिनोंसे उसे अच्छी तरह देख रहा था। वह प्रायः दाँत पीसता था और मुट्ठी खोलता और बन्द करता था। उसकी आँखें भी स्थिर नहीं रहती थीं। उसके ये सब लक्षण देखकर मैंने पहले ही समझ लिया था कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसे बेहोशीका दौरा होता है और सम्भव है कि शीघ्र ही वह दौरा होगा। बस वही हुआ। दौरा होनेसे तीन चार घन्टे पहले-से वह बहुत ही शान्त, बल्कि यों कहना चाहिए कि सुस्त पड़ा था। जिस समय उसे बेहोशीका दौरा हुआ, उस समय वह कटे हुए पेड़की तरह गिर पड़ा।

थोड़ी देरमें वह उसी बेहोशीमें उठकर खड़ा हो गया और कुछ दूर तक चलनेके बाद क्षण भर रुककर दरवाजेकी ओर देखने लगा। मैंने उसे बीचेमें रोककर पूछा—कहाँ जाते हो?

"मैं अभी एक मिनटमें आता हूँ।" यह कहकर उसने मुझे धक्का दिया और फिर आगे बढ़ना चाहा।

मैं—अभी जरा सा ठहर जाओ। थोड़ी देरमें गोलेबारी बन्द हो जायगी।

उसने मेरी बात अच्छी तरह सुनी। थोड़ी देरके लिए उसकी आँखें बिलकुल सामान्य अवस्थामें आ गईं। पर तुरन्त ही वह फिर पागल कुत्तोंकी तरह देखने लगा। कुछ देर तक चुप रहनेके बाद उसने फिर मुझे धक्का देकर एक तरफ करना चाहा।

मैं—जरा सा ठहर जाओ।

इतनेमें कैजिन्स्कीका ध्यान हम लोगोंकी ओर आकृष्ट हुआ। ज्यों ही उस रंगरूटने मुझे धक्का दिया, त्यों ही कैजिन्स्की झपटकर वहाँ आ पहुँचा और हम दोनोंने फिर उसे पकड़ लिया।

वह छटपटाता हुआ बोला—मुझे छोड़ दो, बाहर जाने दो। मैं बाहर जाऊँगा।

वह किसीकी कोई बात ही नहीं सुनता था और बार-बार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने आपको छुड़ानेका प्रयत्न करता था। उसके मुँहसे झाग निकल रही थीं और साथ ही टूटे-फूटे और अस्पष्ट स्वर भी निकलते थे। उसे ऐसा जान पड़ता था कि यहाँ दम घुट रहा है; और इसलिए वह हर तरहसे अपने आपको छुड़ाकर जाना चाहता था। ऐसी अवस्थामें यदि हम लोग उसे छोड़ देते तो वह बाहर निकलकर चारों ओर बिलकुल अरक्षित अवस्थामें ही पागलोंकी तरह घूमने लगता और बहुत जल्दी अपने प्राण खो बैठता। मैं यह भी बतला देना चाहता हूँ कि यहाँ वह इस रोगका पहला ही रोगी नहीं था। और भी बहुत से आदमियोंको हम लोगोंने ऐसा करते देखा था। यहाँ प्रायः दुर्बल आदमियोंकी ऐसी ही अवस्था हो जाती है।

वह पागलोंकी तरह बकता और हाथ-पैर पटकता था और उसकी आँखोंकी पुतलियाँ बराबर इधर-उधर घूमती थीं। उसे होशमें लानेके लिए इस बातकी आवश्यकता थी कि उसे किसी अँधेरे स्थानमें इस प्रकार छिपाकर रखा जाय कि न तो वह किसीको देख सके और न उसे कोई देख सके। जब हम लोगोंने जल्दीसे उसे एक स्थानपर ले जाकर जबरदस्ती लेटा दिया, तब कहीं जाकर वह कुछ शान्त हुआ। उसकी यह दशा देख-कर बहुतसे लोगोंके चेहरे पीले पड़ गये। इससे हम लोगोंको कुछ यह भी आशा हुई कि इसकी यह अवस्था देखकर वे सचेत रहेंगे और विकट समय पड़ने पर अपने आपको सँभाले रहेंगे। प्रायः सेना विभाग बिलकुल ही नये आदमियोंको पकड़कर सीधे युद्ध-क्षेत्रमें भेज देता है। इस प्रकार नये आये हुए लोग पहले-पहल भीषण गोलबारीका दृश्य देखकर पागल हो जाते हैं। और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर इन्हीं रंगरूटोंको ही हम क्यों कहें, बड़े बड़े पुराने और अनुभवी योद्धाओंकी भी कभी कभी ऐसी ही दशा हो जाती है। गोले-बारीका दृश्य देखकर उसे बरदाश्त करना कोई हँसी-खेल नहीं है।

इस हृदयवेधक घटनाके बाद हम सब लोग बहुत ही उदास और खिन्न हो गये। ऐसा जान पड़ता था कि हम लोग अपनी कब्रमें बैठे हुए हैं और उसका मुँह तुरन्त बन्द होना चाहता है।

अचानक फिर भीषण गोलेबारी होने लगी। फिर खाइयाँ और गड्ढे ढह ढहकर गिरने लगे। चारो तरफ ईंट, मिट्टी, पत्थर बन्दूक और खोदकी वर्षा होने लगी। साथ ही गन्धकका धूआँ भी चारो तरफ फैलने लगा।

हम लोग जिन गड्ढोंमें थे, वे पहलेके बने हुए और बहुत अच्छे थे। पर इधर हाल में जो नये गड्ढे बने थे, वे प्रायः रद्दी और निकम्मे थे। यदि हम लोग उन नये गड्ढोंमें होते तो हम लोगोंमें से एक आदमी भी अब तक जीता न बचता।

फिर भी इस गोलेबारीका हम लोगोंकी टुकड़ी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। वह रंगरूट फिर पहलेकी तरह पागलोंकी सी चेष्टाएँ करने लगा। साथ ही इस बार उसकी देखा-देखी और भी दो आदमियोंकी वही दशा हो गई। उनमें से एक उछलकर बाहर निकल गया और हम लोग बड़ी कठिनतासे बाकी दोनोंको सँभालने लगे। जो आदमी बाहर निकल गया था, उसके पीछे मैं दौड़ा। मैंने सोचा कि यदि मैं इसके पैर में गोली मार दूँ तो यह घायल होकर गिर पड़ेगा और उस दशामें इसे पकड़कर ले आना सहज हो जायगा। इतनेमें फिर कई गोले आकर मेरे चारो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरफ गिरे। उन्हें आते देखकर मैं जमीन पर लेट गया था। जब वे फूटकर अपना नाशक कार्य कर चुके, तब मैंने उठकर देखा कि खाईकी जिस दीवार पर मैं खड़ा था, उस पर बहुत से जलते हुए लकड़ियोंके टुकड़े, मांसके लोथड़े और सैनिकोंकी वरदियाँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं। मैं फिर लौटकर खाईमें चला आया।

जिस रंगरूटका पहले-पहल दिमाग खराब हुआ था, उसकी अवस्था तो इस समय बिलकुल पागलोंकी सी हो गई थी। वह बहुत ही बुरी तरहसे दीवार पर अपना सिर पटकता था; इसलिए मैंने सोचा कि आज रातको इसे किसी तरह सेना के पृष्ठ भागमें पहुँचा देना चाहिए। इस बीचमें हम लोगोंने उसे इस प्रकार बाँध दिया कि यदि हम पर आक्रमण हो और शत्रु पक्षके सैनिक हम लोगों की खाइयोंमें आते हुए दिखाई दें तो वह तुरन्त खोल दिया जा सके।

उन लोगोंकी यह अवस्था देखकर कैजिन्स्की इतना घबरा गया कि उसने ताश खेलकर किसी तरह अपना मन बहलाना चाहा। खाली रहने पर जरूर इस तरह दिल बहलाया जा सकता है। लेकिन हम लोगोंका ध्यान बँटा रहता है, इसलिए खेल ठीक तरहसे नहीं हो सकता। ज्यों ही कोई गोला आस पास आकर गिरता है, त्यों ही हम लोग बड़े ध्यानसे उसका शब्द सुनते हैं और यह जाननेका प्रयत्न करते हैं कि उसका क्या परिणाम हुआ। हम लोग मानों एक ऐसे सन्दूकमें बैठे हुए हैं जिसके चारो ओर आग लगी हुई है और जिस पर चारो ओरसे भीषण प्रहार हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब फिर वही काली और भयानक रात आई। सब लोगों के मनमें बहुत ही विकट व्यग्रता समा गई। हम लोगोंके पैर नहीं उठते थे और हाथ काँपते थे। ऐसा जान पड़ता था कि हम सभी लोग पागल हो जायँगे, पर फिर भी बहुत ही कठिन-तासे सब लोग अपने आपको सँभाले हुए थे। उस रातकी गरज और घड़घड़ाहटका तो कहना ही क्या है! हम लोगोंके शरीरमें मानों मांस और रग-पट्ठे रह ही नहीं गये थे। मारे भयके हम लोगोंकी दशा इतनी ख़राब हो रही थी कि किसी को एक दूसरे की तरफ देखनेका साहस ही नहीं होता था; इसलिये हम सबने अपनी आँखें और मुँह बिलकुल बन्द कर लिये।

अचानक वे धड़ाके बिलकुल बन्द हो गये जो हम लोगोंके बहुत ही पास सुनाई पड़ते थे। गोलेबारी जरूर हो रही थी, पर अब उसका लक्ष्य हमारी खाइयोंपरसे हट गया था और अब गोले हमारे पृष्ठ भागमें गिर रहे थे। कुछ देरके बाद वह गोले-बारी भी बन्द हो गई। अब हम लोगोंने समझ लिया कि शत्रु-पक्षके सैनिक आकर हम लोगोंपर आक्रमण करेंगे।

इधर कई दिनोंसे हम लोगोंपर जैसी भीषण गोलेबारी हुई थी, उसे देखते हुए कोई यह विश्वास नहीं कर सकता था कि यहाँ एक भी आदमी जीता बचा होगा। लेकिन फिर भी लोहेके खोद पहने हुए शत्रु-पक्षके सैनिकोंने आकर चारो ओरसे हम लोगोंको घेर लिया और हमारी खाईसे कोई पचास गजकी दूरी पर एक मशीनगन आकर लग गई और हम लोगोंपर गोलियोंकी वर्षा करने लगी।

हमारी खाइयोंके सामने जो काँटेदार तार लगे हुए थे, वे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब टुकड़े-टुकड़े हो गये थे, पर फिर भी उनके कारण शत्रुओंके आगे बढ़नेमें बहुत कुछ बाधा होती थी। हम लोगोंने शत्रु सैनिकोंको आते हुए देखा। हमारी तरफके तोपखानोंने गोलेबारी शुरू की। मशीनगनोंकी कड़कड़ाहट होने लगी और धाँय-धाँय बन्दूकें छूटने लगीं। हम लोगोंके सामने जो कुछ आया, उसीसे शत्रुओंको मारने लगे। दोनों पक्षोंके सैनिकोंमें चारो तरफ घमासान युद्ध होने लगा। हम लोगोंके पास बहुत से छोटे-छोटे ऐसे गोले थे जो हाथसे उठाकर शत्रुओंपर फेंके जाते थे। हेई और क्रापने वही गोले उठाकर फेंकने शुरू किये। हेईका गोला पचहत्तर गज तक और क्रापका गोला साठ गज तक जाता था। यह बात हम लोग पहले ही जमीन नापकर जान चुके थे। ऐसे अवसरोंपर यह दूरी भी बहुत महत्वकी होती है। जो सैनिक जितनी अधिक दूर तक गोला फेंक सकता है, वह अपेक्षाकृत उतना ही रक्षित रहता है; और जितनी दूरतक उसके गोलेकी मार होती है, उतनी दूर तक शत्रु सैनिक आनेका साहस नहीं करते। शत्रु जब तक हमसे चालिस गज तक दूर रहें, तब तक वे प्रायः हमें हानि नहीं पहुँचा सकते। हाँ, जब वे इसकी अपेक्षा और भी पास आ जाते हैं, तभी हमपर उनका ठीक-ठीक वार हो सकता है। इसी लिए यहाँ गोलोंकी मारकी दूरीका विशेष महत्व है।

हम लोगोंपर जिन सैनिकोंने आक्रमण किया था, वे फ्रान्सीसी थे। जब वे हमपर आक्रमण करनेके लिए आ रहे थे, तब रास्तेमें ही उनकी शक्ति बहुत कुछ क्षीण हो गई थी, क्योंकि हमारे तोपखानेकी उनपर अच्छी मार पड़ी थी। हम लोगोंके तारके घेरे तक पहुँचनेमें ही उन्हें बहुत हानि उठानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ी थी। फिर बाकी बचे हुए लोगोंकी हमारी मशीन गनोंने अच्छी खबर ली थी। उन्हें रास्तेमें और भी अनेक प्रकारकी बाधाओंका सामना करना पड़ा था और इस प्रकार हमारे पास पहुँचनेके समय तक वे बहुत भारी क्षति उठा चुके थे।

मैंने आक्रमणकारियोंमें से एक ऐसे सैनिकको देखा था जो हमारे तारोंके जालमें फँस गया था। उसका मुँह और दोनों हाथ इस प्रकार आकाशकी ओर हो गये थे कि मानों वह ईश्वरसे प्रार्थना कर रहा था। फिर न जाने क्या हुआ कि उसका सारा धड़ कटकर नीचे गिर गया और उसके दोनों हाथ उसी तरह तारोंमें फँसे रह गये।

जब कुछ शत्रु सैनिक हम लोगोंके बहुत पास आ गये, तब हम लोगोंने कुछ पीछे हटना चाहा। इतनेमें हमारे सामनेसे जमीनपरसे तीन आदमी उठकर खड़े हो गये। उनमें से एक आदमीकी छोटी सी दाढ़ी थी। वह आँखें गड़ाकर मेरी ओर देखने लगा। मैंने गोला हाथमें लेकर ऊपर उठाया, पर उस अजनबीकी आँखें देखकर मुझे न जाने क्यों उसपर गोला फेंकनेका साहस नहीं होता था। हम दोनोंके चारो ओर भीषण मार-काट मची हुई थी। पर उस मार-काटमें भी उसकी आँखें बिलकुल स्थिर होकर मेरी ओर देख रही थीं। थोड़ी देर बाद उसने अपना सिर और हाथ उठाया। उस समय मैंने भी चुपचाप रहना मुनासिब न समझा और अपने हाथका गोला उसपर फेंक ही दिया।

इसके बाद हम लोग कुछ पीछे हट गये और तारोंके घातक पिंजड़े हम लोगोंने अपनी खाइयोंके आगे लाकर लगा दिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने बम भी हम लोगोंने इस प्रकार वहाँ छोड़ दिये कि जरा सा स्पर्श होते ही वे फूट जायँ और शत्रुओंका भीषण नाश करें। हमारे पास ही कुछ मशीन गनें खड़ी हुई पूरी तेजीके साथ अपना काम कर रही थीं जिससे बहुत से शत्रु सैनिक धड़ाधड़ गिर रहे थे।

इस समय हम लोगोंकी अवस्था बिलकुल जंगली जानवरोंकी सी हो रही थी। वास्तवमें हम लोग एक दूसरे से लड़ नहीं रहे थे, बल्कि भीषण तथा निर्दयतापूर्ण हत्या-कांडसे केवल अपने प्राण बचा रहे थे। हम लोग जो बम फेंक रहे थे, वह आदमियों पर नहीं फेंक रहे थे। भला उस समय आदमियोंकी कहाँ गिनती थी! वहाँ तो स्वयं मूर्त्तिमान काल ही मनुष्योंका संहार करनेके लिए भीषण नृत्य कर रहा था। आज कई दिनोंके बाद हम लोग उस कालका रूप देखनेमें समर्थ हुए थे और उससे अपने आपको बचानेका प्रयत्न कर रहे थे। नहीं तो इधर कई दिनोंसे वह केवल अदृश्य रहकर ही अपना काम किया करता था और हम लोग उसका जरा भी प्रतिकार नहीं कर सकते थे। आज हम लोगोंको उसका प्रतिकार करनेका अवसर मिला था। उसे अपने सामने पाकर हम लोग मारे क्रोधके पागल हो गये थे। अब हम लोग पहलेकी तरह असहाय बनकर नहीं बैठे थे और न फाँसीके तख्तेकी प्रतीक्षा ही करते थे। अब हम लोग अपने आपको बचाने और इधर कई दिनोंका अपना बदला चुकानेके लिए उस कालसे लड़ रहे थे। अब हम लोग भी नाश, संहार और हत्या कर रहे थे।

हम लोग कोनों और काँटेदार तारकी आड़में होकर शत्रुओं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर ढेरके ढेर बम फेंक रहे थे। उन गोलोंके फेंकनेमें हमारे हाथोंको और इधर-उधर भागनेमें हम लोगोंके पैरोंको बहुत अधिक थकावट मालूम होती थी। वह परिस्थिति ही ऐसी थी जिसने हम लोगोंको निर्दय और निर्मम डाकू तथा हत्यारा बना दिया था। केवल ईश्वर ही जानता था कि उस समय हम लोग कैसे राक्षस हो गये थे। उस समय हम लोग भयभीत थे, पागल थे, अपनी जान बचाना चाहते थे और केवल अपनी रक्षाके लिए अनेक प्रकारके प्रयत्न करते थे। इन्हीं सब कारणोंसे हम लोगोंमें न जाने कहाँकी राक्षसी शक्ति आ गई थी। उस समय तो ऐसी दशा हो गई थी कि यदि सामने बाप या भाई आ जाता तो शायद उसपर भी बम फेंकनेमें कोई कसर न करता।

हम लोग सबसे आगेवाली खाइयाँ बिलकुल खाली करके पीछे हट आये थे। पर प्रश्न तो यह है कि क्या इस समय भी वे खाइयाँ ही रह गई थीं? अब तो उनके टुकड़े-टुकड़े उड़ गये थे। सब खाइयाँ बिलकुल ढह गई थीं और उनमें जगह-जगह बहुत बड़े बड़े छेद हो गये थे। शत्रुओंके हतों और आहतों की संख्या भी बराबर बढ़ती ही जाती थी। लेकिन फिर भी वे लोग हम्हीं लोगोंकी तरह विवश होकर बढ़ते ही आ रहे थे और लड़ भी रहे थे।

× × × ×

अब प्रायः दोपहरका समय हो गया था। बहुत तेज धूप पड़ रही थी। सब लोग सिरसे पैर तक पसीनेसे तर थे। हम लोग रह-रहकर अपनी बाँहों और आस्तीनोंसे वह पसीना पोंछते थे। कभी-कभी उस पसीनेके साथ हमारी आस्तीनों पर खून भी लग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता था। अन्तमें हम लोग एक ऐसी खाईमें पहुँचे जो अपेक्षाकृत कुछ अच्छी दशामें थी। उसमें पहलेसे हमारे पक्षके बहुत से आदमी शत्रुओंपर आक्रमण करनेके लिए तैयार बैठे थे। वहाँ हम लोगोंकी तोपोंने पूरे जोरोंसे गोलेबारी की जिससे शत्रुओंका आक्रमण बहुत कुछ रुक गया।

हम लोग पीछेवाली पंक्तियोंमें मिलकर रुक गये। अब हम लोग न तो और पीछे हट सकते थे और न शत्रु ही आगे बढ़ सकते थे। हमारे तोपखानेने शत्रुओंका आक्रमण विफल कर दिया। कुछ देर तक हम लोग प्रतीक्षा करते रहे। हमारी गोलेबारीसे शत्रु कोई सौ गज पीछे हट गये और हम लोग कुछ आगे बढ़े। मेरे पास ही एक जमादार खड़ा था जिसका सिर धड़से उड़ गया। उसकी गरदनसे खूनका फुहारा छूटने लगा, तो भी उसका कवन्ध कई कदम चलकर आगे बढ़ गया।

गुथकर लड़नेकी नौबत नहीं आई, क्योंकि शत्रु लोग पीछे हटा दिये गये थे। हम लोग फिर आगे बढ़कर उन्हीं खाइयोंमें पहुँच गये जिन्हें हम बहुत ही बुरी अवस्थामें छोड़ आये थे। बल्कि हममें से कुछ लोग तो खाइयोंसे भी और आगे बढ़ गये थे।

फिर लड़ाईका रुख पलट गया था। हम लोग सुरक्षित स्थानमें पहुँच गये थे और खाइयोंमें पहुँचकर छिप जाना चाहते थे। लेकिन यह सब कुछ तो हुआ नहीं, उलटे हम लोगोंको फिर उसी भीषण मार-काटमें पड़ना पड़ा। लेकिन उस समय हम लोग आपेमें नहीं थे और हमपर भूत सवार था। यदि यह बात न होती तो वहाँ पहुँचते ही आप-से-आप जमीनपर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिर पड़ते और वहीं ज्यों-के-त्यों पड़े रह जाते। लेकिन हम लोग विवश होकर पागलों और जंगलियोंकी तरह क्रोधसे भरे हुए किसी अदृश्य शक्तिकी प्रेरणासे आप-से-आप आगे बढ़ने लगे। हम लोग अपने विपक्षियोंको मार डालना चाहते थे, क्योंकि वे अभी तक हमारे भीषण शत्रु थे और अपनी बन्दूकों तथा बमोंसे हमपर वार कर रहे थे। उस समय यदि हम लोग उनका नाश न करते तो वे अवश्य ही हम लोगोंका नाश कर डालते।

वह पूर्ण रूपसे नष्ट-भ्रष्ट जमीन खून और चरबी आदिसे तर थी और सूर्यकी किरणें पड़नेके कारण चमक रही थी। हम लोगोंका साँस बहुत जोरोंसे चल रहा था, हमारे होंठ सूखे हुए थे और दिमाग इतने खराब हो रहे थे कि हमारी समझमें मार-काटके सिवा और कोई बात आती ही नहीं थी। बस उसी अवस्थामें हम सैकड़ों-हजारों लाशोंपर पैर रखते हुए आगे बढ़ रहे थे। हमारी आत्माएँ उस समय विद्ध और छिन्न-भिन्न हो रही थीं। उन लाशोंके ढेरमें बहुतसे अधमरे और घायल भी पड़े हुए थे; और जब हम लोग उन्हें कुचलते हुए आगे बढ़ते थे, तब वे चिल्लाते हुए हमारे पैरोंसे चिमट जाते थे। पर उनकी ओर ध्यान देनेके लिए हमारे पास समय ही नहीं था। सच पूछिए तो उस समय हम लोगोंमें किसीके प्रति दया, प्रेम या सहानुभूति आदिका कोई भाव ही नहीं रह गया था। ज्यों ही किसी आदमी पर हमारी दृष्टि पड़ती थी, त्यों ही हम बिलकुल आपेसे बाहर हो जाते थे। हम लोग बिलकुल अज्ञान और निर्जीव हो रहे थे और ऐसा जान पड़ता था कि सिर्फ किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जादूके जोरसे ही दौड़ और मार-काट रहे थे।

जिस समय फ्रान्सीसी लोग भागकर कुछ दूर निकल गये थे, उस समय एक नवयुवक फ्रान्सीसी किसी तरह पीछे रह गया था। हमारे कुछ साथियोंने उसे घेर लिया। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। इस प्रकार उसने मानों यह प्रकट कर दिया कि मैं आत्म-समर्पण करना चाहता हूँ। लेकिन अभी तक उसके एक हाथमें रिवाल्वर थी। इसलिए हम लोग समझ न सके कि वह आत्म-समर्पण करना चाहता है या हम लोगोंपर गोली चलाना चाहता है। इतनेमें किसीकी कुल्हाड़ीका एक गहरा हाथ उसके चेहरेपर पड़ा और उसके क्षण ही भर बाद किसीने पीछेसे उसकी पीठमें किरिच भोंक दी। वह उछल-कर ऊपर हवामें चला गया। उस समय उसके दोनों हाथ हवामें फैले हुए थे, उसका मुँह बिलकुल खुला हुआ था और वह जोरोंसे चिल्ला रहा था। वह छटपटाता था और उसकी पीठमें धँसी हुई किरिच इधर-उधर हिलती थी। उसकी यह दशा देख-कर एक आदमीने अपनी बन्दूक फेंक दी और वह दोनों हाथोंसे अपना मुँह छिपाकर जमीनपर बैठ गया। इसके बाद वह कुछ और कैदियोंके साथ वहीं छोड़ दिया गया।

इस प्रकार बढ़ते-बढ़ते हम लोग अचानक शत्रुओंकी पंक्ति तक पहुँच गये। जिस समय हम लोग शत्रुओंका पीछा करते हुए बढ़ रहे थे, उस समय हम लोग शत्रुओंके इतने पास थे कि उनकी खाइयोंमें हम लोग प्रायः उनके साथ-ही-साथ पहुँचे थे। इसलिए अब तक हमारे बहुत ही थोड़े आदमी घायल हुए थे। शत्रुओंकी एक मशीनगन हम लोगोंपर गोलियाँ चलाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगी; पर हमारी तरफसे ज्यों ही उसपर एक बम फेंका गया, त्यों ही वह शान्त हो गई। हम लोगोंके यहाँ पहुँचने पर वह मशीनगन शायद कुछ ही सेकेंडों तक चली थी, पर इसी बीचमें उसने हमारे पाँच सैनिकोंको घायल कर दिया था। उन सभीके पेटमें गोली लगी थी। एक मशीनगन चलानेवाला कुछ घायल हो गया था। कैजिन्सकीने अपनी बन्दूकके कुन्देसे उसके मुँह पर ऐसा वार किया कि उसका मुँह बिलकुल कुचला हो गया। कई और मशीनगन चलानेवाले भी वहाँ मौजूद थे। जब तक वे बम उठाकर हम लोगोंपर फेंकें, तब तक हम लोगोंने उन्हें भी किरिच चलाकर जमीनपर गिरा दिया। उस समय हम लोगोंको बहुत तेज प्यास लगी थी। पास ही वह पानी रखा हुआ था जिससे तोप गरम हो जाने पर ठंढी की जाती है। हम लोगोंने वही पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई।

यहाँ पहुँचते ही हमारे साथके लोग जगह-जगहसे काँटेदार तार काटने लगे और उन पर बड़े-बड़े तख्ते फेंकने लगे। इस प्रकार बीचमें जो थोड़ा सा रास्ता हो जाता था, उसी रास्तेसे हम लोग बढ़कर शत्रुकी खाइयों तक पहुँचने लगे। देवकी तरह हट्टा-कट्टा एक फ्रान्सीसी सामने खड़ा था। हेईने अपनी कुल्हाड़ी उसकी गरदन पर चलाई और साथ ही उसके ऊपर गोला फेंका। थोड़ी ही देरमें हम लोगोंके सामनेवाली खाईका कुछ हिस्सा बिलकुल साफ हो गया और उसमें एक भी आदमी न रह गया। दोबारा जब हम लोगोंने गोले चलाये, तब उसका एक और कोना साफ हो गया। अब हम लोगों को और भी अच्छा रास्ता मिल गया। हम लोग आगे बढ़ने और आस-पासकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाइयोंमें खूब गोले फेंकने लगे। गोलोंकी वर्षासे जमीन काँप उठती थी, उसमें बड़ी-बड़ी दरारें पड़ जाती थीं और खाइयोंके आस-पासकी बहुत सी मिट्टी उनमें गिर पड़ती थी। चारो तरफ धूआँ फैल जाता था और रोने-चिल्लाने तथा कराहनेकी आवाजें सुनाई पड़ती थीं। घायलों और मांसके लोथड़ोंपर पड़कर हमारे पैर फिसलते थे। मैं एक सैनिकके ऐसे नंगे पेटपर गिर पड़ा जिसपर किसी अफसरकी नई टोपी पड़ी हुई थी।

अब लड़ाई बन्द हो गई। शत्रु भागकर हम लोगोंसे बहुत दूर निकल गये थे। हम लोग यहाँ अधिक समय तक नहीं ठहर सकते थे। हमारे तोपखानोंसे गोलोंकी जो वर्षा हो रही थी, उसीकी आड़में हमें लौटकर अपने पूर्व स्थान पर पहुँचना था। ज्यों ही सब लोगोंको इस बातकी सूचना मिली, त्यों ही हम लोगोंने पासकी खाइयोंमें उतरकर एक प्रकारकी लूट सी मचा दी। वहाँ जो कुछ रसद आदि मिली, सब हम लोगोंने जल्दीमें उठा ली। खासकर मांस और मक्खनके डिब्बोंपर हम लोगों ने खूब हाथ साफ किये और इसके बाद तुरन्त ही पीछेकी ओर लौट पड़े।

वहाँसे लौटकर हम लोग अच्छी तरह अपनी खाइयोंमें पहुँच गये। अब शत्रुओंकी ओरसे हमपर कोई आक्रमण नहीं हो रहा था। खाइयोंमें पहुँचकर हम लोग बिलकुल चुपचाप लेटकर सुस्ताते रहे। उस समय किसीके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकलता था। हम लोग थककर ऐसे चूर हो गये थे कि बहुत अधिक भूख लगी रहने पर भी खाने-पीनेकी चीजोंकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर किसीका ध्यान नहीं जाता था। बहुत देर बाद धीरे-धीरे हम लोगोंमें फिर मनुष्यत्व आने लगा।

फ्रान्सीसियोंकी खाइयोंमेंसे हम लोग जो मांस उठा लाये थे, वह अपनी सुस्वादुताके लिए सारे युद्ध-क्षेत्रमें प्रसिद्ध था। हम लोगोंको अपनी तरफसे जो भोजन मिलता था, वह प्रायः बहुत खराब हुआ करता था; इसलिए उस मांसके लालचसे ही हम लोग फ्रान्सीसियोंकी खाइयोंपर चढ़ जाया करते थे और वहाँसे वह मांस उठा लाते थे। उस मांसपर हम लोगोंकी सदा तबीयत लगी रहती थी।

हम लोग भी मांसके पाँच डिब्बे उठा लाये। हम लोगोंके मुकाबलेमें फ्रान्सीसियोंको खाने-पीनेका सामान बहुत अच्छा मिलता था। हम लोगोंको एक तो भोजन यों ही खराब मिलता था और दूसरे मिलता भी बहुत कम था। प्रायः हमें भूखे रह-कर ही समय बिताना पड़ता था। हम लोगोंको प्रायः गाजरका एक प्रकारका रद्दी हलुआ मिलता था; और वे लोग जितना मांस चाहते थे, उतना पाते थे। हेई अपने साथ बढ़िया और सफेद फ्रांसीसी रोटियोंका एक डिब्बा भी उठा लाया था। वह डिब्बा उसने अपनी पेटीमें पीछेकी ओर बाँध लिया था। उन रोटियोंके कुछ अंशमें खून भी लग गया था। पर वह अंश काटकर बाकी अंश बहुत अच्छी तरह खाया जा सकता था।

और चाहे जो हो, पर यह एक बहुत अच्छी बात हुई थी कि हम लोगोंको खानेकी कई अच्छी चीजें मिल गई थीं। बढ़िया भोजन भी हम लोगोंके लिए उतना ही आवश्यक था जितना रहनेके लिए बढ़िया स्थान। भोजनसे ही तो हम लोगोंके प्राणोंकी रक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होती है। बस इसी लिए हम लोग सदा भोजनके लिए इतने लालायित रहते हैं।

जैडनको उन्हीं खाइयोंमें दो बोतल अच्छी शराब भी मिल गई थी। बस अब क्या था! हम सब लोगोंने मिलकर खूब मजेमें भोजन किया।

× × × ×

धीरे-धीरे सुखद सन्ध्या आने लगी। जब रात हुई, तब चारों तरफ कोहरा छा गया। ऐसा जान पड़ता था कि जमीन-के सभी गड्ढे और छेद उसी राक्षसी पदार्थसे भरे हुए हैं। वह कोहरा चारो तरफ खाइयोंमें भरकर हम लोगोंको बहुत कष्ट दे रहा था। उस समय ठंढक भी काफी पड़ रही थी। मैं पहरेपर था और बहुत ध्यानसे उस घोर अन्धकारकी ओर देख रहा था। आक्रमणके उपरान्त सदा शरीर बहुत ही शिथिल हो जाया करता था। आज भी मेरे सारे शरीरमें वैसी ही शिथिलता भरी हुई थी। इसलिए मैं किसी बात पर लगातार कुछ समय तक विचार नहीं कर सकता था। जो बातें मेरे मनमें उठ रही थीं, उन्हें मैं विचार भी नहीं कर सकता। वे तो केवल कुछ स्मृतियाँ थीं जिन्होंने मुझे दुर्बल पाकर मुझपर अधिकार कर लिया था और जो मेरे भावोंको विलक्षण रूपसे संचालित करती थीं।

ऊपर आकाशमें गुब्बारोंकी रोशनियाँ लहरा रही थीं। उस समय एक विलक्षण चित्र मेरी आँखोंके सामने आ खड़ा हुआ। मुझे ध्यान आया कि गरमीका दिन और सन्ध्याका समय है। मैं एक छोटे गिरजेमें खड़ा हूँ जिसके चारो ओर बड़े-बड़े पेड़ हैं। उन्हीं पेड़ोंके नीचे पादरियों और साधुओंकी कब्रें हैं। वह स्थान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चारों तरफ पत्थरकी चहारदीवारीसे घिरा हुआ है। वहाँ और कोई नहीं है। केवल एकान्त है। सारे अहातेमें एक अद्भुत शान्ति विराज रही है। सूर्यकी किरणें चहारदीवारी और इमारत-के पत्थरोंपर पड़ रही हैं। मैं उन पत्थरोंपर हाथ रखता हूँ तो वे पत्थर गरम जान पड़ते हैं। दाहिनी ओर गिरजेका शिखर है जो सन्ध्याके उस नीले आकाशमें ऊपरकी ओर गया हुआ है। खम्भोंके बीचमें वह शीतल अन्धकार है जो प्रायः गिरजोंमें ही पाया जाता है। बस उसी स्थानपर खड़ा हुआ मैं सोच रहा हूँ कि जब मैं बीस वर्षोंका होऊँगा, तब क्या मैं प्रेमके उत्तेजक मनोभावोंका अनुभव कर सकूँगा? क्या कभी मेरे मनमें इस प्रकारके प्रेमपूर्ण भाव उत्पन्न हो सकेंगे?

गिरजाके अन्दरकी मूर्त्ति मुझे बहुत ही पास जान पड़ती थी। दूसरे प्रकाशक गोलेके प्रकाशमें लीन होनेसे पहले वह मुझे स्पर्श करती हुई जान पड़ती थी।

मैंने यह जाननेके लिए अपनी बन्दूकपर हाथ डाला कि वह अपनी खोलीमें मौजूद तो है। उसका कुन्दा कोहरेके कारण भींगकर तर हो गया था। मैंने उसे बाहर निकालकर उसके ऊपरका सारा कोहरा हाथसे रगड़कर पोंछ डाला।

हम लोग जिस कस्बेमें रहते थे, उसमें पीछेकी ओर कई चरागाह और बड़े-बड़े मैदान थे और उसी मैदानमें एक छोटे झरनेके किनारे बहुत से पुराने वृक्षोंकी एक पंक्ति थी। वे वृक्ष बहुत दूरसे दिखाई पड़ते थे। यद्यपि वे वृक्ष झरनेके एक ही किनारेपर थे, तो भी हम लोग उसे वन कहा करते थे। बाल्यावस्थासे ही हम लोगोंको वह वन बहुत अच्छा लगता था और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोग प्रायः वहाँ जाया करते थे। हम दिन दिन भर वहाँ खेला करते थे और उन वृक्षोंकी डालियोंकी खड़खड़ाहट सुना करते थे। हम लोग उसी झरनेके किनारे उन्हीं वृक्षोंके नीचे बैठा करते थे और उसके तेज बहनेवाले स्वच्छ जलमें अपने पैर लटका दिया करते थे। उस समय जलका वह सुन्दर दृश्य और वृक्षोंकी खड़खड़ाहटका गान बहुत भला जान पड़ता था। उन वृक्षों और उस स्थानसे हम लोगोंका बहुत अधिक प्रेम था। उस दृश्यका ध्यान आते ही अब भी मेरा हृदय नाचने लगता है।

(यह एक विलक्षण बात है कि सभी प्रकारकी स्मृतियोंमें दो विशेषताएँ हुआ करती हैं। उनमें सबसे बड़ी और मुख्य बात तो यह होती है कि वे स्मृतियाँ सदा पूर्ण रूपसे शान्त होती हैं; और यदि वे वस्तुतः शान्त नहीं होतीं, तो भी पीछे से शान्त हो जाती हैं। उनके कारण मनमें किसी प्रकारका उद्वेग नहीं होता। वे बिलकुल मौन रहती हैं और चुपचाप अपती आकृतियों और भाव-भंगियोंके द्वारा ही अपने आन्तरिक भाव प्रकट करती हैं। उनके इसी मौनका भयानक रूप मुझे इस बातके लिए बाध्य करता है कि मैं अपनी आस्तीन सँभालकर अपनी बन्दूक मजबूतीसे पकड़ लेता हूँ। यदि यह बात न होती तो बहुत सम्भव था कि उन स्मृतियोंके प्रलोभनमें पड़कर मैं यहाँसे भाग निकलता। वह प्रलोभन पूर्ण रूपसे मुझपर अपना अधिकार कर लेता और मुझे वही शक्तियाँ यहाँसे खींच ले जातीं जो इस प्रकारके पदार्थों और दृश्योंमें छिपी रहती हैं।

यहाँ हम लोगोंको और किसी प्रकारसे तो शान्ति मिल ही नहीं सकती, इसलिए ऐसी स्मृतियाँ ही हम लोगोंके लिए शान्ति-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दायिनी हुआ करती हैं। युद्ध-क्षेत्रमें कभी शान्ति हो ही नहीं सकती और उसका यह दुष्ट प्रभाव इतनी दूर तक फैला रहता है कि हम लोग उसे पार करके कभी उसके बाहर जा ही नहीं सकते। युद्ध-क्षेत्रमें पीछेकी ओर बहुत दूरी पर कुछ ऐसे स्थान रहते हैं जहाँ युद्ध-सामग्री और नये सैनिक बाहरसे लाकर रखे जाते हैं। इसके सिवा बहुत दिनों तक लड़ते रहनेवाले सैनिक वहाँ विश्राम करनेके लिए भी भेज दिये जाते हैं। पर उन स्थानोंमें भी कभी मनुष्यको शान्ति नहीं मिलती, क्योंकि वहाँ भी दिन-रात तोपोंकी गरज सुनाई पड़ती है। हम लोग युद्ध-क्षेत्रसे कभी इतनी दूरीपर नहीं पहुँच सकते जहाँ युद्ध-क्षेत्रमें होनेवाले अनेक प्रकारके भीषण शब्द न सुनाई पड़ते हों। पर इधर कई दिनोंसे तो यहाँ इतना ज्यादा शोर होने लगा है कि उसे बरदाश्त करना आदमीकी ताकतसे बिलकुल बाहर है।

पुराने समयकी स्मृतियाँ अपनी शान्तिके कारण ही मनुष्यमें केवल दुःख उत्पन्न करके रह जाती हैं और उसमें किसी प्रकारकी कामना नहीं उत्पन्न करतीं। उनके कारण मनमें जो दुःख होता है, वह बहुत अधिक और साधारण अनुमानके बाहर होता है। वे स्मृतियाँ मनुष्यको एक प्रकारसे दुःख-सागरमें डुबा देती हैं। किसी समय हम लोगोंके मनमें बहुत सी कामनाएँ और बहुत सी अभिलाषाएँ थीं। पर अब वे निकल गई हैं और कभी भूलकर भी हम लोगोंके पास नहीं फटकतीं। अब वे सब अभिलाषाएँ आदि गत हो गई हैं और ऐसे जगतमें चली गई हैं जो हम लोगोंसे बहुत दूर निकल गया है। जब हम लोग पहले-पहल युद्ध-क्षेत्रमें आने लगे थे और बैरिकोंमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखे गये थे, उस समय वे हम लोगोंके मनमें एक प्रकारका विद्रोह उत्पन्न करती थीं और हम लोग फिरसे उन्हें प्राप्त करनेके लिए पागल से रहते थे। इसका कारण यही था कि उस समय तक उन अभिलाषाओंका हम लोगोंके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे अभिलाषाएँ हमारी थीं और हम लोग उन अभिलाषाओंके थे। यद्यपि उस समय हम लोग उन अभिलाओंकी पूर्त्ति नहीं कर सकते थे, तथापि हमारे साथ उनका बहुत बड़ा सम्बन्ध था। जब हम लोग प्रभातके समय युद्ध-यात्राका अभ्यास करनेके लिए निकलते थे अथवा सन्ध्या समय जंगलोंमें कवायद करनेके लिए जाते थे, उस समय रास्तेमें हम लोग जो गीत गाते थे, उन गीतोंमें भी वही अभिलाषाएँ भरी रहती थीं। उस समय तक हम लोगोंमें वे स्मृतियाँ बहुत अधिक प्रबल थीं और वे हमारे अन्तःकरणमेंसे निकला करती थीं। पर यहाँ खाइयोंमें आनेपर वे सब अभिलाषाएँ हम लोगोंके लिए बिलकुल नष्ट हो गई हैं। अब हमारे मनमें वे अभिलाषाएँ कभी उठती ही नहीं, क्योंकि अब हम लोग मुरदोंके समान हो गये हैं और वे हम लोगोंसे बहुत दूर निकलकर क्षितिजमें जा पहुँची हैं। अब हम लोगोंके मनपर उनका केवल रहस्यमय प्रतिबिम्ब पड़ता है जो हम लोगोंके मन-मन्दिरमें भूतोंकी तरह संचार करता है। अब हमें उनसे भय होता है; और यदि हम उनसे कुछ प्रेम भी करते हैं तो बिना उनकी प्राप्ति और पूर्त्तिकी आशाके करते हैं।

पर एक बात और है। यदि हम लोगोंको फिर अपना वही पुराना यौवन-काल वापस मिल जाता तो भी हम लोग यह न समझ सकते कि हम उसका किस प्रकार उपयोग करें। अब उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिलाषाओंका कोमल, सुखद और गुप्त प्रभाव कमसे कम हम लोगोंके लिए उनमें से बिलकुल निकल गया था और अब हम लोगोंमें वह प्रभाव किसी प्रकार उत्पन्न भी नहीं हो सकता था। सम्भव है कि हम लोग फिर उसी अवस्थामें पहुँच जायँ और उन अभिलाषोंमें मानसिक विचरण करने लगें। यह भी सम्भव है कि हम उन्हें स्मरण करें, उनके साथ प्रेम करें और उन्हें अपने सामने देखकर उत्तेजित हो जायँ। पर फिर भी अब इन सब बातोंमें कोई सार नहीं रह गया है। अब हम लोगोंके लिए उनमें कोई वास्तविकता नहीं रह गई है। अब वे हमारे लिए एक मृत साथीके चित्रके सिवा और कुछ भी नहीं हैं। उस चित्रमें रूप, रंग और आकार आदि सब दिखाई देते हैं। वे दिन भी याद आ जाते हैं जो हमने उस साथीके साथ इस दुःखपूर्ण जीवनमें बिताये थे। पर फिर भी हमारे सामने चित्र ही चित्र रहता है, स्वयं वह आदमी जिसका वह चित्र है, हमें किसी प्रकार नहीं मिल सकता।

अब हम उन पुराने दृश्योंके साथ कभी वैसी घनिष्टता स्थापित नहीं कर सकते थे; उन दृश्योंका सौन्दर्य और महत्व हम लोगोंको अपनी ओर आकृष्ट नहीं करता था, बल्कि उन पदार्थों और घटनाओंके साथ हमारा जो बन्धुत्वका भाव था, वही भाव हमें अपनी ओर आकृष्ट करता है। इसी भावने हमारे माता-पिता और बड़े-बूढ़ोंके लिए एक ऐसे संसारकी सृष्टि की थी जिसकी हम लोग कल्पना भी नहीं कर सकते और हम लोगोंका सम्बन्ध उस संसारसे बिलकुल तोड़ दिया था। उस समय हम लोगोंने घटनाओंके सामने आत्म-समर्पण कर दिया था। अब तो एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत ही सामान्य और तुच्छ बात भी हम लोगोंको अनित्यताके प्रवाहमें बहा ले चलनेके लिए यथेष्ट थी। शायद अब वह हम लोगोंके लिए सिर्फ उम्रका तकाजा था; लेकिन तब तक हम लोग यह नहीं जानते थे कि इसकी सीमा कहाँ तक है और इसका कहाँ अन्त होगा। उस समय भी हम लोगोंमें कुछ कुछ आशाएँ बनी हुई थीं जिन्होंने हम लोगोंको उन दिनोंके साथ सम्बद्ध कर रखा था।

पर यदि हम लोगोंको फिरसे वही यौवन-काल प्राप्त हो जाय और फिरसे हमारे सामने वही परिस्थितियाँ आ जायँ तो हम लोग यौवन-कालके उन दृश्योंमें से होकर उसी प्रकार गुजरेंगे जिस प्रकार कोई यात्री अपने यात्रा-कालमें किसी ऐसे दृश्योंके बीचसे होकर गुजरता है, जिन दृश्योंके साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। कठोर वास्तविकताओंने हम लोगोंको दग्ध कर डाला है। हम लोग व्यापारियोंकी तरह सब प्रकारके विभेदों और अन्तरोंको खूब अच्छी तरह समझते हैं और साथ ही कसाइयोंकी तरह अपनी आवश्यकताएँ भी समझते हैं। अब हम लोगोंको किसी बातकी कोई विशेष चिन्ता नहीं रहती— हम लोग सब बातोंसे उदासीन रहते हैं। उस यौवन कालमें फिर से हम लोगोंका अस्तित्व रह सकता है; पर प्रश्न तो यह है कि क्या उस समय भी हम उसमें वस्तुतः जीवित रहेंगे?

हम लोग बालकोंकी तरह परित्यक्त और वृद्धोंकी तरह अनुभवी हो गये हैं। हम लोग उजड्ड और दुःखी हो गये हैं और बिलकुल फालतू आदमी बन गये हैं। मैं तो समझता हूँ कि अब हम लोग संसारके किसी कामके नहीं रह गये।

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे हाथ ठंढे पड़ गये हैं और मुझे सरदी-सी जान पड़ती है, पर फिर भी आजकी रात गरम है। सिर्फ कोहरा ही ठंढा है और उसीके कारण ठंढ पड़ती है। यह रहस्य-पूर्ण कोहरा मृत शरीरोंपर छाया हुआ है; और उनमें जो थोड़ी बहुत बची-खुची जीवनी शक्ति है, उसे यह अच्छी तरह चूस लेता है। सवेरे तक ये मुरदे पीले और हरे हो जायँगे और इनका खून जमकर काला हो जायगा।

गुब्बारे और बाण अभी तक आकाशमें उड़ रहे हैं और इस पथरीले प्रदेशपर अपना निर्दय प्रकाश डाल रहे हैं। सारा स्थान बड़े-बड़े गड्ढों और छेदोंसे भरा है। मेरे शरीरका रक्त मेरे मनमें भय और विचारोंमें चंचलता उत्पन्न कर रहा है। वे विचार अब बहुत दुर्बल पड़ गये हैं और काँप रहे हैं; वे गरमाहट और प्राण चाहते हैं। अब वे बिना किसी प्रकारकी सांत्वना और शांतिके जीवित नहीं रह सकते। निराशाके नग्न चित्रके सामने वे बिलकुल अव्यवस्थित और विशृंखल हो गये हैं।

मुझे बावर्चीखानेके टिनों की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ी जिससे मेरे मनमें गरमागरम भोजन पानेकी लालसा बहुत बढ़ गई। यदि इस समय मुझे थोड़ा सा गरम भोजन मिल जाता तो उससे मुझे बहुत कुछ शान्ति और सन्तोष प्राप्त होता। बड़े ही कष्टसे मैं तब तक प्रतीक्षा करता रहा, जब तक मेरे स्थानपर पहरा देनेके लिए नया सिपाही नहीं आ गया।

पहरेसे छुट्टी पानेपर मैं खाईमें अपने निवास-स्थानपर पहुँचा। वहाँ मुझे चरबीमें भूना हुआ थोड़ा सा जौ मिला। वह स्वादिष्ट था, इसलिए मैं धीरे-धीरे वही खाने लगा। इस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोलेबारी बन्द थी, इसलिए और लोग तो कुछ प्रसन्न थे, पर मैं कुछ चिन्तित और गम्भीर था।

× × × ×

बराबर घण्टे-पर-घण्टे और दिन-पर-दिन बीतते चले जा रहे हैं। कभी उधरसे आक्रमण होता है और कभी इधरसे उसका उत्तर दिया जाता है। खाइयों के बीच में और आस-पास जो बहुतसे बड़े-बड़े गड्ढे बन गये हैं, उनमें धीरे-धीरे लाशोंके ढेर लग रहे हैं। खाइयोंके आस-पास जो लोग घायल होकर गिरते हैं, उनमेंसे अधिकांशको हम लोग उठा लाते हैं। पर जो लोग कुछ दूरीपर गिरते हैं, उन्हें बहुत समय तक उसी दशामें पड़े-पड़े प्रतीक्षा करनी पड़ती है; और बहुधा वहीं अपने प्राण भी गँवाने पड़ते हैं। मरनेके समय उनके कराहनेका जो शब्द होता है, वह हम लोग यहाँसे बैठे-बैठे सुनते हैं, पर उनकी कोई सहायता नहीं कर सकते।

एक घायलको हम लोग लगातार दो दिन तक ढूँढ़ते रहे, पर उसका कहीं पता न चला। ऐसा जान पड़ता था कि वह अपने पेटके बल औंधा पड़ा था और उलटकर चित नहीं हो सकता था। यदि यह बात न होती तो हम लोगोंको अवश्य ही उसका पता चल जाता। क्योंकि जब आदमी मुँहके बल गिरा रहता है और उसका मुँह जमीनसे बहुत सटा रहता है, तब उसकी आवाज सुनकर भी जल्दी यह नहीं जाना जा सकता कि वह आवाज किधरसे आ रही है।

ऐसा जान पड़ता था कि उसे बहुत बड़ा घाव लगा है। कुछ घाव बहुत दुष्ट होते हैं। वे न तो इतने भारी ही होते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि मनुष्यका शीघ्र ही अन्त कर दें। उस समय मनुष्य कुछ बेहोश सा पड़ा-पड़ा कराहता रहता है। वे घाव इतने हलके भी होते कि मनुष्य फिर अच्छे होनेकी आशामें उसकी पीड़ा किसी प्रकार सहन कर ले। कैजिन्स्कीका अनुमान है कि या तो उस आदमीके पेड़ूमें और या रीढ़में भारी चोट लगी है। कमसे कम उसकी छातीमें तो अवश्य ही चोट नहीं लगी थी, क्योंकि यदि छातीमें चोट लगी होती तो वह इतने जोरसे चिल्ला नहीं सकता था। और यदि वह और किसी तरहका घाव होता तो बहुत सम्भव था कि वह उठकर कुछ इधर-उधर हिलता-डोलता।

उसके गलेकी खरखराहट धीरे-धीरे बढ़ती गई। उसकी आवाज ऐसी अद्भुत थी कि वह चारों ओर और हर जगहसे आती हुई सुनाई पड़ती थी। पहली रातको हमारे कुछ साथी उसे तीन बार ढूँढ़ने गये थे। पर जब वे यह समझते थे कि हम उस आवाजके पास पहुँच गये हैं और उसे मुरदोंके ढेरमेंसे ढूँढ़ने और उसकी आवाजका ठीक ठीक पता लगानेके लिए जमीनपर लेटते थे, तो उन्हें ऐसा जान पड़ता था कि वह आवाज यहाँसे नहीं बल्कि किसी और जगहसे आ रही है।

हम लोग तड़का होने तक उसे ढूँढ़ते रहे, पर कहीं उसका पता न चला। दिनके समय हम लोग दूरबीन लगाकर भी उसे चारो ओर ढूँढते थे, पर वह कहीं दिखाई नहीं देता था। दूसरे दिन उसका स्वर कुछ मद्धिम पड़ गया; और उसका कारण कदाचित् यही था कि उसका मुँह और होंठ प्यासके मारे बिलकुल सूख गये थे।

हमारी टुकड़ीके अफसरने कहा था कि जो आदमी इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घायलको ढूँढ लावेगा, उसे अगली बार जो छुट्टी मिलेगी, उसके साथ तीन दिनकी छुट्टी और ज्यादा मिलेगी। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक अच्छा प्रलोभन था। पर वह चिल्लाहट ऐसी जबरदस्त और दर्दनाक थी कि यदि यह प्रलोभन न होता, तो भी हम लोग अवश्य ही उसे ढूँढनेका पूरा-पूरा प्रयत्न करते। कैजिन्स्की और क्राप उसे दोपहरके समय भी ढूँढ़ने निकले थे और क्रापको उसे तलाश करनेके फेरमें ही एक गोली आ लगी थी जिससे उसके कानकी लौ ही कट गई थी। लेकिन इन सभी प्रयत्नोंका कोई फल नहीं हुआ और उसे ढूँढ़नेके लिए जितने लोग निकले थे, वे सभी खाली हाथ वापस आये।

वह घायल चिल्ला-चिल्लाकर जो कुछ कह रहा था, उसे समझना कठिन नहीं था। पहले दिन तो वह केवल अपनी सहायताके लिए लोगों को बुलाता था। पर दूसरी रातको ऐसा जान पड़ता था कि वह बाईकी झोंकमें बक रहा है। उस झोंकमें वह अपनी स्त्री और बच्चोंसे बातें करता था। हम लोगोंको प्रायः उसके मुँहसे एलिसका नाम सुनाई पड़ता था। पर आज वह केवल रो रहा था। सन्ध्याके समयसे उसकी आवाज बिलकुल अस्पष्ट और गड़गड़ाहट की सी हो गई थी। पर फिर भी वह आवाज रात भर आती रही। हवाका रुख हम्हीं लोगों की तरफ था, इसलिए हम लोगोंको उसका शब्द स्पष्ट रूपसे सुनाई पड़ता था। सवेरेके समय हम लोगोंने समझा था कि वह रातको ही मर गया होगा। पर उस समय भी हम लोगोंको उसका शब्द सुनाई पड़ा था। पर वह शब्द अन्तिम था।

गरमीके दिन थे और मुरदे सामनेके मैदानमें यों ही पड़े थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभी तक वे गाड़े नहीं गये थे। हम उन सब मुरदोंको उठाकर ला भी नहीं सकते थे, क्योंकि यदि ले आते तो उन्हें कहाँ रखते और कहाँ गाड़ते! इसलिए यही सोचा गया कि शत्रुओंकी तोपोंके गोले ही उन्हें जमीनमें गाड़ देंगे। बहुतोंके पेट फूलकर कुप्पे हो गये थे। उन पेटोंमेंसे भी कई तरहकी गड़गड़ाहट और शब्द सुनाई पड़ते थे। उनमें जो गैसें भर गई थीं, उन्हींके कारण ये शब्द होते थे।

आसमान बिलकुल साफ था और उसमें बादलोंका कहीं नाम नहीं था। सन्ध्या समय उमस पड़ने लगी और जमीनके अन्दरसे गरमी निकलने लगी। जब हवा चलने लगी, तब उसके साथ खून की भी महक आने लगी। गोलोंके कारण जमीनमें जो छेद हो गये थे, उनमेंसे निकलनेवाली घातक वायु क्लोरोफार्म और सड़ायँध से मिली हुई जान पड़ती थी। उसके कारण हम लोगोंका जी मिचलाने लगा और तबीयत खराब होने लगी।

× × × ×

आज रातको शान्ति थी, इसलिए लोग मैदानमें तरह तरहकी चीजें ढूँढ़ने निकले। फ्रान्सीसी लोग जो प्रकाशक गोले आदि छोड़ते थे, उनके साथ रेशमी छाते और ताँबेके पट्टे आदि भी लगे होते थे। हम लोग इन्हीं चीजोंको ढूँढ़कर जमा करते थे। यह कोई नहीं जानता था कि ताँबेके वे पट्टे क्यों जमा किये जाते हैं। उनके जमा करनेवाले लोग यही कहते थे कि ये बहुमूल्य हैं। कुछ लोगोंने इतने पट्टे जमा कर लिये हैं कि जब वे यहाँसे लौटने लगेंगे, तब उन पट्टों आदिके बोझसे खुद ही दब जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर अन्तमें हेईने इन पट्टोंको जमा करनेका एक कारण बतला ही दिया। उसने कहा कि मैं ये पट्टे अपनी प्रेमिकाको दूँगा और वह इनसे मोजोंके ऊपर बाँधनेके लिए फीतोंका काम लेगी। इस पर सब लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। उन्होंने अपने घुटनोंको दोनों हाथोंसे दबाते हुए कहा—"भाई, ईश्वर जानता है, और चाहे जो कुछ हो हेईका दिमाग बहुत बढ़िया है।" जैडन तो यह बात सुनकर अपने आपको सँभाल ही न सका। उसने इस तरहके वहुत से पट्टे अपने हाथमें उठा लिये और बार उनमेंसे एक एक निकालकर पैरोंमें पहनने लगा। हर बार वह लोगोंको यही दिखलाता था कि यह इतना छोटा है और यह इतना बड़ा।

उसी अवसर पर उसे कुछ और दूरकी सूझी। वह बोला—यार हेई, तुमने कहा तो बहुत ठीक, लेकिन तुम्हारी प्रेमिकाके पैर...........। अब मैं क्या कहूँ। उसके पैर कमसे कम हाथीके पैरोंके बराबर तो जरूर होंगे।

एक और आदमी बोला—भाई, ऐसी औरत तो जरूर देखने काबिल होगी।

हेई यह देखकर फूला न समाता था कि लोग मेरी प्रेमिकाकी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं। वह बहुत कुछ अभिमानपूर्वक बोला—क्या बताऊँ, वह बहुत ही मजेदार औरत है।

छातोंके रेशमी कपड़ोंका अवश्य ही बहुत कुछ और अच्छा उपयोग हो सकता था। छातीकी नापके अनुसार उनके तीन या चार टुकड़ोंसे अवश्य पहननेकी अच्छी जनानी कुरती बन सकती थी। क्राप और मैं तो उनसे रूमालका काम लेते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत से लोगोंने तो अपने इकट्ठे किये हुए टुकड़े घर भेज दिये थे। यदि स्त्रियाँ देखें कि हम लोग अपनी जान कितनी अधिक जोखिममें डालकर ये टुकड़े इकट्ठे करते हैं तो वे डर जायँ।

एक बार जैडनने बहुत ही निश्चिन्त भावसे ऐसा एक पट्टा लोहेके उस टुकड़ेमेंसे जोरसे पकड़कर खींचा और बाहर निकाल लिया जिस टुकड़ेमें वह जड़ा हुआ था। यदि दूसरा कोई ऐसा काम करता तो बहुत संभव था कि वह पट्टा फट जाता और उस आदमीको बहुत तेज चोट आती। पर जैडन बहुत भाग्यवान् है। वह इस तरहके बहुत से भारी जोखिमके काम कर डालता है और उसका बाल भी बाँका नहीं होता।

एक दिन सवेरेके समय हम लोगोंकी खाईके सामने दो तितलियाँ उड़ रही थीं। उनके पीले परोंपर लाल चित्तियाँ थीं। भला यहाँ ऐसी कौन सी चीज हो सकती थी जिसे वे तलाश कर रही थीं? यहाँ मीलों तक किसी पेड़-पौधे या फूलका नाम भी नहीं था। वे एक टूटी हुई खोपड़ीके दाँतोंपर बैठ गईं। अनेक पक्षी भी यहाँ बिलकुल निश्चिन्ततापूर्वक विचरण किया करते थे। वे बहुत दिनोंसे रहते-रहते मानों युद्ध-क्षेत्रके पूर्ण अभ्यस्त हो गये थे। नित्य सवेरे बहुत सी लवाएँ (एक प्रकारके पक्षी) आकाशसे उतरकर जमीन पर आया करती थीं। साल भर पहले हम लोगोंने उन्हें एक स्थानपर घोंसला बनाते हुए भी देखा था। इसके बाद उनके बच्चे भी वहीं हुए और वे बड़े होकर इधर-उधर उड़नेके योग्य भी हो गये।

चूहे अब भी खाइयोंमें हम लोगोंकी जान नहीं छोड़ते। इसका किसीको पता ही नहीं चलता कि वे कहाँसे आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वे दिन-पर-दिन और भी मोटे होते जाते हैं। तो भी हम लोग जहाँ उन्हें देखते हैं, वहीं मार डालनेका प्रयत्न करते हैं। आज रातको हमें फिर शत्रुओंकी ओरसे वही लारियों और रेलोंकी खड़खड़ाहट सुनाई पड़ी। दूसरे दिन साधारण गोलेबारी होती रही जिससे हम लोगोंको खाइयोंकी मरम्मत करनेका अवकाश मिल गया। हवाई जहाजोंमें भी प्रायः लड़ाइयाँ हुआ करती थीं और वे लड़ाइयाँ हम लोग बड़े आनन्दसे देखा करते थे। ऐसी लड़ाइयाँ हमें रोज ही देखनेको मिला करती थीं।

लड़नेवाले हवाई जहाजोंसे तो हम लोगोंको कोई तकलीफ नहीं होती, पर जो हवाई जहाज हम लोगोंका केवल पता लेनेके लिए आते हैं, उनसे हम लोगोंको बहुत अधिक घृणा है। और इस घृणा कारण यह है कि ये हवाई जहाज ही जाकर हम लोगों पर गोलाबारी करनेके लिए तोपखाने भेजते हैं। ज्यों ही ऐसे हवाई जहाज दिखाई देते हैं, त्यों ही अथवा उसके थोड़ी ही देर बाद हम लोगों पर बड़े-बड़े गोले आकर गिरने लगते हैं। इस प्रकार उस दिन हमारे ग्यारह आदमी मारे गये थे जिनमेंसे पाँच आदमी ऐसे थे जो युद्ध-क्षेत्रसे घायलोंको उठाकर लाया करते थे। उनमेंसे दो आदमियोंकी तो बोटी-बोटी उड़ गई। उनकी यह दशा देखकर जैडन मजाकसे कहता था कि आप अगर चाहें तो उन्हें चम्मचसे उठाकर खाईकी दीवारपर पोत सकते हैं या एक छोटेसे टिनमें बन्द करके गाड़ सकते हैं। एक आदमीकी दोनों टाँगें और नीचेका आधा धड़ साफ उड़ गया था। उसका ऊपरी आधा धड़ खाईके ऊपर लटक रहा था और उसका चेहरा हलदीकी तरह पीला पड़ गया था। मरनेके समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह जो सिगरेट पी रहा था, उससे उसकी दाढ़ी अभी तक जल रही थी। जब वह दाढ़ी बिलकुल जल चुकी और आग उसके होंठ तक पहुँच गई, तब कहीं जाकर वह बुझी।

हम लोगोंने उन लाशोंको एक बहुत बड़े गड्ढेमें डाल दिया। इस तरह हम लोग उस गड्ढेमें अब तक लाशोंकी तीन तहें लगा चुके थे।

× × × ×

अचानक फिर जोरोंसे गोले बरसने लगे। अब हम लोग कुछ कर नहीं सकते थे, इसलिए फिर किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होकर चुपचाप बैठे प्रतीक्षा करने लगे। पर यह नहीं जानते थे कि आखिर हम लोग किस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आक्रमण-प्रत्याक्रमण, घात-प्रतिघात आदिकी ही यहाँ दिन-रात चर्चा रहती है। पर आखिर इन सब शब्दोंसे क्या सूचित होता है? कुछ भी नहीं। हमारे बहुतसे आदमी मरे और घायल हुए जिनमेंसे अधिकांश रंगरूट ही थे। हमारे विभागमें और भी कुमक आ गई है। इधर हालमें कुछ और नई पलटनें बनी हैं जिनमें बहुत ही छोटी अवस्थाके युवक हैं। उन्हींमें से एक पलटन हम लोगोंकी सहायताके लिए आई है। उन युवकों को अभी तक युद्ध-सम्बन्धी किसी प्रकारकी शिक्षा नहीं मिली है, सिर्फ जबानी उन्हें कुछ बातें समझा-बुझा दी गई हैं। वे यही नहीं जानते कि हाथसे फेंका जानेवाला बम किसे कहते हैं और न यही जानते हैं कि गोलेबारीके समय कहाँ छिपना चाहिए। वे छिपनेके स्थानोंको जान और समझ भी नहीं सकते।

यह ठीक है कि हम लोगोंको कुमककी आवश्यकता है, पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन नवयुवकोंसे हमारा कुछ भी काम नहीं निकलता। उलटे उनके कारण हम लोगोंको कई प्रकारके कष्ट होते हैं। युद्ध-क्षेत्रमें आकर वे कुछ भी नहीं कर सकते और मच्छड़ों तथा मक्खियों-की तरह बहुत ही सहजमें मारे जाते हैं। आजकल खाइयोंमें रहकर जो लड़ाई की जाती है, उसके लिए एक विशेष प्रकारके ज्ञान और अनुभवकी आवश्यकता होती है जिसका उनमें नितान्त अभाव होता है। यहाँ मनुष्यको सारी युद्ध-भूमिका विशेष रूपसे और ऐसा ज्ञान होना चाहिए कि वह आँखोंसे बिना देखे भी समझ ले कि कहाँ क्या है और केवल शब्द सुनकर पहचान ले कि यह किस प्रकारका और कितना बड़ा गोला है और किधरसे आता है। किसी गोलेको दूरसे आते हुए देखकर उसे पहले ही समझ लेना चाहिए कि यह कहाँ आकर गिरेगा और इससे किस प्रकार बचना चाहिए, आदि।

इधर हालमें जो नये रंगरूट आये हैं, वे इनमें से एक बात भी नहीं जानते। वे बेचारे केवल इसी लिए अपने प्राण गँवाते हैं कि वे गोलेके भेद नहीं जानते। तोपोंके गोलोंके शब्दकी ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता और शत्रुकी पंक्तिके पिछले भागमें कोयलेकी जो गाड़ियाँ गिरती हैं, वे उन्हींके शब्द सुनते रहते हैं। वे लोग इधर-उधर छितरे हुए नहीं रहते, बल्कि भेड़-बकरियोंकी तरह एक ही जगह इकट्ठे रहते हैं और इसलिए बहुत बड़ी संख्यामें एक साथ ही मारे जाते हैं। उनमें से जो लोग घायल होते हैं, उन्हें भी हवाई जहाजों परसे शत्रु सैनिक गोलियाँ चलाकर मार डालते हैं।

उनके चेहरे बिलकुल पीले पड़े हुए हैं और उनके हाथोंमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ भी बल नहीं है। उनपर बहुत ही निर्दयतापूर्वक आक्रमण होता है और वे बुरी तरहसे मारे जाते हैं। वे इतने अधिक भयभीत रहते हैं कि जोरसे चिल्ला भी नहीं सकते। वे घायल होकर हाथ-पैर पटकते हैं और छोटे बच्चोंकी तरह 'माँ' 'माँ' चिल्लाते हैं; और ज्यों ही उनपर किसीकी दृष्टि पड़ती है, त्यों ही वे अपना रोना-चिल्लाना भी बन्द कर देते हैं। उनके चेहरेपर ही इतनी मुरदनी छाई रहती है कि वे देखनेमें बिलकुल मरे हुए बच्चोंकी तरह जान पड़ते हैं।

उनको भागते और गिरते हुए देखकर उनपर बहुत अधिक दया आती है। जी चाहता है कि इन अबोध बालकोंको गोदमें उठाकर युद्ध-क्षेत्रसे बहुत दूर पहुँचा दिया जाय। यहाँ ऐसे छोटे और अज्ञान बालकोंका भला क्या काम है! ये जूता, पायजामा और कोट तो पहने रहते हैं, पर दूरसे देखने पर ही पता चल जाता है कि यहाँ की वरदी इनके लिए बहुत बड़ी है। कोटकी बाँहें बिलकुल झोलोंकी तरह लटकती हुई जान पड़ती हैं। उनके कन्धे बहुत ही छोटे हैं और शरीर बहुत ही हलका है। यहाँ जो वरदियाँ बनी हैं, वे वयस्क पुरुषोंके लिए बनी हैं। फिर बच्चोंको वे कैसे ठीक आ सकती हैं!

जिस परिस्थितिमें एक पुराना और तजरुबेकार जवान मरता है, उसी परिस्थितिमें ऐसे पाँच, सात और दस तक बच्चे मर जाते हैं।

एक दिन अचानक शत्रुने गैस छोड़ी जिससे इनमेंसे बहुत से बच्चे मारे गये। ये बेचारे जानते ही नहीं कि गैस आने पर क्या करना चाहिए। एक स्थानपर हम लोगोंने देखा कि एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोटी खाई इसी प्रकारके बालकोंकी लाशोंसे भरी हुई थी। कुछ बालक एक गड्ढेमें जा छिपे थे। वहाँ उन्होंने उचित समयसे पहले ही अपने मुँह पर की थैलियाँ फाड़ डालीं। वे यह जानते ही नहीं थे कि गड्ढों और नीचे स्थानोंमें गैस बहुत ज्यादा देर तक ठहरती है। जब उन्होंने देखा कि ऊपरवाली ऊँची जमीन के आदमियोंने अपनी थैलियाँ फाड़ डाली हैं, तब उन्होंने भी अपनी थैलियाँ फाड़ डालीं। परिणाम यह हुआ कि उनके कलेजेमें यथेष्ट मात्रामें गैस पहुँच गई जिससे उनके फेफड़े जल गये। उनका दम घुट गया और उनके मुँहसे खून जाने लगा। उनकी दशा बहुत ही शोचनीय हो गई थी और उनके बचनेकी कोई आशा नहीं रह गई थी।

× × × ×

एक बार ऐसा हुआ कि मैं अचानक खाईके एक ऐसे भागमें पहुँच गया जहाँ हिम्मेल्सटोस मौजूद था। हम लोग साथ ही एक गड्ढेमें घुस गये और वहाँ पास-ही-पास साँस बन्द करके बिलकुल चुपचाप पड़े रहे। उस समय हम लोग आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

जिस समय हम सब लोग गड्ढेसे बाहर निकले, उस समय मैं बहुत उत्तेजित था। पर फिर भी मैं सोचने लगा कि हिम्मेल्सटोस कहाँ है। उसे ढूँढ़नेके लिए मैं तुरन्त ही फिर उसी गड्ढेमें कूद पड़ा। वहाँ मैंने देखा कि वह एक कोनेमें पड़ा हुआ है। यद्यपि उसके शरीरमें दो एक जगह साधारण सी खरोंच आई थी, तो भी वह इस प्रकार बहाना करके पड़ा हुआ था कि मानों बहुत अधिक घायल हुआ है। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय वह बहुत अधिक भयभीत भी था। बात यह थी कि वह युद्ध-क्षेत्रकी परिस्थितियों आदिसे कुछ भी परिचित नहीं था। मैं यह देखकर मारे क्रोधके पागल हो गया कि नये-नये और नवयुवक रंगरूट तो बाहर मारे जा रहे हैं और वह यहाँ छिपा बैठा है।

मैंने कुछ तेजीसे कहा—चलो उठो, बाहर निकलो।

पर वह अपनी जगहसे नहीं हटा। उसके होंठ काँप रहे थे।

मैंने फिर कहा—चलो, बाहर निकलो।

उसने अपने पैर सिकोड़ लिये और खिसककर पीछे दीवार से सट गया। साथ ही परम दीनतापूर्वक उसने दाँत भी निकाल दिये।

मैंने बाँह पकड़कर उसे उठाना चाहा। इस पर वह चिल्लाने लगा।

मुझे और भी अधिक क्रोध चढ़ आया और मैंने गरदन पकड़कर जोरसे उसे एक झटका दिया। उसका सिर इधर-उधर हिलने लगा।

मैंने फिर चिल्लाकर कहा—चलो उठो, बाहर निकलो। यहाँ औरतोंकी तरह क्या छिपकर बैठे हो! बतलाओ, उठते हो या नहीं?

उसकी आँखें भर आईं। मैंने उसका सिर दीवारसे टकरा दिया और कहा—"कायर कहींका।" फिर उसकी पसलियोंमें एक ठोकर जमाई और कहा—"सूअर!" इसके बाद मैं उसे धक्का देता हुआ दरवाजेकी तरफ ले गया और वहाँसे उसे जबरदस्ती बाहर निकाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस समय हम लोगोंकी ओरसे दूसरा आक्रमण हो रहा था। एक लेफ्टिनेन्ट सब सिपाहियोंको आगे बढ़ा रहा था। हम लोगोंको देखते ही वह जोरसे चिल्लाकर बोला—"चलो, आगे बढ़ो।" "हम लोगोंके साथ आओ।" इतनी देर तक मैंने हिम्मेलस्टोस की जो दुर्दशा की थी, उससे उस पर जितना प्रभाव पड़ा था, उससे कहीं अधिक प्रभाव लेफ्टिनेन्टकी इस आज्ञाका उसपर पड़ा। उसकी आज्ञा सुनकर हिम्मेलस्टोसने इस प्रकार चारों ओर देखा कि मानों अभी उसकी नींद खुली है और वह सब लोगोंके पीछे पीछे आक्रमण करने चला।

मैं बराबर उसका रंग-ढंग देखता चलता था। अब फिर उसमें वही पहलेकी सी फुरती आ गई, जैसी कवायद करानेके समय उसमें दिखाई देती थी। थोड़ी ही देरमें वह इतना आगे बढ़ गया कि लेफ्टिनेन्ट भी उसके पीछे रह गया।

गोलेबारी, आग, सुरंग, गैस, टैंक, मशीन गनें, हाथसे फेंके जानेवाले गोले आदि यद्यपि शब्द ही हैं, तो भी उनमें सारे संसारका भय और आतंक भरा है।

हम लोगोंके चेहरे उतर गये हैं, हम लोगोंमें कोई विचार नहीं रह गया है और हम अत्यन्त शिथिल हो गये हैं। बहुत से लोग मुरदोंकी तरह पड़े सो रहे हैं। जिस समय शत्रु-पक्षसे हम लोगोंपर आक्रमण होगा, उस समय हमें अपने बहुत से साथियोंको घूँसे मार मारकर जगाना पड़ेगा। हम लोगोंकी आँखें जल रही हैं, हाथ सुन्न हो गये हैं, घुटनोंमें से खून बह रहा है और कोहनियाँ बेकाम हो गई हैं।

यह अवस्था कितने दिनों तक रही? हफ्तों तक, महीनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तक या बरसों तक ? नहीं, केवल कुछ दिनों तक। हम लोग देखते थे कि घायलोंका चेहरा बदरंग होता जाता है और वे धीरे धीरे मौतके मुँहमें चले जा रहे हैं। जिस समय हम लोग आक्रमण करनेके लिए दौड़ते हैं, उस समय उसी अवस्थामें खाते चलते हैं, अस्त्र-शस्त्र आदि फेंकते चलते हैं, गोलियाँ चलाते हैं, मारते-काटते हैं और कभी कभी जमीन पर लेट भी जाते हैं। हम लोग बहुत ही दुर्बल हो गये हैं और हमारी सारी शक्तियाँ क्षीण हो गई हैं। इस समय हम लोग यही समझकर किसी तरह जीते हैं कि अभी बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो हमसे भी कहीं ज्यादा कमजोर हैं और जिनकी शक्तियाँ हमारी अपेक्षा और भी अधिक क्षीण हो चुकी हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जो हमारी अपेक्षा कहीं अधिक दीन-हीन दशामें हैं और जो बहुत ही दीनता तथा ईर्ष्यापूर्वक हमारी ओर देखते हैं। बहुत से लोग, जो मरनेके बहुत ही करीब होते हैं, हम लोगोंको बिलकुल देवता समझते हैं; क्योंकि वे देखते हैं कि वे स्वयं तो एक ही आघातमें मृत्यु-मुखमें पहुँच रहे हैं और हम लोग सैंकड़ों बार जोखिममें पड़कर भी जीते-जागते बचे हैं।

बीचमें जब दो चार घन्टे विश्राम करनेके लिए मिलते हैं, तब हम लोग नवयुवक रंगरूटोंको युद्ध-क्षेत्रकी बहुत सी बातें बतलाते हैं जिससे उनके प्राणोंकी रक्षाकी सम्भावना बहुत बढ़ जाती है। जैसे—देखो, वह सामनेसे अमुक प्रकारकी तोपका गोला आ रहा है। इसकी यह पहचान है। इसको आते देखकर तुरन्त जमीन पर यों लेट जाना चाहिए। उस दशामें यह ऊपर ही ऊपर निकल जायगा और तुम बच जाओगे। और यदि यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोला इस तरहसे आवे तो वहाँसे भागकर इस तरह अलग हो जाना चाहिए। आदि आदि।

कुछ और तरहके छोटे गोले होते हैं जिनके शब्द बहुत ही कठिनतासे सुनाई पड़ते हैं और जिन्हें पहचानना बहुत ही कठिन होता है। हम लोग उन्हें उन गोलोंके शब्दोंकी भी पहचान बतलाते हैं और उन्हें ध्यानसे सुनाते हैं। युद्ध-क्षेत्रमें सदा सैंकड़ों-हजारों तरहके गोलोंके शब्द होते रहते हैं और हम लोग उन्हें उनमें से हर एक गोलेके शब्दकी अलग अलग पहचान बतलाते हैं। ऐसे गोले प्रायः शब्द होनेके साथ ही सिर पर आ पहुँचते हैं। अतः हम लोग उन्हें यह भी समझाते हैं कि जब बड़ी बड़ी तोपोंके छूटनेका शब्द सुनाई पड़ता है, उसके कुछ समय बाद उनके गोले आते हैं; और छोटी छोटी तोपोंके गोले, जिनका शब्द भी प्रायः हलका होता है, छूटने और शब्द होनेके साथ ही साथ आ पहुँचते हैं।

हम लोग उन्हें यह भी बतलाते हैं कि जिस समय हवाई जहाजोंपरसे गोले या बम बरसते हों, उस समय किस प्रकार और कैसी आड़में छिपकर प्राण बचाने चाहिएँ। यदि आक्रमण के समय कोई आदमी जमीन पर गिर पड़े और पैरोंसे कुचला जानेके कारण अधमरा हो जाय तो उसे किस प्रकार होशमें लाकर ठीक करना चाहिए; हाथसे चलानेवाले गोले किस तरह फेंके जाने चाहिएँ जिसमें वे जमीन पर गिरनेसे आध सेकेंड पहले ही फट जायँ। हम उन्हें यह भी बतलाते हैं कि ज्यों ही दूरसे गोलों की चमक दिखाई पड़े, त्यों ही किस प्रकार गड्ढोंमें घुसकर जमीनके साथ चिपक जाना चाहिए; यदि पास में बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही थोड़े गोले हों तो भी उनकी सहायता से किस तरह शत्रुओं की खाइयाँ उनसे खाली करानी चाहिएँ; उन्हें शत्रुओं के और अपने गोलोंके कई प्रकारके अन्तर बतलाते हैं; गैसवाले गोलोंके शब्दोंकी पहचान बतलाते हैं; और प्राण बचानेके जितने उपाय हो सकते हैं, वे सब उन्हें समझा और सिखा देते हैं।

जिस समय हम लोग उन्हें ये सब बातें बतलाते हैं, उस समय तो वे बहुत ध्यानसे सुनते हैं; पर जब गोलेबारी या आक्रमण होता है, तब वे सभी बातें भूल जाते हैं और सब काम उलटे ही करते हैं।

हेई वेस्थसकी पीठमें एक बहुत भारी घाव लगा था। जब वह साँस लेता था, तब उस घावमें से उसका फेफड़ा चलता हुआ दिखाई देता था। मैंने उसका हाथ पकड़कर दबाया। वह कराहता हुआ बोला—"भाई, अब तो मेरा अन्त आ पहुँचा।" उस समय उसे इतनी अधिक पीड़ा हो रही थी कि वह उससे पागल होकर स्वयं अपने मुँहसे अपनी ही बाँहें काटता था।

हम लोगोंने ऐसे-ऐसे घायलोंको जीवित अवस्थामें देखा है जिनके सिरका ऊपरी आधा भाग बिलकुल उड़ गया है; और ऐसे-ऐसे सिपाहियोंको दौड़ते देखा है जिनके दोनों पैर कट गये हैं। वे उसी अवस्थामें खिसकते और उछलते हुए पासवाले गड्ढे या खाई के अन्दर जा पहुँचते हैं। एक बार एक ऐसा जमादार डेढ़ मील तक हाथोंके बल सरकता हुआ चला गया था। उसका घुटना बिलकुल चिकनाचूर हो गया था और वह उस घुटनेको बराबर उसी तरह घसीटता हुआ चलता था। एक और आदमी था जिसकी आँतें निकल पड़ी थीं और वह उन आँतोंको अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों हाथोंसे थामे हुए अस्पताल तक जा पहुँचा था। हम लोगोंने बिना मुँह, बिना जबड़े और बिना चेहरेके आदमी भी देखे हैं। एक बार एक आदमी दो घन्टे तक अपने दाँतोंसे अपनी बाँहकी नस इसलिए पकड़े हुए था कि उसमें से खून न बहने पावे।

दिन निकलता था, सन्ध्या होती थी, रात आती थी और फिर दिन निकलता था। गोलोंकी वर्षा लगातार होती रहती थी। दोनों तरफके आदमी बराबर मरते चलते थे। लेकिन फिर भी हम लोग अपनी थर्राती हुई जमीन पर बराबर ज्यों के त्यों जमे रहे, उसे छोड़कर हटे नहीं। यदि शत्रुने इतने अधिक प्राणनाशके बदलेमें हम लोगों से कुछ जमीन पाई होगी, तो वह सौ दो सौ गजसे अधिक न होगी। लेकिन उस जमीनमें भी चप्पे-चप्पे पर लाशें पड़ी हुई थीं!

× × × ×

अब हम लोग कुछ समय तक सुस्तानेके लिए छोड़ दिये गये हैं। हम लोग लारियों पर चढ़े हुए विश्राम-स्थलकी ओर चले जा रहे हैं। सब लोग लारियों पर चुपचाप खड़े हैं। जब आवाज आती है—"तार है, होशियार।" तब हम लोग घुटने दबाकर झुक जाते हैं। जिन दिनों हम लोग यहाँ आये थे, उन दिनों गरमीका मौसिम था। तब तक वृक्षोंके पत्ते सूखे नहीं थे। और अब आजकल वसन्त ऋतु है और रातके समय अभी तक काफी सरदी पड़ती है। एक स्थान पर आकर लारियाँ ठहर गईं और हम सब लोग उनपरसे नीचे उतर पड़े। हम लोग जितने आदमी इस समय वापस आये थे। दोनों तरफ आदमी खड़े हुए थे जो जोर-जोरसे पलटनोंके नाम और नम्बर पुकार-पुकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कह रहे थे। प्रत्येक पुकारपर कुछ थोड़ेसे आदमी हम लोगोंमें से छँटकर अलग हो जाते थे। वे आदमी गिनतीमें भी बहुत ही कम होते थे, शारीरिक दृष्टिसे भी बहुत अधिक शिथिल होते थे और देखनेमें भी बहुत अधिक दुर्दशाग्रस्त जान पड़ते थे। सैकड़ों आदमियोंकी बड़ी-बड़ी पलटनोंमेंसे यही मुट्ठी भर आदमी बचकर यहाँ आये थे।

अब हमारी कम्पनीका नाम पुकारा गया। पुकारनेवाला हमारी कम्पनीका कमांडर था। उसका हाथ एक पट्टीसे बँधा हुआ उसके गलेसे लटक रहा था। हम लोग उसके पास जा पहुँचे। वहाँ मैंने कैजिन्स्की और क्रापको पहचाना। हम सब लोग एक दूसरेके साथ सटकर खड़े हो गये और झुककर देखने लगे।

हमारी कम्पनीका नाम ले लेकर कई बार पुकार होती रही। पर जो लोग अस्पतालमें घायल होकर पड़े हुए थे या युद्ध-क्षेत्रके गड्ढोंमें मरे पड़े थे, उनके कानों तक भला यह पुकार कैसे पहुँच सकती थी!

एक बार फिर पुकार हुई—"दूसरी कम्पनीके सिपाही इधर आवें।" इसके बाद फिर वही कमांडर कुछ धीमे स्वरसे बोला—"अब दूसरी कम्पनीका और कोई आदमी बाकी नहीं है?"

जब कोई जवाब न मिला और न कोई आदमी ही बढ़कर आगे आया, तब वह बोला—बस, इतने ही आदमी हैं? अच्छा गिनती करो।

गरमीके दिनोंमें जिस समय हम लोग यहाँ आये थे, उस समय हम लोग गिनतीमें पूरे डेढ़ सौ थे। लेकिन अब जाड़ेका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्त हो चला था और और हम लोग मारे सरदीके काँप रहे थे और वृक्षोंसे पत्तियाँ धीरे-धीरे झड़ने लगी थीं। हम लोग मरी हुई आवाजसे एक, दो, तीन, चार बोलने लगे। बत्तीसपर आकर बोलना खतम हो गया। बहुत देर तक कोई कुछ भी न बोला। फिर कमांडरने पूछा—"और भी कोई है?" इसके बाद थोड़ी देर तक उसने प्रतीक्षा की और तब लोगोंको चार-चारकी पंक्तियोंमें होनेको आज्ञा दी। जब सब पंक्तियाँ बन गईं, तब उसने बहुत ही कठिनतासे सब लोगोंको धीरे-धीरे चलनेकी आज्ञा दी।

उस सवेरेके समय एक छोटी सी पंक्ति धीरे-धीरे बढ़ने लगी। उसमें कुल मिलाकर केवल बत्तीस आदमी थे।

सातवाँ परिच्छेद

हम लोग नियत स्थानसे कुछ और भी पीछे एक खेतमें पहुँचाये गये। वहाँ हम लोगोंका फिरसे संघटन होनेको था। हमारी टुकड़ीमें अभी एक सौसे ज्यादा आदमियोंकी जरूरत थी।

जब हम लोग अपने मामूली कामोंसे छुट्टी पाते हैं, तब खूब इधर-उधर घूमते हैं। कई दिनोंके बाद हिम्मेल्सटोस हम लोगोंके पास आया। बहुत दिनों तक खाइयोंमें रहनेके कारण उसका मिजाज बहुत कुछ ढीला पड़ गया था और अब वह हम लोगोंसे भलमनसतका बरताव करके हेल-मेल बढ़ाना चाहता था। जिस समय हेई वेस्थसको पीठमें गहरा घाव लगा था, उस समय वही उसे उठाकर हम लोगोंके पास लाया था। यहाँ आने पर भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब हम लोग उसके पास भंडारमें पहुँच जाते थे, तब वह खाने-पीनेसे हम लोगोंकी अच्छी तरह खातिरदारी करता था। इस-लिए हम लोगोंने भी उसके साथ हेल-मेल बढ़ानेमें कोई बुराई नहीं देखी। हम लोगोंमें सिर्फ एक जैडन ही ऐसा आदमी था जो अभी तक उसे सन्देहकी दृष्टिसे देखता था और उससे ज्यादा बात-चीत नहीं करता था।

पर जब एक दिन हिम्मेलस्टोसने हम लोगोंसे यह कहा कि बावर्चीखानेका प्रधान सरजेन्ट छुट्टी पर जा रहा है और उसकी जगह पर अब मैं (हिम्मेलस्टोस) काम करूँगा, तब हम लोगों को और भी आनन्द हुआ। अब जैडन भी धीरे-धीरे उससे मेल-जोल बढ़ाने लगा। अपनी भलमनसतका सबूत देनेके लिए उसने उसी समय हम लोगोंको सेर भर चीनी दी और खास तौर पर जैडनके लिए पाव भर मक्खन दिया। बराबर कई दिनों तक वह इस बातका भी ध्यान रखता था कि बावर्चीखानेमें हम लोगोंके पहुँचने पर हमें आलू आदि तरकारियाँ मिलती हैं या नहीं। जब हमारे सामने तरकारी नहीं होती थी, तब वह बड़ी मुस्तैदीसे हम लोगोंके आगे तरकारियाँ परोसवाता था। वहाँ उसने हम लोगोंके साथ वैसा ही बरताव किया जैसा एक अच्छे अफसरको करना चाहिए।

सैनिकको पूर्ण रूपसे सन्तुष्ट और प्रसन्न करनेके लिए दो बातोंकी विशेष आवश्यकता हुआ करती है। एक तो अच्छे भोजनकी और दूसरे पूरे विश्रामकी। और ईश्वर की कृपासे आजकल हम लोगोंको यहाँ इन दोनों ही बातोंका पूरा-पूरा आराम था। पर यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो यहाँ हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंको मिलनेवाले सुभीते कुछ भी नहीं थे। हम लोग इस समय जिस अवस्थामें थे, यदि दो तीन वर्ष पहले हम लोग उस अवस्थाका ध्यान भी करते तो उससे बहुत घृणा करते। पर आज हम लोग उसी परम घृणित अवस्थामें बहुत ही आनन्द-पूर्वक रहते हैं। सब बातें आदतसे ही ताल्लुक रखती हैं। यहाँ तक कि अगर आदमीको लड़ाईके मैदानमें भी रहनेकी आदत पड़ जाय तो वह वहाँ भी सुखी और सन्तुष्ट रहने लगता है।

हम लोग जो सब बातोंको इतनी जल्दी भूल जाते हैं, उसका कारण भी यही आदत है। कल हम लोग गोलोंकी वर्षामें थे, आज देहातमें मौजसे घूम रहे हैं और कल फिर हम लोग खाइयोंमें चले जायँगे। वास्तवमें तो हम एक भी बात नहीं भूलते। पर जब तक हम लोग यहाँ देहातमें रहते हैं, तब तक युद्ध-क्षेत्रकी सभी बातें बिलकुल भूले रहते हैं। वहाँके बीते हुए दिनोंका हमें कुछ भी ध्यान नहीं होता। अब तो युद्ध-क्षेत्र की बातोंका ध्यान आते ही हम लोगोंके मनमें कष्ट होने लगता है। उन बातोंको हम अपने स्मृति-पथमें आने ही नहीं देना चाहते। यदि हम लोग इस प्रकार पिछली और बीती हुई कष्ट-प्रद बातों का ध्यान करते रहते तो अबसे बहुत पहले खतम हो चुके होते। बहुत जल्दी यह सिद्धान्त मेरी समझमें आ गया था कि यदि मनुष्य लापरवाह बना रहे तो वह सहजमें बहुत बड़े-बड़े कष्ट सह सकता है। पर ज्यों ही वह उस कष्टका ध्यान और चिन्तन करने लगता है, त्यों ही वह कष्ट उसे मार डालता है।

हम लोग जिस समय युद्ध-क्षेत्रमें पहुँचते हैं, उस समय इसलिए हम लोग निरे पशु हो जाते हैं कि बिना पशु बने हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अच्छी तरह अपनी रक्षा ही नहीं कर सकते। पर जब हम लोगोंको आराम करनेकी छुट्टी मिलती है, तब हम लोग पूरे आवारे हो जाते हैं। यहाँ हम लोगोंको जबरदस्ती आवारा बनना पड़ता है, क्योंकि आवारा बननेके सिवा यहाँ हम लोग और कुछ कर ही नहीं सकते। हम लोग आनन्द-पूर्वक समय बिताना चाहते हैं, इसलिए हम उन अच्छे-अच्छे विचारोंको भी यहाँ अपने मनमें स्थान नहीं दे सकते जिनसे शान्ति-कालमें मनुष्य की शोभा होती है। यहाँ उस प्रकारके सुन्दर विचार बिलकुल ही बेढंगे जान पड़ते हैं। कैमेरिक मर गया और हेई वेस्थस मरनेके किनारे है। मारटेन्सके दोनों पैर कट गये हैं। मेयर, मैक्स बेयर और हैमरलिंग सभी मर चुके हैं। हमारे साथियोंमें से एक सौ बीस आदमी इधर-उधर घायल पड़े हुए हैं। वस्तुतः ये सब बातें बहुत ही दुःखद हैं। पर इस समय यहाँ इन सब बातों की कौन परवाह करता है! सबसे बड़ी बात तो यही है कि इतना सब कुछ होने पर भी हम लोग अभी तक जीवित हैं और अनेक प्रकारके सुखोंका भोग कर सकते हैं। यदि हम उन लोगों को किसी तरह बचा सकते होते, तब यह देखा जाता कि हम लोगोंको उनकी कितनी अधिक चिन्ता है। हम लोग अपनी जान जोखिममें डालकर भी उन्हें बचानेका प्रयत्न करते। हम लोगोंके मनमें भय तो बहुत ही कम होता है। हाँ, मृत्युका कुछ भय हम लोगोंको अवश्य होता है। लेकिन मृत्यु और बात है; वह केवल शारीरिक व्यापार है। और फिर उससे भी हम लोग बहुत ज्यादा नहीं घबराते।

लेकिन हमारे साथी तो मर चुके हैं और हम लोग उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी तरह जिला नहीं सकते। अब कौन जानता है कि आगे चलकर हम लोगोंकी क्या गति होगी। इसी लिए यहाँ हम लोग ज्यादासे ज्यादा आराम करते हैं। खूब खाते हैं, खूब पीते हैं और खूब चैनसे सोते हैं। इन्हीं सब कामोंमें हम अपने समयका सदुपयोग करते हैं और एक क्षण भर भी व्यर्थ नहीं जाने देते। हम लोग समझते हैं कि जीवन बहुत ही अल्प और क्षण-भंगुर है।

× × × ×

ज्यों ही हम लोग युद्ध-क्षेत्रकी ओर पीठ करते हैं, त्यों ही वहाँ का सारा भय और सारा आतंक नष्ट हो जाता है। उस समय हम लोग युद्ध-क्षेत्रके कष्टोंका मजाक उड़ाने लगते हैं। यहाँ तक कि जब कोई आदमी मर जाता है, तब हम लोग उसके मरनेकी भी हँसी उड़ाते हैं। यदि हम लोग इस तरह मौत तककी हँसी न उड़ावें और हर एक आदमीके मरने पर रंज करने बैठ जायँ तो रंज करते-करते हम लोग दो दिनके अन्दर पागल हो जायँ। जब तक हम लोग मौत तककी हँसी उड़ाते रहते हैं, तभी तक सही-सलामत रह सकते हैं। और नहीं तो हम लोगोंका कहीं ठिकाना न लगे।

पर हम लोग भूलते नहीं हैं। प्रायः समाचारपत्रोंमें इस प्रकारकी खबरें छपवाई जाती हैं कि युद्ध-क्षेत्रमें सैनिक लोग बहुत प्रसन्न हैं और वे लड़ाईके मैदानमें जानेसे पहले नृत्य-गीत आदिके उत्सव किया करते हैं। पर वास्तवमें ये सब बातें बिलकुल फजूल हैं। हम लोग नृत्य-गीत आदिके उत्सव अवश्य करते हैं, पर इसलिए नहीं करते कि हम लोग सदा बहुत प्रसन्न रहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं, बल्कि इसलिए सदा प्रसन्न रहते हैं कि यदि प्रसन्न न रहें तो हम लोगोंका कहीं ठिकाना न लगे और बहुत जल्द हम लोग मर जायँ। लेकिन हम लोग इस प्रकार अपने आपको बहुत अधिक समय तक प्रसन्न भी नहीं रख सकते। ज्यों-ज्यों दिन और महीने बीतते हैं, त्यों-त्यों हमारी प्रसन्नता और भी कटु तथा नीरस होती जाती है।

पर एक बात मैं जानता हूँ। जब तक हम लोग युद्ध-क्षेत्रमें हैं, तब तक तो हम लोग इस प्रकारकी सब बातोंको भूले रहते हैं। पर जब युद्ध समाप्त हो जायगा, तब एक बार हमें इन सब बातोंका फिर स्मरण होगा और तब जीवन तथा मृत्युकी उलझन दूर होगी।

यहाँ जो दिन, सप्ताह, मास और वर्ष बीतते हैं, उनकी स्मृति फिर हमारे मनमें जाग्रत होगी। उस समय हमारे मरे हुए साथी फिर उठकर खड़े होंगे और हम लोगोंके साथ युद्ध-यात्रा करेंगे। उस समय हम लोगोंके विचार और मस्तिष्क स्वच्छ होंगे और हम लोगोंका एक निश्चित उद्देश्य होगा। उस युद्ध-यात्रामें हमारे मरे हुए साथी भी हमारे साथ होंगे। पर वह चढ़ाई किस पर होगी?

कुछ दिन पहलेकी बात है कि युद्ध-क्षेत्रके इस भागमें सैनिकोंका एक थियेटर था। उस थियेटरके बड़े-बड़े विज्ञापन अब तक कई स्थानोंमें चिपके हुए हैं। क्राप और मैं दोनों इसी प्रकारके एक विज्ञापनके सामने खड़े हुए बड़े ध्यानसे उसकी ओर देख रहे हैं। हम लोग जल्दी यह मान ही नहीं सकते कि ऐसी चीजें अब भी होती हैं। उस चित्रमें एक युवती गरमीके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिनोंके हलके कपड़े पहने हुए खड़ी है और उसके होंठों पर चमड़ेका एक लाल फीता बँधा हुआ है। वह अपना एक हाथ एक वारजेके छड़ पर रखे हुए खड़ी है और उसके दूसरे हाथमें एक हलकी टोपी है। वह सफेद मोजे और सफेद जूते पहने है। वे जूते जनाने और ऊँची एड़ीवाले हैं और उनमें बढ़िया बकलस लगे हैं। उसके पीछे नीला समुद्र कुछ शान्त होनेके कारण मुस्कराता हुआ सा जान पड़ता है। वह युवती रूपवती है। उसकी नाक बहुत सुडौल है और होंठ लाल हैं। उसकी पतली-पतली टाँगें बहुत ही स्वच्छ हैं और उसके नाखूनोंमें कहीं मैलका नाम भी नहीं है। ऐसा जान पड़ता है कि वह सुन्दरी नित्य नियमपूर्वक दोनों बार स्नान करती है। यदि उसके पैरोंके नीचे हो तो समुद्र-तटकी थोड़ी सी रेत हो सकती है।

उसके पास ही एक आदमी खड़ा है जो सफेद पाजामा और नीला सैनिक कोट पहने है। उसके सिर पर मल्लाहोंवाली टोपी है। पर वह हम लोगोंके लिए उतना अधिक आकर्षक नहीं है।

उस विज्ञापनकी वह सुन्दरी हम लोगोंके परम आश्चर्यकी वस्तु है। हम लोग यह बात बिलकुल भूल ही गये हैं कि संसारमें इस प्रकारकी सुन्दरियाँ भी होती हैं; और इस समय उस विज्ञापनमें अपनी आँखोंसे उसे देखते हुए हम लोग सहसा आँखों पर विश्वास नहीं कर सकते। हम लोगोंने बरसोंसे किसी स्त्रीको देखा ही नहीं है और हम लोग नहीं जानते कि संसारमें इस प्रकारकी सुन्दर और सुखद वस्तुएँ भी होती हैं। यह तो शान्ति कालका दृश्य है और ठीक वैसा ही दृश्य है, जैसा होना चाहिए। उस चित्रको देखकर हम लोग बहुत ही उत्तेजित हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने क्रापसे कहा—चाहे वह इन जूतोंको पहनकर मील दो मील भी न चल सकती हो, पर फिर भी देखो ये जूते कैसे पतले और हलके हैं।

पर साथ ही मुझे उस समयकी अपनी मूर्खताका भी कुछ ध्यान आया। मैंने सोचा कि ऐसे सुन्दर चित्रके सामने खड़े होकर भी वही मील दो मील चलनेकी बात सोचना पागलपन नहीं तो और क्या है!

क्रापने मुझसे पूछा—इसकी क्या उम्र होगी?

मैं—ज्यादासे ज्यादा बाइस बरस।

क्राप—तब तो वह हम लोगोंसे कुछ बड़ी ही ठहरी। पर नहीं, यह बात नहीं है। मैं बिलकुल ठीक कहता हूँ कि उसकी उम्र सत्रह बरससे कभी ज्यादा नहीं हो सकती।

सत्रह बरसका ध्यान करके हम लोग बहुत प्रसन्न हुए।

मैं—यदि ऐसा है, तब तो बहुत अच्छी बात है। क्यों, तुम्हारी क्या राय है?

उसने सिर हिलाकर मेरी बातका समर्थन किया और कहा—मेरे पास भी घरपर कई सफेद पाजामे हैं।

मैं—सफेद पाजामे तो बहुत मिलेंगे, पर ऐसी सुन्दरी...।

हम दोनों एक दूसरेको इस प्रकार देखने लगे मानों हर एक दूसरेसे पूछ रहा है कि क्या तुम्हारे पास ऐसी सुन्दरी भी है। यहाँ तो हम लोगोंके पास कोई ऐसी चीज है ही नहीं जिसका हम लोग अभिमान कर सकें। यहाँ तो दो फटी-पुरानी और मैली बरदियोंके सिवा हम लोगोंके पास और कुछ है ही नहीं। ऐसी दशामें उस युवकके साथ अपनी तुलना करना व्यर्थ ही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसलिए हम लोग आगे बढ़कर उस चित्रको इस प्रकार फाड़ने लगे कि उसमें से वह युवक तो निकलकर अलग हो जाय और वह युवती ज्योंकी त्यों साफ बची रहे। इस समय हम लोगोंके सन्तोषके लिए यही बहुत है।

आपने कुछ सोचकर कहा—चलो यार, हम लोग कहीं चलें और अपने कपड़ोंमें की जूएँ तो निकालें।

पर मुझे उसकी बात कुछ ज्यादा नहीं जँची, क्योंकि मैं जानता था कि सिर्फ जूएँ निकाल डालनेसे ही तो हम लोगोंके कपड़े बढ़िया हो नहीं जायँगे। और फिर ये कपड़े दो घन्टेके अन्दर फिर उसी तरह जूओंसे भर जायँगे। पर जब हम लोगोंने एक बार फिर उस चित्रकी ओर बड़े ध्यानसे देखा, तब मैं उसकी बातपर राजी हो गया। बल्कि मुझे कुछ और दूरकी सूझी।

मैं—यार अगर हो सके तो कहींसे बढ़िया और साफ कमीजें पैदा करो।

आप—और अगर मोजे मिल जायँ तो और भी अच्छा है।

मैं—हाँ कमीजें भी हों और मोजे भी हों, तब बात है। अच्छा चलो ढूँढें तो सही।

इतनेमें लीयर और जैडन भी टहलते हुए वहाँ आ पहुँचे। उन लोगोंने भी आते ही उस विज्ञापन पर दृष्टि डाली। बस तुरन्त और भी रसपूर्ण बातें होने लगीं। हम लोगोंके दरजेमें और हमारे साथियोंमेंसे सबसे पहले लीयरने ही स्त्री-सम्भोग किया था, इसलिए उसने उसका बहुत ही उत्तेजक वर्णन किया। वह प्रेममें मग्न होकर उस चित्रकी ओर देखने और उसके सम्बन्धमें अनेक प्रकारकी बातें करने लगा। बीच बीचमें जैडन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी बड़े ठाठसे उसका समर्थन करता चलता था।

इस प्रकारकी बातोंसे हम लोगोंके मनमें किसी प्रकारकी ग्लानि नहीं उत्पन्न हुई। जो रसिक न हो, वह सैनिक ही नहीं है। पर उस समयकी रसिकता हम लोगोंके लिए उपयुक्त नहीं थी, इसलिए हम लोग वहाँसे चल पड़े और उस स्थानकी ओर बढ़ने लगे जहाँ कपड़ोंमें की जूएँ साफ की जाती हैं। रास्तेमें हम लोग उसी शानसे चल रहे थे जिस शानसे कोई भला आदमी किसी बजाज और दरजीकी दूकानकी तरफ कपड़े सिलवानेके लिए जाता है।

× × × ×

हम लोम जिन मकानोंमें ठहरे हुए हैं, वे एक नहरके पास हैं। नहरके उस पार कई ताल हैं जिनके चारो ओर बड़े बड़े वृक्ष हैं। हाँ नहरके उस पार कुछ औरतें भी हैं।

हम लोग ऐसे मकानोंमें ठहरे हुए हैं जिनके मालिक उन्हें छोड़कर चले गये हैं। पर उस पार जो मकान हैं, वे अभी खाली नहीं हुए हैं और उनके मालिक अभी तक उनमें रहते हैं।

एक दिन सन्ध्याके समय हम लोग तैरने गये। वहाँ हम लोगोंने दूसरे किनारे पर तीन स्त्रियाँ देखीं जो वहाँ टहलती हुई चली आई थीं। वे किनारे पर धीरे धीरे टहलती हुई हम लोगोंकी ओर देख रही थीं; और यद्यपि हम लोग बिलकुल नंगे थे, तो भी वे हम लोगोंकी ओरसे दृष्टि नहीं हटाती थीं।

लीयरने उन्हें आवाज दी। वे हँसती हुई खड़ी हो गईं और हम लोगोंको और भी जधिक ध्यानसे देखने लगीं। हम लोग टूटी-फूटी फ्रान्सीसी भाषामें उनपर आवाजे कसने लगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और जो कुछ जीमें आने लगा, वाही-तबाही बकने लगे; और उन्हें किसी तरह कुछ समय तक वहीं रोक रखनेके लिए एक साथ मिलकर खड़े हो गये और अनेक प्रकारके हाव-भाव दिखलाने लगे। वे स्त्रियाँ कुछ बहुत अधिक सुन्दरी या कम अवस्थाकी नहीं थीं, लेकिन यहाँ ऐसी ही स्त्रियाँ भी कहाँ मिलती हैं!

उन स्त्रियोंमें एक दुबली-पतली और कम उम्रकी औरत भी है। जब वह हँसती है, तब उसके दाँत चमकते हैं। वह बहुत चंचल है और उसके वस्त्र उसके पैरोंके चारो ओर भूलते हैं। यद्यपि पानी बहुत ठंढा है, तो भी हम लोगोंको वहाँ बहुत आनन्द आ रहा है और हम लोग इसलिए उन्हें यथासाध्य प्रसन्न करनेका प्रयत्न करते हैं जिसमें वे और कुछ देर तक वहाँ ठहरी रहें और वहाँसे जल्दी चली न जायँ। हम लोग उनसे मजाक करते हैं, पर वे उसका जो उत्तर देती हैं, वह हम लोगोंकी समझमें नहीं आता। हम लोग सिर्फ हँसकर ही रह जाते हैं। जैडन बहुत चालाक है। वह रोटी उठा लाया और उन्हें दिखलाने लगा।

उस रोटी दिखलानेका प्रभाव भी अच्छा ही हुआ। वे लोग सिर हिला-हिलाकर संकेतसे हम लोगोंको बुलाने लगीं। पर हम लोगोंको उनके पास जानेका साहस नहीं होता था। इस नहरको पार करके उसके दूसरे किनारेपर जानेकी हम लोगोंको सख्त मनाही थी। साथ ही सब पुलोंपर सन्तरी भी खड़े हुए थे। बिना पास या आज्ञापत्र लिये कोई उस पार नहीं जा सकता था, इसलिए हम लोग उन्हींको संकेतसे अपने पास बुलाने लगे। पर वे लोग सिर हिलाकर पुलकी ओर इशारा करने लगीं। मतलब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह था कि उन्हें भी पुलके इस पार आनेकी आज्ञा नहीं थी। इसलिए वे लोग धीरे-धीरे नहरके किनारे बहावकी तरफ चलने लगीं। हम लोग भी तैरते हुए उनके साथ चले। इस प्रकार कई सौ गज चलनेके बाद उन्होंने मुड़कर एक ऐसे मकानकी ओर संकेत किया जो वहाँसे थोड़ी ही दूरपर था। उस मकानके आस-पास बहुतसे पेड़ और झाड़ियाँ आदि थीं।

लीयरने उनसे पूछा—क्या तुम लोग यहीं रहती हो ? इस पर वे हँस पड़ीं जिससे हम लोगोंने समझ लिया कि जरूर यही उन लोगोंके रहनेका मकान है।

हम लोगोंने जोरसे चिल्लाकर कहा कि हम लोग फिर किसी ऐसे समय आवेंगे जब कि सन्तरी लोग हमें देख न सकें। बादमें यह भी तै हो गया कि हम लोग रातको आवेंगे और आज ही रातको आवेंगे।

उन लोगोंने हाथ उठाकर दोनों हथेलियों पर मुँह रखकर आँखें बन्द कर लीं। उन लोगोंने हमारी बात समझ ली थी। उनमें से एक स्त्रीने कहा—रोटी...........।

हम लोगोंने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम रोटियाँ भी जरूर अपने साथ लावेंगे। साथ ही हम लोगोंने सोचा कि खानेकी कुछ और भी बढ़िया-बढ़िया चीजें ले चलेंगे। हमने आँखें मटकाकर हाथोंसे ही अपना यह भाव प्रकट किया। लीयरने बहुत परिश्रम और कठिनतासे यह भी बतलानेका प्रयत्न किया कि हम लोग रसेदार तरकारी भी लावेंगे। उस समय यदि आवश्यकता होती तो हम लोग यहाँ तक वादा कर सकते थे कि सैनिक भंडारसे खाने-पीनेकी जितनी चीजें होंगी, वह सब हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ले आवेंगे। अब वे लोग अपने घरकी ओर चल पड़ीं। पर बीच बीचमें रुक और मुड़कर वे हम लोगोंकी ओर देखती भी जातीं थीं। हम लोग नहरसे निकलकर अपनी तरफके किनारे पर चढ़ गये और वहीं खड़े होकर देखने लगे कि वे उसी मकानमें जाती हैं या नहीं जो मकान उन्होंने हम लोगोंको बतलाया था। क्योंकि हम लोग यह भी समझते थे कि शायद उन्होंने झूठ-मूठ यों ही हम लोगोंको कोई मकान बतला दिया हो। इसके बाद हम लोग फिर नहरमें उतरकर तैरने लगे।

बिना आज्ञा-पत्र लिये कोई उस पुलके पार नहीं जा सकता था; इसलिए हम लोगोंने सोचा कि रातके समय हम लोग तैरकर फिर यह नहर पार करेंगे और तब उस पार जायँगे। उस समय हम लोगोंको सरदी जान पड़ती थी, इसलिए बिना शराब पीये नहीं रह सकते थे। वहाँसे चलकर हम लोग उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ सैनिकोंके पीनेकी शराब रहती है।

वहाँ पहुँचकर हम लोग एक प्रकारकी घटिया शराब पीने लगे और नहरमें तैरते समय जो कुछ बीता था, उसका बहुत कुछ अतिरंजित वर्णन अपने दूसरे साथियोंको सुनाने लगे। ऐसे अवसरों पर प्रत्येक व्यक्ति दूसरोंकी कही हुई बात प्रसन्नतापूर्वक सत्य मान लेता है और उससे भी बड़ी गप हाँकनेका मौका ढूँढ़ता रहता है। शराबके साथ-साथ हम लोगोंने बहुत से सिगरेट भी फूँक डाले। उसी समय क्रापको कुछ ध्यान आया और वह बोला—"हम लोग रातको अपने साथ कुछ सिगरेट भी ले चलेंगे।" इसलिए हम सब लोगोंने अपनी टोपियोंमें कुछ सिगरेट भी रख लिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़ी देर बाद अँधेरा होने लगा। हम लोग चार आदमी थे, पर वहाँ तीन ही आदमी जा सकते थे, क्योंकि वहाँ तीन ही औरतें थीं। इसलिए हम लोगोंने जैडनको छाँटा देना चाहा और उसे खूब शराब पिलाकर बेहोश कर दिया। कुछ अँधेरा होनेके बाद हम लोग अपने निवास-स्थान पर पहुँचे थे। नहरके उस पार पहुँचनेके सम्बन्धमें हम लोगोंके मनमें बहुत अधिक उत्साह और परम उत्कट कामना हो रही थी।

हम सब लोगोंने पहले ही तै कर लिया था कि किस स्त्रीके पास कौन रहेगा। मैंने अपने लिए वही दुबली-पतली स्त्री चुनी थी।

जैडन अपने पुआलके गद्दे पर बेहोश होकर पड़ गया। बीचमें एक बार ऐसा जान पड़ा कि वह अन्दरसे जागता है और हम लोगोंकी थाह लेनेके लिए ही बेहोश बना हुआ है। यह सोचकर हम लोगोंके मनमें कुछ डर-सा हुआ कि कहीं यह उठकर सारा बना-बनाया खेल ही न बिगाड़ दे। हमें इस बातका भी कुछ ख्याल हुआ कि हमनें उसे जो इतनी शराब पिलाई है, वह कहीं व्यर्थ तो न जायगी। पर हम लोगों का भय निर्मूल और निरर्थक था। वह बहुत जल्दी गहरी नींद में सो गया।

हम लोगोंने सैनिकोंके खानेकी एक बड़ी रोटी उठाई और अखबारमें लपेट ली। जेबमें बहुत से सिगरेट रख लिये। उसी दिन सन्ध्याको हम लोगोंको रसेदार तरकारियों के डिब्बे मिले थे। उनमें से तीन डिब्बे भी हम लोगोंने साथ ले लिये। अब हम लोगोंके पास उन स्त्रियोंको देनेके लिए बहुत अच्छा और यथेष्ट उपहार हो गया।

कुछ चीजें हम लोगोंने बहुत ही हिफाजतसे अपने जूतोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्दर छिपा लीं। जूते पहननेकी हमें इसलिए आवश्यकता थी कि उस पार रास्तेमें काँटेदार तार लगे हुए थे और जमीन पर शीशेके टुकड़े डाले हुए थे। हम लोगोंको तैरकर नहर पार करनी थी, इसलिए कपड़े आदि साथ नहीं लिये थे। हम लोग नंगे ही वहाँसे चल पड़े। एक तो वह मकान कुछ बहुत ज्यादा दूर नहीं था और दूसरे रात भी अँधेरी थी, इसलिए कपड़ोंके न रहनेसे भी काम चल सकता था।

हम लोग अपने-अपने जूते हाथमें लेकर चल पड़े और नहरमें उतरकर पीठ के बल तैरते हुए उस पार पहुँचे। जूतोंको हम लोग हाथसे ऊपरकी ओर उठाये हुए थे।

उस पार पहुँचकर हम लोग सावधानी से दूसरे किनारेके ऊपर चढ़े। वहाँ जूतोंमेंसे सब चीजें निकालकर हम लोगोंने हाथ में ले लीं और जूते पहन लिये। उस समय हम लोग बिलकुल नंग-धड़ंग और पानीसे भींगे हुए जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगे। उस मकान को ढूँढ़नेमें हम लोगोंको कुछ भी कठिनता न हुई, क्योंकि उसकी बड़ी पहचान यही थी कि वह चारों ओर पेड़ोंसे घिरा हुआ था। रास्तेमें एक जगह लीयरका पैर एक पेड़की जड़से फँस गया था जिससे उसकी कोहनी कुछ छिल गई थी। पर उसने हँसते हुए कहा—कोई परवाह नहीं।

खिड़कियोंमें झिलमिलियाँ लगी हुई थीं। हम लोगोंने सारे मकानका एक चक्कर लगाया और अन्दर घुसनेका रास्ता ढूँढ़ने लगे। जब अन्दर जानेका कोई रास्ता न मिला तो हम लोग अधीर होने लगे। अचानक क्राप कुछ आगा-पीछा करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह बोला—अगर अन्दर उन लोगोंके साथ कोई मेजर या और बड़ा अफसर हो तो क्या होगा ?

लीयर—तो हम लोग वहाँसे साफ निकल भागेंगे। यहाँ वह हम लोगोंका नम्बर थोड़े ही देखने बैठेगा।

आँगनका दरवाजा खुला हुआ था। चलनेमें हम लोगोंके बूट मचर-मचर करते थे। इतनेमें अन्दरका दरवाजा खुला और उसमें कुछ रोशनी दिखाई पड़ी। साथ ही अन्दर से एक औरतकी कुछ आवाज आई। हम लोगोंने भी उत्तरमें कहा कि हम लोग आ गये। साथ ही हमने उसे खाने-पीनेकी चीजोंके बंडल भी दिखलाये।

इतनेमें बाकी दोनों औरतें भी सामने आ गई, दरवाजा पूरी तरहसे खुल गया और हम लोगों पर पूरा-पूरा प्रकाश पड़ने लगा। हम लोगोंको पहचानकर और उस नंग-धड़ंग अवस्थामें देखकर वे तीनों ठठाकर हँस पड़ीं। उन्हें इतनी अधिक हँसी आई कि वे लोट-पोट होकर दरवाजेके पल्लों पर गिरने लगीं। उस समयकी उनकी भाव-भंगी कैसी मनोहर थी !

वे स्त्रियाँ हम लोगोंको जरा-सा ठहरनेके लिए कहकर अंदर चली गई और कपड़ोंके छोटे-मोटे कुछ टुकड़े उठा लाईं। हमने बहुत प्रसन्नतासे उन कपड़ोंको शरीरमें लपेट लिया और तब अन्दरकी ओर बढ़े। कमरेमें एक छोटा-सा लम्प जल रहा था। कमरा गरम था और उसमें कुछ सुगंध फैली हुई थी। वहाँ पहुँचकर हम लोगोंने बंडल खोलकर उनमेंकी सब चीजें उन लोगोंको दे दीं। उनकी आँखें चमक उठीं। ऐसा जान पड़ता था कि उस समय वे बहुत भूखी थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम सब लोगोंके मनमें कुछ चिन्ता हुई। लीयरने खानेका संकेत किया। वे तुरन्त रिकाबियाँ और चम्मच आदि ले आईं और खाने पर टूट पड़ीं। वे एक-एक कौर उठाती थीं और खूब सराह सराहकर खाती थीं। हम लोग पास ही बैठे हुए कुछ अभिमान बोध कर रहे थे।

उन स्त्रियोंने बातोंकी झड़ी लगा दी। हम लोग उनकी बातें तो बहुत कम समझते थे, पर फिर भी बहुत ध्यानसे सुनते थे। ऐसा जान पड़ता था कि जो कुछ वे कह रही हैं, बहुत ही मित्रता और स्नेहके भावसे कह रही हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हम सब लोग बहुत जवान और कम-उम्र थे। वह दुबली-पतली और नाटी स्त्री मेरे बालोंपर हाथ फेरती हुई फ्रान्सीसी भाषामें अनेक प्रकार की प्रेमपूर्ण बातें करने लगी।

मैंने उसकी बाँह जोरसे पकड़ ली और अपने होंठ उसके हाथकी हथेली पर रखकर जोरसे दबाये। उसकी उँगलियाँ मेरे चेहरेसे बिलकुल सट गई थीं। मेरे मुँहके बहुत पास कुछ ही ऊपर उसकी उन्मत्त करनेवाली आँखें और लाल होंठ थे। उसके मुँहसे ऐसे शब्द निकलते थे जिन्हें मैं समझ नहीं सकता था। उसकी आँखें जो कुछ कह रही थीं, वह भी मैं पूरी तरहसे नहीं समझता था। हम लोगोंने यहाँ आने पर जो कुछ आशा की थी, उससे कहीं अधिक उसकी आँखें कुछ कह रही थीं।

जिस कमरेमें हम लोग बैठे थे, उसके पास ही और कई कमरे थे। मैंने देखा कि लीयरने एक स्त्री पर बहुत गहरा कटाक्ष किया था। वह इन सब कामोंमें बहुत उस्ताद था। पर मेरी समझमें कुछ न आता था। मेरा दुर्बल और प्रेम-पूर्ण हृदय कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी समझनेमें असमर्थ था। मुझमें उस समय प्रबल कामनाएँ भी थीं और मानसिक कष्ट भी। बस इन्हीं दोनोंके अद्भुत सम्मिश्रणका मैं उस समय अनुभव कर रहा था। मेरा सिर कुछ चकराने लगा। यहाँ कोई ऐसी चीज नहीं थी जो आदमीको दृढ़ रख सकती। हम लोगोंने अपने बूट दरवाजे पर ही उतार दिये थे और उसके बदलेमें उन्होंने हमें पहननेके लिए स्लीपर दे दिये थे। अब कोई बात ऐसी नहीं रह गई थी जो मुझमें सैनिकका-सा आत्म-विश्वास और दृढ़ निश्चय उत्पन्न कर सकती। न यहाँ बन्दूक थी, न पेटी थी और न टोपी थी। मैंने अपने आपको बिलकुल अज्ञात अवस्थामें डाल दिया और यही सोचा कि जो होनेको हो, वह हुआ करे। लेकिन इतना सब कुछ होने पर भी मेरे मनमें कुछ भय अवश्य था।

वह नाटी स्त्री जब कुछ सोचने लगती थी, तब उसकी भौंहें सिकुड़ जाती थीं; पर जब वह बातें करती थी, तब उसकी भौंहें बिलकुल स्थिर रहती थीं। मैं इतना तल्लीन हो रहा था कि उसका एक भी शब्द पूरा-पूरा मेरे कानोंमें नहीं पहुँचता था। उसके मुँहसे जो शब्द निकलते थे, वे मानों आधेसे अधिक हवामें लीन हो जाते थे और मेरे कानों तक पूरे पहुँचने ही नहीं पाते थे। मेरे लिए उन शब्दोंका रूप किसी मेहराब या पुच्छल तारेके सामन हो रहा था। उस विदेशी भाषाके शब्द मैं बहुत ही कम समझता था। पर फिर भी वे शब्द मुझे बलपूर्वक निस्पन्द कर रहे थे। वह कमरा मुझे बराबर अँधेरा होता हुआ दिखाई देता था और उस धुँधले प्रकाशमें विलीन होता हुआ सा जान पड़ता था। सारे कमरेमें मुझे एक ही चेहरा दिखाई देता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। वही चेहरा स्पष्ट था और वह चेहरा उस नाटी स्त्रीका था।

इस समय उसका चेहरा मुझे बहुत कुछ बदला हुआ जान पड़ता था। अभी सिर्फ एक घन्टे पहले वह चेहरा मुझे अजनबी सा जान पड़ता था, पर इस समय उसमें एक नई लोच आ गई थी। वह लोच स्वयं उस चेहरेकी नहीं थी, बल्कि कुछ तो रातके कारण और कुछ उसके रक्तके कारण थी। इन सब कारणोंसे उसमें एक नई चमक आ गई थी। उस चेहरेकी चमक कमरेकी और चीजोंपर भी पड़ रही थी। मेरी स्वच्छ त्वचा पर लम्पकी रोशनी पड़ रही थी और उस पर वह स्त्री अपना मुलायम हाथ फेर रही थी। उस समय मेरी दशा बहुत ही विलक्षण हो रही थी।

सैनिकोंके लिए सेनाके शिविरके आस-पास जो चकले हुआ करते हैं, वहाँकी स्थितिसे यहाँकी स्थिति कितनी अधिक भिन्न थी! हम लोगोंको उन चकलोंमें जानेका समय दिया जाता है, पर वहाँ हम लोगोंको बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। मुझे तो उस समय उन चकलोंसे इतनी अधिक घृणा हो गई थी कि मैं मनमें उनका ध्यान भी नहीं लाना चाहता था। बल्कि मैं कह सकता हूँ कि पहलेसे ही मुझे उन चकलोंसे बहुत घृणा थी। परन्तु केवल आवश्यकताके कारण अनिच्छा-पूर्वक भी कभी-कभी मेरा मन उनकी ओर चला जाता था; क्योंकि बिना वहाँ गये काम ही नहीं चलता था और मनुष्य वहाँ गये बिना बच ही नहीं सकता था।

इतनेमें उस स्त्रीके होंठ मेरे मुँहपर आ लगे और मैंने अपना मुँह उसके होंठोके साथ और भी सटा दिया। उस समय मेरी आँखें बन्द थीं। युद्ध आदिकी विभीषिकाओं और चिन्ताओंको

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं एक दमसे भुला देना चाहता था जिसमें मैं फिरसे नवयुवक और प्रसन्न हो जाऊँ। मुझे फिर चित्रमेंकी उस युवतीका ध्यान हो आया और क्षण भरके लिए मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि मेरा सारा जीवन उसीको प्राप्त करनेपर निर्भर है। साथ ही मुझे यह भी ध्यान हुआ कि यदि मैं उन बाँहोंके अन्दर और भी अधिक धँस जाऊँ, जो उस समय मेरे गलेमें पड़ी हुई थीं, तो शायद कोई बहुत ही अद्भुत और अभूतपूर्व घटना घटित हो जाय..............।

× × × ×

कुछ देर बाद हम सब लोग फिर एक जगह इकट्ठे हुए। लीयरको उस समय दूनकी सूझ रही थी। हम लोगोंने फिर बूट पहन लिये और प्रेम-पूर्वक वहाँसे बिदा होने लगे। रातकी शीतल वायु हम लोगोंके गरम शरीरको ठंढा कर रही थी। अँधेरेमें दूरसे वृक्षोंके पत्तोंकी खड़खड़ाहट सुनाई देती थी। ऊपर आकाशमें चन्द्रमा चमक रहा था और नीचे नहरके पानी पर उसकी चाँदनी छिटकी हुई थी। हम लोग दौड़ तो नहीं रहे थे, पर हमारे डग बहुत लम्बे-लम्बे पड़ते थे।

रास्तेमें लीयरने कहा—रोटी और खाने-पीनेके सामानके बदलेमें इतना मजा कुछ बुरा नहीं रहा।

उस समय मुझे बोलने तकका साहस नहीं होता था और मैं तनिक भी प्रसन्न नहीं था।

कुछ दूर आगे बढ़ने पर हमें कुछ लोगोंके पैरोंकी आहट सुनाई पड़ी जिससे हम लोग एक झाड़ीके पीछे छिप गये।

पैरोंकी आहट हम लोगोंके बहुत ही पास आ गई। हमने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा कि हमारी ही तरह बिलकुल नंगा और पैरोंमें सिर्फ बूट पहने एक और सिपाही चला आ रहा है। उसकी बगलमें भी एक पोटली दबी हुई थी और वह जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाये चला जा रहा था। वह और कोई नहीं, हम लोगोंका साथी जैकब था और बड़ी तेजीके साथ चला जा रहा था। थोड़ी ही देरमें वह हम लोगोंकी नजरों से ओझल हो गया।

हम लोग हँस पड़े। समझ लिया कि सवेरे वह हम लोगोंको खूब गालियाँ देगा।

थोड़ी देरमें हम लोग फिर अपने पुआलवाले बिस्तरपर आ पहुँचे। रास्तेमें आते या जाते किसीने हम लोगोंको नहीं देखा था।

× × × ×

मैं कार्यालयमें बुलाया गया। वहाँ कम्पनीके कमांडरने मुझे एक तो छुट्टीका और दूसरा रेलमें यात्रा करनेका पास दिया और कहा कि तुम आनन्दपूर्वक घर जाओ और वहाँसे सकुशल लौटकर आओ। मैं यह जाननेके लिए ध्यानपूर्वक पास देखने लगा कि मुझे कितने दिनोंकी छुट्टी मिली है। सब मिलाकर सत्रह दिनोंकी छुट्टी थी। उनमेंसे चौदह दिन तो घर रहनेके लिए थे और बाकी तीन दिन आने-जानेके लिए। पर आने-जानेके लिए तीन दिन काफी नहीं थे, इसलिए मैंने पूछा कि क्या मुझे आने-जानेके लिए पाँच दिनका समय नहीं मिल सकता? बरटिन्कने कहा कि छुट्टीका पास अच्छी तरह देखो। उसमें लिखा था कि छुट्टीसे लौटनेपर मुझे तुरन्त ही युद्ध-क्षेत्रमें नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आना होगा, बल्कि सैनिक शिक्षा प्राप्त करनेके लिए एक कैम्पमें जाना होगा।

मेरे और साथी मुझसे ईर्ष्या करने लगे। कैजिन्सकीने मुझे एक अच्छी सलाह दी। उसने कहा कि लौटने पर यदि हो सके तो तुम इस बातका प्रयत्न करो कि तुम्हें सेनाके पिछले भागमें उस स्थानपर कोई काम मिल जाय जहाँसे सैनिक और रसद आदि युद्ध-क्षेत्रमें भेजी जाती है। उसने यह भी कहा कि यदि तुम वहाँ अच्छी तरह काम करोगे तो फिर वहीं जम जाओगे और वहाँसे तुम्हें कहीं जाना न होगा।

अभी मुझे यहाँ लगभग आठ दिन और रहना होगा। चलो, यह भी अच्छा ही है।

छुट्टी मिलनेकी खुशीमें मुझे अपने साथियोंको शराबखानेमें ले जाकर शराब पिलानी पड़ी। हम सब लोगोंने शराब पी ली, पर मेरा मन प्रसन्न नहीं हुआ, बल्कि कुछ दुःखी सा हो गया। मुझे डेढ़ महीनेके लिए अपने साथियोंसे अलग होना पड़ेगा। खैर, यह तो एक अच्छी बात है। लेकिन जब तक मैं लौटकर यहाँ आऊँगा, तब तक यहाँकी क्या दशा होगी? क्या लौटने पर भी ये सब साथी मुझे इसी प्रकार मिलेंगे? हेई और कैमेरिक तो यहाँसे जा ही चुके हैं। अब न जाने और किसकी बारी आवेगी।

जिस समय हम लोग शराब पी रहे थे, उस समय मैं अपने प्रत्येक साथीको बारी बारीसे ध्यानपूर्वक देख रहा था। क्राप मेरे पास ही बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था और बहुत प्रसन्न जान पड़ता था। हम दोनोंका सदा साथ रहता था। सामने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैजिन्सकी बैठा हुआ था। उसके कन्धे झुके हुए थे और स्वर गम्भीर था। म्यूलरके दाँत निकले हुए थे और वह हँस रहा था। जैडन अपनी चूहोंकी-सी आँखोंसे सबको देख रहा था। लीयरने तो अपनी दाढ़ी इतनी बढ़ा ली थी कि चालीस बरसका जान पड़ता था।

हम लोगोंके सिर पर बहुत धूआँ छाया हुआ था। भला बिना तम्बाकू और सिगरेटके सैनिकोंका काम कैसे चल सकता है! शराबखानेमें आकर ही तो उसे कुछ चैन मिलता है। यहाँ शराब और गोश्त दोनों मिलते हैं। पर सैनिकके लिए शराबकी अपेक्षा मांस और भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि उसीके बलसे सैनिक हाथ-पैर चला सकता और सब काम कर सकता है। हम लोग खूब आरामसे बैठे हुए शराब पी रहे हैं और गोश्त खा रहे हैं। भला जिस आदमीको दूसरे ही दिन ऐसी सुन्दर परिस्थितिमें बढ़िया सोहबतसे निकलकर चला जाना हो, उसके मनकी क्या दशा होती होगी!

उस रोज रातको हम लोग फिर नहरके उस पार गये थे। अपनी प्रेमिकासे मुझे यह कहते हुए बहुत ही भय सा होता था कि मैं यहाँसे छुट्टी पर जा रहा हूँ; और जब मैं लौटूँगा, तब यहाँ नहीं आऊँगा और सम्भव है कि शायद हम लोग फिर एक दूसरे को न देख सकें। पर उसने तो मेरी बात सुनकर खाली सिर हिला दिया और उस पर कोई विशेष ध्यान ही नहीं दिया। पहले तो मेरी समझमें ही न आया कि उसकी इस उदासीनताका क्या कारण है; पर पीछे मेरी समझमें उसका कारण आ गया। वह कारण मुझे लीयरने बतलाया था और लीयरका बतलाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ कारण बहुत ठीक था। यदि मुझे लड़ाईके मैदानमें जानेका हुकुम मिला होता तो अवश्य ही उसने मेरा बहुत सत्कार किया होता और मुझसे यथेष्ट प्रेमपूर्वक बातें की होतीं। लेकिन मैं तो केवल छुट्टी पर और अपने घर जा रहा था, इसलिए उसने मेरी वह बात ध्यानपूर्वक सुनी भी नहीं। अब मुझे उसकी बातें बुरी लगने लगीं। मनुष्य कितने ऊँचे-ऊँचे स्वप्न देखता है और कैसे हवाई महल बाँधता है! पर आँखें खुलने पर अपने आपको कैसे रद्दी झोंपड़ीमें पाता है!

दूसरे दिन सबेरे मैंने अपने कपड़ोंकी जूएँ साफ कीं और तब वहाँ पहुँचा जहाँसे रेल-गाड़ी चलती थी। क्राप और कैजिन्स्की दोनों मुझे यहाँ तक पहुँचाने आये थे। यहाँ पहुँचने पर हम लोगोंको मालूम हुआ कि अभी यहाँसे गाड़ी छूटनेमें घण्टोंकी देर है। मेरे दोनों साथियोंको अपने काम पर पहुँचना था; इसलिए वे लोग मुझसे विदा होने लगे। हम लोगोंने आपसमें गले मिलकर एक दूसरेको अभिवादन किया।

वे दोनों चले गये। रास्तेमें कई बार उन्होंने मुड़कर मेरी ओर देखा और रूमाल हिलाया था। धीरे-धीरे वे अदृश्य होने लगे। मैं उनकी प्रत्येक गति बहुत अच्छी तरह पहचानता था; और चाहे वे कितनी ही दूर क्यों न रहें, मैं उन्हें देखकर चालसे ही पहचान सकता था। अन्तमें वे लोग बिलकुल अदृश्य हो गये। मैं भी अपने असबाब पर बैठकर गाड़ीकी प्रतीक्षा करने लगा।

× × × ×

रास्तेमें मुझे कई स्टेशनोंके प्लैटफार्मों पर लेटना पड़ा, कई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भोजनागारोंके सामने खड़ा होना पड़ा और कई बेंचों पर बैठना पड़ा। अन्तमें मुझे बहुत ही विह्वल करनेवाला और परिचित भूमिखंड दिखाई दिया। रास्तेमें कई ऐसे गाँव मिले जिन्हें मैं बहुत दिनोंसे जानता था। उनमेंके मकानोंकी खिड़कियाँ और छतें आदि देखकर मेरे मनमें विलक्षण उत्सुकता होती थी। वे मकान कुछ तो ईंट-पत्थरके और कुछ लकड़ीके बने हुए थे और उनकी दीवारों पर सफेदी की हुई थी। उनपरकी छाई हुई छतें टोपियोंके समान जान पड़ती थीं और सूर्यके प्रकाशमें सीपकी तरह चमक रही थीं। उसके आस-पासमें बारियाँ और झाड़ियाँ आदि लगी थीं। उनका दृश्य मेरे मनमें कुछ और ही भाव उत्पन्न कर रहा था।

अब जो स्टेशन आते, उन सबके नाम भी ऐसे ही थे जिनसे मैं पूर्ण रूपसे परिचित था। इन्हें देखकर मेरे हृदयमें एक प्रकारकी कँपकँपी सी उठती थी। गाड़ी बराबर आगे बढ़ती चली जा रही थी। मैं खिड़कीके पास उसका चौखटा पकड़े हुए खड़ा था। स्टेशनोंके वे नाम मानों मेरी युवावस्थाकी सीमाओंके सूचक थे।

रास्तेमें सपाट मैदान, चारागाह और खेत आदि दिखाई पड़ते थे। आस-पासकी सड़कों पर यात्री लोग चल रहे थे। जहाँ रेलकी लाइनको पार करनेवाला फाटक पड़ता था, वहाँ स्त्रियाँ और बच्चे आदि खड़े हँसते थे। जहाँ कहीं बाँध बँधे थे, वहाँ बच्चे खेल रहे थे।

उस समय सन्ध्या हो गई थी। यदि रेल-गाड़ीकी खड़-खड़ाहट न होती तो शायद मैं चिल्ला उठता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूर पर पर्वत-श्रेणियोंकी कोमल नीली छाया दिखाई पड़ने लगी। जंगलोंके उस पार एक ऐसे पर्वतका शिखर था जिसे मैं अच्छी तरह पहचानता था। उसीके पीछे वह कस्बा था जहाँका मैं रहनेवाला था।

सान्ध्य सूर्यकी किरणें सारे संसार पर पड़ रही थीं और उनके सुनहले लाल प्रकाश में सब चीजें चमक रही थीं। रेल-गाड़ी कभी इधर मुड़ती थी और कभी उधर मुड़ती थी। सामने घना जंगल दिखाई पड़ता था जिसके नीचे कहीं छाया थी और कहीं प्रकाश था।

जब रेल-गाड़ी चक्कर काटती थी, तब आस-पासके खेत लहराते हुए जान पड़ते थे। पहले तो पेड़ोंके समूह कुछ दूर दूर पर मिलते थे, पर अब बहुत जल्दी जल्दी मिलने लगे। यहाँ तक कि इतना घना जंगल आ गया कि सभी पेड़ एकमें मिले हुए जान पड़ने लगे। इतनेमें रेलवे लाइनने एक सड़क पार की। मैं खिड़कीके पास ही खड़ा हुआ था। वह मेरा निवास-स्थान मेरे लिए इतना अधिक आकर्षक था कि मैं खिड़कीसे पीछे हट ही नहीं सकता था। सब मुसाफिर अपनी अपनी गठरियाँ और सन्दूक आदि सँभालने और रेलसे उतरनेके लिए तैयार होने लगे। जो स्थान मैंने अभी पार किया था, उसका नाम बार बार मेरी जबान पर आने लगा।

अब हमारी गाड़ी शहरके बिलकुल पास बल्कि उसके अन्दर पहुँच गई थी। आदमी, लारियाँ और बाइसिकिलें आदि चलती हुई दिखाई देती थीं। वह स्थान देखकर मुझे ऐसा जान पड़ता था कि मैं अपनी माताकी गोदमें ही पहुँच गया हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्टेशनपर पहुँचकर गाड़ी खड़ी हो गई। सारा स्टेशन आदमियों और साइनबोर्डों आदिसे भरा हुआ था। मुसाफिरों और सामान बेचनेवालोंका शोर कानोंमें पहुँच रहा था। मैंने अपना बंडल और बन्दूक हाथमें उठा ली और गाड़ीसे नीचे उतर पड़ा।

प्लेटफार्मपर उतरकर मैं चारों ओर देखने लगा। वहाँ बहुत से आदमी इधर उधर घूम रहे थे। पर मैं उनमेंसे किसी-को पहचानता नहीं था। स्वस्तिक सेवा-दलकी एक स्त्रीने मुझे कुछ पीनेके लिए देना चाहा। मैंने उसकी तरफसे मुँह फेर लिया। वह मूर्खोंकी तरह मुस्करा पड़ी। शायद उसे अपने महत्वका बहुत अधिक अभिमान था। वह बोली—"देखो तो सही, मैं तुम्हें सैनिकोंके पीनेका कहवा दे रही हूँ।" लेकिन मैंने उसका कहवा नहीं पिया।

स्टेशनके बाहर एक मिल थी जिसका धूआँ सड़कपर भरा हुआ था। उस धूएँके निकलनेका जोरोंका शब्द भी होता था। पास ही पुराना घण्टा-घर था जिसके सामने एक बहुत बड़ा पेड़ था। चारो ओर सन्ध्याका अन्धकार छाया हुआ था।

मिलके पास ही एक पुल था। किसी समय उस पुलपर हम लोग प्रायः आकर बैठा करते थे। पर यह बहुत दिनोंकी बात थी। यहाँ बैठकर हम लोग ठंढी हवा खाया करते थे। उस हवाके साथ जलकी तीक्ष्ण गन्ध भी आती थी। पुलके नीचे खम्भोंपर बहुत सी लताएँ और उनके आस-पास छोटे-छोटे पेड़ आदि थे। हम लोग पुलपरसे झुककर उन लताओं और झाड़ियों आदिको देखा करते थे। गरमीके दिनोंमें वहाँ हम लोगोंको बहुत आनन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलता था। वहाँ बैठकर हम लोग अपने स्कूल और मास्टरोंकी बातें किया करते थे।

मैं पुलके उस पार पहुँच गया। पुलपर चलते समय मैं दाहिने-बाएँ देखता था। सारा जल सेवारसे भरा हुआ था। घण्टा-घरवाली इमारतमें कपड़े धोनेके बहुतसे कारखाने थे। कपड़ोंपर इस्तरी करनेके लिए उनमें जो लोहे गरम होते थे, उनकी भाफ और गरमी खिड़कियोंमें से निकल रही थी। छोटी-छोटी गलियोंमें कुत्ते घूम रहे थे। मकानोंके दरवाजोंके सामने लोग खड़े हुए बातें कर रहे थे। जब मैं मैली-कुचैली वरदी पहने और बोझसे लदा हुआ चला जा रहा था, तब वे लोग बहुत ध्यानसे मेरी ओर देख रहे थे।

रास्तेमें एक मिठाईवालेकी दूकान पड़ी। लड़कपनमें हम लोग यहाँ आकर प्रायः बरफ और मिठाइयाँ खाया करते थे। यहीं बैठकर हम लोगोंने पहले-पहल सिगरेट पीना सीखा था। इस सड़ककी प्रत्येक दूकानको मैं बहुत अच्छी तरह पहचानता था। मैं देखता था कि यह परचूनकी दूकान है, यह नानबाईकी दूकान है और यह दवा-खाना है। अन्तमें मैं अपने मकानके दरवाजे पर पहुँच गया। पर दरवाजा खोलनेके लिए मेरा हाथ ही नहीं उठता था। बहुत कठिनतासे मैंने दरवाजा खोला। मेरी आँखोंके आगे कुछ अँधेरा-सा छा गया। मकानके अन्दर पहुँचकर मैं सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। उन सीढ़ियों पर मेरे जूतोंकी चरमराहटकी आवाज होती थी। ऊपरके खंडमें एक दरवाजा खुलनेका शब्द हुआ। मैंने देखा कि कोई बाहर निकलकर छज्जे-परसे नीचेकी ओर झाँक रहा है। वह दरवाजा रसोई-घरका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। उस समय वहाँ आलूकी कचौरियाँ बन रही थीं और उनकी सुगन्ध सारे घरमें फैल रही थी। आज शनिवार था। मैंने समझ लिया कि मेरी बहन भोजन बना रही है। मुझे कुछ हिचकर्सी जान पड़ी और मेरा सिर झुक गया। मैंने अपने सिरसे खोद उतारा और ऊपर की ओर देखा। हाँ वह मेरी सबसे बड़ी बहन थी। मुझे देखते ही वह चिल्ला उठी—पाल, पाल!

मेरा बोझ भारी था। मेरी बन्दूक दीवारसे टकराई। बहनने ऊपरकी सीढ़ीका दरवाजा जोरसे खोलते हुए पुकारकर कहा—माँ, माँ, देखो पाल आ गया।

मेरा पैर आगे नहीं बढ़ता था। मैं अपना टोप और बन्दूक पकड़कर दीवारके सहारे खड़ा हो गया। टोप और बन्दूक तो मैं पूरे जोरसे थामे हुआ था, पर मेरा पैर आगे नहीं बढ़ता था। मेरी आँखोंके सामने इतना अँधेरा छा गया कि मुझे सीढ़ियाँ तक नहीं दिखाई देती थी। मैं बन्दूक टेककर उसके सहारे खड़ा हो गया, पर मेरे मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकलता था। मेरी बहनकी आवाजने मुझे बिलकुल अशक्त कर दिया था और मैं कुछ भी न कर सकता था। मैं कुछ बोलने और हँसनेका प्रयत्न करता था, पर मेरे मुँहसे शब्द ही नहीं निकलता था। इसलिए मैं नितान्त असमर्थोंकी तरह चुपचाप सीढ़ी पर खड़ा था और मेरे बहुत कुछ रोकने पर भी आपसे आप मेरी आँखोंसे आँसू बह रहे थे।

माँको खबर देकर बहन मेरे पास आई और पूछने लगी—क्यों, क्या हुआ है?

मैंने बड़ी कठिनतासे अपने शरीरका सारा बल लगाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैर उठाया और किसी तरह ऊपर कमरेमें पहुँचा। मैंने अपनी बन्दूक एक कोनेमें रख दी, सामान दीवारके सहारे रख दिया, उसके ऊपर टोप रख दिया और झोला खूँटी से लटका दिया। अब मैंने बहुत ही कठोर और उग्र स्वरसे कहा—एक रूमाल लाओ।

बहनने अलमारीमेंसे एक रूमाल निकालकर मुझे दिया जिससे मैंने आँखें और मुँह पोंछा। ऊपर दीवारमें शीशेका वह छोटा सन्दूक लटक रहा था जिसमें मैंने किसी समय तरह-तरहकी और रंग-बिरंगी तितलियाँ पाली थीं। उनमें की बहुत सी तितलियाँ अब तक उसमें मौजूद थीं।

अब मुझे अपनी माँकी आवाज सुनाई पड़ी। वह आवाज सोनेके कमरेसे आ रही थी।

मैंने बहनसे पूछा—क्या माँकी तबीयत ठीक नहीं है ?

वह बोली—हाँ, वह बीमार है।

मैं सोनेके कमरेमें माँ के पास जा पहुँचा और अपना हाथ बढ़ाकर बहुत ही शान्त भावसे बोला—माँ, मैं आ गया।

उस समय कमरेमें बहुत धुँधली सी रोशनी जल रही थी। उसी रोशनीमें वह बिस्तर पर पड़ी हुई थी। उसने बहुत ही उत्सुकतापूर्वक पूछा—क्या तुम घायल हुए हो ?

साथ ही उसने यह जाननेके लिए मेरे सारे शरीर पर दृष्टि दौड़ाई कि कहीं मैं घायल तो नहीं हुआ हूँ।

मैं—नहीं, मैं घायल नहीं हुआ हूँ। मुझे घर आनेकी छुट्टी मिली है।

माँ बहुत ही दुर्बल हो गई थी और बिलकुल पीली पड़ गई थी। मुझे रोशनी तेज करनेका साहस नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ—बेटा, मैं तो बीमार पड़ी हूँ। तुम्हें देखकर प्रसन्न होनेके बदलेमें मैं रो और कराह रही हूँ।

मैं—माँ, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है ?

माँ—हाँ बेटा, मैं बहुत बीमार हूँ। पर आज मैं जरा उठकर बैठूँगी।

यह कहकर माँने मेरी बहनकी ओर देखा। बहन कभी इस कमरेमें आती थी और कभी रसोई-घरमें जाती थी। उसे भय था कि कहीं उधर खाने-पीनेका सामान जल न जाय।

कुछ ठहरकर माँने मेरी बहनसे कहा—जरा इसे आलमारी-मेंसे निकालकर कुछ फल तो दो। (मुझसे) क्यों बेटा, तुम्हें फल तो बहुत अच्छे लगते हैं।

मैं—हाँ माँ। इधर तो बहुत दिनोंसे मुझे कोई अच्छा फल खानेको मिला ही नहीं।

बहन ने हँसते हुए कहा—हम लोग मानों पहलेसे ही जानते थे कि तुम आ रहे हो। आज वही चीजें बनी हैं जो तुम्हें बहुत अच्छी लगती हैं।

मैं—हाँ, क्यों नहीं। आज शनिवार जो ठहरा।

माँ—आओ बेटा, मेरे पास बैठो।

माँने मेरी ओर देखा। उसके हाथ बिलकुल सूख गये थे और सफेद पड़ गये थे। उन्हें देखते ही पता चल जाता था कि यह किसी बहुत पुराने रोगीके हाथ हैं। मैं बहुत कम बोलता था और यह भी एक बहुत अच्छी बात थी कि माँ भी कुछ नहीं पूछती थी। मैं जो कुछ चाहता था, वह तो यहाँ आपसे आप ही हो रहा था। मैं युद्ध-क्षेत्रसे सकुशल लौट आया था और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँ अपनी माँके पास बैठा हुआ था। उधर रसोई-घरमें मेरी बहन स्वादिष्ट भोजन बना रही थी और बीच-बीचमें गा रही थी।

माँने बहुत कोमलतासे कहा—मेरे प्यारे बेटे !

हम लोग अपने घरमें अपना पारस्परिक प्रेम बहुत अधिक नहीं प्रदर्शित करते थे। जिन गरीबोंको बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है और जिन्हें सदा बहुत सी चिन्ताएँ घेरे रहती हैं, वे लोग आपसमें अधिक प्रेम नहीं प्रदर्शित करते। वे जो बातें जानते और प्रत्यक्ष देखते हैं, उनकी व्यर्थ अधिक चर्चा नहीं करते। जिस समय मेरी माँने कहा था—"मेरे प्यारे बेटे।" उस समय उसके इन शब्दोंमें साधारणकी अपेक्षा कहीं अधिक गूढ़ अर्थ भरा हुआ था। उसका केवल उतना ही अर्थ नहीं था जितना ऐसे अवसरोंपर कही हुई इस तरहकी और लोगोंकी बातोंका हुआ करता है। मैं जानता था कि घरमें जो थोड़े से सूखे फल हैं, वे महीनोंसे उसी तरह रखे हुए हैं और शायद मेरे ही आसरे अब तक पड़े हुए हैं। उन फलोंके साथ मुझे जो बिस्कुट मिले थे, वे भी शायद इसी प्रकार और उतने ही दिनोंके रखे हुए थे। मैं समझता हूँ कि ये सब चीजें इन लोगोंको किसी अवसर पर सस्ती मिल गई थीं और उन्होंने इस आसरे रख छोड़ी थीं कि यदि मैं महीने दो महीनेमें आऊँगा तो खाऊँगा।

मैं माँके पलंगके पास बैठ गया। खिड़कीमेंसे सामनेके बागमेंके वृक्ष आदि दिखाई दे रहे थे। मैंने ठंढी सांस लेते हुए मनमें कहा कि आखिर मैं घर पहुँच गया। मैं इतने दिनों बाद घर आया था, इसलिए घर और यहाँके सब लोग मुझे कुछ अजनबी से जान पड़ते थे और अजनबीपनका यह भाव किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरह मेरा पीछा ही नहीं छोड़ता था। यहाँकी परिस्थितिमें मुझे घरका सा आराम नहीं मालूम होता था, क्योंकि अब तो मेरे लिए बहुत कुछ वही स्थान घर हो रहा था, जहाँ मैं इधर कई वर्षोंसे रहता आया था। यहाँ मेरी माँ भी थी, बहन भी थी और तितलियोंका पिंजड़ा भी था, पर मैं स्वयं यहाँ नहीं था। इन सब चीजोंमें और मुझमें एक बहुत बड़ा परदा था—बहुत बड़ा अन्तर था।

मैं उठकर अपना असबाब वहीं माँके पलंगके पास ले आया और उसमें से एक-एक करके वे सब चीजें निकालने लगा जो मैं अपने साथ लाया था। उसमें एक प्रकारका बढ़िया पनीर था जो कैजिन्स्कीने मुझे दिया था; सैनिकोंके खानेकी दो बड़ी-बड़ी रोटियाँ थीं; कोई डेढ़ पावके करीब मक्खन था; शोरबेके दो टिन थे; आध सेर चरबी थी और चावलोंका एक छोटा थैला था।

मैंने कहा—ये सब चीजें तो घरमें काम आ ही जायँगी।

उन लोगोंने केवल सिर हिला दिया।

मैंने पूछा—क्या ये सब चीजें यहाँके खाने लायक नहीं हैं?

मेरी बहन का नाम एरना था। वह बोली—खाने लायक क्यों नहीं हैं। इनमें क्या हुआ है जो ये खाने लायक न होंगी! क्या वहाँ ये सब चीजें तुम लोगोंको बहुत अधिक मिलती हैं?

मैंने मुस्कराकर उन चीजोंकी ओर इशारा करते हुए कहा—नहीं, हमेशा तो इतनी ज्यादा नहीं मिलतीं, पर हाँ फिर भी खाने भरको मिल ही रहती हैं।

एरना खाने-पीनेका वह सब सामान उठा ले गई। अचानक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँने मेरा हाथ पकड़कर पूछा—क्यों पाल, क्या वहाँ तुम्हें बहुत तकलीफ होती थी ?

मैं मनमें सोचने लगा कि माँको उसके इस प्रश्नका क्या उत्तर दूँ। वह बेचारी वहाँके कष्टोंको क्या समझ सकेगी! वह तो स्वप्नमें भी उन कष्टोंकी कल्पना न कर सकेगी। मैं सिर हिलाकर बोला—नहीं माँ, वहाँ कोई बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं होती। हम लोग बहुत से आदमी एक साथ रहते हैं, इसलिए कोई तकलीफ नहीं मालूम होती।

माँ—लेकिन अभी हालमें हेनरिक ब्रेडमेयर वहाँसे आया था। वह कहता था कि अब वहाँ बहुत तकलीफ होने लगी है; वहाँ गैस छोड़ी जाती है और न जाने क्या-क्या होता है।

माँ कहनेको तो कह गई कि वहाँ गैस छोड़ी जाती है और न जाने क्या-क्या होता है, पर वह बेचारी क्या जानती थी कि गैस किसे कहते हैं और वहाँ और क्या-क्या होता है। वह युद्ध-क्षेत्रके कष्टोंका कोई अनुमान ही नहीं कर सकती थी; वह तो केवल मेरे लिए चिन्तित थी—उसे केवल मेरे ही कष्टोंका ध्यान था। मैं सोचने लगा कि क्या मैं माँको यह बतलाऊँ कि हम लोगोंने एक बार शत्रुओंकी ऐसी तीन खाइयाँ देखी थीं जिनमें सैनिक गैसके दूषित प्रभावके कारण बिलकुल मुर्दोंकी तरह पड़े हुए थे। उन लोगोंको देखनेसे ऐसा जान पड़ता था कि सबको मिरगी आई हुई है। उनके चेहरे बिलकुल नीले हो गये थे। उनमेंसे बहुतेरे मर चुके थे और बाकी मौतके मुँहमें पड़े हुए थे।

मैंने माँकी चिन्ता दूर करनेके लिए कहा—नहीं माँ, ये सब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहनेकी बातें हैं। ब्रेडमेयरने जो कुछ कहा है, उसमें बहुत कुछ झूठ है। तुम मुझको ही देखो, मैं कैसा भला चंगा हूँ!

जब तक मेरी माँको चिन्ता बढ़ती, उससे पहले ही मैं अपने आपको बहुत कुछ सँभाल चुका था। अब मैं अच्छी तरह उठ-बैठ सकता था, बात-चीत कर सकता और प्रश्नोंका उत्तर दे सकता था। अब मुझे इस बातका डर नहीं रह गया था कि मुँह तक बात आते ही मैं सीधी तरहसे खड़ा न रह सकूँगा और मुझे दीवार टेककर खड़ा होना पड़ेगा। अब मुझमें बहुत कुछ साहस आ गया था और मेरा हृदय कठोर हो गया था। इससे पहले यहाँ आनेके समय तक मुझे जो संसार परम कठोर जान पड़ता था, वह अब बहुत मृदु हो चला था।

मेरी माँ उठकर बैठना चाहती थी। पर उसे उठाकर बैठानेके पहले मैं रसोई-घरमें बहनके पास यह जाननेके लिए चला गया कि माँ को कौन सा रोग हुआ है और उसकी क्या अवस्था है। वहाँ पहुँचकर मैंने बहनसे पूछा—माँको क्या हुआ है?

एरना—माँ कई महीनोंसे बहुत बीमार है, पर हम लोगोंने उसकी बीमारीका हाल तुम्हें लिखना मुनासिब नहीं समझा था। उसे देखनेके लिए कई डाक्टर आये थे। उनमें से एक डाक्टरने कहा था कि शायद इसे फिरसे कैन्सर (एक प्रकारका बहुत जहरीला और खराब घाव जो जल्दी अच्छा नहीं होता और जिससे रोगी मर जाता है) हो गया है।

× × × ×

मैं जिलेके सैनिक कमांडरके पास उसे यह सूचित करनेके लिए गया कि मैं यहा आ गया हूँ। मैं धीरे धीरे गलियों और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सड़कोंसे होता हुआ चला जा रहा था। बीच-बीचमें कभी कुछ लोग मुझसे कुछ पूछ भी बैठते थे। पर मैं उनसे बातें करनेके लिए ज्यादा देर तक नहीं ठहरता था, क्योंकि मैं किसीसे ज्यादा बात-चीत करना ही नहीं जानता था।

जब मैं बैरकसे लौटने लगा, तब किसीने मुझे जोरसे पुकारा। उस समय भी मैं अपने बिचारोंमें मग्न था। उसी अवस्थामें मैंने पीछे मुड़कर देखा। मुझे सामने एक मेजर दिखाई दिया। उसने कुछ कठोर स्वरमें पूछा—क्या तुम सलाम नहीं कर सकते?

मैं कुछ घबराकर बोला—जी नहीं, माफ कीजिए। मैंने आपको देखा नहीं था।

वह और भी गरजकर बोला—क्या तुम अफसरोंके साथ ठीक तरहसे बातें करना भी नहीं जानते?

जीमें तो आया कि उसके मुँहपर कसकर एक तमाचा जड़ूँ, पर फिर भी बहुत कठिनतासे मैंने अपने आपको रोका, क्योंकि मैं जानता था कि यदि मैं जरा भी आपेसे बाहर हुआ तो मेरी सारी छुट्टी ही गायब हो जायगी। मैं सैनिकोंकी तरह कायदेसे एड़ियाँ सटाकर खड़ा हो गया और बोला—जी नहीं मेजर साहब, मैंने आपको देखा नहीं था।

मेजर—आगेसे आँखें खोलकर चला करो। तुम्हारा क्या नाम है?

मैंने अपना नाम बतला दिया।

उसके लाल मोटे चेहरे पर और भी अधिक क्रोध दिखाई देने लगा। उसने पूछा—तुम किस रेजिमेन्टमें हो?

मैंने अपनी रेजिमेन्टका नाम और पता बतला दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन इतनेपर भी उसे सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछा—युद्ध-क्षेत्रमें तुम्हारी नियुक्ति कहाँ थी ?

मैं—लैंगमार्क और बिक्सशूटके मध्यमें।

वह कुछ स्तम्भित सा होकर बोला—हूँ!

इसके बाद मैंने उसे बतला दिया कि मैं छुट्टी पर आया हूँ और मुझे आये अभी डेढ़ ही दो घन्टे हुए हैं। मैंने सोचा था कि यह सुनकर वह कुछ न बोलेगा और चुपचाप चला जायगा। पर नहीं, उसने तो और भी उग्र रूप धारण किया। वह कड़ककर बोला—युद्ध-क्षेत्रमें तुम्हें जो कायदे सिखलाये जाते हैं, क्या उन कायदोंको तुम वहीं छोड़ आये हो ? हम लोग यहाँ इस तरहकी बातें बरदाश्त नहीं कर सकते। यहाँ ईश्वर की कृपासे सैनिक व्यवस्था और मर्यादाका पूरा-पूरा पालन होता है।

कुछ ठहरकर उसने मुझे इस गुस्ताखीकी सजा देनेके लिए हुकुम दिया—तेजीके साथ बीस कदम पीछे हटो।

मैं मारे गुस्सेके पागल हो गया; लेकिन लाचार था और कुछ बोल ही नहीं सकता था। मैं जानता था कि यदि मैं कुछ भी बोला तो यह मुझे गिरफ्तार कर लेगा और तब न जाने क्या-क्या दुर्दशा होगी। इसलिए मैं उसकी आज्ञाके अनुसार बीस कदम पीछे हटा और तब फिर उसी तरह आगे बढ़कर उसके पास पहुँचा। जब मैं उससे छः कदम दूरी पर रह गया, तब मैंने उसे सैनिक ढंगसे सलाम किया और तब तक उसी प्रकार सलाम किये रहा, जब तक मैं उससे छः कदम आगे नहीं निकल गया।

अब जाकर उसका मिजाज कुछ ढीला हुआ और उसने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने पास बुलाकर कहा—खैर जाओ, आज मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ, उचित दंड नहीं देता और तुम पर दया करता हूँ। मैंने भी ऊपरसे यही प्रकट किया कि मैं बहुत अधिक कृतज्ञ हूँ। अन्तमें वह बोला—अच्छा जाओ। मैं फिर उसे सलाम करके जल्दी-जल्दी घरकी ओर चल पड़ा।

इस तरह मेरी वह सारी सन्ध्या खराब हुई। घर पहुँचकर मैंने अपनी वरदी उतारकर एक कोनेमें फेंक दी, क्योंकि मैं यथा-साध्य शीघ्र उन कपड़ोंसे पीछा छुड़ाकर नागरिकोंके से और अच्छे कपड़े पहनना चाहता था। मैंने अपने दूसरे कपड़े निकालकर पहन लिये।

पर वे नये कपड़े कुछ तंग थे। वे कपड़े उस समयके रखे हुए थे, जब मैं सेनामें भरती हुआ था। तबसे अब तक मैं बहुत कुछ बड़ा हो गया था, अतः कपड़े कुछ छोटे पड़ते थे। कालर और टाईसे मुझे और भी तकलीफ होती थी। मैं स्वयं टाई नहीं बाँध सकता था, इलिए मेरी बहनने वह टाई मेरे गलेमें बाँध दी। जो हो, वे कपड़े मुझे बहुत हलके जान पड़ते थे। उस समय मुझे अपना शरीर इतना हलका जान पड़ता था कि मानों मैं एक पाजामे और कमीजके सिवाय और कुछ पहने ही नहीं हूँ।

मैंने शीशेके सामने जाकर अपनी शकल देखी। उस समय मेरी कुछ और ही रंगत हो गई थी। मेरी माँ मुझे इस रूपमें देखकर बहुत अधिक प्रसन्न हुई। अब मैं उसे पहले की तरह उतना अधिक अपरिचित नहीं जान पड़ता था। पर पिताजीकी कुछ यही इच्छा जान पड़ती थी कि मैं सैनिकोंकी वरदी पहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहूँ। वे चाहते थे कि मुझे उसी रूपमें अपने मित्रों और परिचितोंसे भेंट कराने ले जायँ। पर मैंने उस वरदीको पहने रखनेसे इन्कार कर दिया।

× × × ×

आरामसे चुपचाप बैठनेमें मुझे बहुत आनन्द आता है। विशेषतः यदि मैं बागमें किसी वृक्षके नीचे एकान्तमें चुपचाप बैठा रहूँ तो मेरा चित्त और भी अधिक प्रसन्न होता है। ऊपरसे टेबुल और जमीन पर कुछ-कुछ पत्तियाँ गिरती हैं। मेरे सामने जौकी शराबसे भरा हुआ एक गिलास रखा है। सेनामें रहकर मैंने शराब पीना सीख लिया है। गिलास आधेके करीब खाली हो चुका है, पर फिर भी अभी कई घूँट शराब उसमें मौजूद है और जरूरत पड़ने पर और शराब भी मिल सकती है। यहाँ न तो सेनाकी बिगुल सुनाई पड़ती है और न गोलोंका धड़ाका। आस-पास कई बच्चे खेल रहे हैं। मेरा कुत्ता मेरे घुटने पर सिर रखे हुए लेटा है। आकाश नीला और साफ है। पास ही छोटे छोटे वृक्षोंके झुंडमेंसे एक गिरजेका शिखर निकला हुआ दिखाई देता है।

यह दृश्य बहुत ही सुन्दर है और मुझे बहुत ही भला लगता है। लेकिन यहाँके आदमियोंसे मेरी तबीयत बहुत घबराती है। एक मेरी माँ ही ऐसी है जो मुझसे व्यर्थकी बातें नहीं पूछती; पर पिताजी बराबर प्रश्नपर प्रश्न करके दिक करते रहते हैं। वे युद्ध-क्षेत्रकी बातें जाननेके लिए इतने अधिक उत्सुक रहते हैं कि उनकी बातोंके उत्तर देता देता मैं परेशान हो जाता हूँ। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस प्रकारके प्रश्नोत्तरोंको छोड़कर उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ अब मेरा और किसी प्रकारका सम्बन्ध ही नहीं रह गया है। वे मुझसे केवल युद्ध-क्षेत्रकी बातें जानना चाहते हैं; इसके सिवा उन्हें मेरी और कोई बात अच्छी ही नहीं लगती। उनकी समझमें यह बात आती ही नहीं कि जो युद्ध-क्षेत्रमें बरसों तक रहकर वहाँकी बातोंसे बेहद घबरा गया हो और कुछ समयके लिए शान्ति प्राप्त करना चाहता हो, वह युद्ध-क्षेत्रकी बातें करना बिलकुल नापसन्द करता है। मैं उन्हें यह बात बहुत प्रसन्नतासे बतला देता कि मैं युद्ध-क्षेत्रकी कोई चर्चा ही नहीं करना चाहता। पर कठिनता तो यह है कि यदि मैं उन्हें यह बात समझा दूँ तो और भी खराबी हो। उस दशामें वे लोग बहुत अधिक घबरा जायँगे और मेरे लिए बहुत चिन्तित होंगे। इसीके साथ-साथ मुझे यह भी ध्यान आया कि युद्ध-क्षेत्रमें जो जो भीषण बातें होती हैं, यदि उन सबका ठीक-ठीक पता यहाँके लोगोंको लग जाय तो क्या हो?

यही सोचकर मैं उन्हें केवल वही थोड़ी सी बातें बतलाता था जो अधिक मनोरंजक होती थीं और जिनमें भीषणताका भाव बहुत ही कम होता था। पर वे यह जानना चाहते थे कि क्या कभी मुझे शत्रुओंके साथ गुथकर भी लड़ना पड़ा है और कभी उनके साथ मेरी हाथा-बाँहीं भी हुई है। इसके उत्तरमें मैंने कह दिया कि नहीं, ऐसा कभी नहीं हुआ। इसके बाद मैं वहाँसे उठकर चला गया।

लेकिन इन झगड़ोंका यहीं अन्त नहीं हुआ। जब मैं वहाँसे उठकर बाजारकी तरफ चला, तब कई बार मैं ट्राम गाड़ीकी आवाज सुनकर चौंक पड़ा और एकाध बार चिल्ला भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ा। उनके पहियोंके घर्षणसे कभी-कभी प्रायः वैसा ही शब्द होता था, जैसा युद्ध-क्षेत्रमें गोला आनेके समय होता था। इतनेमें किसीने मेरे कन्धेपर हाथ रखा। हाथ रखनेवाला मेरा जरमन शिक्षक था। उसने भी छूटते ही मुझसे वही प्रश्न किया—क्यों जी, युद्ध-क्षेत्र का क्या हाल है ? वहाँ तो बड़ी बड़ी आफतोंका सामना करना पड़ता होगा ? युद्ध-क्षेत्रकी परिस्थिति तो अवश्य ही बहुत विकट होगी; पर फिर भी जैसे हो, हम लोगोंको युद्ध चलाये चलना चाहिए। और चाहे जो हो, पर हम लोग सुनते हैं कि वहाँ तुम लोगोंको खाने-पीनेका सामान तो जरूर अच्छा मिलता है। पाल, तुम देखनेमें तो बहुत अच्छे और तगड़े जान पड़ते हो। यहाँकी हालत तो कुछ न पूछो; बहुत ही खराब है। तुम लोग बहुत मजेमें हो।

वह शिक्षक मुझे खींचकर एक ऐसे स्थानपर ले गया जहाँ एक टेबुलके चारों ओर बहुत से आदमी बैठे हुए थे। वहाँ सब लोगोंने मेरा अच्छा स्वागत किया। एक हेड मास्टरने बहुत प्रसन्न होकर मुझसे हाथ मिलाया और पूछा—तुम युद्ध-क्षेत्रसे आ रहे हो ? वहाँके लोगोंमें कैसा उत्साह है ? सब लोग खूब जोशमें हैं न ?

मैंने उसे बतला दिया कि अब लोग युद्ध-क्षेत्रमें रहना नहीं चाहते और किसी तरह घर आना चाहते हैं।

वह बहुत जोरसे हँसकर बोला—हाँ, वहाँ लोग घबरा तो जरूर गये होंगे; लेकिन हमें उचित है कि पहले हम अपने शत्रुओंके दाँत अच्छी तरह खट्टे कर दें। क्यों जी, तुम सिगरेट पीते हो ? लो यह सिगरेट पीओ। (नौकरसे) जाओ जी, हमारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहादुर सिपाहीके लिए एक गिलास शराब ले आओ।

अभाग्यवश मैंने सिगरेट हाथमें ले लिया था, इसलिए मुझे लाचार होकर वहाँ रुकना पड़ा। वे लोग मेरी इतनी ज्यादा खातिर कर रहे थे कि वहाँसे किसी तरह हटना भी ना-मुमकिन था। लेकिन फिर भी मैं वहाँ किसी तरह एक क्षण भी ठहरना नहीं चाहता था। मैं इतनी जल्दी-जल्दी सिगरेट पी रहा था कि मेरे मुँहसे धूआँकशकी तरह धूआँ निकलता था। उन लोगों की बात रखनेके लिए मैं एक ही साँसमें शराबका गिलास खाली कर गया। उन्होंने तुरन्त ही आदमीको दूसरा गिलास लानेकी आज्ञा दी। बात यह थी कि यहाँके लोग अपने आपको सैनिकोंका बहुत बड़ा ऋणी समझते थे। वे कहते थे कि अब हमें अमुक स्थान ले लेना चाहिए और अमुक किलेपर अधिकार कर लेना चाहिए। हेडमास्टर साहबकी इच्छा थी कि हम लोगोंको सारा बेलजियम मिल जाय, फ्रान्सका वह क्षेत्र मिल जाय जहाँ लोहेकी खानें हैं और हो सके तो रूसका भी एक टुकड़ा मिल जाय। उन्होंने कई कारण बतलाकर यह सिद्ध करना चाहा कि अमुक स्थान हमें क्यों मिलना चाहिए और अमुक प्रदेश पर हमारा क्यों अधिकार होना चाहिए। वे अपनी बात पर इतने अड़े हुए थे कि अन्तमें विवश होकर सभी लोगोंको उनका मत स्वीकृत करना पड़ा। इसके बाद वे मुझे यह बतलाने लगे कि किन-किन स्थानोंसे हमें फ्रान्समें घुसना चाहिए; और अन्तमें कहा—यदि तुम लोग इसी प्रकार खाइयोंमें बैठकर लड़ते रहोगे, तब तो उम्र भर यह लड़ाई खतम न होगी। जरा एक बार खाइयोंसे बाहर निकल पड़ो और शत्रुओंके देशमें घुस जाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बस फिर देखो कि कितनी जल्दी शान्ति और सुलह हो जाती है।

पर मैंने उन्हें बतला दिया कि शत्रु-सेनाको भेदकर उनके प्रदेशमें घुसना असम्भव है। उनके पास बहुत अधिक रक्षित सेना है। और फिर यहाँ लोग युद्धके सम्बन्धमें जो कुछ समझते हैं, उसकी अपेक्षा वहाँकी अवस्था बहुत ही विकट और बिलकुल अलग है।

पर मेरी बातोंको उन्होंने बिलकुल हँसीमें उड़ा दिया और कहा कि तुम ये सब बातें बिलकुल नहीं समझते। उन्होंने यह भी कहा कि चाहे मैं अलग-अलग प्रत्येक स्थानके सम्बन्धमें सब बातें न बतला सकूँ, तो भी समस्त युद्ध-क्षेत्रके सम्बन्धमें ये बातें कहता हूँ और यही बिलकुल ठीक हैं। तुम इन सब बातों को अच्छी तरह नहीं समझ सकते। तुम सिर्फ एक छोटे से टुकड़ेमें रहते हो। तुम सारे युद्ध-क्षेत्रका हाल क्या जानोगे! तुम लोग अपनी जान जोखिममें डालकर अपने कर्त्तव्यका पालन करते हो और इसके लिए तुम सब प्रकारसे सम्मानके पात्र हो। तुममें से प्रत्येक सैनिकको सम्मानजनक पदक मिलना चाहिए। लेकिन सबसे पहले फ्लैंडर्समें शत्रुकी पंक्ति भेदनी चाहिए और तब एक सिरेसे उनका अन्त कर डालना चाहिए।

इतना कहकर हेड मास्टरने अपनी नाक फुला ली और दाढ़ीपर हाथ फेरते हुए कहा—हमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक उनका बिलकुल सफाया कर डालना चाहिए और तब पेरिस पर पहुँचना चाहिए।

इसके बाद उन्होंने मेरे लिए शराबका तीसरा गिलास ढाला और नौकरको और शराब लानेकी आज्ञा दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन अब मैं वहाँ अधिक नहीं ठहर सकता था, इसलिए किसी तरह पीछा छुड़ाकर चलता बना। हेड मास्टरने जबरदस्ती मेरे जेबमें कुछ और सिगरेट रख दिये और बहुत ही आत्मीयता तथा मित्रताका भाव दिखलाते हुए मेरी पीठपर हाथ फेरकर कहा—मैं आशा करता हूँ कि बहुत शीघ्र तुम हमारे लिए विजयका समाचार लेकर आओगे।

× × × ×

मैं पहले समझता था कि छुट्टी कुछ और ही तरहकी होती है; और वास्तवमें साल भर पहले वह होती भी और ही तरह की थी। यदि सच पूछिये तो इस बीचमें स्वयं मुझ में ही परिवर्तन हो गया था। उस समयमें और आजके समयमें बहुत अन्तर हो गया है। पारसाल तक मैं प्रत्यक्ष युद्धके विषयमें कुछ नहीं जानता था। जान पड़ता है कि मेरे बिना जाने ही युद्धने मुझे अच्छी तरह पीस डाला है। अब इस घर और संसारके साथ मेरा कुछ भी सम्बन्ध नहीं रह गया है। अब यह संसार मेरे लिए अजनबी और पराया हो गया है। यहाँ कुछ लोग तो मुझसे अनेक प्रकारके प्रश्न करते हैं और कुछ लोग कोई प्रश्न ही नहीं करते। पर यह कोई नहीं कह सकता कि जो लोग किसी प्रकारका प्रश्न नहीं करते, उन्हें अपने मौनका कुछ अभिमान है। वे प्रायः बुद्धिमत्ता प्रकट करते हुए कहते हैं कि युद्ध सम्बन्धी बातोंकी कोई चर्चा ही नहीं हो सकती।

मैं बिलकुल एकान्तमें और अकेला रहना चाहता हूँ जिसमें कोई मुझे परेशान न कर सके। पर सब लोग एक ही बातकी चर्चा करते हैं। कोई कहता है कि युद्धके कारण कैसी बुरी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से समय बीतता है; और कोई कहता है कि युद्ध कैसे मजेसें चल रहा है। लेकिन फिर भी सब लोगोंको केवल अपने-अपने अस्तित्वकी चिन्ता है। पहले मेरी भी यही अवस्था थी; पर अब यहाँकी इस प्रकारकी बातों और यहाँके लोगोंके साथ मेरा कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया है।

लोग मुझसे बहुत तरहकी और बहुत ज्यादा बातें करते हैं। कोई अपनी चिन्ताएँ प्रकट करता है तो कोई अपनी कामनाएँ बतलाता है। पर उनकी अधिकांश चिन्ताएँ और कामनाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें मैं कुछ समझ ही नहीं सकता। जिस समय मैं बागमें जाकर बैठता हूँ, उस समय मेरे पास जो आता है, उसे मैं यही बतलाता हूँ कि संसारमें सब बातोंका सार यही है कि जिस तरह मैं यहाँ चुपचाप बैठा हूँ, उसी तरह सब लोग चुपचाप और शान्तिपूर्वक बैठें। वे लोग मेरी यह बात समझ लेते हैं, मुझसे सहमत होते हैं और सम्भवतः स्वयं भी ऐसा ही अनुभव करते हैं; पर हृदयसे और कार्य-रूपमें नहीं, बल्कि केवल शब्दोंमें। मैं बिलकुल ठीक कहता हूँ कि शान्तिपूर्वक बैठनेकी उनकी यह अभिलाषा केवल मौखिक होती है। वे इस बातका अनुभव तो करते हैं, पर पूरी तरहसे नहीं, बल्कि ऊपरी मनसे। उनका आधा ध्यान संसारकी दूसरी बातोंकी ओर होता है। स्वयं उनका विचार और मन इतना अधिक विभक्त होता है कि कोई उनका वास्तविक और हार्दिक अभिप्राय समझ ही नहीं सकता। और तो और, स्वयं मैं भी यह नहीं कह सकता कि वास्तवमें मेरा अभिप्राय या उद्देश्य क्या है।

जब मैं यहाँ लोगोंको अपने कमरों या दफ्तरोंमें बैठे हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और अपना काम-धन्धा करते हुए देखता हूँ, तब मेरा मन भी आप-से-आप उनकी ओर आकृष्ट होता है। मैं भी यही चाहता हूँ कि मैं इन्हीं लोगोंके समान यहाँ रहकर कुछ काम-धन्धा करूँ और युद्धकी सभी बातें भूल जाऊँ। पर साथ ही मेरा मन इतना संकुचित और दुर्बल है कि मनमें यह भाव उत्पन्न होनेके साथ ही साथ इसका विरोधी भाव भी उत्पन्न होता है। मैं सोचता हूँ कि ऐसे अवसरपर जब कि युद्ध-क्षेत्रमें बड़े-बड़े भीषण गोलोंकी वर्षा हो रही है, उनके आघातसे जमीनके धुर्रे उड़ रहे हैं, रोज हजारों घायल अस्पतालोंमें पहुँचाये जाते हैं और हजारों खाइयोंमें मरते हैं, तब कैसे किसीसे इस प्रकार शान्तिपूर्वक घरमें बैठा जाता है और कैसे कोई अपने रोजगार-धन्धेमें लगा रह सकता है! यहाँ के लोगोंके विचार और प्रकृतियाँ ही कुछ निराली हैं जिन्हें मैं अच्छी तरह समझ ही नहीं सकता। मैं ऐसे लोगोंसे ईर्षा भी करता हूँ और घृणा भी। मुझे तो कैजिन्स्की, क्राप, म्यूलर और जैडनकी चिन्ता करनी चाहिए। इस समय वे लोग क्या करते होंगे और किस अवस्थामें होंगे? इसमें संदेह नहीं कि इस समय या तो वे लोग शराबखानेमें बैठे हुए शराब पी रहे होंगे और या नहरमें तैर रहे होंगे। पर शीघ्र ही उन्हें युद्ध-क्षेत्रमें जाना पड़ेगा।

× × × ×

मेरे कमरेमें टेबुलके पीछे चमड़ेका एक कोच पड़ा है। मैं उसीपर आ बैठा हूँ।

दीवारपर बहुत सी तसवीरें लगी हुई हैं। ये वही तसवीरें हैं जो मैं बचपनमें अखबारोंमें से काटा करता था। बीच-बीचमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ ऐसे पोस्टकार्ड और हाथके खींचे हुए चित्र भी हैं जो मुझे कभी पसन्द आ गये थे और जिन्हें मैं किसी प्रकार प्राप्त कर सका था। कोनेमें लोहेका एक छोटा चूल्हा रखा है। सामने दीवारमें आलमारी टँगी है जिसमें मेरी किताबें रखी हैं।

सेनामें भरती होनेसे पहले मैं इसी कमरेमें रहा करता था। मैंने छोटे लड़कोंको पढ़ाकर कुछ धन कमाया था और उस धनसे कुछ पुस्तकें खरीदी थीं। अधिकांश पुस्तकें पुरानी और दूसरोंसे सस्ते दामोंपर खरीदी हुई थीं। प्रायः प्राचीन साहित्य और काव्यकी पुस्तकें ही उस आलमारीमें थीं। मैंने जो पुराने काव्य खरीदे थे, वे सब पूरे ही खरीदे थे, उनका संकलित या चुने हुए अंशोंका संग्रह नहीं खरीदा था। बात यह थी कि मैं ऐसे सम्पादकोंका विश्वास ही नहीं करता था जो अनेक ग्रन्थोंसे अच्छे-अच्छे अंशोंका संग्रह या संकलन करके प्रकाशित करते हैं। मैंने उनमें से अधिकांश पुस्तकें बहुत शौकसे पढ़ी थीं, पर उनमें की बहुत ही थोड़ी बातें मुझे अच्छी लगी थीं। मुझे प्राचीन साहित्यकी अपेक्षा अर्वाचीन साहित्य ही अधिक अच्छा लगता था, पर अर्वाचीन साहित्यकी पुस्तकें बहुत मँहगी मिलती थीं। अर्वाचीन साहित्यकी जो थोड़ी सी पुस्तकें मेरे पास थीं, वे मैंने ईमानदारीसे नहीं इकट्ठी की थीं। उनमें कई किताबें ऐसी थीं जो मैंने अपने मित्रोंसे मँगनी माँगी थीं और जो अच्छी लगनेके कारण मैंने उनके मालिकोंको नहीं लौटाई थीं।

एक और छोटी आलमारी थी जो पाठ्य और स्कूली किताबों से भरी थी। उन किताबोंकी कोई खास हिफाजत नहीं की गई थी और उनका उपयोग बहुत ही लापरवाहीसे किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनेक उद्देश्योंसे उनमेंके बहुत से पेज फाड़ भी डाले गये थे। उस आलमारीके नीचे एक ढेर लगा था जिसमें बहुत से समाचारपत्र, मासिक पत्र और हाथके बनाये हुए साधारण चित्र आदि थे।

मैं अपने उसी बीते हुए समयका ध्यान करना चाहता था जब कि मैं अपनी इन सब पुस्तकोंका उपयोग करता था। यह वही कमरा है और इसमेंकी सब चीजें भी वही हैं। मैं खूब आरामसे पैर फैलाकर उस कोचपर बैठा हूँ। छोटी खिड़की खुली है जिसमेंसे नीचेकी गलीका सुपरिचित दृश्य और उसके उस सिरेका गिरजा दिखाई दे रहा है। टेबुलपर कुछ फूल भी रखे हुए हैं। मेरी लिखने की कलमें, कागजोंको दबानेका बड़ा कौड़ा और दावात भी रखी है। मतलब यह कि सभी चीजें ज्योंकी त्यों पड़ी हैं, कहीं कोई चीज इधर-उधर हटाई-बढ़ाई नहीं गई है।

यदि कभी युद्ध समाप्त होगा और मुझे फिर यहाँ आनेका सौभाग्य प्राप्त होगा, तब भी ये सब चीजें यहाँ इसी रूपमें मिलेंगी। मैं फिर यहाँ आकर इसी तरह बैठूँगा और पहलेकी तरह अपना काम करूँगा।

मैं कुछ आवेशमें आ गया; पर मैं आवेशमें आना नहीं चाहता था, क्योंकि इस प्रकार आवेशमें आना ठीक नहीं था। मैं फिरसे पहलेकी तरह शान्तिपूर्वक रहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मुझमें फिर वही बलवान् भाव आ जाय जिससे प्रेरित होकर मैं पहले अपनी किताबें देखा करता था। उस समय किताबोंको दूरसे देखते ही उन्हें पढ़नेकी जो कामना मेरे मनमें उत्पन्न होती थी, मैं चाहता था कि फिर वही कामना मेरे मनमें आकर भर जाय; मेरे मनपर इस समय जो भारी बोझ आ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लदा है, उसे वह किसी तरह हटाकर गिरा दे ; मुझमें भविष्यके सम्बन्धमें वही अधीरता उत्पन्न कर दे और मैं विचार-जगतमें पहुँचकर फिर पहलेकी सी प्रसन्नताका अनुभव करूँ। मेरे यौवन-कालकी जो उत्सुकता नष्ट हो गई है, वह इस प्रकार मुझे फिरसे प्राप्त हो जायगी। मैं चुपचाप बैठा हुआ ऐसे ही समयकी प्रतीक्षा करने लगा।

मेरे मनमें विचार उत्पन्न हुआ कि मुझे चलकर कैमेरिककी माँसे मिलना चाहिए। मुझे मिटेलसैटसे भी मिलना चाहिए। इस समय वह बैरकमें होगा। मैंने खिड़कीसे वाहरकी ओर देखा। नीचे धूपसे चमकती हुई गली थी और दूरपर छोटी-छोटी पहाड़ियोंकी एक श्रेणी थी। मुझे ध्यान आया कि किसी समय मैं इसी कमरेमें बैठकर कैजिन्स्की और क्रापके साथ उबाले हुए आलू खाया करता था।

पर इस स्मृतिको मैं अधिक समय तक अपने मनमें स्थान नहीं देना चाहता था, इसलिए मैंने बलपूर्वक यह विचार अपने मनसे निकाल दिया। पर यह कमरा मुझे पकड़े हुए था और मेरे मनमें जबरदस्ती ये सब विचार उत्पन्न कर रहा था। मैं चाहता था कि किसी तरह मेरे मनमें यह बात बैठ जाय कि अब मैं स्थायी रूपसे यहींका हो जाऊँगा और जब मैं युद्ध-क्षेत्रमें पहुँचूँ, तब वहाँ युद्ध समाप्त हो चुका रहे; घर लौटनेकी लहरमें सारा युद्ध और उसकी सारी सामग्री डूब जाय; मुझे इस बातका अच्छी तरह विश्वास हो जाय कि इस युद्धका सदाके लिए अन्त हो गया; वह युद्ध हम लोगोंका मांस नोचना सदाके लिए बन्द कर दे; आदि आदि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुस्तकें पंक्तियोंमें खड़ी हैं। मैं उन सभी पुस्तकोंको बहुत अच्छी तरह पहचानता हूँ और मुझे यह भी स्मरण है कि उन्हें मैंने किस क्रमसे लगाया था। मैंने उनपर अपनी दृष्टि गड़ाकर मन-ही-मन उनसे प्रार्थना की कि तुम मुझसे बातें करो और मुझे फिर पहलेकी तरह अपना लो। तुम मेरे यौवनका जीवन हो, सब प्रकारसे सुन्दर और निश्चिन्त हो। मुझे फिरसे ग्रहण करो और अपने ही समान बना लो………।

मैं फिर उसी समयकी प्रतीक्षा करने लगा।

मेरे मनमें अनेक प्रकारके भाव उठते थे और मेरी आँखोंके सामने अनेक प्रकारके चित्र उपस्थित होते थे, पर वे सब मेरे मन पर पूर्ण रूपसे अधिकार नहीं कर पाते थे। वे वास्तवमें विचार और चित्र नहीं थे, बल्कि उनकी छायाएँ और स्मृतियाँ मात्र थीं।

नहीं, नहीं, यह सब कुछ भी नहीं………।

मेरे मनमें फिर अशान्ति उत्पन्न होने लगी।

अचानक मेरे मनमें परायेपनका भाव उत्पन्न हुआ। मुझे ऐसा जान पड़ता था कि अब मैं कभी लौटकर यहाँ नहीं आ सकता। किसीने मुझे जबरदस्ती बाहर निकालकर अन्दरसे कमरा बन्द कर लिया है। मैं बहुत कुछ मिन्नत-खुशामद करता हूँ और अपना सारा बल फिरसे इस परिस्थितिमें आने के लिए लगा रहा हूँ, पर मेरा कोई वश नहीं चलता।

मेरी प्रार्थनाका किसीपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं ऐसे आदमीकी तरह चुपचाप और दुःखी होकर बैठा हूँ जिसे कोई बहुत बड़ी सजा मिली हो। भूत कालकी सभी बातें मेरी आँखोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामनेसे आपसे-आप हट जाती हैं। साथ ही मैं स्वयं भी उन विचारोंके जालमें फँसनेसे घबराता हूँ, क्योंकि मैं नहीं जानता कि इन विचारोंमें अधिक समय तक पड़े रहनेका क्या परिणाम होगा। मैं सैनिक हूँ और मुझे अपनी वर्त्तमान वृत्तिपर दृढ़ रहना चाहिए।

मैं बहुत ही खिन्न होकर उठ खड़ा हुआ और खिड़कीमें से झाँककर बाहरकी तरफ देखने लगा। जब वहाँ भी तबीयत न लगी, तब मैंने आलमारीमेंसे पढ़नेके लिए एक किताब निकाली और उसके पन्ने उलटने-पुलटने लगा। वह किताब अच्छी नहीं लगी, इसलिए उसे रखकर दूसरी निकाली। उसमें अनेक ऐसे वाक्य थे जिनपर मैंने किसी समय निशान लगा रखे थे। उसे भी मैंने उलट-पुलटकर रख दिया और तीसरी किताब निकाली। इस प्रकार बहुत सी किताबें उलट डालीं। मेरे पास किताबों, कागजों और मासिकपत्रोंका ढेर सा लग गया।

मैं चुपचाप ठीक उसी प्रकार गूँगोंकी तरह वहाँ खड़ा रहा, जिस तरह कोई अपराधी किसी न्यायाधीशके सामने खड़ा होता है। मेरा मन बहुत ही दुःखी हो गया। उन पुस्तकोंके शब्द मेरे कानों तक पहुँचते ही नहीं थे। धीरे-धीरे मैंने फिर वे सब किताबें उठाकर ठीक जगह पर रख दीं और निश्चय कर लिया कि अब मैं इन किताबोंको कभी हाथमें न लूँगा।

मैं चुपचाप उस कमरेसे बाहर निकल गया।

× × × ×

अभी तक मेरे मनमें आशा लगी ही हुई है। मैं फिर लौट-कर तो अपने कमरेमें नहीं जाता, पर यही समझकर अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनको शान्त करनेका प्रयत्न करता हूँ कि केवल दो-चार दिन यहाँ रहकर ही मुझे यह नहीं समझना चाहिए कि इन पुस्तकोंसे मुझे पहलेका सा सुख नहीं मिलेगा। अभी बहुत समय बाकी है। धीरे-धीरे मेरा मन इन सब बातोंमें फिर लगने लगेगा।

मैं मिटेलसैटसे मिलनेके लिए बैरकमें चला गया। वहाँ हम लोग उसके कमरेमें जा बैठे। यहाँका वातावरण कुछ ऐसा है जिसे मैं पसन्द नहीं करता, पर हाँ जिससे मैं बहुत अच्छी तरह परिचित हूँ।

मिटेलसैटने बैठते ही मुझे एक ऐसी खबर सुनाई जिससे मेरे सारे शरीरमें बिजली दौड़ गई। उसने मुझे बतलाया कि कैन्टोरेकको भी युद्ध-क्षेत्रमें जानेकी आज्ञा मिली है।

मिटेलसैटने कुछ बढ़िया सिगार निकालकर मेरे सामने रखे और कहा कि जब मैं अस्पतालसे लौटकर यहाँ आया और मैंने यह खबर सुनी, तब मैं सीधा कैन्टोरेकके पास पहुँचा। उसने दोनों हाथ फैलाकर मेरा स्वागत किया और कुशल-समाचार पूछा। मैंने उससे कहा कि अब तुम सेनाके सैनिक हो। तुम्हें इस बातका सदा ध्यान रखना चाहिए कि जब तुम्हारे सामने तुम्हारा कोई बड़ा अफसर आवे, तब तुम्हें उसके सामने उठकर कायदेसे खड़े हो जाना चाहिए और अदबसे उसके साथ बातें करनी चाहिएँ।" तुमने उसका चेहरा तो देखा ही है कि कैसा चुकन्दर सा है। वह फिर पहलेकी तरह मुझसे बातें करना चाहता था, लेकिन मैंने उसे और भी फटकारा। इसपर उसने अपना सबसे बड़ा अस्त्र निकाला और मुझसे कहा—"आखिर तुम्हें इम्तहान तो देना ही होगा और तुम उसमें पास भी होना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही चाहते होगे। उस समय मुझसे तुम्हें बहुत कुछ सहायता मिलेगी।" वह मुझे फिर उन्हीं पिछली बातोंका ध्यान दिलाना चाहता था। इसपर मुझे बहुत क्रोध आया और मैंने उससे कहा—"दो बरस पहले तुम्हींने हम लोगोंको सेनामें भरती होनेका उपदेश किया था। हम लोगोंमें एक लड़का था जिसका नाम जोसेफ बेम था। वह सेनामें नहीं जाना चाहता था। साधारण अवस्थामें वह जिस समय युद्ध-क्षेत्रमें बुलाया जाता, उससे तीन महीने पहले ही वह मारा गया था; और इसका कारण यही था कि तुमने उसे बहुत कुछ उत्साहित करके सेनामें भेजा था। यदि तुम उसे उत्तेजित न करते तो वह अभी और कुछ दिनों तक जीता रहता। पर खैर; अब इन सब बातोंकी जरूरत नहीं है। इस समय जाओ, अपना काम करो। मैं फिर किसी समय तुमसे बातें करूँगा।" इसके बाद मैंने सबसे पहला काम यह किया कि मैं उसे गोदाममें ले गया और वहाँ मैंने उसे वरदी और सब जरूरी सामान दिलवा दिये। वह अभी थोड़ी देरमें यहाँ आता ही होगा। तुम उसे अच्छी तरह देखना।

हम लोग बाहर निकलकर उस मैदानमें पहुँचे जिसमें कवायद होती है। वहाँ सब सैनिक पहलेसे ही आकर खड़े थे। मिटेल-सैटने उन सबको कायदेसे खड़ा कराके उनका निरीक्षण किया।

उसी समय मुझे कैन्टोरेक दिखाई पड़ा। उसे देखकर मुझे बहुत हँसी आई, पर मैंने बहुत कठिनतासे अपने आपको सँभाला। वह पुराने ढंगका एक प्रकारका नीला कोट पहने था जिसका रंग बहुत कुछ उड़ गया था। उस कोटकी पीठपर और आस्तीनोंमें कई जगह काले रंगके बड़े-बड़े पैवन्द लगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुए थे। वह कोट किसी देवका मालूम होता था और उसके शरीरपर झूलकी तरह पड़ा हुआ था। उसका काला पुराना पायजामा कुछ छोटा पड़ता था और उसकी मोहरियाँ मुश्किलसे आधी पिंडली तक पहुँचती थीं। उसके बूट भी पुराने, भद्दे और बहुत बड़े थे और उनके बदलेमें टोपी बहुत छोटी थी जो हद्से ज्यादा मैली थी। वह टोपी एक छोटी सी डिबियाके समान जान पड़ती थी। मतलब यह कि उसकी सारी पोशाक बहुत ही बेढंगी और रद्दी थी।

मिटेलसैटने कैन्टोरेकके पास पहुँचकर और उसके सामने खड़े होकर कहा—क्योंजी कैन्टोरेक, क्या तुम अपने इन्हीं बटनोंको पालिश किया हुआ कहते हो? ऐसा मालूम होता है कि तुम कभी कुछ भी सीख न सकोगे। यह बात बहुत ही ना-मुनासिब है।

मिटलसैटने उसे जो यह फटकार सुनाई थी, उससे मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ। कैन्टोरेक भी ठीक इसी प्रकार मिटेलसैट पर बिगड़कर उससे कहा करता था—"यह बात बहुत ही ना-मुनासिब है।"

उसे और भी अधिक नीचा दिखानेके लिए मिटेलसैटने उससे कहा—जरा बोएचरकी तरफ देखो, तब तुम्हें मालूम होगा कि किस तरह सेनामें आकर सब बातें सीखी जाती हैं।

मैं इस समय जो दृश्य अपने सामने देख रहा था, उसपर मुझे जल्दी विश्वास ही नहीं होता था। ऐसा जान पड़ता था कि मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं। बोएचर भी उस समय वहीं मौजूद था। पहले वह हमारे स्कूलमें ऊपरी काम-धन्धा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनेवाला एक बहुत ही मामूली और छोटे दरजेका नौकर था; और वही बोएचर कैन्टोरेकके लिए आदर्श ठहराया गया था! उस समय कैन्टोरेकने इस तरह घूरकर मेरी तरफ देखा कि अगर उसका बस चलता तो शायद मुझे खा ही जाता। लेकिन मैंने इतने साधारण रूपसे उसकी ओर देखा कि मानों मेरी और उसकी कभीकी कोई जान ही पहचान नहीं है।

उस समय कैन्टोरेककी शक्ल और पोशाक दोनों ही देखनेके काबिल थीं। उसे देखते ही आपसे आप हँसी आती थी। यह वही कैन्टोरेक है जो किसी समय स्कूलमें बहुत शानसे कुरसी-पर बैठकर हम लोगोंपर रोब जमाया करता था और हम लोग डरते और काँपते हुए उसके सामने जाकर खड़े होते थे। जब हम लोग फ्रान्सीसी व्याकरणकी क्रियाओं आदिके सम्बन्धमें भूल करते थे, तब वह अपनी पेन्सिल हम लोगोंके बदनमें चुभाया करता था। यह बात केवल दो ही वर्ष पहलेकी थी। आज वही कैन्टोरेक अपने एक विद्यार्थीके सामने ऐसी दुर्दशामें और उपाहासास्पद रूपमें खड़ा था। उसे देखते ही आदमी समझ सकता था कि यह किसी प्रकार सैनिक होनेके योग्य नहीं है। स्कूलमें उसकी जो हालत थी, उसमें और इस समयकी हालतमें जमीन-आसमानका फरक था। मेरी समझमें ही नहीं आता था कि यदि वह फिर मुझसे वही पहलेकी तरह व्याकरण सम्बन्धी कोई प्रश्न कर बैठे तो मैं—एक पुराना सिपाही—उसके साथ किस तरह पेश आऊँगा।

मिटेलसैट उन सैनिकोंको ऐसे युद्धका अभ्यास करा रहा था जो प्रायः बहुत छोटे-छोटे दलोंमें सामना हो जाने पर हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करता है; और उसने कृपा करके कैन्टोरेकको एक छोटी टुकड़ीका नायक बना दिया था।

इस प्रकारकी लड़ाइयों और उनके अभ्यासका नियम यह है कि टुकड़ीका जो नायक होता है, उसे सदा अपनी टुकड़ीसे बीस कदम आगे रहना पड़ता है। जब बड़ा अफसर सब टुकड़ियोंको पीछे लौटकर तेजीके साथ चलनेकी आज्ञा देता है, तब उनके नायकोंकी बड़ी दुर्गति होती है। जब टुकड़ी पीछेकी ओर मुड़ती है, तब उसका नायक बीस कदम पीछे पड़ जाता है। पर नियमानुसार उसे अपनी टुकड़ीसे बीस कदम आगे रहना चाहिए, इसलिए उसे दौड़कर अपनी टुकड़ीसे बीस कदम आगे पहुँचना पड़ता है। इस प्रकार नायकको चालिस कदम बहुत तेजीके साथ चलकर अपने नियत स्थानपर पहुँचना पड़ता है। ज्यों ही कैन्टोरेक चालिस कदम तेजीके साथ चलकर अपनी टुकड़ीके आगे पहुँचता था, त्यों ही उसकी टुकड़ीको पीछेकी ओर मुड़नेकी आज्ञा मिलती थी जिससे कैन्टोरेकको फिर उसी तरह तेजीके साथ चालिस कदम चलकर टुकड़ीके आगे पहुँचना पड़ता था। मतलब यह कि टुकड़ीको तो सिर्फ पीछेकी ओर मुड़कर दस-पाँच कदम चलना पड़ता था और कैन्टोरेकको हर बार चालिस-पचास कदम चलना पड़ता था। इस तरह बार बार आगे जाने और पीछे आनेमें कैन्टोरकका भुरकुस निकल जाता था। हिम्मेलटोस भी अपनी टुकड़ियोंके नायकोंको इसी तरह परेशान किया करता था; और उसीसे मिटेलसैटने यह तरकीब सीखी थी जो वह इस समय कैन्टोरेकको तंग करनेके लिए काममें ला रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार मिटेलसैट एक इम्तहानमें फेल हो गया था। उस समय यदि कैन्टोरेक चाहता तो वह मिटेलसैटको दरजा चढ़ा सकता था। पर कैन्टोरेकने उसे दरजा नहीं चढ़ने दिया। अब मिटेलसैटको उसका बदला चुकानेका अच्छा मौका मिला था। इस मौकेपर अगर वह बदला न चुकाता तो बेवकूफ होता। मिटेलसैट समझता था कि आखिर तो मुझे युद्ध-क्षेत्रमें जाना ही पड़ेगा। इसलिए मुझे जो यह अवसर मिला है, उसका मुझे अच्छे से अच्छा उपयोग कर लेना चाहिए।

कैन्टोरेक जंगली सूअरोंकी तरह आगेसे पीछे और पीछेसे आगे दौड़ता फिरता था। थोड़ी देर बाद मिटेलसैटने इस लड़ाई का अभ्यास बन्द करा दिया और वह सैनिकोंको जमीनपर रेंगकर चलनेका अभ्यास कराने लगा। सैनिक-शिक्षाओंमें यह शिक्षा भी बहुत महत्वकी होती है।

अब सैनिक ढंगसे अपनी बन्दूक पीठपर लादे हुए कैन्टोरेक हम लोगोंके सामने रेतीली जमीनपर लेटकर हाथों और घुटनोंके बल इधर-उधर चलने लगा। उसी समय उसका साँस बहुत जोरोंसे चल रहा था। कैन्टोरेकको उत्साहित करनेके लिए मिटेलसैटने उससे कहा—"कैन्टोरेक, हम लोगोंके लिए यह एक बड़े सौभाग्यकी बात है कि हमने एक बड़े और महत्वपूर्ण युगमें जन्म लिया है। हम लोगोंको कमर कसकर कठिनाइयोंसे पार पाना चाहिए।" स्कूलमें हम लोगोंको उत्साहित करनेके लिए कैन्टोरेक ठीक यही बात, और वह भी ठीक इन्हीं शब्दोंमें, कहा करता था।

कैन्टोरेकका सारा शरीर पसीनेसे तर हो रहा था। उस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार रेंगनेमें किसी तरह उसके मुँहमें लकड़ीका एक छोटा टुकड़ा चला गया जो उसके दाँतोंमें फँस गया था। कैन्टोरेकने थूककर वह टुकड़ा मुँहसे बाहर निकाल फेंका।

मिटेलसैटने उसे और भी अधिक लज्जित करनेके लिए कहा—देखो कैन्टोरेक, छोटी-छोटी कठिनाइयोंको देखकर हमें अपना महान् उद्देश्य नहीं भूल जाना चाहिए।

जिस समय हम लोग स्कूलमें व्यायाम किया करते थे, उस समय कैन्टोरेक हम लोगोंको जिस प्रकार कई तरहकी कसरतें सिखलाया करता था, ठीक उसी प्रकार इस समय मिटेलसैट भी उसे पकड़ पकड़कर सिखलाने लगा; और कसरत सिखलानेके समय कैन्टोरेक जिस तरहकी बातें किया करता था, उसी तरहकी बातें मिटेलसैट भी इस समय करने लगा। इस काममें मिटेल-सैटने कैन्टोरेककी उस समयकी पूरी पूरी नकल उतारकर रख दी। साधारण अवस्थामें इस प्रकारका व्यवहार देखकर कैन्टोरेक मारे क्रोधके पागल हो जाता। पर इस समय वह बेचारा बिलकुल बेवस था और कुछ कर ही नहीं सकता था; इसलिए उसे चुपचाप सब कुछ सुनना और सहना पड़ रहा था।

कुछ देर बाद मिटेलसैटने कैन्टोरेक और बोएचरको आज्ञा दी कि तुम दोनों मिलकर यह ठेला गाड़ी यहाँसे अमुक स्थान पर ले जाओ। दोनों उस ठेलेको मिलकर ढकेलने लगे। कैन्टोरेक मारे क्रोधके सिर झुकाए हुए था। पर मजदूर बोएचर यह समझकर प्रसन्न था कि मुझे अपेक्षाकृत हलका काम मिला है; और कैन्टोरेककी अपेक्षा उसके लिए वह अवश्य ही बहुत हलका काम था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह ठेला गाड़ी रोटियाँ लानेकी थी; और सैनिकोंके लिए जिस स्थानपर रोटियाँ बनती थीं, वह स्थान वहाँसे बहुत दूर और नगरके दूसरे सिरेपर था। इन दोनोंको यह ठेला वहीं ले जाने और वहाँसे रोटियाँ लादकर लानेकी आज्ञा मिली थी।

मिटेलसैटने मुझसे धीरेसे कहा—ये दोनों आदमी इस प्रकार कई बार वहाँ जाकर रोटियाँ ले आये हैं। अब लोगोंने कैन्टोरेक-को अच्छी तरह पहचान लिया है और वे उसे इस प्रकार ठेला ढकेलते हुए देखनेके लिए रास्तेमें इसके आसरे खड़े रहते हैं।

मैं—वाह! तुमने भी खूब दिल्लगी खड़ी की है। पर क्या अभी तक इसने तुम्हारी इन सब बातोंके लिए बड़े अफसरोंके पास कोई सिकायत नहीं पहुँचाई?

मिटेल०—नहीं, उसने अपनी ओरसे प्रयत्न अवश्य किया था। पर जब उसने कमांडिंग अफसरके पास जाकर उसे यह सारा किस्सा सुनाया, तब वह बहुत जोरसे ठठाकर हँस पड़ा। भला उसके पास ऐसे लोगोंकी शिकायतें सुननेका समय ही कहाँ है! इसके सिवा कमांडिंग अफसरकी लड़कीके साथ मेरा प्रेम भी तो है।

मैं—वह तुम्हें इम्तहानमें पास न होने देगा।

मिटेलसैटने बहुत ही शान्त भावसे कहा—मुझे इसकी जरा भी परवाह नहीं है। उसकी शिकायतका इसलिए और भी कोई नतीजा नहीं हुआ कि मैंने अफसरको समझा दिया कि मैंने तो इसे अपेक्षाकृत और भी हलका काम दिया है; और नहीं तो यदि मैं चाहता तो और भी कड़ा काम दे सकता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं—लेकिन क्या तुम इसे अक्ल सिखाकर ठीक रास्ते पर नहीं ला सके ?

मिटेल०—वह अव्वल दरजेका गधा है। और फिर मैं उसके साथ इतनी सिर-पच्ची भी तो नहीं कर सकता।

मिटेलसैटके इस उत्तरमें बहुत कुछ उपेक्षाका भाव था।

× × × ×

आखिर छुट्टी क्या है ? मेरी समझमें तो छुट्टी एक ऐसा विश्राम है जिसके बाद फिर वही पहला काम करना और भी खलता है। मेरी छुट्टीके दिन पूरे होना चाहते हैं, इसलिए अभीसे घरके लोगोंका भावी वियोग मुझे चिन्तित करने लगा है। मेरी माँ रोज एक एक दिन गिनती है और नित्य सवेरे मैं देखता हूँ कि वह बहुत ही उदास रहती है। उसने मेरा बिस्तर और सामान आदि उठाकर छिपा दिया है। वह उन सब चीजोंको देखना भी पसन्द नहीं करती। वे सब चीजें देखनेसे उसे दुःख होता है।

यदि मनुष्य किसी दूसरे काममें मन लगाये रहे तो उसे भविष्यकी आशंका चिन्तित नहीं करती। इसलिए मैं अपनी बहनके साथ कसाईखानेमें सेर आध सेर हड्डियाँ लानेके लिए चला गया। आजकल यहाँ लोग इन हड्डियोंको ही गनीमत समझते हैं और इनके लिए सवेरेसे ही कसाईखानेके दरवाजे पर जाकर खड़े रहते हैं। उनमें से कइयोंको तो खड़े-खड़े गश आ जाता है।

आज हम लोगोंकी तकदीर अच्छी नहीं थी। कोई तीन घण्टे तक प्रतीक्षा करनेके उपरान्त सब लोगोंको बैरंग लौटना पड़ा। आज हड्डियाँ निकाली ही नहीं गई थीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँ लोगोंको खानेकी कोई अच्छी चीज नहीं मिलती; और जो चीज मिलती भी है, वह पूरी और खाने भरको नहीं मिलती। खाने-पीनेका सारे देशको बहुत कष्ट है। पर मुझे सैनिक भोजनागारसे नित्य यथेष्ट भोजन मिल जाता है। मैं वह सब सामान घर ले आता हूँ, इसलिए हम लोगोंको खाने-पीनेका उतना कष्ट नहीं होता।

दिन बराबर और भी दुःखद होते जाते हैं और मेरी माताकी आँखोंसे दिन पर दिन अधिक कष्ट और चिन्ता झलकती है। अब मेरे यहाँसे जानेमें केवल चार दिन बाकी हैं, इसी लिए मैंने निश्चय किया कि चलकर कैमेरिककी माँसे अवश्य भेंट कर लेनी चाहिए।

× × × ×

कैमेरिककी माँकी अवस्थाका वर्णन करना मेरी सामर्थ्यसे बाहर है। उसका रोना और चिल्लाना सुनकर पत्थरका कलेजा भी पिघल जाता। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गई थीं। वह बीच-बीचमें कहती जाती थी—हाय, मेरा बेटा कहाँ चला गया! अरे वह कब मरा? उसे क्या हो गया था? वह कैसे मरा? क्या मरनेके समय तुम लोग उसके पास नहीं थे? क्या उसे कोई बचा न सका? हाय, अब मैं क्या करूँ। आदि आदि।

मैंने उससे कह दिया कि कैमेरिकको कलेजेमें गोली लगी थी और वह तुरन्त ही मर गया था। उसने मेरी ओर इस प्रकार देखा, मानों उसे मेरी बात पर विश्वास ही नहीं होता था। वह बोली—तुम झूठ बोलते हो। मैं सब जानती हूँ। मैं समझती हूँ कि उसके प्राण बहुत ही कष्टसे निकले थे। मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रातके समय सोये-सोये उसके रोने और चिल्लानेकी आवाज सुनाई पड़ती थी। मेरा मन कहता था कि वह बहुत कष्ट में है। तुम मुझे सच बतलाओ कि उसे क्या हुआ था।

मैं—मैं जो कुछ कहता हूँ, वह बिलकुल ठीक है। जिस समय वह मरा था, उस समय मैं उसके पास ही था। उसे गोली लगी और वह तुरन्त मर गया।

पर फिर भी मुझसे असल हाल जाननेके लिए वह मुझे समझाती हुई बोली—नहीं बेटा, तुम मुझे ठीक ठीक बतला दो कि उसे क्या हुआ था और वह कैसे मरा था। तुम मुझे ठीक बात नहीं बतला रहे हो। तुम समझते हो कि ठीक बात बतलाने से मुझे कष्ट होगा। पर मुझे तो तुम्हारे ठीक बात न बतलानेसे ही बहुत अधिक कष्ट हो रहा है। मैं असल हाल जानना चाहती हूँ। यदि उसके प्राण बहुत अधिक कष्टसे निकले हों तो भी तुम मुझे ठीक-ठीक बतला दो। इसीसे मेरे मनको बहुत कुछ शान्ति हो जायगी। और यदि तुम ठीक बात न बतलाओगे तो मुझे बहुत अधिक कष्ट होगा।

पर मैंने भी निश्चय कर लिया था कि उसे ठीक बात नहीं बतलाऊँगा। मुझे उसकी अवस्था पर अवश्य दया आती थी, पर फिर भी इस समय वह जिस प्रकार सच बात जाननेके लिए मुझसे आग्रह कर रही थी, वह मुझे बिलकुल मूर्खतापूर्ण जान पड़ता था। मेरी समझमें ही नहीं आता था कि वह सच बात जाननेके लिए इतनी अधिक उत्सुक क्यों हो रही है। कैमेरिक तो मर ही गया है। अब चाहे इस बुढ़ियाको ठीक पता लगे या गलत, वह तो अब किसी प्रकार लौटकर इसके पास आ ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता। भला उसकी चिन्ता मेरी समझमें क्यों आने लगी थी। जिस आदमीने सैंकड़ों-हजारों आदमियोंको अनेक प्रकारके कष्ट भोगकर मरते हुए देखा हो, वह कैसे समझ सकता है कि एक आदमीके मरने पर इतना रंज कोई क्यों करता है। इसलिए मैंने कुछ अधीर होकर कहा—वह तुरन्त ही मर गया था। मरते समय उसे कोई कष्ट नहीं हुआ था। उसका मुख बहुत ही शान्त था।

कुछ देर तक चुप रहनेके बाद वह बोली—क्या तुम यह बात कसम खाकर कह सकते हो?

मैं—हाँ, जरूर कह सकता हूँ।

वह—क्या तुम ईमानकी कसम खाकर यह बात कह सकता हो?

हे ईश्वर, भला अब मेरा धर्म और ईमान बच ही कहाँ गया था जिसकी मैं कसम खाता! सेनामें पहुँचते ही धर्म और ईमान सब बहुत जल्दी गायब हो जाते हैं।

मैं—हाँ हाँ, वह तुरन्त ही मर गया था।

वह—तुम यह कसम खाओ कि अगर यह बात झूठ हो तो मैं मर जाऊँ।

मैं—मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अगर वह तुरन्त ही न मर गया हो तो मैं मर जाऊँ।

इस तरहकी कसमें खाना मेरे लिए कोई बात ही नहीं थी। मुझसे जिस बातके लिए कहा जाता, मैं वही बात झूठी कसम खाकर कह सकता था। लेकिन फिर भी मेरे कसम खानेसे उसे मेरी बातपर विश्वास हो गया। मैं उससे कह बैठा था कि वह तुरन्त ही मर गया था, इसलिए मैंने उसके मरनेके सम्बन्धमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने मनसे एक किस्सा गढ़ लिया था और वही किस्सा उसे सुना दिया था। अब उसपर उसे विश्वास भी हो गया। पर वह बराबर रोती ही रही।

जब मैं वहाँसे चलने लगा, तब उसने मेरा सिर चूम लिया और कैमेरिककी एक तस्वीर मुझे दी। उस तस्वीरमें वह रंगरूटोंकी सी पोशाक पहने एक मामूली टेबुलके सहारे खड़ा था। उसके पीछे एक परदा टँगा था जिसपर जंगलका दृश्य अंकित था और टेबुल पर शराबकी एक बोतल रखी हुई थी।

× × × ×

आज घरपर मेरी अन्तिम सन्ध्या है। सभी लोग चुप हैं। किसीके मुँहसे कोई बात ही नहीं निकलती। मैं नियमित समयसे कुछ पहले ही अपने बिस्तर पर जा लेटा और तकियेसे मुँह छिपाकर पड़ गया। कौन कह सकता था कि अब फिर भी मुझे कभी इस तरह ऐसे अच्छे बिस्तर पर और परोंसे भरे हुए तकिये पर सोना नसीब होगा!

कुछ अधिक रात बीत जानेपर मेरी माँ मेरे कमरेमें आई। वह समझती थी कि मैं सो गया हूँ। मैं भी सोनेका बहाना करके उसी तरह पड़ा रहा। उस समय मेरे लिए उठकर बैठना और किसीसे बातें करना बहुत ही कठिन था।

यद्यपि उस समय माँको बहुत पीड़ा हो रही थी और वह बीच-बीचमें उस पीड़ासे कराहती भी थी, तो भी वह बहुत देर तक मेरे पास बैठी रही। अन्तमें मुझसे नहीं रहा गया और मैं इस प्रकार उठ बैठा, मानों अभी मेरी नींद खुली है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उठते ही माँसे कहा—माँ तुम यहाँ क्यों बैठी हो? जाओ, सो रहो। तुम्हें सरदी हो जायगी।

माँ—बेटा, तुम्हारे चले जाने पर सोनेका बहुत समय मिलेगा।

मैं—तुम मेरे लिए चिन्ता न करो। मैं यहाँसे सीधा युद्ध-क्षेत्रमें नहीं जाऊँगा। मुझे पहले तो चार हफ्ते तक वहीं रहना पड़ेगा, जहाँ नये सैनिकोंको शिक्षा दी जाती है। मैं तो शायद वहाँसे हर रविवारको यहाँ आ भी सकूँगा।

कुछ देरतक चुप रहनेके वाद उसने धीरेसे पूछा—क्या तुम्हें युद्ध-क्षेत्रमें बहुत भय लगता है?

मैं—नहीं माँ, बिलकुल नहीं।

माँ—देखो, मैं तुम्हें एक बात बतला देती हूँ। तुम फ्रान्सकी औरतोंसे बहुत होशियार रहना। वह बहुत खराब होती हैं।

वह बेचारी अभी तक मुझे बच्चा ही समझती थी। और उसका मुझे बच्चा समझना वाजिब भी था। मैं अभी तक उसकी गोदमें सिर रखकर सो सकता था। मैं कैसे बलवान् रह सकता था और अपने मन पर कैसे वश रख सकता था? मैं अब भी उसकी गोदमें सिर रखकर रोना चाहता था। अब भी मेरी इस प्रकार रोनेकी इच्छा होती थी और मैं चाहता था कि कोई मुझे ढारस दे। यद्यपि मैं बिलकुल बच्चा नहीं था, तो भी बच्चोंसे कुछ ही बड़ा था। मेरे घरमें अब तक मेरे वचपनके बहुत से कपड़े पड़े थे। अभी मेरा बचपन बीते हुए ही कितने दिन थे?

मैंने बहुत ही शान्त भावसे कहा—माँ, जहाँ हम लोग रहते हैं, वहाँ तो औरतोंका नाम भी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ—और देखो पाल, लड़ाईके मैदानमें भी बहुत होशियारी के साथ रहना।

उसकी यह बात सुनकर मेरी ऐसी इच्छा हुई कि उसे गोदमें लेकर उसके साथ ही मर जाऊँ। तो भी मैंने उसे सन्तुष्ट करनेके लिए कहा—हाँ माँ, मैं बहुत होशियारी से रहूँगा।

माँ—बेटा, मैं तुम्हारे लिए नित्य ईश्वरसे प्रार्थना किया करूँगी।

यदि मेरा वश चलता तो मैं फिर पहले की तरह बच्चा हो जाता और उस पुरानी अवस्थामें पहुँच जाता जिसमें मुझे या मेरी माता को इस प्रकारकी कोई चिन्ता ही न रह जाती।

माँ—शायद वहाँ तुम्हें कोई ऐसा काम मिल जायगा जिसमें जानकी ज्यादा जोखिम न हो।

मैं—हाँ, हो सकता है कि मुझे भोजनालयमें ही कोई काम मिल जाय। थोड़ी सी कोशिश करनेसे ही मुझे वह काम मिल सकता है।

माँ—तब तो तुम जरूर जाते ही इस बातका प्रयत्न करना। यदि लोग कुछ कहें भी तो............।

मैं—नहीं माँ, मैं किसीके कहने-सुननेकी कोई परवा थोड़े ही करता हूँ।

माँने ठंढी साँस ली। अँधेरेमें उसका गोरा चेहरा चमक रहा था।

थोड़ी देर बाद मैं बोला—अच्छा माँ, अब तुम जाकर सो रहो; नहीं तो तुम्हारी तबीयत और भी खराब हो जायगी।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने उठकर उसके कन्धों पर एक चादर ओढ़ा दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह मेरी बाँहका सहारा लगाकर बैठ गई। उस समय उसे बहुत पीड़ा हो रही थी। इसलिए मैं उसे सहारेसे वहाँसे उठाकर उसके कमरेमें ले गया और वहीं उसके पास कुछ देर तक बैठा रहा।

मैं—अबकी जब मैं यहाँ आऊँगा, उससे पहले ही तुम बिलकुल अच्छी हो जाओगी।

माँ—हाँ हाँ बेटा, मैं अच्छी हो जाऊँगी।

मैं—तुम मेरे लिए वहाँ खाने-पीनेकी चीजें मत भेजा करो। वहाँ हम लोगोंको खूब भर-पेट खानेको मिलता है। यहाँ जो चीजें मिला करें, वह तुम्हीं लोग खा-पी लिया करो।

मेरी माँ मुझे जितना चाहती थी, उतना संसारमें और किसी को नहीं चाहती थी। इस समय वह बहुत ही दुःखी और लाचार होकर पड़ी थी। जब मैं वहाँ से उठकर चलनेको तैयार हुआ, तब उसने जल्दीसे कहा—बेटा, मैंने तुम्हारे लिए घुटनों तकके दो पाजामे तैयार कर रखे हैं। उनसे तुम्हें बहुत गरमाहट रहेगी। उन्हें अपने सामान के साथ जरूर बाँध लेना। देखो भूल न जाना।

मुझे मनमें बहुत अधिक दुःख हुआ। मैं समझता था कि वे दोनों पाजामे उसने कितने कष्टसे तैयार किये होंगे और उनके लिए उसे कहाँ-कहाँ घूमकर और लोगोंसे माँग-जाँचकर कपड़ा या उसका दाम लाना पड़ा होगा! भला इतना अधिक प्रेम करनेवाली माँको छोड़कर मैं कैसे यहाँसे जा सकता था! मेरे लिए माँसे बढ़कर और कौन ऐसा था जिसका मुझपर हक होता! मैंने सोचा था कि मैं तो युद्ध-क्षेत्रमें चला जाऊँगा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह यहाँ कष्टमें पड़ी रहेगी। हम दोनोंके ही मनमें कहनेकी बहुत सी बातें थीं, पर कोई कुछ भी नहीं कहता था। सबकी बातें मन-ही-मनमें दबी पड़ी थीं। मैंने माताके चरण छूए और उसने मुझे आशीर्वाद दिया। मैं उठकर वहाँसे चला आया।

मेरे कमरेमें अँधेरा था। मुझे एक ओर तो अपनी माँके साँस लेनेका शब्द और दूसरी ओर घड़ी की टिक टिक सुनाई पड़ती थी। खिड़कीके बाहर तेज हवा चल रही थी और वृक्षोंकी डालियोंकी खड़खड़ाहट सुनाई देती थी।

रास्तेमें मुझे उस गठरीसे ठोकर लगी जिसमें मेरा बिस्तर और असबाब बँधा था। मैंने सन्ध्याको ही अपना सब असबाब इसलिए बाँध रखा था कि सवेरा होते ही मुझे यहाँसे रवाना होना था।

मैं फिर उसी तरह तकिये पर सिर रखकर और नीचेकी ओर मुँह करके लेट गया। पलंगके लोहेके छड़ों को मैंने दोनों हाथोंसे खूब जोर से पकड़ लिया। मैं सोचने लगा कि मुझे यहाँ आना ही नहीं चाहिए था। जब मैं युद्ध-क्षेत्रमें रहता था, तब मुझे घरके लोगोंकी कभी कोई विशेष चिन्ता नहीं होती थी। कभी-कभी तो मैं यह भी सोचता था कि अब घरके लोगोंसे मेरी भेंट ही नहीं होगी। उस समय मैं सिपाही था। पर अब तो मैं मूर्त्तिमान कष्ट हो रहा था। स्वयं अपने लिए भी कष्ट था, माँके लिए भी कष्ट था और सबके लिए कष्ट था।

मैं सोचने लगा कि मुझे छुट्टी लेकर घर आना ही नहीं चाहिए था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आठवाँ परिच्छेद

सैनिक शिक्षाका शिविर मैं पहलेसे ही जानता था। वहीं हिम्मेलस्टोसने जैडनको वह शिक्षा दी थी और उस सैनिकके साथ सुलाया था जो रातके समय सोते-सोते पेशाब कर दिया करता था। पर अब यहाँके लोगोंको मैं बिलकुल नहीं जानता। पुराने सभी लोग यहाँसे चले गये हैं और उनकी जगह नये नये आदमी आ गये हैं। अब तो यहाँ शायद ही ऐसे दो चार आदमी हों जिन्हें मैं पहलेसे जानता होऊँ।

मैं यन्त्रकी तरह नित्यके नियमित कार्य करता हूँ। सन्ध्या को मैं प्रायः सैनिकोंके विश्रामागारमें जाता हूँ जहाँ बहुत से अखबार रखे रहते हैं। पर मैं उन अखबारोंको कभी पढ़ता नहीं। वहाँ एक पियानो भी रहता है। वह मैं अवश्य बजाया करता हूँ। वहाँ सैनिकोंका ऊपरी काम-धन्धा करनेके लिए दो स्त्रियाँ रहती हैं जिनमेंसे एक युवती है।

इस शिविरके चारो ओर काँटेदार तारोंकी बहुत ऊँची बाढ़ लगी है। यदि विश्रामागारसे लौटते समय किसीको रात हो जाय तो उसे शिविरमें प्रवेश करनेके लिए अपना पास दिखलाना पड़ता है। पर जिन लोगोंकी पहरेदारसे अच्छी जान-पहचान होती है, वे विना पास दिखलाये भी सहजमें यहाँ आ सकते हैं।

पास ही बहुत से वृक्ष हैं जिनके नीचे हम लोग दिनके समय सैनिक व्यायाम करते हैं और युद्ध सम्बन्धी कई प्रकारकी शिक्षाएँ पाते हैं। यदि मनुष्य अधिक उत्तमतापूर्वक समय बितानेकी आकांक्षा न रखता हो तो वह यहाँके परिश्रमको अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहन कर सकता है। हम लोग दौड़कर आगे बढ़ते हैं और तब जमीन पर लेट जाते हैं। हम लोगोंके तेज चलनेवाले साँससे जमीन परकी घास हिलती है। यहाँका बालू बहुत साफ है; और जब हम लोग जमीन पर लेटकर उसे बहुत पाससे देखते हैं, तब ऐसा जान पड़ता है कि मानों वह किसी प्रयोगशालामें बने हुए स्फटिकके बहुत ही छोटे-छोटे लाखों-करोड़ों टुकड़ोंका समूह है। वह बालू मानों हम लोगोंसे कहता है कि आओ और अपने हाथ हममें डालो।

पर इनसे भी अधिक सुन्दर यहाँकी वृक्षावली है। इसे हम छोटा-मोटा उपवन कह सकते हैं। कई वृक्ष ऐसे हैं जिनके पत्तोंका रंग क्षण-क्षण पर बदलता रहता है। उनकी डालियों और पत्तियोंका रंग ही कुछ ऐसा है जो उनके हिलने पर बराबर नया रूप धारण करता रहता है। कभी वह नीला, कभी हरा और कभी काला जान पड़ता है। उन डालियों और पत्तियोंकी छाया भूत-प्रेतोंकी तरह इधरसे उधर चलती हुई जान पड़ती है। कभी तो हवाके झोंकेसे वे डालियाँ बिलकुल झुक जाती हैं और कभी फिर तनकर खड़ी हो जाती हैं।

इन वृक्षोंके बीचसे छनकर जो कोमल प्रकाश आता है और उसके साथ छाया जो क्रीड़ा करती है, उसे देखकर कभी-कभी तो मैं इतना मुग्ध हो जाता हूँ कि मुझे अपने अफसरकी कवायद सम्बन्धी आज्ञाएँ भी नहीं सुनाई पड़तीं। प्रकृतिका निरीक्षण मनुष्य एकान्तमें ही कर सकता है और तभी वह उससे प्रेम करना भी सीखता है। यहाँ न तो मेरे साथियोंकी संख्या ही अधिक है और न मैं लोगोंका साथ करना ही पसन्द करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोगोंमें परस्पर बहुत ही थोड़ा परिचय है, इसलिए हम लोग आपसमें कभी-कभी मामूली मजाक कर लेते हैं और या सन्ध्याको ताश आदि खेल लेते हैं। बस इससे अधिक और कुछ नहीं।

हम लोगोंके पास ही एक शिविर है जिसमें लड़ाईके रूसी कैदी रखे जाते हैं। यद्यपि हमारे और उस शिविरके बीचमें काँटेदार तार लगे हैं, तो भी कैदी प्रायः उधरसे इधर आ जाया करते हैं। यद्यपि उन कैदियोंमें से अधिकांश बड़ी-बड़ी उम्रके और बड़ी-बड़ी दाढ़ियोंवाले हैं, तो भी वे बहुत ही डरे हुए से जान पड़ते हैं। वे बहुत ही दब्बू हैं और उनमें साहस या उत्साहका नाम भी नहीं रह गया है।

वे हमारे शिविरमें आकर खाने-पीनेकी चीजोंके खाली टिन उठा ले जाते हैं। पाठक स्वयं ही समझ सकते हैं कि उन खाली टिनोंमें उन्हें खानेके लिए क्या मिलता होगा। हमारे यहाँ तो खुद ही खाने-पीनेकी चीजोंकी बहुत कमी है; और जो कुछ मिलता है, वह भी अच्छा नहीं होता। अक्सर पानीमें उबाले हुए चुकन्दर और गाजर के टुकड़े ही हमें मिलते हैं। अब आलूकी गिनती बढ़िया और चटपटी चीजोंमें होने लगी है। बहुत अच्छी चीजोंमें एक तरहका पुलाव होता है जिसमें चावलके साथ कीमा उबाला हुआ होता है। पर वह कीमा या मांसके कूटे हुए टुकड़े इतने छोटे होते हैं कि चावलोंमें से उन्हें ढूँढ निकालना सहज काम नहीं है।

तो भी यहाँ खाने-पीनेकी जो चीज आती है, वह तुरन्त पेटमें चली जाती है। यदि कोई बहुत बड़ा शौकीन हो और वह ऐसी रद्दी चीजें न खाना चाहता हो तो उसका बोझ हलका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनेके लिए उसके आस-पास बहुत से लोग खड़े रहते हैं। इसलिए जो कैदी हमारे यहाँ खाने-पीनेकी चीजोंकी तलाशमें आते हैं, उन्हें कभी तो गाजरके बहुत छोटे-छोटे टुकड़े, कभी रोटियोंके ऊपरी छिलके और कभी इसी तरह की और फेंकी हुई चीजें मिल जाती हैं।

कैदी यही गन्दी और रद्दी चीजें पानेके लालचसे हम लोगोंके पास आते हैं। वे भुक्खड़ोंकी तरह इन चीजों पर टूटते हैं और उन्हें अपने कपड़ोंमें छिपाकर ले जाते हैं।

देखनेमें यह बात बहुत ही अद्भुत और आश्चर्यजनक जान पड़ती है कि जो लोग हमें अपना घोर शत्रु समझते हैं, वे हमारे इतने पास तक आ जाते हैं। उनकी आकृति देखकर मनुष्य सोच-विचार में पड़ जाता है। उनके चेहरेसे ही जान पड़ता है कि वे बहुत ही सीधे-सादे और ईमानदार किसान हैं। चौड़ा माथा, चौड़ी नाक, चौड़ा मुँह, चौड़े हाथ और सिर पर घने बाल।

ऐसे लोगोंको तो खेतमें रहकर जमीन जोतनी-बोनी चाहिए, फसल काटनी चाहिए और फल आदि चुनने चाहिएँ। वे वैसे ही शुद्ध-हृदय और दयालु जान पड़ते हैं जैसे हमारे यहाँ के किसान।

जब वे आकर इधर-उधर खाने-पीनेकी चीजें भीख माँगते फिरते हैं, तब उन्हें देखकर मनमें बहुत ही कष्ट होता है। उन्हें खाने-पीनेको बहुत ही कम मिलता है, अतः वे स्वभावतः बहुत ही दुर्बल और अकाल-पीड़ित से जान पड़ते हैं। उक्त कैदियोंका तो जिक्र ही क्या, यहाँ खुद हम्हीं लोगोंको बहुत दिनोंसे काफी खाना नहीं मिल रहा है। उनमें से बहुतोंको अतिसार हो गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और कुछको तो रक्तातिसार भी जान पड़ता है, क्योंकि उनके पाजामोंमें पीछेकी ओर खूनकी धारियाँ दिखाई पड़ती हैं। उनकी पीठ और कमर झुक गई है। जिस समय वे हाथ फैलाकर भीख माँगते हैं, उस समय उनका सिर और गरदन झुकी रहती है। वे जरमन भाषाके बहुत ही थोड़े शब्द जानते हैं, पर उनका स्वर बहुत ही कोमल और संगीतमय होता है।

कभी-कभी हम लोगोंमें कुछ ऐसे भी निकल आते हैं जो उनको ठोकरें भी लगाते हैं। वे ठोकर खाकर जमीन पर गिर पड़ते हैं। पर ऐसी घटनाएँ अधिक नहीं होतीं। हममें अधिकांश ऐसे ही हैं जो उन्हें किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुँचाते—केवल उनकी उपेक्षा करते हैं। हाँ जब इस तरहके बहुत से भिखमंगे आ जाते हैं और बहुत तंग करने लगते हैं, तब कभी-कभी उन्हें ठोकरें भी मिलती हैं। उस समय उनके नेत्र असह्य वेदना और ग्लानिके आगार हो जाते हैं।

सन्ध्याके समय वे हम लोगोंके शिविरमें मानों व्यापार करने आते हैं। जिसके पास जो कुछ होता है, वह दे जाता है और उसके बदलेमें रोटियोंके टुकड़े ले जाता है। इस काममें उन्हें प्रायः अच्छी सफलता होती है, क्योंकि उनके पास बहुत अच्छे बूट होते हैं और हम लोगोंके बूट बहुत ही खराब हैं। उनके बूटोंका चमड़ा बहुत ही कोमल होता है। हमारे साथियोंमें बहुत से ऐसे किसान हैं जिनके घरसे कभी-कभी खाने-पीने की कुछ अच्छी चीजें आ जाती हैं। प्रायः वही किसान इन कैदियों को रोटियाँ आदि देकर उनसे बूट ले लेते हैं। एक जोड़ी बूटके लिए प्रायः दो या तीन बड़ी रोटियाँ देनी पड़ती हैं या एक रोटी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के साथ कुछ तरकारी, शोरबा या चटनी आदि भी दे दी जाती है।

पर अब तो उन रूसी कैदियोंके पास कोई चीज रह ही नहीं गई है। उनकी प्रायः सभी चीजें हम लोगोंके पास आ गई हैं। अब तो वे बहुत ही फटे-पुराने कपड़े पहने रहते हैं और उनके पास कुछ भी नहीं होता। हाँ तोपके गोलोंके टुकड़ों और ताँबेके बन्दों आदिसे वे कई तरहकी चीजें बनाते हैं और वही चीजें लाकर उनके बदलेमें खाने-पीनेकी कुछ चीजें ले जाते हैं। उन चीजोंके बनानेमें तो उन्हें बहुत कष्ट उठाना और बहुत समय लगाना पड़ता है और उनके बदलेमें उन्हें रोटीका एकाध टुकड़ा ही मिलता है। हमारी तरफके किसान ऐसा सौदा करनेमें बहुत होशियार हैं। वे रोटी का टुकड़ा हाथमें लेकर तब तक रूसी कैदियोंको बहुत पाससे दिखाते रहते हैं, जब तक वे उसे पानेके लिए नितान्त विकल नहीं हो जाते। और तब उस विकलता की दशामें जो कुछ उनके पास होता है, वह सब देकर वे रोटीका वह टुकड़ा लेते हैं। रूसियोंसे उनकी चीजें लेकर हमारे किसान उसे कागज या कपड़ेमें बहुत अच्छी तरह लपेटकर रख लेते हैं और तब बहुत इतमीनानके साथ जेबसे छुरी निकालकर और रोटियोंके टुकड़े काटकर शोरबे आदिके साथ खाने बैठते हैं। उस समय भी बहुत से कैदी लालच भरी निगाहोंसे उनकी ओर देखते रहते हैं। इन लोगोंको प्रायः इस प्रकार भोजन करते देखकर मनमें बहुत ही अधिक कष्ट होता है। जी चाहता है कि उनका सिर तोड़ दें। वे अपने पासकी चीज जल्दी दूसरेको देना जानते ही नहीं। हम लोग एक दूसरेका कष्ट कितना कम समझते हैं!

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे प्रायः इन रूसी कैदियों पर पहरा देनेका काम मिलता है। जब अँधेरेमें ये इधर-उधर चलते हैं, तब ऐसा जान पड़ता है कि मानों कोई भूत, प्रेत या छाया चल रही है। वे तारोंके बहुत ही पास आ जाते हैं और उनके बीचमेंसे मुँह निकालकर देखते हैं। प्रायः बहुत से कैदी एक साथ ही तारोंके पास आ खड़े होते हैं और जंगलकी तरफसे आनेवाली हवामें जोर जोरसे साँस लेते हैं।

वे लोग बहुत ही कम बातें करते हैं; और जब बोलते भी हैं, तब बहुत थोड़े शब्द बोलते हैं। वे आपसमें बहुत ही मनुष्यतापूर्ण और भाईचारेका बरताव करते हैं। मेरी समझमें तो यही आता है कि वे आपसमें जैसा सज्जनतापूर्ण व्यवहार करते हैं, वैसा व्यवहार हम लोग आपसमें नहीं करते। पर इसका कारण कदाचित् यही है कि वे अपने आपको हम लोगोंसे कहीं अधिक अभागा समझते हैं। जो हो, कमसे कम उनके लिए तो युद्धका अन्त हो गया है। लेकिन इस प्रकार अतिसारसे पीड़ित होकर जीवन बिताना अवश्य ही बहुत बुरा और असह्य है।

जो सैनिक उन पर पहरा देते हैं, उनका कहना है कि पहले इन लोगोंमें बहुत कुछ जीवन दिखाई पड़ता था। वे आपसमें प्रायः लड़ा झगड़ा करते थे और उनमें अक्सर घूँसों और छुरेबाजी तककी नौबत आ जाती थी। पर अब वे लोग बहुत ही दुर्बल और निर्जीव हो गये हैं। अब उनमें से बहुतोंने हस्त-क्रिया करना भी छोड़ दिया है और इसका कारण उनकी बहुत बढ़ी हुई दुर्बलता है। नहीं तो एक ऐसा समय भी था जब कि सभी रूसी कैदी यह कृत्य किया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत से कैदी एक पंक्तिमें तारोंके पास आकर खड़े रहते हैं। जब उनमेंसे कोई एक चला जाता है, तब दूसरा आकर उसकी जगह खड़ा हो जाता है। उनमें से अधिकांश बिलकुल मौन रहते हैं। कभी कभी कोई एकाध सिगरेट भी माँग बैठता है।

जब मैं पहरा देता हूँ, तब मुझे उनकी काली-काली शकलें दिखाई देती हैं। उनकी लम्बी दाढ़ियाँ हवामें हिलती रहती हैं। मैं उनके सम्बन्धमें इसके सिवा और कुछ नहीं जानता कि वे कैदी हैं; और इसी बातका ज्ञान मुझे सबसे अधिक कष्ट देता है। वे बिलकुल निरपराध हैं। यदि मैं उनका नाम-धाम, पता-ठिकाना आदि जानता होता तो सम्भवतः मेरे मनमें उनके प्रति और भी अधिक सहानुभूति उत्पन्न होती। पर इस समय मैं केवल यह समझता हूँ कि वे मनुष्य हैं, निरपराध हैं और बहुत अधिक कष्टमें पड़े हुए हैं। वे जीवनकी यातनाओं और मनुष्योंकी हृदय-हीनता के प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

किसीकी एक आज्ञा मात्रने ही इन बेचारे बेजबान आदमियोंको हमारा शत्रु बना दिया है और फिर वही आज्ञा इन्हें हमारा मित्र भी बना सकती है। एक टेबुल पर कुछ ऐसे आदमी बैठकर एक कागज पर दस्तखत कर देते हैं जिन्हें हम लोगोंमें से कोई नहीं जानता। उनके उस दस्तखत करनेका परिणाम यह होता है कि हत्याका जो अपराध सारे संसारमें बहुत ही भीषण माना जाता है और जिसके लिए साधारणतः लोगोंको प्राणदंड मिलता है, वही अपराध हम लोगोंका सबसे बड़ा उद्देश्य हो जाता है। ये लोग बहुत ही शान्त हैं और इनके चेहरे बच्चोंकी तरह भोले-भाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं; पर फिर भी ये जबरदस्ती हमारे शत्रु बना दिये गये हैं। मैं तो समझता हूँ कि ये लोग हमारे उतने बड़े शत्रु नहीं हैं, जितना बड़ा शत्रु कोई सैनिक अफसर किसी रंगरूटका होता है अथवा जितना बड़ा शत्रु कोई शिक्षक किसी विद्यार्थीका होता है। लेकिन फिर भी हम लोग आपसमें एक दूसरे पर बहुत ही स्वतन्त्रतापूर्वक गोलियाँ चलाते हैं।

मेरे मनमें बहुत बड़ा भय उत्पन्न हो गया है। अब मैं इस प्रकारके विचारोंको अपने मनमें और अधिक स्थान नहीं दे सकता। यदि मैं इन विचारोंको मनमें स्थान दूँ तो शायद मुझे बहुत बड़े गड्ढेमें गिरना पड़े। यह समय इस प्रकारकी बातोंके विचारका नहीं है। पर अभी मैं इन विचारोंका परित्याग नहीं करूँगा, बल्कि इन्हें अपने मनमें दबाये रखूँगा और तब तक इन्हें उभड़ने न दूँगा, जब तक युद्धका अन्त न हो जायगा। मेरा दिल जोरोंसे धड़कने लगा है। खाइयोंमें रहकर मैं सदा इसी बातपर विचार करता हूँ और इसी को मैंने अपने जीवनका सबसे बड़ा उद्देश्य बनाया है। मनुष्यके समस्त सुन्दर विचारोंका सर्वनाश और हत्या करनेवाले इस युद्धका अन्त करना ही मैंने अपने जीवनका उद्देश्य रखा है। इधर कई वर्षों तक मैंने जो परम घृणित और निन्दनीय जीवन व्यतीत किया है, उसके उपरान्त मेरे जीवनका तभी कुछ मूल्य होगा, जब मैं अपने इस उद्देश्यकी पूर्त्तिका कुछ प्रयत्न करूँगा।

मैंने अपने जेबसे सिगरेटोंका बक्स निकाला और प्रत्येक सिगरेटके दो-दो टुकड़े करके उन रूसियोंमें बाँट दिये। उन लोगोंने सिर झुकाकर मेरा अभिवादन किया और तब वे सिगरेट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जलाकर पीने लगे। अब प्रत्येक रूसीके चेहरे पर कुछ-कुछ लाली झलकने लगी। उन्हें इस प्रसन्नताकी अवस्थामें देखकर मुझे कुछ सुख हुआ। इस समय मानों वे चेहरे यह कह रहे थे कि हम उन देहाती अँधेरे झोंपड़ोंकी खिड़कियाँ हैं जिनके अन्दरके कमरे शान्तिसे भरे हुए हैं।

× × × ×

इस प्रकार धीरे-धीरे दिन बीत रहे हैं। आज सवेरे, जब कि कोहरा पड़ रहा था, एक और रूसी कैदी गाड़ा गया है। यहाँ करीब-करीब रोज ही एक रूसी कैदी मरता है। जिस समय वह कब्रमें गाड़ा गया था, उस समय भी मैं पहरे पर था। बाकी कैदी बारी-बारीसे शोकका गीत गा रहे थे। पर ऐसा जान पड़ता था कि उनके मुँह से आवाज ही नहीं निकल रही है। उनके शरीरमें प्राण ही नहीं थे; आवाज निकले तो कहाँ से निकले!

कब्रमें गाड़नेकी रस्म बहुत जल्दी अदा हो गई।

सन्ध्या समय वे लोग फिर तारकी बाढ़के पास आ खड़े हुए और जंगलकी तरफसे हवा आकर उनके चेहरों पर लगने लगी।

कुछ ऐसे रूसी कैदियोंके साथ मेरा परिचय हो गया है जो थोड़ी बहुत जरमन भाषा बोलना जानते हैं। उनमें एक गवैया भी है जो कहता है कि मैं पहले बरलिनमें वायोलिन बजाया करता था। जब उसे मालूम हुआ कि मुझे पियानो बजाना आता है, तब वह अपना वायोलिन उठा लाया और बजाने लगा। बाकी सब कैदी खम्भोंके साथ पीठ सटाकर जमीनपर बैठ गये। वह खड़ा होकर वायोलिन बजाने लगा। बीच-बीचमें वह मस्त हो जाता था और आँखें बन्द करके झूमने लगता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। लय पर उसका बाजा भी हिलता था और सिर भी। मेरी ओर देखकर वह कभी-कभी मुस्करा भी देता था।

वह प्रायः देहाती चीजें बजाता था। दूसरे कैदी उसके साथ गुनगुनाते जाते थे। पर गाने और बजाने दोनोंमें ही चरम सीमाकी निर्जीवता थी। हाँ बाजेका स्वर कुछ स्पष्ट था और सबसे निराला जान पड़ता था। थोड़ी देर बाद कैदियोंने गुन-गुनाना तो बन्द कर दिया, पर वह अपना वायोलिन बजाता रहा। रातके समय बाजेका वह स्वर बहुत ही करुणाजनक जान पड़ता था। यदि इस समय हम लोग किसी कमरेके अन्दर होते तो अच्छा होता। यहाँ मैदानमें तो वह स्वर सुनकर मनमें खेद ही उत्पन्न होता था।

× × × ×

अभी हालमें ही मुझे एक लम्बी छुट्टी मिल चुकी है, इसलिए आजकल मुझे एतवारको भी काम करना पड़ता है। जिस दिन मुझे लड़ाईके मैदानमें जाना था, उससे पहलेवाले एतवारको मेरे पिता और मेरी बड़ी बहन मुझसे मिलने आई थी। दिन भर हम लोग विश्रामागारमें बैठे हुए बातें करते रहे। और कहीं जाकर बैठनेकी अच्छी जगह नहीं थी। शिविरमें हम लोग बैठना नहीं चाहते थे। दोपहरके समय हम लोग कुछ दूर तक टहलने चले गये थे।

वह समय बहुत ही कष्टदायक था और बहुत कठिनतासे बीतता था। हम लोगोंकी समझमें ही नहीं आता था कि किस विषय पर बात-चीत करें, इसलिए मेरी माताकी बीमारीकी ही चर्चा होती रही। अब यह पूर्ण रूपसे निश्चित हो गया था कि उसे कैन्सर ही है। माँ अब तक अस्पतालमें भेजी जा चुकी थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और शीघ्र ही उसकी शस्त्र-चिकित्सा होनेको थी। डाक्टरोंको आशा थी कि वह अच्छी हो जायगी। कमसे कम वे लोग ऐसा कहते अवश्य थे। पर हम लोगोंने आज तक कभी यह नहीं सुना कि किसीका कैन्सर अच्छा हुआ।

मैंने पूछा—वह किस अस्पतालमें है?

पिताजीने उत्तर दिया—ल्इसा अस्पतालमें।

मैं—किस दरजेमें है?

पिताजी—तीसरे दरजेमें। पर अभी तब तक शस्त्र-चिकित्सा नहीं होगी, जब तक यह न मालूम हो जायगा कि उसमें कितना व्यय होगा। उसने स्वयं तीसरे दरजेमें रहनेकी इच्छा प्रकट की थी। उसका कहना था कि तीसरे दरजेमें अकेले नहीं रहना पड़ेगा, कुछ और साथी भी मिल जायँगे। और फिर तीसरे दरजेमें खर्च भी कम पड़ेगा।

मैं—वहाँ तो वह बहुत से साधारण रोगियोंके ही साथ होगी। और तो कुछ नहीं, पर यदि वहाँ उसके सोनेका ठीक इन्तजाम हो जाता तो फिर चिन्ताकी और कोई बात नहीं थी।

पिताजीने सिर हिला दिया। उनकी आकृतिसे बहुत अधिक खेद और चिन्ता प्रकट होती थी। मेरी माता आरम्भसे ही सदा बीमार रहा करती थी। यद्यपि इस बार वह बिलकुल लाचारीकी हालतमें अस्पताल गई थी, तो भी घर पर ही उसकी चिकित्सामें बहुत अधिक धन व्यय किया जा चुका था। पिताजीका तो सारा जीवन उसकी चिकित्सा आदिमें ही बीता था।

कुछ देर बाद पिताजीने कहा—बस अब तो किसी तरह यह मालूम हो जाय कि शस्त्र-चिकित्सामें कितना व्यय होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं—क्या यह बात आपने अभी तक नहीं पूछी ?

पिता—नहीं, मैं यह बात पूछ ही नहीं सकता था; क्योंकि मैंने सोचा कि कहीं यह बात पूछनेसे डाक्टर नाराज न हो जाय और बात बिगड़ न जाय। मैं तो सिर्फ यही चाहता हूँ कि किसी तरह उसकी शस्त्र-चिकित्सा हो जाय।

व्ययके सम्बन्धमें मुझे भी बहुत अधिक चिन्ता थी और ऐसे अवसरों पर हमारे सरीखे सभी निर्धनोंको चिन्ता हुआ करती है। गरीब लोग मारे डरके यह तो पूछ ही नहीं सकते कि ऐसे कामोंमें क्या व्यय होगा और मन-ही-मन उसकी चिन्ता करते रहते हैं। पर जो लोग धनवान होते हैं और जिन्हें धन सम्बन्धी कोई चिन्ता नहीं होती, वे ऐसी बातें पहलेसे ही तै कर लिया करते हैं। और उनसे रुपये-पैसेकी बात-चीत करनेमें डाक्टर लोग भी बुरा नहीं मानते। सब जगह सारी खराबी गरीबोंकी ही है।

पिता—शस्त्र-चिकित्साके उपरान्त मरहम-पट्टीमें भी बहुत अधिक व्यय होता है।

मैं—क्या उस कोशसे कुछ धन नहीं मिल सकता जो असमर्थोंकी सहायताके लिए है ?

पिता—तुम्हारी माता बहुत दिनोंसे बीमार है और ऐसे रोगियोंको उस कोशसे सहायता नहीं मिलती।

मैं—आपके पास कुछ रुपये हैं ?

पिताजीने सिर हिलाकर उत्तर दिया—नहीं, पर मैं उसके लिए कुछ अतिरिक्त काम कर सकता हूँ।

मैं पिताजीका मतलब समझ गया। अब उन्हें रोज रात बारह बजे तक खड़े रहकर कागज भाँजने पड़ेंगे, लेई लगानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ेगी और कटाई आदिका काम करना पड़ेगा। देशमें भोजनके लिए जो टिकट बँटते हैं, उनके बदलेमें वे रातके समय जो कुछ रूखा-सूखा मिलेगा, वही खा लेंगे और तब सिरका दर्द दूर करनेकी पुड़िया खाकर रातके बारह बजे तक काम करते रहेंगे।

पिताजी बहुत दुःखी से जान पड़ते थे, इसलिए उनका मन बहलानेके विचारसे मैंने उन्हें सिपाहियों और अफसरों आदिके कई मजेदार किस्से सुनाये और इसी तरहकी कुछ और बातें कहना आरम्भ किया।

इसके बाद सन्ध्याको पिताजी और बहन दोनोंको पहुँचानेके लिए मैं स्टेशन गया। चलते समय वे लोग मुझे कुछ थोड़ी सी चटनी और आलूकी कुछ चपातियाँ दे गये जो मेरी माताने मेरे लिए बनाई थीं।

जब वे लोग रेलपर सवार हो गये, तम मैं शिविरमें चला आया।

शिविरमें लौटकर मैंने उसी चटनीके साथ आलूकी कुछ चपातियाँ खाईं। पर मुझे उनमें कुछ स्वाद नहीं आता था, इसलिए मैंने वे सब चीजें बाहर ले जाकर उन रूसियोंको बाँटना चाहा। पर मुझे ध्यान आया कि ये चपातियाँ मेरी माँने स्वयं बनाई थीं और उसे गरम चूल्हेके सामने खड़े होकर इन्हें तैयार करनेमें बहुत कष्ट हुआ होगा। इसलिए मैंने लौटकर और सब चपातियाँ तो अपनी थैलीमें रख लीं और सिर्फ दो चपातियाँ रूसियोंको बाँट दीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवाँ परिच्छेद

हम लोग बराबर कई दिनोंसे सफर कर रहे हैं। अब फिर आसमानमें हवाई जहाज दिखाई पड़ने लगे हैं। जिन लाइनोंसे होकर युद्ध-सामग्री पहुँचाई जाती है, हम उन्हें भी पार करके आगे निकल गये हैं। अब चारों तरफ तोपें ही तोपें दिखाई देती हैं। हम लोग छोटी लाइनकी रेल गाड़ी पर सवार होकर और भी आगे बढ़े। युद्ध-क्षेत्रमें पहुँचकर मैं अपनी रेजिमेन्ट ढूँढ़ने लगा। उसका ठीक पता किसीको नहीं मालुम था। जहाँ जगह मिलती, वहीं मैं रातके समय पड़ रहता और जहाँ कुछ मिल जाता, वहीं खा-पी लेता था। कहीं मुझसे इधर जानेके लिए कहा जाता था और कहीं उधर जानेके लिए। मैं भी अपनी गठरी और बन्दूक लादे हुए सब जगह मारा मारा फिरता था।

जिस समय मैं अपनी रेजिमेन्टमें पहुँचा, उस समय वह अपने पहलेवाले स्थानमें नहीं थी। वहाँ पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि हम लोगोंको किसी एक स्थान पर स्थायी रूपसे रहनेकी आज्ञा नहीं है, बल्कि हमारी रेजिमेन्ट चलती-फिरती बना दी गई है। मतलब यह कि जहाँ लड़ाई बहुत ज्यादा हो और जहाँ ज्यादा आदमियोंकी जरूरत हो, वहीं हमारी रेजिमेन्ट भेज दी जाती है। यह बात मुझे कुछ अच्छी नहीं लगी। मैंने यह भी सुना कि हमारी रेजिमेन्टके बहुत से सिपाही मारे जा चुके हैं। मैंने कैजिन्स्की और क्रापका पता लगाना चाहा, पर कोई मुझे यह न बतला सका कि वे लोग कहाँ हैं।

फिर भी मैं बराबर इधर-उधर घूमकर उनका पता लगाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा। उस समय मेरे मनकी दशा कुछ और भी विलक्षण हो रही थी। मैं आज रातको यहाँ रहता, तो कल वहाँ। बड़ी कठिनतासे मुझे कुछ ठीक पता चला और दोपहरके समय मैंने अपनी रेजिमेन्टके कार्यालयमें पहुँचकर अपनी हाजिरी लिखाई।

उस समय सरजेन्ट-मेजरने मुझे वहीं रोक लिया, क्योंकि मेरी टुकड़ी दो दिनमें वहीं आने को थी। इसलिए मुझे उस टुकड़ीके पास भेजना व्यर्थ ही समझा गया।

सरजेन्ट-मेजरने पूछा—क्यों जी, तुम्हारी छुट्टी कैसी बीती? घर पर तो तुम बहुत आरामसे रहे होगे?

मैं—जी हाँ, कुछ तो आराम जरूर ही रहा।

सर०—हाँ, अगर आदमीको फिर लौटकर यहाँ न आना पड़े, तब तो घर पर समय बड़े आनन्दसे बीतता है। आधी छुट्टी तो प्राय: अच्छी तरह बीतती है और बाकी आधी लौटनेकी चिन्तामें ही व्यर्थ हो जाती है।

मैं दो दिन तक व्यर्थ इधर-उधर घूमता रहा। इसके बाद मेरी कम्पनी आई। जिस समय कम्पनी लौटकर आई, उस समय बहुत सवेरा था। उसमेंके सभी लोग बहुत थके-माँदे और परेशान थे और उनके शरीर तथा वस्त्र धूल और गर्दसे भरे हुए थे। कम्पनीके आते ही मैं उसकी ओर दौड़ पड़ा और अपने साथियोंको ढूँढ़ने लगा। मुझे जैडन, म्यूलर, कैजिन्स्की और क्राप चारो ही मिल गये। हम लोगोंने अपने अपने पुआलके गद्दे पास ही पास बिछा लिये। जब मैं उनकी ओर देखता था, तब मेरे दिल में न जाने क्यों कुछ बेचैनी सी होती थी; पर उस बेचैनीका कोई कारण समझमें नहीं आता था। मैं तुरन्त अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलूकी चपातियाँ और चटनीका डिब्बा उठा लाया। मेरी इच्छा थी कि वे लोग भी उसका स्वाद चखें।

ऊपर और नीचेकी दो चपातियाँ कुछ खराब हो गई थीं, तो भी ऐसी खराब नहीं हुई थीं कि खाई न जा सकतीं। वे दोनों चपातियाँ मैंने अपने लिए रख लीं और अच्छी तथा ताजी चपातियाँ कैजिन्स्की और क्रापको दे दीं।

कैजिन्स्की वह चपाती खाता हुआ पूछने लगा—ये चपातियाँ तुम्हारी माँने दी हैं?

मैंने सिर हिलाकर कहा—हाँ।

कैजि०—बहुत बढ़िया हैं। मैंने तो इनका स्वाद देखकर ही समझ लिया था कि ये तुम्हारी माँके हाथकी बनी हैं।

मुझे रुलाई सी आने लगी और मैंने चपने आपको बहुत मुश्किलोंसे सँभाला। लेकिन मैंने समझ लिया कि जल्दी ही मेरी तबीयत बिलकुल ठीक हो जायगी, क्योंकि कैजिन्स्की और क्राप तो मुझे मिल ही गये हैं। ये मेरे ऐसे साथी हैं जिनके साथ जंगलमें रहने पर भी मुझे घरका सा आनन्द आता है।

सोनेसे पहले क्रापने धीरेसे कहा—तुम बड़े भाग्यवान् हो। लोग कहते हैं कि अब हम लोग रूस जायँगे।

रूसका नाम सुनकर मुझे आश्चर्य सा हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि वहाँ कोई बड़ी लड़ाई नहीं हो रही है।

कुछ दूरी पर तोपें छूट रही थीं जिनकी गड़गड़ाहटसे हम लोगोंकी झोंपड़ियोंकी दीवारें हिल रही थीं।

× × × ×

ऊपरी तड़क-भड़क खूब बढ़ाई जा रही है। बराबर समय-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय पर हम लोगोंका निरीक्षण होता है। हम लोगोंकी सभी फटी-पुरानी चीजें बदली जा रही हैं और उनकी जगह नई और बढ़िया चीजें हमें मिल रही हैं। मुझे भी एक साफ कोट मिल गया है और कैजिन्स्की को तो सभी कपड़े नये मिले हैं। अफवाह फैली है कि जल्दी ही लड़ाई खतम हो जायगी। एक और अफवाह यह भी है कि हम लोग रूस भेजे जायँगे; और यही बात हम लोगोंको कुछ अधिक ठीक जान पड़ती है। पर यदि यही बात हो और रूस ही जाना हो तो इस नये साज-सामानकी क्या जरूरत है? अन्तमें असल बात खुल गई। मालूम हुआ कि कैसर हम लोगोंका निरीक्षण करनेके लिए आ रहे हैं; इसी लिए हम लोगोंकी सफाई पर इतनी ताकीद हो रही है।

यहाँ दिन-रात इतनी ज्यादा कवायद और इसी तरहकी दूसरी बातें होती हैं कि मानों हम लोग युद्ध-क्षेत्रमें नहीं हैं, बल्कि सैनिक शिक्षाके शिविरमें हैं। पर हम लोगोंको यह सब पालिश अच्छी नहीं लगती; और खास करके सब सामानोंसे लदकर कवायद और परेड करना तो हम लोगोंको और भी बुरा लगता है। साधारणतः सैनिक लोग तोपोंके सामने खड़े होकर लड़नेसे उतना नहीं घबराते जितना इस तरहकी बातोंसे घबराते हैं।

अन्तमें वह समय आ ही गया। हम सब लोग अपने पूरे साज-सामानसे दुरुस्त होकर कायदेसे खड़े हो गये। दूरसे कैसर आते हुए दिखाई दिये। हम सभी लोग यह देखना चाहते थे कि कैसर कैसे हैं। वे हम लोगोंके सामनेसे होकर निकल गये। उन्हें देखकर सचमुच मुझे कुछ निराशा सी हुई। मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैसरके जो चित्र देखे थे, उनसे मैं यही समझता था कि वे बहुत ही लम्ब-तड़ंग और हृष्ट-पुष्ट होंगे; और सबसे बढ़कर मैं यह समझता था कि उनकी आवाज बादलकी गरज की सी होगी। पर इनमेंसे एक भी बात ठीक न निकली।

कैसर बीच-बीचमें लोगोंको तमगे आदि बाँटते जाते थे; और कहीं इससे और कहीं उससे दो चार बातें करते जाते थे। उनके चले जानेपर हम लोग भी वहाँसे अपने स्थानपर आ गये।

अब हम लोग कैसरके सम्बन्धमें बातें करने लगे। जैडनने कहा—बस यही हमारे देशके सबसे बड़े आदमी हैं? इन्हींके सामने छोटे बड़े सभीको उठकर खड़ा होना पड़ता है?

कुछ ठहरकर वह फिर बोला—यहाँ तक कि हिंडेनबर्गको भी इनके सामने उठकर खड़ा होना पड़ता है?

कैजि०—जरूर!

पर जैडनकी बात अभी तक पूरी नहीं हुई थी। कुछ देर तक सोचनेके बाद उसने पूछा—क्या सम्राट्के सामने राजाओं को भी उठकर खड़ा होना पड़ता है?

हम लोगोंमेंसे कोई इस प्रश्नका ठीक ठीक उत्तर नहीं जानता, पर फिर भी सब लोग यही समझते हैं कि हम जानते हैं। राजा और सम्राट् दोनों ही इतने बड़े हैं कि दोनोंमेंसे किसीको दूसरेके सामने उठकर कायदेसे खड़ा नहीं होना पड़ता।

कैजि०—आखिर इन सब वाहियात बातोंसे क्या मतलब है? मुख्य बात तो यह है कि तुम्हें उसके सामने कायदेसे खड़ा रहना पड़ता है।

पर जैडनका इन बातोंसे सन्तोष नहीं होता। अभी उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिमागमें इसी तरहकी और भी बहुत सी बातें चक्कर लगा रही हैं। वह बोला—जो हो, लेकिन मैं कभी यह विश्वास नहीं कर सकता कि जिस पाखानेमें हम लोग जाते हैं, उसीमें कैसरको भी जाना पड़ता है।

कैजि०—कैसर जिस पाखानेमें जाते हैं, उसमें तुम पैर भी नहीं रख सकते।

कुछ ठहरकर कैजिन्स्की फिर बोला—मालूम होता है कि तुम्हारे दिमागमें गन्दगी भर गई है, इसलिए तुम जल्दीसे पाखाने चले जाओ और अपना दिमाग साफ कर आओ जिससे फिर इस तरहकी बच्चोंकी सी बातें तुम्हारे मुँहसे न निकलें।

जैडन वहाँसे उठकर चला गया।

क्राप—पर मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि क्या यह लड़ाई कैसरकी ही खड़ी की हुई है; और यदि कैसर लड़ाई छेड़ना न चाहते तो क्या यह लड़ाई न होती ?

मैं—मेरा तो यह पक्का खयाल है कि यदि कैसर न चाहते तो भी लड़ाई जरूर होती। बल्कि जहाँ तक मैं समझता हूँ, कैसर शुरूसे ही लड़ाईके खिलाफ थे।

क्राप—खैर अकेले कैसर न सही, यदि सारे संसारके बीस या पचीस आदमी मिलकर कह देते कि लड़ाई न होगी, तब तो शायद लड़ाई न होती !

मैंने उससे सहमत होकर कहा—हाँ, यह बात मैं मान सकता हूँ। पर उन सब कम्बख्तोंने तो यही कहा कि हाँ लड़ाई होगी।

क्राप—यदि अच्छी तरह विचार किया जाय तो यह बात बहुत ही विलक्षण मालूम होती है कि इधर हम लोग अपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देशकी रक्षाके लिए यहाँ आये हैं और उधर फ्रान्सीसी भी अपने देशकी रक्षाके लिए ही लड़ रहे हैं। अब इन दोनोंमेंसे किसका कहना ठीक है और किसका कहना गलत है ?

मैं—शायद दोनोंका ही कहना ठीक है।

कहनेको तो मैंने यह बात कह दी, पर मैं स्वयं यह नहीं समझता था कि दोनोंका ही कहना ठीक है या ठीक हो सकता है।

क्राप मुझे निरुत्तर करनेके विचारसे बोला—लेकिन हमारे यहाँके प्रोफेसर, पादरी और अखबार कहते हैं कि केवल हम्हीं लोग सत्यके मार्गपर हैं और हमें मानना चाहिए कि हम लोग सत्य मार्गपर हैं। पर उधर फ्रान्सके प्रोफेसर, पादरी और अखबार भी यही कहते हैं कि केवल फ्रान्सीसी लोग ही सत्य मार्ग पर हैं। अब इन दोनोंमें कौन सच्चा और कौन झूठा है ?

मैं—यह तो मैं नहीं कह सकता कि इन दोनोंमेंसे कौन सच्चा है और कौन झूठा; पर हर हालतमें लड़ाई बराबर जारी है और हर महीने एक न एक नया देश इसमें आकर सम्मिलित होता है।

इतनेमें जैडन फिर आ पहुँचा। वह अभी तक बहुत उत्तेजित जान पड़ता था। आते ही वह फिर हम लोगोंकी बातोंमें शामिल हो गया। उसकी समझमें ही न आता था कि आखिर लड़ाई शुरू कैसे होती है।

क्रापने कुछ बड़प्पन और समझदारीका भाव दिखलाते हुए कहा—प्रायः लड़ाई का कारण यही होता है कि कोई एक देश कुछ ऐसे काम कर बैठता है जो दूसरे देशोंको बहुत बुरे लगते हैं।

जैडन ने कुछ बेवकूफ सा बनकर पूछा—एक देशका क्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मतलब ? मेरी तो समझमें ही यह बात नहीं आती। भला जरमनीका एक पहाड़ कैसे कोई ऐसा काम कर सकता है जो फ्रान्सके दूसरे पहाड़को बुरा लगे ? या हमारे देशकी कोई नदी, कोई जंगल या गेहूँका कोई खेत कैसे ऐसा काम कर सकता है जो किसी दूसरे देशकी नदी, जंगल या खेतको बुरा लगे ?

क्राप—क्या तुम सचमुच इतने बड़े बेवकूफ हो या सिर्फ मेरी बातमें अड़ंगा लगाना चाहते हो ? मेरा यह मतलब नहीं है। मेरा मतलब यह है कि एक देशके लोग कोई ऐसा काम करते हैं जो दूसरे देशके रहनेवालों..........।

जैडन—अगर यही बात है तो फिर यहाँ मेरा कोई काम ही नहीं है। मैं नहीं समझता कि किसी दूसरे देशके रहनेवालोंने कोई ऐसा काम किया है जो मुझे बुरा लगा हो।

क्राप ने कुछ बिगड़कर कहा—अजी इस तरहकी बातोंमें तुम्हारे जैसे बेवकूफोंको कौन पूछता है !

जैडन—जब मेरे जैसे बेवकूफोंको कोई पूछता ही नहीं है, तो मैं सीधा अपने घर जाता हूँ।

जैडन की यह बात सुनकर हम सब लोग ठठाकर हँस पड़े।

म्यू०—मतलब यह है कि किसी देशके समस्त निवासी अर्थात् पूरा राष्ट्र।

जैडनने उपेक्षापूर्वक हाथ हिलाते हुए कहा—राष्ट्र ! राष्ट्र किसे कहते हैं ? यही तुम्हारी फौज, पुलिस और अदालतें ही न तुम्हारा राष्ट्र हैं ? अगर यही बात है तो मैं ऐसे राष्ट्रसे बाज आया।

कैजि०—अजी राष्ट्र और अपने पैतृक देशमें बड़ा अन्तर है।

क्राप—अन्तर भले ही हो, पर दोनों साथ-साथ चलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिना राष्ट्रके कभी कोई पैतृक देश हो ही नहीं सकता।

जैडन—यह सब तो बिलकुल ठीक है, पर जरा यह तो सोचो कि प्रायः हम सभी लोग बहुत ही सीधे-सादे हैं। फ्रान्समें भी ज्यादातर मजदूर, किसान और गरीब मुन्शी-मुहर्रिर ही हैं। अब किसी फ्रान्सीसी लोहार या चमारको क्या गरज पड़ी है कि वह आकर हमारे देश पर चढ़ाई करे? इसलिए मैं कहता हूँ कि केवल शासक ही हम लोगोंको लड़ाते हैं। मैंने यहाँ आनेसे पहले आज तक कभी किसी फ्रान्सीसीको देखा ही नहीं। इसी प्रकार अधिकांश फ्रान्सीसी भी ऐसे ही होंगे जिन्होंने कभी किसी जरमनको न देखा होगा। और फिर लड़ाई छेड़नेके समय न तो हम्हीं लोगोंसे राय ली गई थी और न उन्हीं लोगोंसे कुछ पूछा गया था। तब फिर भला तुम्हीं बतलाओ कि आखिर यह लड़ाई क्यों होती है?

कैजिन्स्कीने कन्धे हिलाते हुए कहा—जरूर कुछ ऐसे आदमी होंगे जिनका इस लड़ाई से कुछ भला होता होगा।

जैडन—लेकिन मैं तो उन लोगोंमें से नहीं हूँ। मेरा तो इस लड़ाईसे कोई लाभ नहीं है।

कैजि०—न तो तुम्हारा ही कोई लाभ है और न यहाँ जितने आदमी मौजूद हैं, उन्हींमें से किसीका कोई लाभ है।

जैडन—तो फिर आखिर वे लोग कौन हैं जिनका लड़ाईसे भला होता है? मैं तो समझता हूँ कि इस लड़ाईसे स्वयं कैसरका भी कोई लाभ नहीं है। उन्हें जिन चीजों की जरूरत है, वे सब पहलेसे ही उनके पास मौजूद हैं।

कैजिन्सकीने उसकी बातका विरोध करते हुए कहा—नहीं, मैं यह बात माननेको तैयार नहीं हूँ। कैसरको एक कारणसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लड़ाईकी जरूरत हो सकती है। प्रत्येक सम्राट्के लिए कमसे कम एक बार युद्ध करना आवश्यक होता है। यदि वह युद्ध न करे तो संसारमें उसकी प्रसिद्धि ही नहीं हो सकती। यदि तुम्हें इस बातपर विश्वास न हो तो तुम अपनी स्कूली किताबें उठाकर देख लो।

डेटेरिंग—और यही बात सेनापतियोंके सम्बन्धमें भी है। वे भी जब तक युद्ध न करें, तब तक प्रसिद्धि नहीं हो सकते।

कैजि०—सेनापति तो युद्ध करके सम्राटोंसे भी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

डेटेरिंग—इनके सिवा इनकी आड़में और भी बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिनका युद्धसे बहुत कुछ लाभ होता है।

क्राप—मैं तो यह समझता हूँ कि युद्ध भी एक प्रकारका ज्वर है। यह कोई नहीं चाहता कि मुझे ज्वर आवे, पर वह सभी को आ दबाता है। हम लोग कहते हैं कि हम युद्ध करना नहीं चाहते थे; और यही बात और सब लोग भी कहते हैं। लेकिन फिर भी आधी दुनियाँ लड़ ही रही है।

मैं—लेकिन मैं समझता हूँ कि और देशोंवाले जितना अधिक झूठ बोलते हैं, हमारे देशके लोग उतना अधिक झूठ नहीं बोलते। जरा उन विज्ञापनोंको देखिये जो कैदियोंके पास मिलते हैं और जिनमें लिखा है कि हम लोगोंने बेलजियममें पहुँचकर वहाँके बच्चों तकको खा डाला! जो लोग इस तरहकी झूठ बातें लिखते हों, उन्हें तो डूब मरना चाहिए। मेरी समझमें वास्तविक अपराधी तो वही लोग हैं।

म्यूलर उठकर खड़ा हो गया और बोला—और चाहे जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो, पर इतना अच्छा है कि यह लड़ाई जरमनीमें न होकर यहाँ हो रही है। जरा इन गड्ढोंको तो देखिये जो तोपोंके गोलोंके कारण यहाँ बन गये हैं।

जैडन—यह ठीक है; लेकिन लड़ाई चाहे कहीं हो, वह अच्छी नहीं होती।

जैडनको इस बातका अभिमान है कि उसने इस बहसमें हम लोगोंसे बाजी मार ली है। उसकी यह सम्मति ऐसी है जो यहाँ युद्ध-क्षेत्रमें प्रायः लोगोंके मुँहसे सुनी जाती है। और इस तरहकी बातोंका कोई ठीक जवाब किसीकी समझमें नहीं आता। इसका कारण कदाचित् यही है कि हम लोगोंकी बुद्धि इस क्षेत्रसे आगे जा ही नहीं सकती। पर फिर भी सब लोगोंमें अपनी अपनी राष्ट्रीयताका भाव भरा है। सभी लोग यही समझते हैं और अपनी-अपनी बुद्धिसे दूसरोंकी बातोंकी कटु आलोचना करते हैं।

क्रापने घास पर लेटकर कुछ क्रोधसे कहा—सबसे अच्छी बात तो यही है कि आदमी इस तरहकी वाहियात बातोंका जिक्र ही न करे।

कैजि०—चाहे कोई जिक्र करे और चाहे न करे, लड़ाई जब तक होनेकी है, तब तक होगी ही।

अब एक और खराबी यह आई कि जितनी नई चीजें हम लोगोंको मिली थीं, वह सब हमें लौटानी पड़ीं और फिर हम लोगोंको अपने वही पुराने चिथड़े लपेटने पड़े। जो अच्छे कपड़े हम लोगोंको पहले मिले थे, वह निरीक्षण भरके लिए थे।

× × × ×

हम लोग रूसकी ओर तो भेजे नहीं गये और फिर हमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युद्ध-क्षेत्रमें ही जाना पड़ा। रास्तेमें हम लोगोंको एक ऐसा जंगल मिला था जिसके पेड़ोंके सिर्फ तने ही रह गये थे और जहाँकी जमीन बहुत बुरी तरहसे जोती हुई मालुम होती थी।

बहुत से स्थानों पर तो बहुत ही बड़े-बड़े गड्ढे बन गये थे। मैंने कैजिन्सकीसे कहा—यहाँ खूब बड़ी बड़ी तोपोंके गोले बरसे हैं।

कैजि०—यह खाइयाँ तोड़नेवाली तोपोंकी मार है।

इतना कहकर उसने एक पेड़की तरफ इशारा किया।

उस पेड़की शाखाओंमें अभी तक लाशें लटक रही थीं। एक पेड़के ठूँठ पर एक नंगा सिपाही बैठा हुआ था। उसके सिर पर खाली टोप था और बाकी सारे शरीरपर एक सूत भी नहीं था। दूसरी विशेषता यह थी कि उसका धड़ और सिर तो मौजूद था, पर दोनों टाँगें गायब थीं।

मैंने पूछा—आखिर ऐसा क्यों हुआ?

जैडन—उसे ऐसा गोला लगा है कि उसके सारे कपड़े ही उड़ गये हैं।

कैजि०—यह भी दिल्लगीकी बात है। लेकिन मैंने इस तरहके और भी कई सिपाही देखे हैं। छोटी तोपोंके गोलोंकी मार ऐसी ही होती है जो कपड़ोंको साफ-उड़ा देती है। उसमें झटका ही इतना तेज लगता है कि कपड़े उड़ जाते हैं।

मैं इधर-उधर ढूँढ़ने लगा तो मुझे पता चल गया कि कैजिन्सकीका कहना ठीक है। वरदियोंके टुकड़े चारों ओर बिखरे हुए थे और कई हाथ-पैर भी कटे हुए पड़े थे। एक जगह एक और लाश पड़ी हुई मिली जिसके एक पैरमें आधा पाजामा था और गलेमें कालर था। इसके सिवा उस लाश पर और कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वस्त्र नहीं था। हाँ उसके कपड़े पेड़ पर लटके हुए थे। दोनों हाथ गायब थे। ऐसा जान पड़ता था कि किसीने खींचकर उखाड़ लिये हैं। ढूँढ़ने पर उनमें से एक हाथ मुझे बीस गजकी दूरी पर एक झाड़ीमें मिला था।

वह लाश जमीन पर मुँहके बल पड़ी हुई थी। दोनों तरफ कन्धोंके पास, जहाँसे बाँहें उड़ गई थीं और घाव हो गये थे, वहाँकी जमीन खून गिरनेसे काली हो गई थी। जमीन पर पड़ी हुई उसके पैरोंके पासकी पत्तियाँ कुछ हटी हुई थीं जिससे जान पड़ता था कि मरनेके समय उसने खूब पैर पटके थे।

मैं—कैजिन्स्की, यह कोई मजाककी बात नहीं है।

कैजि०—इसके पेटमें गोलेका कोई टुकड़ा नहीं लगा है।

जैडन—सारी दयालुता यहीं मत खर्च कर दो।

जान पड़ता था कि इस आदमीकी मृत्यु हुए ज्यादा देर नहीं हुई थी, क्योंकि जमीन पर गिरा हुआ खून बिलकुल ताजा था। वहाँ खाली लाशें ही लाशें पड़ी थीं और एक भी आदमी जीता नहीं था; इसलिए हम लोगोंने वहाँ अधिक समय नष्ट करना उचित नहीं समझा और यही सोचा कि आगेकी चौकी पर चल कर सूचना दे देंगे और वहाँसे आदमी आकर इन लाशों को उठा ले जायँगे। उन मुरदोंको उठाना कुछ हम लोगोंका काम तो था ही नहीं, इसलिए हम लोग वहाँसे आगे बढ़े।

× × × ×

यह जाननेके लिए कुछ गुप्तचरोंको भेजना आवश्यक है कि शत्रु-पक्षके कितने-कितने आदमी किन-किन स्थानों पर हैं। जबसे मैं छुट्टीसे लौटकर आया हूँ, तबसे दूसरे सैनिकोंके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ मेरा कुछ अद्भुत प्रेम हो गया है, इसलिए मैं भी अपनी इच्छासे उन लोगोंके साथ जानेको तैयार हो गया। हम लोगोंने अपना कार्यक्रम निश्चित कर लिया और तारोंके घेरेसे निकलकर सब लोग अलग-अलग हो गये और रेंगते हुए शत्रुओंकी सेनाकी ओर बढ़ने लगे। कुछ दूर आगे बढ़ने पर मुझे एक बड़ा गड्ढा मिला और मैं उसके अन्दर चला गया। वहींसे मैं सामने की ओर देखने लगा।

मशीन गनोंसे गोलियाँ चल रही थीं, पर उनकी मार हलकी ही थी। चारों तरफ से गोलियोंकी बौछार आती थी। वह बौछार तेज नहीं थी, तो भी इतनी अवश्य थी कि आदमी उठकर खड़ा नहीं हो सकता था—उसे जमीन पर ही लेटे रहना पड़ता था।

प्रकाश का एक गोला आकाशमें पहुँचकर छूटा जिससे चारो तरफ कुछ दूर तक हलकी रोशनी हो गई। पर थोड़ी ही देर बाद वह रोशनी बुझ गई और अब पहलेसे भी ज्यादा अँधेरा चारो ओर छा गया। अपनी खाइयोंमें ही हम लोगोंने सुन रखा था कि सामनेवाले भागमें काली पलटनें रखी गई हैं। हम लोगोंको यह बात बहुत बुरी लगती थी। हम लोग सोचते थे कि हम गोरोंके सामने काले क्यों लाकर खड़े किये गये हैं। इसके सिवा वे लोग पहरा देने और भेद लेनेका काम भी बहुत अच्छा करते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि वे प्रायः भारी बेवकूफ हुआ करते हैं। एक बारकी बात है कि कैजिन्स्की और क्रापने शत्रुके एक काले गुप्तचरको इसी लिए गोलीसे मार डाला था कि वह और उसके साथी जब हम लोगोंका पता लेनेके लिए जमीन पर रेंगते हुए हमारी तरफ बढ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे थे, तब साथमें सिगरेट भी पीते चलते थे। उनके सिगरेटोंके जलते हुए सिरे देखकर ही कैजिन्स्की और क्रापने उनपर गोलियाँ चलाई थीं जिससे उनमेंका एक आदमी मर गया था।

एक बम या इसी तरहकी और कोई चीज मेरे बहुत ही पास आकर गिरी। मैं पहले उसके आनेका शब्द नहीं सुन सका था, इसलिए मैं डर गया। साथ ही मेरे मनमें एक भारी दहशत समा गई। मैंने सोचा कि यहाँ इस घोर अन्धकारमें मैं बिलकुल अकेला हूँ और यहाँ कोई मेरी सहायता करनेवाला नहीं है। मुझे यह भी ध्यान हुआ कि बहुत देरसे सामनेके एक गड्ढेसे दो आँखें मुझे देख रही हैं और उनके पास ही एक गोला रखा है जो क्षण भरमें मेरी धज्जियाँ उड़ा सकता है। मैंने अपने आपको सँभालने का प्रयत्न किया। मैं आज कोई पहले-पहल इस प्रकार भेद लेनेके लिए नहीं निकला था। और भी कई बार मैं इस तरहका काम कर चुका था। आजकी मेरी यह यात्रा कुछ ऐसी अधिक जोखिमकी भी नहीं थी। पर हाँ, इस बार छुट्टीसे लौटनेके बाद मैं आज पहली ही बार भेद लेने निकला था; और यह भू-भाग भी मेरा पहलेका देखा हुआ नहीं था—मेरे लिए बिलकुल नया था।

मैंने अपने मनको यह समझानेका प्रयत्न किया कि यह भय मिथ्या और व्यर्थका है और इस अँधेरेमें मुझे कोई देख नहीं रहा है; पर फिर भी मेरा मन नहीं मानता था। मेरे मस्तिष्कमें अनेक प्रकारके विचार चक्कर खाने लगे। मुझे अपनी माताकी चेतावनीका स्मरण हो गया। साथ ही उन रूसी कैदियोंका भी ध्यान हो आया जिन्हें मैंने अनेक बार तारोंकी बाड़के पास खड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा था। एक ऐसे सिनेमाका भी मुझे स्मरण हुआ जिसके पास ही एक शराबखाना था और जहाँ शराब पीकर मैंने वह सिनेमा देखा था। इतनेमें मुझे अपने मुँहके सामने एक बन्दूक दिखाई दी। मैं जिस तरफ मुँह फेरता था, उसी तरफ वह बन्दूक भी सामने आ जाती थी। मेरा सारा शरीर पसीनेसे तर हो गया।

मैं अभी तक उस गढ्ढेमें ही पड़ा हुआ था। मैंने घड़ी देखी। मुझे यहाँ आये अभी कुछ ही मिनट हुए थे। मेरे माथे पर पसीना भरा हुआ था, मेरे हाथ काँप रहे थे और साँस जोरोंसे चल रहा था। और कुछ नहीं, केवल भीषण भयके कारण ही मेरी यह दशा हो रही थी। अब मुझे सिर बाहर निकालने और आगेकी तरफ रेंगनेका साहस ही नहीं होता था।

उस समय मैं केवल यही चाहता था कि चुपचाप अपनी जगह पर ही पड़ा रहूँ; और मेरे सारे प्रयत्न इसी इच्छाकी पूर्त्तिके लिए हो रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि मेरे हाथ-पैर जमीनके साथ अच्छी तरह चिपक गये हैं। मैंने उन्हें समेटना चाहा, पर वे अपने स्थानसे हटते ही नहीं थे। इसलिए मैं जमीनके साथ और भी ज्यादा सट गया। मैं वहाँसे आगे बढ़ ही नहीं सकता था, इसलिए उसी जगह चुपचाप पड़ा रहा।

पर तुरन्त ही मेरे मनमें एक नया भाव जाग्रत हुआ। मैं अपनी इस कायरता पर वहुत ही लज्जित हुआ और अपने आपको धिक्कारने लगा। पर साथ ही साथ मुझे अपने प्राण वचानेकी चिन्ता भी लगी हुई थी। मैंने चारो ओर देखनेके लिए जरा सा सिर उठाया।

मैं उस अन्धकारमें आँखें गड़ाकर देख रहा था जिससे मेरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखें जल रही थीं। इतनेमें एक बाण छूटकर आकाशमें जा पहुँचा। मैंने फिर अपना सिर नीचा कर लिया।

मेरे मनमें एक प्रकारका भीषण द्वन्द्व-युद्ध होने लगा। मैं उस गड्ढेसे बाहर भी निकलना चाहता था और उसके अन्दर भी घुसा जाता था। मुझे प्राणोंका भय भी होता था और साथही मैं यह भी सोचता था कि आखिर एक दिन मरना तो है ही।

मैं सोचने लगा कि मुझमें यह कायरता केवल इसी लिए आ गई है कि मैं छुट्टी लेकर घर चला गया था। पर फिर भी मैं अपना दिल मजबूत नहीं कर पाता था और बहुत अधिक शिथिल हो गया था। बहुत कठिनतासे मैं रेंगता हुआ गड्ढेके ऊपरी सिरे पर पहुँचा। उस समय मेरा आधा धड़ गड्ढेके अन्दर था और आधा बाहर।

ऊपर पहुँचते ही मुझे कुछ शब्द सुनाई पड़े, इसलिए मैं फिर गड्ढेके अन्दर हो रहा। चाहे गोलेबारीका कितना ही भीषण शब्द क्यों न होता रहे, पर उस कोलाहलमें भी सन्दिग्ध शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। मैं कान लगाकर सुनने लगा। वे शब्द पीछेकी ओरसे आ रहे थे। मैंने समझ लिया कि ये हमारे ही आदमियोंके शब्द हैं जो हमारी खाइयोंसे आ रहे हैं। अब कुछ स्पष्ट कंठ-स्वर भी सुनाई पड़ा। मैंने अन्दाजसे समझ लिया कि यह कैजिन्स्कीका ही शब्द है।

सहसा मुझमें एक नया बल आ गया। पीछे खाईकी ओरसे जो शब्द आ रहे थे और पैरोंकी जो आहट सुनाई पड़ रही थी, उससे मैं यह समझने लगा कि मैं यहाँ अकेला नहीं हूँ और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पास ही मेरे बहुतसे साथी मौजूद हैं। अब मृत्युका वह भय भी जाता रहा जिसने मुझे अब तक मृतक सा बना रखा था। ये शब्द मेरे लिए प्राणोंसे भी बढ़कर प्रिय थे और उनमें बहुत कुछ वात्सल्यका भाव भरा था। भय उनके सामने ठहर ही नहीं सकता था। उनमें बहुत अधिक बल था और वे मुझे बहुत कुछ सान्त्वना तथा प्रोत्साहन दे रहे थे। वे शब्द मेरे साथियोंके थे।

अब मैं इस अन्धकारमें अपने आपको पहलेकी तरह अकेला और निस्सहाय नहीं समझता था। मैं समझने लगा कि ये लोग मेरे हैं और मैं इनका हूँ। यदि कोई भयकी बात होगी तो वह हम सभी लोगोंके लिए होगी; और यदि प्राण रहेंगे तो सभीके रहेंगे। प्रेमी और प्रेमिकामें जितना सम्बन्ध होता है, उसकी अपेक्षा कहीं अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध हम लोगोंमें था। प्रेमके उस सम्बन्धकी अपेक्षा हम लोगोंका यह सम्बन्ध अधिक सरल और दृढ़ था। अब मैं इन शब्दोंके ही बल पर सब कुछ कर सकता था। इन्हीं शब्दोंने अबतक मेरी रक्षा की थी और अब भी यही शब्द मुझे सहारा देंगे।

× × × ×

मैं बहुत ही सावधानीसे उस गड्ढेके बाहर निकला और रेंगता हुआ आगे बढ़ा। मैं चारों तरफ यह जाननेके लिए देखता चलता था कि मशीन गनें कहाँ-कहाँ लगी हैं, किस किस तरफसे गोलियोंकी बौछार आ रही है और मैं किस रास्तेसे लौटकर अपनी खाईमें पहुँच सकता हूँ।

मुझे अब तक डर लग रहा था, पर वह डर पहलेकी तरह बेवकूफीका नहीं था, बल्कि समझदारीका था। मैं बहुत ही सतर्क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होकर अंग-संचालन करता था। उस समय तेज हवा चल रही थी और मशीन गनों आदिके कारण बीच-बीचमें होनेवाले प्रकाशमें बहुत सी छायाएँ इधर-उधर चलती हुई दिखाई देती थीं। वस्तुतः उन परछाँहियोंमें भयकी कोई बात नहीं थी; पर फिर भी मैं बीच-बीचमें ठिठक जाता था। पर मेरी आशंका निर्मूल सिद्ध होती थी। इस प्रकार मैं बहुत दूर तक आगे बढ़ गया और तब वहाँसे मुड़कर पीछेकी ओर लौटा। पर अभी तक मैं ऐसे स्थान पर नहीं पहुँचा था जहाँसे मैं अपने साथियोंके साथ संकेत आदिसे बात-चीत कर सकता। ज्यों-ज्यों मैं अपनी खाईकी तरफ बढ़ता था, त्यों-त्यों मेरे मनमें साहस और बल बढ़ता जाता था। पर साथ ही मेरी गति भी बढ़ती जाती थी। अब यदि अपनी खाईके इतने पास पहुँचने पर भी कोई गोली या गोला आकर लगता तो बहुत ही बुरा होता। बिलकुल किनारे पर आकर नावका डूबना क्या कोई अच्छी बात है?

यहाँ आने पर मेरे मनमें एक नये भयका संचार हुआ। मुझे दिशाका ठीक-ठीक ज्ञान नहीं रह गया था। मैं चुपचाप एक गड्ढेमें बैठ गया और यह जाननेका प्रयत्न करने लगा कि इस समय मैं कहाँ हूँ। यहाँ अक्सर ऐसा हुआ करता है कि सिपाही यह समझकर खाईमें कूदता है कि मैं अपनी ही खाईमें जा रहा हूँ, पर वास्तवमें वह शत्रुओंकी खाईमें पहुँच जाता है।

थोड़ी देर बाद मुझे फिर कुछ शब्द सुनाई पड़े, पर फिर भी अभी तक मेरे मनमें निश्चय नहीं होता था। जमीनमें चारों तरफ बहुत बड़े-बड़े गड्ढे थे और मैं कुछ ऐसा घबरा गया था कि यह निश्चय ही नहीं कर सकता था कि मुझे किस ओर जाना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहिए। शायद मैं अपनी खाईके समानान्तर ही रेंग रहा था और इस प्रकार मैं रेंगता हुआ बराबर आगे ही बढ़ता चला जाता और मेरी गतिका कहीं अन्त ही न होता। इसलिए मैं कुछ दूरका चक्कर काटकर फिर पीछेकी ओर मुड़ने लगा।

बुरा हो इन कम्बख्त बाणोंका। ये घन्टे-घन्टे भर तक जलते रहते हैं; और यदि इनके प्रकाशमें मनुष्य जरा भी हिले-डुले तो तुरन्त ही चारो ओरसे उस पर गोलियों की वर्षा होने लगती है।

लेकिन इन सब बातोंसे मैं कहाँ तक डरा करूँगा! इसलिए मुझे यहाँसे निकलकर आगे बढ़ना चाहिए। मैं उसी तरह रेंगता हुआ फिर आगे बढ़ने लगा। मेरी बाँहों और पसलियोंमें लकड़ियों आदिके ऐसे टुकड़े लगते थे जिनकी धार छुरेकी तरह तेज होती थी। मुझे रह रहकर यह भी ध्यान होता था कि क्षितिजकी ओर प्रकाश होने लगा है और अब सवेरा होना चाहता है; पर सम्भवतः मेरी यह धारणा मिथ्या होती थी। धीरे-धीरे मेरी समझमें यह बात आने लगी कि ठीक दिशामें चलनेसे ही मेरे प्राणोंकी रक्षा हो सकती है; और नहीं तो मैं बहुत सहजमें अपने प्राण गँवा सकता हूँ।

तोपका एक बड़ा गोला आकर मेरे पास ही गिरा और उसके बाद तुरन्त ही दो और गोले भी आ गिरे। अब तो मानों गोलोंकी वर्षा होने लगी। शत्रुओंने पूरी तेजीके साथ गोलेबारी शुरू कर दी थी। साथ ही मशीन गनोंके चलनेका भी शब्द हो रहा था। अब तो यहाँ चुपचाप किसी गड्ढेमें पड़े रहनेके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता था। मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि अब हम लोगों पर शत्रुओंका धावा होनेवाला है। चारो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरफसे छुट छुटकर बाण आकाशमें पहुँच रहे थे और उनका कहीं अन्त ही नहीं होता था।

मैं एक ऐसे बड़े गड्ढेमें पहुँच गया था जिसमें कुछ दूर तक पानी भरा हुआ था। मेरे पैर और कमर पानीके नीचे थी। मैंने सोचा था कि जिस समय शत्रुओंका धावा होगा, उस समय मैं नीचे पानीमें चला जाऊँगा और इस प्रकार कीचड़में अपना मुँह छिपा लूँगा जिसमें साँस ले सकूँ और दम न घुटने पावे। उस समय मैं मानों यह प्रकट करूँगा कि मैं मर गया हूँ।

अचानक मुझे शत्रुओंके आने का शब्द सुनाई दिया। मैं तुरन्त गले तक पानीमें उतर गया। अपना टोप मैंने इस प्रकार सिरके पिछले भाग और गरदन पर रख लिया कि साँस लेनेके लिए सामनेसे हवा आती रहे।

मैं बिलकुल चुपचाप और गतिहीन होकर पड़ा रहा। कुछ शब्द होते थे जो अधिक पास आते हुए जान पड़ते थे। नसोंका खून जम गया था और उसका दौरा बन्द हो गया था। कुछ लोग आये और मेरे गड्ढेके पाससे होकर निकल गये। उस समय केवल एक ही विचार मुझे विकल कर रहा था; और वह यह था कि यदि कोई मेरे गड्ढेमें कूद पड़ा तो मैं क्या करूँगा। मैंने बहुत तेजीसे अपनी छोटी कटार खींच ली और उसका दस्ता मुट्ठीमें खूब जोरोंसे पकड़कर उसका फल कीचड़में दबा दिया। मैंने निश्चय कर लिया कि जो इस गड्ढेमें कूदेगा, उस पर तुरन्त इसी कटारसे वार करूँगा। मैं यह कटार सीधे उसके गलेमें भोंक दूँगा जिसमें वह चिल्ला भी न सके और किसी को मेरे यहाँ होनेकी खबर ही न होने पावे। वह भी तो उतना ही भयभीत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा जितना मैं हूँ। जब इस भय की अवस्थामें हम दोनों एक दूसरे पर टूटेंगे, तब पहला वार मेरा होगा।

अब हमारी तरफके तोपखानेसे बाढ़ें दगने लगीं। एक गोला मेरे पास आकर गिरा। मैं मारे क्रोधके पागल हो गया। अब तो खाली यह बाकी रह गया था कि हम लोग स्वयं अपनी तरफ के गोलोंकी मारसे मरें। उसी कीचड़में पड़ा-पड़ा मैं दाँत पीस रहा था और अपने तोपचियोंको कोस रहा था। उस समय यदि इसके सिवा और कुछ हो सकता था तो वह यही कि मैं ईश्वरसे अपनी रक्षाके लिए प्रार्थना करूँ।

गोलोंके धड़ाकों की आवाज मेरे कानोंमें पहुँच रही थी। मैंने सोचा कि यदि इस समय हमारी तरफके सिपाही भी हमला करने निकल पड़ें तो मेरी रक्षा हो जाय। मैं जमीन पर हाथ टेककर तोपोंकी गरज सुनने लगा। बीचमें सिर उठाकर मैं वे शब्द भी सुनता था जो मेरे पास ही ऊपरकी जमीन पर हो रहे थे।

मशीन गनोंकी खड़खड़ाहट होने लगी। मैं यह जानता था कि हमारी ओर काँटेदार तारोंकी जो बाढ़ लगी है, वह मजबूत है और कहींसे टूटी-फूटी नहीं है। उसमें बीच-बीचमें अनेक स्थानों पर बिजली भी दौड़ा दी गई है। बन्दूकोंकी बाढ़ और भी बढ़ती जा रही थी। मैंने समझ लिया कि शत्रु हम लोगोंकी पंक्तिको भेद नहीं सका है और वह पीछेकी ओर लौटने लगा है।

मैंने फिर अन्दरकी ओर सिर झुका लिया। अब सैनिकोंकी लड़ाईसे होनेवाले शब्द और भी स्पष्ट रूपसे सुनाई दे रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार खूब जोरोंकी चिल्लाहट सुनाई पड़ी। हमारी तोपोंने शत्रुओंका मुँह फेर दिया था।

× × × ×

अब शब्द पहलेकी अपेक्षा कुछ धीमे पड़ने लगे थे। मेरी तरफ बढ़नेवाले पैरोंकी आहट सुनाई पड़ती थी, पर कुछ पास आकर फिर दूर निकल जाती थी। मशीन गनों की गड़गड़ाहटका क्रम टूटता ही नहीं था। ज्यों ही मैं पीछे की ओर मुड़ना चाहता था, त्यों ही कोई भारी सी चीज ऊपरसे गिरी। मुझे ऐसा जान पड़ा कि वह लाश थी जो ऊपरसे लुढ़कती हुई आई थी और मेरे पास ही गिर पड़ी थी।

उस समय मैं कुछ भी नहीं सोच रहा था और न कुछ निश्चय ही कर सकता था। मुझे केवल यही ध्यान हो रहा था कि गोला लगते ही किस प्रकार शरीर उड़कर हवा में नाचने लगता है और किस प्रकार निष्प्राण होकर जमीन पर गिर पड़ता है। जब मेरा दिल कुछ ठिकाने हुआ, तब मैंने देखा कि मेरा हाथ चिपचिपा और गीला हो गया है।

उस आदमीके गलेसे बहुत जोरोंकी घरघराहट निकल रही थी और साँस इतनी तेजी से चल रहा था कि मानों कोई भाथी चल रही हो। उसके गलेसे जो शब्द निकलता था, वह भी बादलकी गरजसे कम नहीं था। मेरा जी चाहता था कि उसके मुँहमें मिट्टी भरकर या उसका गला घोंटकर उसका चिल्लाना बन्द कर दूँ, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं उसकी आवाज सुनकर ही कोई इस गड्ढेमें न उतर आवे और मेरी जान आफतमें फँस जाय। पर मैंने बहुत कठिनतासे अपने आपको सँभाला। उस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे इतनी अधिक दुर्बलता जान पड़ने लगी कि उस पर हाथ उठाना मेरे लिए असम्भव हो गया।

मैं खिसककर उस आदमीसे कुछ दूरी पर गड्ढेके दूसरे कोनेमें चला गया और वहींसे टक लगाकर उसे देखने लगा। मैं अपनी कटार मजबूतीसे पकड़े हुए था और इस बातके लिए बिलकुल तैयार था कि ज्यों ही वह हिले, त्यों ही मैं झपटकर उसका काम तमाम कर दूँ। पर उसकी आवाजसे ही मालूम होता था कि उसमें हिलनेकी भी शक्ति नहीं है।

उस समय मेरे मनमें केवल एक इच्छा थी। मैं किसी तरह उस गड्ढेसे निकलना चाहता था। उस समय कुछ प्रकाश हो चला था, इसलिए वहाँसे निकलना मुश्किल और खतरेसे खाली नहीं था। पर यदि मैं वहाँ और कुछ देर तक ठहरता तो और भी दिन चढ़ आता। इसलिए मैं जल्दी ही वहाँसे हटना चाहता था। जब मैंने सिर उठाकर ऊपरकी ओर देखा, तब मेरी समझमें आ गया कि इस समय वहाँसे निकलना असम्भव है। चारों तरफसे मशीन गनोंकी गोलियोंकी इतनी अधिक वर्षा हो रही थी कि बाहर निकलते ही मेरा सारा शरीर गोलियोंसे छिद जाता।

मैंने एक परीक्षा की। अपना टोप यह जाननेके लिए उछालकर बाहर फेंकना चाहा कि गोलियाँ कितनी ऊँचाई पर चल रही हैं; पर ज्यों ही मैंने उसे हाथ में उठाकर कुछ ऊपर किया, त्यों ही उसमें एक गोली आकर लगी और वह मेरे हाथसे छूटककर दूर जा पड़ा। मैंने समझ लिया कि गोलियाँ बहुत ही नीचाई पर और जमीनसे कुछ ही ऊपर चल रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं शत्रुओंकी अगली पंक्तिसे कुछ अधिक दूर नहीं था, इसलिए वहाँसे मेरा निकलना और भी असम्भव था।

धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ने लगा। मैं बहुत उत्सुकतासे प्रतीक्षा करने लगा कि हमारे साथी शत्रुओं पर आक्रमण करने निकलें तो मैं भी यहाँसे बाहर निकलकर उनका साथ दूँ। पर मेरे साथी तब तक आक्रमण करनेके लिए नहीं निकल सकते थे, जब तक शत्रुकी मशीन गनें बन्द न होतीं। बस इसी प्रतीक्षामें एक एक मिनट बहुत कठिनतासे बीतने लगा। मेरे गड्ढेमें जो घायल सिपाही आकर गिरा था, उसकी ओर देखनेका मुझे अब साहस भी न होता था। कभी-कभी एक नजर उसे देख लिया करता था और फिर उधरसे निगाह हटाकर प्रतीक्षा करने लगता था। बाहर गोलियाँ इतनी अधिकतासे चल रही थीं कि उनके कारण एक जाल सा बना रहता था। उन गोलियोंका चलना किसी तरह बन्द ही नहीं होता था।

अब इतना प्रकाश हो गया कि मुझे खूनसे रँगा हुआ अपना हाथ दिखाई पड़ता था। मैंने कुछ मिट्टी लेकर हाथमें मली जिससे खून तो नीचे दब गया और ऊपर मिट्टी ही मिट्टी दिखाई देने लगी।

पर गोलियोंकी वर्षा अभी तक बन्द नहीं हुई थी। ये गोलियाँ दोनों ही तरफसे चल रही थीं और पूरे जोरोंसे चल रही थीं। मैं समझता हूँ कि इस समय तक मेरे साथी मेरी ओरसे बिलकुल निराश हो गये होंगे और समझते होंगे कि मैं मर गया।

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब तड़का हो गया और चारो ओर धुँधला प्रकाश फैल गया है। उस घायल सिपाहीके गलेकी घरघराहट अभी तक चल रही है जिसे सुनकर मेरी तबीयत बहुत घबराती है। उस आवाजसे बचनेके लिए मैंने दोनों हाथोंसे अपने कान बन्द कर लिये; पर उस अवस्था में भी अधिक समय तक रहना सम्भव नहीं था, इसलिए मैंने कानों परसे हाथ हटा लिये। यदि मैं उसी तरह कान बन्द किये रहता तो मुझे बाहरके और अनेक प्रकार के शब्द भी न सुनाई पड़ते।

मेरे सामने पड़ा हुआ घायल सिपाही कुछ हिला। मैं चौंक पड़ा और मेरी निगाह आपसे आप उसकी ओर जाकर जम गई। अब उसकी शकल अच्छी तरह दिखाई पड़ती थी। उसकी दाढ़ी नुकीली थी। उसका सिर एक ओर झुका हुआ था। हाथ आधा दबा हुआ था और उसी हाथ पर सिर पड़ा था। दूसरा हाथ उसकी छाती पर था और खूनसे तर था।

मैंने समझा कि वह आदमी अवश्य मर गया है। उसके रंग-ढंगसे मालूम होता था कि उसमें बिलकुल जान नहीं है। उसने एक बार कुछ सिर उठानेका प्रयत्न किया था। क्षण भरके लिए उसके कराहनेका शब्द कुछ ऊँचा हो गया और तब उसका माथा फिर उसके हाथ पर गिर पड़ा। अब मेरी समझमें आ गया कि वह अभी तक मरा तो नहीं है, पर हाँ, अब बहुत जल्दी मर जायगा। मैं धीरे-धीरे कुछ हिचकता हुआ हाथोंके बल रेंगकर उसकी ओर बढ़ने लगा। थोड़ी-थोड़ी दूर पर मैं रुक भी जाता था। वह मुझसे केवल तीन गजकी दूरी पर पड़ा था। पर इतनी दूरी पार करना भी उस समय मेरे लिए बहुत ही कठिन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्या वल्कि दुःसाध्य हो गया था। वह अन्तर मुझे एक भीषण यात्राके समान जान पड़ता था। अन्त में मैं किसी तरह उसके पास पहुँच ही गया।

मुझे अपने पास देखकर उसने आँखें खोलीं। जान पड़ता था कि उसे मेरे आनेकी आहट मिल गई थी। उसने बहुत ही भयानक रूपसे मेरी ओर देखा। उसका शरीर तो जरा भी हिलता-डुलता नहीं था, पर उसकी आँखोंमें इतनी ज्यादा तेजी थी और इतना जोर था कि उन्हें देखकर ऐसा जान पड़ता था कि केवल अपने ही बल पर वे सारे शरीरको कहीं उठा ले जायँगी। शायद एक ही छलाँगमें वे उसे सैकड़ों मील दूर ले जायँगी। उसके शरीरमें किसी प्रकारकी गति नहीं हो रही थी और उसके गले की घरघराहट भी बन्द हो गई थी। पर उसकी आँखें अवश्य चिल्लाती और कराहती हुई जान पड़ती थीं। सारे शरीर के प्राण आकर उन्हीं आँखोंमें एकत्र हो गये थे और उनमें से निकल भागनेका भीषण प्रयत्न कर रहे थे। उन आँखोंमें मृत्युका भी और मेरा भी अत्यधिक भय समाया हुआ था।

उसकी उन आँखोंको इस अवस्थामें देखकर मुझसे खड़ा नहीं रहा गया और मैं कोहनियोंके बल जमीन पर गिर पड़ा। मैंने बहुत धीरेसे कहा—नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह था कि मुझसे भय करनेकी कोई बात नहीं है; मैं कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा।

वे निगाहें मुझपर ही गड़ी हुई थीं। जब तक वे आँखें मेरी ओर रहीं, तब तक मुझमें जरा भी इधर-उधर हिलनेकी शक्ति नहीं आई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़ी देरमें छाती परसे उसका हाथ जरा सा नीचे खिसक गया और उसकी इस गतिके साथ ही साथ उसकी आँखोंका बल भी टूट गया। मैंने उसके मुँहके पास झुककर सिर हिलाते हुए कहा—नहीं, नहीं। मैंने यह जतलानेके लिए अपना एक हाथ उठाया कि मैं उसकी सहायता करना चाहता हूँ; और तब उसी हाथसे धीरे-धीरे उसका माथा सहलना आरम्भ किया।

मेरा हाथ पास पहुँचते ही उसकी आँखें कुछ पीछेकी तरफ खिंचीं। उनकी चमक जाती रही और पलकें गिर गईं। मैंने उसके गलेका कालर खोल दिया जिससे उसके सिरको कुछ आराम मिलने लगा।

उसका मुँह आधा खुला हुआ था और ऐसा जान पड़ता था कि वह कुछ कहना चाहता है। उसके होंठ सूखे हुए थे। पर मेरे पास पानीकी बोतल नहीं थी। वह बोतल मैं अपने साथ यहाँ लाया ही नहीं था। पर उस गड्ढेके तलमें कीचड़ मिला हुआ पानी था। मैं नीचे उतर गया और चुल्लूमें थोड़ा सा पानी लेकर उसे निथारकर उससे अपना रूमाल भिगो लाया।

उसी रूमालसे कुछ बूँदें निचोड़कर मैंने उसके गलेमें टपकाईं जो उसके हलकके नीचे उतर गईं। मैं फिर जाकर और थोड़ा पानी उसी प्रकार ले आया। इसके बाद मैंने उसके कोटके बटन खोले। मैं सोचता था कि यदि सम्भव हो तो उसके घाव पर पट्टी बाँध दूँ। मैं यह काम एक और उद्देश्यसे भी करना चाहता था। वह उद्देश्य यह था कि यदि शत्रु पक्षके लोग मुझे ऊपरसे देख लें तो वे समझ जायँ कि मैं उसकी सहायता कर रहा हूँ और उस दशामें वे मुझपर गोली न चलाते। उसने बचनेका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ प्रयत्न किया, पर उसके हाथ बहुत दुर्बल हो रहे थे। कमीज उसके बदनसे बहुत सटी हुई थी और जल्दी उतरती ही न थी। उसके बटन भी पीछेकी ओर थे; इसलिए उस कमीजको फाड़ डालनेके सिवा और कोई उपाय नहीं था।

मैंने फिर अपना चाकू निकाला। जब मैं उससे कमीज काटने लगा, तब उसकी आँखें फिर एक बार खुलीं जिनसे कष्ट और भय सूचित होता था। मैंने उसकी आँखें दबाकर बन्द कर दीं और धीरेसे कहा—"भाई, मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ। डरो मत। डरो मत। डरो मत।" यह बात मैंने कई बार इसलिए कही जिसमें उसका भय दूर हो जाय और वह मुझे अपना मित्र समझे।

उसके शरीरमें छुरेके तीन घाव लगे थे। मैंने जेबसे पट्टी निकालकर बाँधी, पर खून उस पट्टीके नीचे भी उतर आया। इसलिए मैंने पट्टी कुछ कस दी जिससे वह कराहने लगा।

बस इससे अधिक मैं उसके लिए और कुछ नहीं कर सकता था। अब यहाँ हम लोगों के लिए चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करनेके सिवा और कोई उपाय नहीं था।

× × × ×

वह समय घोर मानसिक कष्टमें बीत रहा था। थोड़ी देरमें उसके गलेकी घरघराहट फिर शुरू हुई। मनुष्यके प्राण भी कैसी कठिनतासे निकलते हैं! मैं यह बात अच्छी तरह जानता था कि यह अदमी अब किसी प्रकार बच नहीं सकता। फिर भी मैं अपने आपको यही समझानेका प्रयत्न करता था कि वह किसी प्रकार बच जायगा, पर दोपहरके समय मेरी यह झूठी धारणा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी दूर हो गई। उसके कराहनेके सामने कोई आशा टिक ही नहीं सकती थी। यदि रातको रेंगते समय मेरी रिवाल्वर कहीं खो न गई होती और इस समय मेरे पास होती तो इस कष्टसे उसकी रक्षा करनेके लिए मैं अवश्य ही उसे गोलीसे मार डालता। मेरे पास छुरा था; पर वह छुरा मैं उस पर किसी प्रकार चला ही नहीं सकता था। ऐसे आदमी पर छुरा चलाने के लिए हाथ उठ ही नहीं सकता।

दोपहरके समय मारे भूखके मेरा बुरा हाल हो गया। वह भूख इतनी तेज थी कि मानों स्वयं मुझे ही खाये डालती थी। मारे भूखके मेरी आँखोंसे आँसू निकल रहे थे और मैं उसे किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता था। थोड़ी-थोड़ी देर पर मैं उस मरणोन्मुख सैनिकके लिए पानी लाता था और उसीमेंसे आप भी थोड़ा सा पी लेता था।

यह पहला आदमी था जिसकी हत्या मैंने अपने हाथोंसे की थी। वह मेरे सामने बिलकुल निस्सहाय अवस्थामें पड़ा हुआ था और उसकी मृत्यु मेरे ही कारण हुई थी। कैजिन्स्की, क्राप और म्यूलर तो इस प्रकारके कई अनुभव कर चुके थे, पर मेरे लिए यह पहला ही अवसर था। जब सैनिकोंमें गुथकर लड़ाई होती है, तब प्रायः लोगोंको ऐसा ही करना पड़ता है।

उस सैनिकको मरनेमें बहुत देर लगी थी। मुझे ऐसा जान पड़ता था कि उसके पास कोई ऐसी अदृश्य कटार है जिससे वह मुझे मार रहा है। वह उस कटारसे केवल मुझपर ही नहीं बल्कि मेरे समय और मेरे विचारों पर भी वार कर रहा था।

यदि किसी प्रकार उसके प्राण बच सकते, तब तो कोई बात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही नहीं थी। मैं उसके लिए इससे भी कहीं अधिक कष्ट सह सकता था। पर उसे इस दशामें पड़े हुए देखना और उसकी करुण कराह सुनना मेरे लिए असम्भव था।

तीसरे पहर तीन बजेके लगभग उसके प्राण निकल गये।

अब मेरा साँस कुछ ठिकानेसे चलने लगा, पर बहुत ही थोड़ी देरके लिए। शीघ्र ही वहाँकी वह शान्ति उसके कराहनेसे भी अधिक असह्य हो गई। मैं चाहता था कि मुझे फिर उसी प्रकार कराहनेका शब्द सुनाई दे जो कभी तेज हो जाय और कभी धीमा पड़ जाय।

मेरा सिर चक्कर खाने लगा। समझमें ही नहीं आता था कि मैं क्या करूँ। पर फिर भी मुझे कुछ करना तो आवश्यक था ही। मैंने उसकी लाशको अच्छी तरह आरामसे लेटा दिया। पर उस लाशको भला आराम और तकलीफ क्या मालुम हो सकती थी! मैंने उसकी भूरी आँखें बन्द कर दीं। उसके वाल काले और किसी कदर घुँघराले थे।

उसका मुँह भरा हुआ और कोमल था और नाक थोड़ी मुड़ी हुई थी। शरीरका रंग कुछ भूरा था। जीवित अवस्थामें उसका शरीर जितना पीला पड़ा हुआ था, अब वह उतना पीला नहीं था। पहले कुछ देर तक उसका चेहरा स्वस्थ मनुष्योंका सा जान पड़ता था, पर शीघ्र ही उसपर मुरदनी छा गई थी।

इसमें सन्देह नहीं कि उसकी स्त्री उसे अभी तक याद करती होगी। उस बेचारीको क्या मालूम कि उसके पतिका इस प्रकार अन्त हो गया है! ऐसा जान पड़ता था कि वह अपनी स्त्रीको प्रायः पत्र भेजा करता था। सम्भव है कि इस समय भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कसी डाकसे उसे पतिका पत्र मिले। वह पत्र कल भी मिलि सकता है और चार दिन बाद भी मिल सकता है। और यदि कहीं इधर-उधर हो जाय तो आजसे महीने भर बाद भी मिल सकता है। वह उस पत्रको पढ़ेगी और उस पत्रमें वह उसके साथ बातें करेगा।

मेरी दशा और भी खराब होती जाती थी। अब मैं अपने विचारों पर नियन्त्रण नहीं रख सकता था। उसकी स्त्री देखनेमें कैसी होगी? कहीं वह उसी नाटी स्त्रीके समान तो नहीं होगी जिससे मैं नहरके उस पार जाकर मिला था? क्या वह नाटी स्त्री अब भी मेरी है? शायद मेरे इस कामके कारण अब वह मेरी हो जाय। यदि इस समय कैन्टोरेक मेरे पास यहाँ होता तो बहुत अच्छा होता। यदि मेरी माता मुझे यहाँ इस अवस्थामें देख पाती……। जिस समय यह घायल होकर गड्ढेमें गिरा था, यदि उसी समय मैं किसी प्रकार उसे उठाकर अपनी खाईमें पहुँच जाता तो बहुत सम्भव था कि उसके प्राण न जाते और वह अभी कमसे कम तीस वर्ष और जीवित रहता। यदि वह घायल होनेसे पहले दौड़कर बाईं ओर दो चार गज और निकल जाता तो वह इस समय खाईमें बैठकर अपनी स्त्रीको पत्र लिखता होता।

पर अब मैं इस प्रकारके विचारोंको अपने मनमें स्थान नहीं दूँगा। एक न एक दिन हम सभी लोगोंकी यही दशा होगी। यदि कैमेरिकका पैर छः इंच और दाहिनी तरफ होता तो वह घायल न होता और उसके प्राण बच जाते। यदि हेई वेस्थसकी पीठ तीन इंच और आगेकी तरफ झुक जाती तो वह भी घायल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न होता और उसके भी प्राण बच जाते ! लेकिन……… ।

× × × ×

निस्तब्धता बढ़ रही थी, इसलिए मुझे बातें करना आवश्यक जान पड़ने लगा । वहाँ और कोई तो था ही नहीं जिससे मैं बातें करता, इसलिए उसी लाशसे बातें करने लगा—"भाई, मैं कभी तुम्हारी हत्या नहीं करना चाहता था । यदि अब तुम फिर उसी प्रकार यहाँ आओ और इस गड्ढेमें कूदो और तुम भी समझदारी से काम लो और मुझ पर वार न करो तो मैं कभी तुम पर हाथ न उठाऊँगा । पर पहले तुम्हारे सम्बन्धमें मेरे मनमें केवल एक धारणा—केवल एक कल्पना थी । मैं तुम्हें अपना शत्रु समझता था; और इसी लिए मैंने तुम्हारे साथ वही काम किया जो शत्रुओंके साथ किया जाता है । उसी मिथ्या धारणाके कारण मैंने छुरेसे तुम पर वार किया था । पर इस समय मैं पहले-पहल समझ रहा हूँ कि नहीं, तुम भी मेरे ही समान आदमी हो और मेरे भाई हो । जिस समय तुम इस गड्ढेमें कूदे थे, उस समय मुझे तुम्हारी गोली, तुम्हारी बन्दूक और तुम्हारी किर्चका ही ध्यान था; पर अब मुझे तुम्हारी स्त्री, तुम्हारी आकृति और तुम्हारे बन्धुत्व का ध्यान हो रहा है । भाई, मुझे क्षमा करो । तत्व की बात सदा हम लोगों की समझमें बहुत देरसे आती है । कभी हम लोगोंको कोई यह नहीं बतलाता कि हम सब लोग आपसमें भाई हैं, हमारा आपसमें कोई वैर-भाव नहीं है, हम सबकी माताएँ हम लोगोंके लिए समान रूपसे चिन्तित रहती हैं, हम सब लोगोंको मृत्युका समान रूपसे भय रहता है और मरते समय हम सबको समान रूपसे कष्ट होता है । भाई, तुम मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षमा करो। तुम कैसे मेरे शत्रु हो सकते हो ? यदि हम लोग अपनी-अपनी बन्दूक और वरदी फेंक दें तो फिर तुम भी मेरे वैसे ही भाई हो जैसे कैजिन्स्की और आप हैं। भाई, तुम मेरी उमरके बीस बरस ले लो और किसी तरह उठकर खड़े हो जाओ। बल्कि इससे भी और ज्यादा मेरी उमर ले लो; क्योंकि अब तो मेरी समझमें ही नहीं आता कि मैं इस संसारमें जीकर क्या करूँगा और इस जीवनका कौन सा उपयोग करूँगा।"

अब युद्ध-क्षेत्रमें बहुत कुछ शान्ति हो गई थी, इधर-उधर केवल बन्दूकोंके ही चलनेके शब्द सुनाई देते थे। बन्दूकोंकी गोलियोंकी वह वर्षा किसी एक ओरसे नहीं बल्कि चारों ओरसे हो रही थी। इसलिए मैं अभी इस गड्ढेसे बाहर नहीं निकल सकता था।

मैंने बहुत ही उतावलेपनके साथ उस मृतक शरीरसे कहा—"भाई, मैं तुम्हारी स्त्रीको यह सब हाल लिखूँगा। मैं अपने हाथसे लिखूँगा कि किस तरह तुम मेरे हाथसे मारे गये। जो बातें अभी मैं तुमसे कह रहा हूँ, वही सब बातें उससे भी कहूँगा। जहाँ तक हो सकेगा, मैं उसे किसी बातका कष्ट नहीं होने दूँगा और उसकी सहायता करूँगा। यदि तुम्हारे माता-पिता जीवित होंगे तो उनकी भी सेवा और सहायता करूँगा; और यदि तुम्हारे बाल-बच्चे होंगे तो उनका भी भरण-पोषण करूँगा।"

उसका कोट आधा खुला हुआ था और उसमेंसे नोट बुक ढूँढ़ निकालना कुछ कठिन नहीं था। पर उसे निकालकर खोलनेमें मुझे कुछ संकोच होता था। उसीमें उसका नाम लिखा हुआ था। मैं सोचने लगा कि यदि मुझे इसका नाम न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम होगा तो बहुत सम्भव है कि मैं कुछ दिनों बाद इसे भूल जाऊँगा और समय मेरी आँखों के सामनेसे यह चित्र मिटा देगा। पर यदि मुझे इसका नाम मालूम हो जायगा तो मानों मेरे कलेजे में मेख ठुक जायगी जो फिर कभी बाहर न निकल सकेगी। उस नाममें ही इतनी शक्ति रहेगी कि वह मुझे सदा इस भीषण कांडका स्मरण कराता रहेगा और सदा इसे लाकर मेरी आँखोंके सामने रखता रहेगा।

मैंने उसकी नोट बुक हाथमें ले ली, पर वह मेरे हाथसे खिसककर जमीन पर गिर पड़ी। उसमें से कुछ चित्र और पत्र निकलकर इधर-उधर बिखर गये। मैंने उन सबको उठाकर फिरसे यथा-स्थान रखना चाहा, पर ठीक तरहसे रख न सका। कई कारणोंसे उस समय मेरे मनकी दशा बहुत ही खराब हो रही थी। मुझे भूख लगी थी, अपने प्राणोंकी भी आशंका हो रही थी और इस मृत पुरुषके साथ घन्टों रहनेके कारण शोक और ग्लानिने भी मुझपर पूर्ण रूपसे अधिकार कर रखा था। मैं उस अनुचित कृत्य का यथा-साध्य शीघ्र प्रतिकार करना चाहता था। पर मेरी समझमें नहीं आता था कि मुझे क्या करना चाहिए। मेरी दशा उस आदमीके समान हो रही थी जिसके हाथमें बहुत और अधिक असह्य पीड़ा हो रही हो और जो उस पीड़ा से मुक्त होनेके लिए वह हाथ जोरोंसे किसी पेड़ या पत्थर पर पटकता हो।

उसमें एक स्त्रीका और एक छोटी कन्याका चित्र था और साथ ही कुछ ऐसे चित्र भी थे जो उस मृत पुरुषने अपने हाथसे कुछ लोगोंको एक दीवारके सामने बैठाकर खींचे थे। कुछ पत्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी थे। मैं उन्हें निकालकर पढ़नेका प्रयत्न करने लगा। पर मेरे लिए उनका पढ़ना बहुत ही कठिन था, क्योंकि मैं फ्रान्सीसी भाषा बहुत ही कम जानता था। पर जहाँ कहीं मैं उसमेंका एक शब्द भी पढ़ पाता था, वहीं वह शब्द मेरे कलेजे में छुरी की तरह आकर लगता था।

अब मेरे मस्तिष्कमें कुछ भी सहन करनेकी शक्ति नहीं रह गई थी। अब यह बात मेरी समझमें आने लग गई थी कि इस मृत पुरुषके सम्बन्धियोंको पत्र लिखनेका मुझे कभी साहस न होगा। मेरे लिए उन्हें पत्र लिखना असम्भव है। मैंने उन चित्रोंको फिर ध्यानसे देखा। अवश्य ही वे देखने में धनवान नहीं जान पड़ते थे। यदि मैं कभी कुछ धन उपार्जन करनेके योग्य होऊँगा तो इन लोगोंको गुमनाम ही कुछ धन भेज दिया करूँगा। यही बात मुझे कुछ अच्छी जँची और इसी पर मैं कुछ देर तक दृढ़ रहा। अब इस मृत पुरुषका मेरे जीवनके साथ सम्बन्ध हो गया था और स्वयं अपनी रक्षाके विचारसे मुझे इसके सम्बन्धियोंके लिए सब कुछ करना और उन्हें सब प्रकारके वचन देना आवश्यक हो गया था। मैंने बिना समझे-बूझे शपथ खाई कि मैं इसके परिवारके लोगोंके लिए ही जीविका उपार्जन करूँगा; और जिस प्रकार होगा, उन्हें शान्त तथा सुखी करनेका प्रयत्न करूँगा। मेरे मनमें इस आशाने घर कर लिया था कि मैं इसी प्रकार अपने इस दुष्कर्मका प्रतिकार करूँगा। यदि इस समय मैं किसी प्रकार यहाँसे भागकर निकल सकूँ तो मैं सबसे पहले इसके परिवारके लोगोंकी सहायताके लिए ही धन उपार्जन करूँगा। मैंने उसकी किताब खोली और उसमें धीरे-धीरे पढ़ा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"गेरार्ड ड्यूवेल।" साथ ही मुझे यह भी पता चल गया कि यह किसी छापेखानेमें कम्पोजिटर का काम करता था।

उसी मृत पुरुषकी पेन्सिलसे मैंने एक लिफाफे पर उसका पता लिख लिया और तब फिर उसकी नोट बुक और चित्र आदि सब चीजें जल्दीसे उसके जेबमें रख दीं।

मैंने गेरार्ड ड्यूवेलकी हत्या कर डाली थी। वह कम्पोजिटर था, इसलिए मैं सोचने लगा कि मैं भी कम्पोजिटरी ही करूँगा।

× × × ×

तीसरे पहरके बाद मेरा चंचल मन बहुत शान्त हो गया। मेरा भय निराधार था। अब वह नाम मुझे कष्ट नहीं देता। मैंने बहुत ही शान्त भावसे उस मृत शरीर से कहा—"भाई, आज तुम मरे हो, कल मेरी पारी होगी। पर इतना अवश्य है कि यदि मैं इस युद्धमें बच गया और यहाँसे जीता घर लौटा तो मैं इस युद्धका अवश्य घोर विरोध करूँगा जिसने तुम पर और मुझ पर आघात किया है। इस युद्धने तुम्हारे तो प्राण लिये हैं, पर मेरा क्या लिया है?.........मेरे भी प्राण ही ले लिये हैं। भाई, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि अब मैं कभी ऐसा युद्ध न होने दूँगा; या कमसे कम मुझसे ऐसे युद्धमें कभी किसीको कोई सहायता न मिलेगी।"

सूर्य धीरे-धीरे अस्ताचलकी ओर जा रहा था। मारे भूख और थकावटके मैं बेचैन हो रहा था। कल जो दिन बीता था, वह मुझे कोहरेके समान धुँधला जान पड़ता था। आज मुझे यह आशा ही न रह गई थी कि मैं इस गड्ढेसे जीता निकलूँगा। मैं ऊँघने लगा और पहले मुझे यह पता ही न चला कि सन्ध्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होनेको है। पर पीछे ऐसा जान पड़ा कि सन्ध्या और रात बहुत जल्दी आ रही है। अचानक मैं काँप उठा। मुझे ऐसी आशंका होने लगी कि कोई भीषण दुर्घटना होनेवाली है। अब मैं उस मृत पुरुषकी बातोंका कोई विचार नहीं कर रहा था, क्योंकि मेरी समझमें आ गया था कि उसके सम्बन्धकी बातों पर विचार करनेका कोई फल नहीं है। अचानक मुझमें जीवित रहनेकी कामना फिरसे उत्पन्न हुई। अब तक जिन बातोंने मेरे मनमें घर कर रखा था, वे सभी बातें जीवित रहनेकी इस उत्कृष्ट अभिलाषाके सामने दब गईं। केवल विपत्ति और दुर्भाग्यसे बचनेके लिए मैं किसी यन्त्रकी तरह बड़बड़ा उठा—"मैंने तुम्हें जो वचन दिया है, उसका मैं अक्षरशः पालन करूँगा........।" पर साथ ही मैं पहलेसे जानता था कि मैं उसका पालन न कर सकूँगा।

सहसा मुझे यह ध्यान आया कि यदि मैं इस गड्ढेसे किसी प्रकार बाहर निकलूँगा तो स्वयं मेरे साथी ही गोलियाँ चलाकर मुझे मार डालेंगे। उन्हें क्या मालूम होगा कि मैं आ रहा हूँ! जितनी जल्दी हो सकेगा, मैं जोरसे चिल्लाकर उन्हें अपना परिचय दूँगा जिसमें वे लोग मुझे पहचान लें। मैं तब तक खाईके सामने पड़ा रहूँगा, जब तक वे मेरी बातका उत्तर न देंगे।

रातके समय मुझे पहला तारा दिखाई दिया। युद्ध-क्षेत्र उस समय शान्त था। गहरा साँस लेकर और कुछ उत्तेजित होकर मैं स्वयं अपनेसे आप बोला—"पाल, अब तुम बेवकूफी मत करो। यदि तुम शान्त रहोगे तो तुम्हारे प्राण बच जायँगे।" जिस समय मैंने अपना यह जन्म-नाम लिया, उस समय मुझे ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जान पड़ा कि कोई दूसरा मुझे यह नाम लेकर पुकार रहा है। उस पुकारमें कुछ अधिक बल था।

अन्धकार बराबर बढ़ता जाता था। मेरी उत्तेजना कम हो गई। आकाशमें बाण छूटनेके समय तक मैं बहुत सतर्क होकर प्रतीक्षा करता रहा। जब पहला बाण छूटा, तब मैं धीरे-धीरे उस गड्ढेसे बाहर निकला। अब मैं उस मृत पुरुषको बिलकुल भूल गया था। मेरे सामने आती हुई रात और चमकता हुआ मैदान था। मैं एक दूसरे गड्ढेपर निगाह जमाये हुए था। ज्योंही बाणके प्रकाशका अन्त हुआ, त्योंही मैं उस गड्ढेमें कूद पड़ा। फिर इस प्रकार थोड़ी थोड़ी देर पर मैं दूसरे और तीसरे गड्ढेमें होता हुआ आगे बढ़ने लगा।

इस प्रकार मैं अपनी खाईके पास पहुँच गया। वहाँ बाणके प्रकाशमें मुझे तारोंकी बाढ़के पास कुछ चीज हिलती हुई दिखाई दी। मैं चुपचाप वहीं लेट गया। दूसरी बार जब फिर मुझे वही चीज हिलती हुई दिखाई दी, तब मैंने समझ लिया कि हमारी ही ओरका कोई आदमी है। थोड़ी देरमें और भी बहुत से आदमी घूमते-फिरते दिखाई दिये। पर अभी तक मुझे पूर्ण रूपसे इस बातका निश्चय नहीं होता था कि ये हमारे ही पक्षके आदमी हैं। अन्तमें जब मैंने उन लोगोंके टोप देखे, तब मुझे निश्चय हुआ। मैंने जोरसे पुकारा। उधरसे तुरन्त ही उत्तरमें किसीने मेरा नाम लेकर पुकारा—"पाल, पाल।"

मैंने उत्तरमें कहा—"हाँ मैं ही हूँ।"

मुझे दो आदमी दिखाई दिये। वे कैजिन्स्की और क्राप थे और स्ट्रेचर लेकर मुझे ही ढूँढने निकले थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैजिन्स्कीने मुझसे पूछा—क्या तुम घायल हो गये हो ?

मैं—नहीं ।

हम सब लोग एक साथ ही खाईमें जा पहुँचे । मुझे बेहद भूख लगी थी । मैंने खानेको माँगा और जो कुछ मेरे सामने आया, उसे मैं भूखे भेड़ियेकी तरह खा गया । म्यूलरने मुझे एक सिगरेट दिया । जो कुछ मुझपर बीती थी, उसका वर्णन मैंने संक्षेपमें उन लोगोंको कह सुनाया । पर उसमें कोई नई बात नहीं थी । ऐसा तो प्रायः और सभी लोगोंके साथ हुआ करता था । यहाँ यदि कोई नई और साधारण बात होती है, तो वह केवल रातके समय सैनिकोंका आक्रमण है । इसमें तो एक बार ऐसा हुआ था कि कैजिन्स्कीको शत्रुकी सेनाके पीछे रहकर दो दिन और दो रातें बितानी पड़ी थीं । तब कहीं जाकर वह किसी तरह लौटकर अपने दलमें मिला था ।

उस समय मैंने अपने साथियोंसे उस कम्पोजिटरका कुछ भी हाल नहीं कहा जिसे मैंने गड्ढेमें मार डाला था ।

पर दूसरे दिन जब सवेरा हुआ, तब मैं उस बातको अपने मनमें छिपाये न रह सका । मैंने सोचा कि यह बात कैजिन्स्की और क्राप से अवश्य कह देनी चाहिए । जब मैंने उन्हें सारा हाल सुनाया, तब वे मुझे शान्त करनेका प्रयत्न करने लगे । उन्होंने कहा—भला इसके सिवा उस समय तुम और कर ही क्या सकते थे ? आखिर तुम यहाँ आये और किस लिए हो ? हाँ यह बात दूसरी है कि उसके परिवारवालोंके लिए तुम जो कुछ कर सको, वह करो ।

मैंने बहुत ध्यानसे उन लोगोंकी बातें सुनीं । उनकी बातोंसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरा बहुत कुछ सन्तोष हुआ और उनकी उपस्थितिके कारण मनमें बहुत कुछ धैर्य भी हुआ। अब मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि उस गड्ढेमें उस मृत पुरुषको लक्ष करके मैंने जो कुछ कहा था, वह सब पागलपन था।

कैजिन्स्कीने एक ओर संकेत करते हुए कहा—इसी तरहका एक दूसरा उदाहरण तुम्हें दिखाता हूँ। वह देखो।

सामने थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कुछ सैनिक बन्दूकें लिये हुए खड़े थे और शत्रुओंकी गति-विधि देख रहे थे। बीच-बीचमें शत्रुओंकी ओरसे उन पर गोलियाँ भी चलाई जाती थीं। उनमें से दो एक आदमी गोलियाँ लगनेके कारण गिरकर मर भी गये थे। हमारी ओरके सरजेन्ट ओलरिचने भी इसी तरह शत्रुके कई आदमियोंको मारा था। आज उसने तीन आदमियों पर अचूक निशाना लगाया था। वह सब दृश्य दिखलाकर कैजिन्स्कीने मुझसे पूछा—अब बतलाओ, तुम क्या कहते हो ?

मैंने सिर हिला दिया जिससे सूचित होता था कि यहाँ इस प्रकार की घटनाएँ होना बहुत ही साधारण बात है।

क्राप—यदि वह सन्ध्या तक इसी प्रकार यहाँ डटा रहे और दो तीन आदमियोंको इसी तरह और मार डाले तो अवश्य ही उसे वीरतासूचक पदक मिलेगा।

कैजिन्स्की—बल्कि मैं तो समझता हूँ कि वह स्थानापन्न सरजेन्ट-मेजर बना दिया जायगा।

हम लोग आपसमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे। मैंने कहा—मुझसे कभी इस प्रकार की हत्याएँ न होंगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरजेन्ट ओलरिच अभी तक निशाने लगानेकी फिक्रमें इधर-उधर देख रहा था।

कैजि०—खैर, ये सब बातें अच्छी तरह देख और समझ तो लो।

क्राप—इन सब बातोंका मतलब यही है कि तुम इस घटना की चिन्ता करना छोड़ दो और उसके लिए अपना खाना-पीना या सोना हराम मत करो।

अब मेरी समझमें भी आने लग गया था कि वह कोई बहुत बड़ी और चिन्तनीय घटना नहीं थी। मैंने कहा—मैं तो अब यही समझता हूँ कि मेरे इतने अधिक चिन्तित और दुःखी होनेका केवल यही कारण था कि मुझे बहुत देर तक उस मृत शरीरके साथ उस गड्ढेमें रहना पड़ा था। आखिर युद्ध फिर भी युद्ध ही है।

ओलरिचकी बन्दूकसे बराबर गोलियाँ चल रही थीं।

दसवाँ परिच्छेद

अब हम लोगोंको एक अच्छा काम मिल गया है। हम आठ आदमियों को एक ऐसे गाँवकी रखवाली करनी पड़ती है जिसे उसके निवासी छोड़कर चले गये हैं और जिस पर जोरोंकी गोलाबारी हो रही है।

यहाँ खाद्य पदर्थोंका एक भंडार है जो अभी तक खाली नहीं किया जा सका है। हम लोगोंको उसी भंडारकी रखवाली करनी पड़ती है। उसी भंडारमेंसे ले लेकर हम लोग स्वयं भी खाते हैं; हमारे लिए खानेकी सामग्री कहीं बाहरसे नहीं आती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस खाने-पीनेके कामके लिए और खाने-पीनेकी सामग्रीकी रक्षा करनेके लिए भी हम सभी आदमी बहुत उपयुक्त हैं। कैजिन्स्की, क्राप, म्यूलर, जैडन, डेटेरिंग आदि हमारी मंडलीके सभी लोग यहाँ मौजूद हैं। हाँ, हम लोगोंमें से एक हेई अवश्य मर गया है। यदि वह होता तो और भी अधिक आनन्द आता। पर इस विषयमें भी हमारी टोली और टोलियोंसे बहुत अधिक भाग्यवान् है। और टोलियोंमें अपेक्षाकृत कहीं अधिक आदमी मारे गये हैं।

यहाँ एक छोटा सा तहखाना है जिसमें जानेके लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। हम लोगोंने उसी तहखानेमें डेरा डाला है। उसके दरवाजेके आगे रक्षाके लिए एक पक्की दीवार भी चुनी हुई है।

यहाँ हम लोगोंने एक बहुत अच्छा और बहुत बड़ा काम शुरू कर दिया है। यहाँ हम लोगोंको केवल पैर फैलाकर आराम करनेका ही बहुत अच्छा अवसर नहीं मिला है, बल्कि अपनी आत्माके विकासका भी अच्छा अवसर मिला है। ऐसे अवसरोंका हम लोग बहुत ही अच्छा उपयोग करते हैं। यह युद्ध इतना अधिक निराशाजनक है कि हमें अधिक समय तक भावुक नहीं रहने देता। मनुष्य तभी तक भावुक बना रह सकता है, जब तक कोई बहुत बड़ी और खराब बात न हो। हमारे सामने जैसी परिस्थिति होगी, हमें विवश होकर वैसा ही बनना पड़ेगा। और यहाँकी परिस्थिति ऐसी है कि जब कभी मुझे युद्ध से पहलेके दिनोंका स्मरण होता है, तब मैं काँप उठता हूँ। पर उन दिनोंका स्मरण अधिक समय तक नहीं रहता।

जहाँ तक हो सकता है, हम लोग किसी बात पर बहुत ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कम विचार करते हैं—किसी बातके लिए ज्यादा माथा-पच्ची नहीं करते। और जब हमें किसी बातका उपयुक्त अवसर मिलता है, तब उससे पूरा-पूरा लाभ उठानेसे भी नहीं चूकते। जहाँ एक ओर हमारे सामने युद्धकी विभीषिका मूर्त्तिमती होकर खड़ी रहती है, वहाँ उसके साथ वाहियातपन भी हाथ जोड़े हम लोगों के सामने खड़ा रहता है। यदि ऐसा न हो तो हम लोग मारे घबराहटके मर जायँ। इसलिए हम लोग यहाँ दिन-रात खूब मजेमें खाते-पीते और सोते हैं।

गाँवके मकानोंमेंसे हम लोगोंने बहुत सी चटाइयाँ इकट्ठी करके उसी तहखानेके फर्श पर बिछा ली हैं। सैनिककी पीठ भी मुलायम चीजका ही सहारा ढूँढ़ती है। हाँ, फर्शके बीचमें थोड़ी सी जगह जरूर खाली छोड़ दी गई है। उन चटाइयों पर इधर-उधर से लाकर कम्बल आदि बिछा दिये गये हैं और बढ़िया गुदगुदा बिछौना तैयार कर लिया गया है। गाँवमें सभी चीजें हम लोगोंको इफरातसे मिल जाती हैं। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आपको और मुझे एक बहुत अच्छा पलंग मिल गया जिसके साथ मसहरी भी है। उस पलंग और मसहरीके अलग-अलग टुकड़े किये जा सकते हैं। उसके ऊपर नीले रंगका रेशमी चँदोवा लगा है जिसके किनारे पर लैस टँकी है। उस पलंगको उठाकर अपने तहखाने तक लानेमें हम लोग पसीनेसे तर हो गये हैं। भला ऐसी अच्छी चीज पाकर कोई उसे कैसे छोड़ सकता है? और वह भी विशेषतः ऐसी अवस्थामें जब कि वह जानता हो कि एक दो दिनके अन्दर ही किसी भारी गोलेके आघातसे यह चकनाचूर हो जायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैजिन्स्की और मैं घरोंमें घूम-घूमकर चीजें ढूँढ़ने लगे। बहुत ही थोड़े समयमें हम लोगोंने कोई एक दरजन अंडे और सेर भर ताजा बढ़िया मक्खन इकट्ठा कर लिया। अचानक कुछ खड़खड़ाहट हुई और लोहेका एक अच्छा चूल्हा हम लोगोंसे कोई गज भरकी दूरी पर ऊपरसे आ गिरा। जिस मकानमें हम लोग थे, उसके पिछवाड़ेवाले मकान पर एक गोला आकर गिरा था जिससे दीवारमें दो बड़े-बड़े छेद हो गये थे और उन्हींमेंसे एक छेदमें से होकर यह चूल्हा दूसरे मकानसे आकर इस मकानमें गिरा था। कैजिन्स्कीने मुँह बनाकर कहा—"सूअर कहींके! यहाँ तक गोले फेंकते हैं!" हम लोग फिर इधर-उधर अपने कामकी चीजें तलाश करने लगे। अचानक हम लोगोंके कान खड़े हो गये और हम लोग झपटकर आगे बढ़े। वहीं एक छोटा सा बाड़ा था जिसमें दो छोटे-छोटे सूअर ऊपर-नीचे दौड़ रहे थे। हम लोगोंने निश्चय करनेके लिए बहुत ध्यानसे उनकी ओर देखा। हाँ, सचमुच दो छोटे सूअर थे। हम लोगोंने तुरन्त उन्हें पकड़ लिया। सचमुच वे सूअर ही थे।

हम लोगोंने समझ लिया कि आज हम लोगोंको बहुत बढ़िया भोजन मिलेगा। हम लोगोंके तहखानेसे प्रायः बीस गजकी दूरी पर एक छोटा सा मकान था जिसमें पहले एक अफसर और उसका दफ्तर रहता था। उसके रसोईघरमें कई अच्छे चूल्हे बने हुए थे और भोजन बनानेके बहुत से बरतन भी सजाये हुए रखे थे। हम लोगोंकी आवश्यकताकी सभी चीजें वहाँ मिल गईं। भोजन बनानेवालोंके लिए मानों यहाँ स्वर्गका सा सुख और सुभीता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमारे दो साथी सवेरेसे ही खेतोंमें आलू, गाजर, मटर आदि तलाश करनेके लिए गये हुए थे। यहाँ हम लोगोंको और सब चीजें तो बहुत अधिक मानमें मिल गई थीं, सिर्फ कुछ हरी तरकारियोंकी कमी थी। यहाँ तक कि भोजनके कमरेमें दो गोभियाँ भी तैयार रखी थीं।

दोनों सूअरके बच्चे जिबह किये गये। कैजिन्स्की उनका गोश्त बनानेका इन्तजाम करने लगा। हम लोग गोश्तके साथ खानेके लिए आलूकी कचौरियाँ तैयार करना चाहते थे। सब लोग मिलकर भोजन बनानेके काममें लग गये।

कैजिन्स्कीने सूअरका गोश्त, गाजर, मटर और गोभी बनानेका जिम्मा लिया। मैं कचौरियाँ बनाने लगा। सूअर पहले साबूत ही भून लिये गये थे। सब लोग उनके चारों ओर इस प्रकार खड़े हुए थे जिस प्रकार पूजा आदिके समय लोग किसी वेदीके चारों ओर खड़े होते हैं।

इतनेमें कुछ और लोग वहाँ आ पहुँचे। वे लोग बिना तारके समाचार भेजनेवाले थे। हम लोगोंके पास यथेष्ट खाद्य सामग्री थी, इसलिए हमने उन्हें भी बहुत उदारतापूर्वक भोजनके लिए निमन्त्रित किया। वे लोग एक ऐसे कमरेमें बैठे थे जिसमें एक पियानो भी रखा था। उनमें से एक आदमी गाने लगा और दूसरा पियानो बजाने लगा। उसका गाना भी बहुत मजेदार था। इधर हम लोग भोजन बना रहे थे, उधर वे लोग गा-बजा रहे थे। उनके गानेके साथ साथ हम लोग बीच-बीचमें नाचने भी लगते थे।

पर शीघ्र ही हम लोगोंको ऐसा जान पड़ने लगा कि हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगों पर कोई विपत्ति आना चाहती है। भेद लेनेवाले गुब्बारों ने हमारी रसोईका धूआँ देख लिया था और हमारे मकानका ठीक अन्दाज लगा लिया था। अब हम लोगों पर गोले गिरने लगे। ये कम्बख्त गोले ऐसे थे जो दीवारमें छोटा सा छेद करके अन्दर घुस आते थे और जमीन पर गिरकर इधर-उधर फटकर छितरा जाते थे। वे गोले हम लोगोंके चारों ओर गिर रहे थे और बराबर पास आते जाते थे। लेकिन फिर भी हम लोग खाने-पीने का इतना ज्यादा और इतना अच्छा सामान सहजमें नहीं छोड़ सकते थे। गोलोंके कुछ टुकड़े रसोईघरके ऊपरवाली खिड़की तक आ गिरे थे। मांस तो भुनकर तैयार हो गया था, पर कचौरियाँ बनाना मुश्किल हो रहा था। गोले बहुत ही जल्दी जल्दी आ रहे थे और दीवारोंसे टकराकर खिड़कियोंके रास्ते अन्दर तक उनके टुकड़े पहुँच रहे थे। ज्यों ही किसी गोले के गिरने का शब्द होता था, त्यों ही मैं झुककर खिड़कीके नीचे दीवारकी आड़में हो जाता था; और उसके बाद तुरन्त खड़ा होकर कचौरियाँ तलने लगता था।

अब उधर गाना बजाना भी बन्द हो गया, क्योंकि गोलेमें का एक टुकड़ा आकर पियानो पर लगा था। किसी प्रकार सब चीजें बनकर तैयार हुईं और अब हम लोग उन्हें उठाकर तहखानेमें ले जानेकी चिन्ता करने लगे। अबकी बार जब धड़का हुआ, तब उसके बाद दो आदमी तुरन्त ही खानेकी दो रिकाबियाँ लेकर तहखानेकी ओर दौड़े। तहखाना वहाँसे प्रायः पचास गजकी दूरी पर था। हम लोगोंने उन दोनों आदमियों को तहखानेमें घुसते हुए देखा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर जब दोबारा धड़ाका हुआ, तब फिर दो आदमी बढ़िया कहवेका टिन लेकर दौड़े और नया धड़ाका होनेसे पहले ही तहखानेमें पहुँच गये।

इसके बाद कैजिन्स्की और क्रापने सूअरके मांससे भरा हुआ बड़ा थाल उठाया और वे भी दौड़कर पचास गजकी दूरी पार करते हुए तहखानेमें जा पहुँचे।

पर मुझे अभी तक चार कचौरियाँ तलनी बाकी थीं, इसलिए उनके आसरे मुझे रुकना पड़ा। मुझे वे कचौरियाँ बहुत अच्छी लगती थीं और उन्हें मैं किसी तरह छोड़ नहीं सकता था। उन्हें तलनेके लिए मुझे दो बार जमीन पर लेटना पड़ा था, क्योंकि इस बीचमें दो और गोले वहाँ आकर गिरे थे।

अन्तमें जब सब कचौरियाँ तैयार हो गईं, तब उन्हें एक बड़ी रिकाबीमें रखकर मैं दरवाजेकी आड़में दबककर खड़ा हो गया। फिर जब गोला चलनेका सर्राटा और धड़ाका हुआ, तब मैं दोनों हाथोंसे रिकाबी को छाती से लगाये और सँभाले हुए तहखाने की ओर दौड़ा। ज्यों ही मैं तहखानेके दरवाजे पर पहुँचा, त्यों ही फिर सर्राटा और धड़ाका हुआ। मैं उस समय हिरनके समान तेजीके साथ दौड़ा आ रहा था; इतनेमें पीछेसे गोलेके कुछ टुकड़े वहीं आकर गिरे। तहखानेकी सीढ़ियों पर मेरा पैर लड़खड़ाया और मेरी कोहनी भी छिल गई। पर फिर भी मैंने रिकाबी सँभाल रखी और उसमेंसे एक भी कचौरी जमीन पर गिरने नहीं दी।

दो बजे हम लोगोंने भोजन करना आरम्भ किया और छः बजे तक भोजन होता रहा। फिर साढ़े छः बजे तक सब लोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कह्वा पीते रहे। साथ साथ बढ़िया सिगरेट और सिगार भी चलते रहे। ये दोनों चीजें हम लोग उसी अफसरके मकानमें से लाये थे। साढ़े छः बजे फिर सबने खाना शुरू किया और अन्त में रातको दस बजे सूअरकी हड्डियाँ खिड़कीके बाहर फेंकी गईं। अब शराबकी बारी आई। वह भी हमें उसी अफसरके मकानसे मिली थी। शराबके साथ साथ बढ़िया सिगार भी फूँके जा रहे थे। उस अवसर पर जैडनने कहा था—बस अब खाली एक चीजकी कसर है। अगर अफसरोंके चकलेसे यहाँ कुछ औरतें आ जातीं तो वह कसर भी पूरी हो जाती।

कुछ रात बीतने पर हम लोगोंको म्याँव म्याँवका शब्द सुनाई पड़ा। दरवाजेके पास ही एक छोटी भूरी बिल्ली बैठी हुई थी। हम लोगोंने उसे कसरेके अन्दर फँसा लिया और उसे कुछ खानेको दिया। उसे खाते देखकर हम लोगोंको फिर भूख लग पड़ी। फिर सब लोगोंके मुँह चलने लगे और उसी दशामें सब लोग सो गये।

पर रात बहुत ही बुरी तरहसे बीती। हम लोग बहुत ज्यादा चरबी खा गये थे। छोटे सूअरके गोश्तके साथ आँतोंको खासी लड़ाई करनी पड़ती है। रात भर लोगोंका तहखानेसे बाहर जाना और अन्दर आना लगा रहा। हर दम दो तीन आदमी अपनी पतलूनें सँभालते हुए बाहर दरवाजेके पास बैठे रहते थे और सूअरके मांसको कोसते जाते थे। स्वयं मुझे रात भरमें नौ बार पाखाने जाना पड़ा था। सवेरे चार बजे तो मानों हद हो गई। हम सब पहरेदार और आगन्तुक मिलाकर ग्यारह आदमी थे और उस समय सबके सब बाहर एक साथ ही पाखाने बैठे हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात भर आस-पासके मकान मशालोंकी तरह जलते रहे। लगातार गोले पर गोले आते थे और धड़ाकोंका ताँता ही नहीं टूटता था। सब गलियाँ ईंटों, पत्थरों और काठ-कबाड़ आदिसे भर गई थीं। तिसपर मजा यह था कि गोले आदि पहुँचाने-वाली गाड़ियाँ बराबर उसी रास्तेसे होकर जा रही थीं। इतनी अधिक गोलेबारीमें भी वह गलियाँ उसी तरह भरी हुई थीं जिस तरह शहदकी मक्खियोंका छत्ता मधुमक्खियोंसे भरा रहता है। उन गाड़ियोंके चलानेवाले भुक्खड़ोंकी तरह रोटियों पर टूटते थे। हमारे भंडारको भी, जिसकी चौकीदारीके लिए हम लोग तैनात थे, उन्होंने मनमाना लूटा-पाटा। हम लोगोंने भी उनके काममें कोई बाधा नहीं दी। यदि उस समय हम लोग कुछ भी बोलते तो शायद हमें उस तहखानेसे भी हाथ धोना पड़ता। इसलिए हम लोग चुपचाप उनका तमाशा देखते रहे। उन लोगोंसे हमने सिर्फ इतना कह दिया कि हम लोग यहाँके चौकी-दार हैं और अपना काम करना खूब अच्छी तरह जानते हैं। हम लोगोंके पास खाने का बहुत सा सामान था, इसलिए उसके बदलेमें हम लोगोंने उनसे अपनी आवश्यकता की कुछ और चीजें ले लीं। इस तरहकी चीजें लूटने और उनका अदला-बदला करनेमें कोई हर्ज भी नहीं था; क्योंकि सभी लोग अच्छी तरह जानते थे कि यदि ये सब चीजें जहाँकी तहाँ रहने दी जायँगी तो थोड़ी ही देरमें गोलोंकी मारसे नष्ट हो जायँगी। हम लोगोंने अपने लिए कुछ चाकलेट अवश्य संग्रह कर रखे थे। कारण यह था कि कैजिन्स्कीने हम लोगोंको बतला दिया था कि यदि अधिक दस्त आवें तो चाकलेट खानेसे बन्द हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोगोंको इस तरह खाते-पीते और मौज करते कोई दो सप्ताह बीत गये। किसीने आकर हम लोगोंके इन कामोंमें कोई बाधा नहीं डाली। धीरे-धीरे गोलोंकी मारसे सारा गाँव नष्ट हो गया। हम लोगोंको भी संसारमें किसी बातकी चिन्ता नहीं थी। हम लोग तो सिर्फ यही चाहते थे कि हमारा भंडार बचा रहे और उसमें की खाने-पीनेकी चीजें कम न हों। फिर यदि हम लोगोंको युद्धकी समाप्ति तक भी यहीं पड़े रहना पड़े तो कोई हर्ज नहीं। हर्ज क्या, उलटे हम लोगोंके लिए और भी मौज है।

जैडन तो यहाँ आकर इतना बड़ा नवाब हो गया है कि सिगरेट और सिगार आधा ही पीकर फेंक देता है। वह खूब शानसे सिर उठाकर कहा करता है कि मैं तो सदासे इसी तरह आधा सिगरेट पीता हूँ और आधा फेंक देता हूँ। कैजिन्स्की यहाँ बहुत ही आनन्दपूर्वक रहता है। सवेरा होते ही वह लोगोंको कहवा और जलपान लानेकी आज्ञा देता है। और फिर उसीको क्यों कहा जाय, सभी लोगोंका यहाँ यही हाल है। सब लोग रईस और नवाब बने हैं और हर आदमी बाकी सब लोगोंको अपना नौकर और खिदमतगार समझता है। सब एक दूसरे पर हुकुम चलाते हैं और सब एक दूसरेको डाँटते-डपटते हैं। सारा दिन इसी तरहके हँसी-मजाकमें बीतता है। कोई किसीके सामने पैर फैलाकर कहता है—जरा पैर दबाओ। और कोई दूसरोंको सिगरेट और पानी लानेका हुकुम देता है। कोई दूसरोंसे कवायद कराता है और कोई शिक्षक बनकर दूसरोंको पढ़ाने बैठता है।

इसी प्रकार और आठ दिन बीत जानेके बाद हम लोगोंको वहाँसे लौटनेकी आज्ञा मिली। इस प्रकार हम लोगोंके आनन्दके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिनोंका अन्त हुआ। दो बड़ी-बड़ी मोटर लारियाँ आकर हम लोगोंको वहाँसे ले गईं। उन लारियोंके ऊपर गोलोंसे रक्षाके लिए बड़े-बड़े तख्ते लगे हुए थे। उन्हीं तख्तोंके ऊपर क्रापने और मैंने अपना बढ़िया मसहरीदार पलंग ऊपरके रेशमी चँदोवेके साथ खड़ा कर दिया; और उसके पास ही खाने-पीनेकी खूब बढ़िया-बढ़िया चीजोंसे भरा हुआ एक बोरा भी रख दिया गया। रास्तेमें सब लोग उसमेंसे मनमानी चीजें निकालकर खाते भी चलते थे। उस बड़े बोरेके सिवा हर एक आदमीका अपना-अपना एक अलग थैला भी था।

क्रापने और मैंने दो बढ़िया आराम-कुरसियाँ भी पाई थीं। वे कुरसियाँ उसी मसहरीमें रखी हुई थीं। बीच-बीचमें हम लोग उन कुरसियों पर उसी तरह जा बैठते थे जिस तरह लोग थिएटरमें बैठा करते हैं। हम लोगोंके ऊपर वह रेशमी चँदोवा तना हुआ था। हर एक आदमीके मुँहमें एक लम्बा सिगार लगा हुआ था। इस प्रकार ठाठसे उन कुरसियों पर बैठकर हम लोग आस-पासके दृश्य देखा करते थे।

गाँवमें हम लोगोंको तोता रखनेका एक पिंजड़ा मिल गया था और उसीमें हम लोगोंने उस बिल्लीको बन्द कर रखा था। वह बिल्ली भी मै पिंजड़ेके हम लोग अपने साथ ले आये थे। वह पिंजड़ा भी हम लोगोंके सामने पड़ा हुआ था और उसमें बिल्लीके खानेके लिए मांसकी रिकाबी और पानी-पीनेके लिए एक कटोरी भी रखी थी।

लारियाँ धीरे-धीरे सड़क पर चली जा रही थीं। हम लोग मौजसे गा रहे थे। जो गाँव छोड़कर हम लोग आ रहे थे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब जिसमें मकान या आदमीका नाम भी नहीं था, उस पर अभी तक बराबर गोलेबारी हो रही थी।

× × × ×

कुछ दिनों बाद हम लोग एक गाँव खाली करनेके लिए भेजे गये। रास्तेमें हमें उस गाँवके बहुत से रहनेवाले मिले जो असबाबकी गठरियाँ सिर और पीठ पर लादे हुए वहाँसे भागे चले आ रहे थे। कुछ लोगोंके साथ छोटी ठेला गाड़ियाँ भी थीं जिन पर घर-गृहस्थीके सब तरहके सामान लदे हुए थे। उन लोगोंकी आकृतिसे बहुत अधिक दुःख, निराशा, उतावलापन और उदासीनता प्रकट होती थी। बहुत से बच्चे भी थे जो अपनी माता या किसी बड़ी-बूढ़ीका हाथ पकड़े हुए थे। कई सयानी लड़कियाँ थीं जो छोटे-छोटे बच्चोंका हाथ पकड़े चली आ रही थीं। छोटे-छोटे बच्चे रह रहकर बहुत ही निराश और कुतूहलकी दृष्टिसे पीछेकी ओर देखते थे और आगे ठोकर खाते थे। कुछ बच्चोंके हाथोंमें टूटी-फूटी गुड़ियाँ भी थीं। जब वे लोग हमारे पाससे होकर निकले थे, तब सबके सब चुप थे। किसीके मुँहसे कोई शब्द नहीं निकलता था।

हम लोग कतार बाँधे हुए चल रहे थे। यह निश्चित था कि फ्रान्सीसी लोग किसी ऐसे गाँव पर गोले नहीं बरसावेंगे जिसमें अभी तक वहाँके कुछ निवासी मौजूद हों। लेकिन कुछ ही मिनटोंके बाद एक सर्राटा हुआ और जमीन काँप उठी। हम लोगोंकी टुकड़ीके पिछले भागमें एक गोला आकर गिरा था। हम सब लोग तितर-बितर होकर जमीन पर लेट गये। मैं समझता हूँ कि उस समय कोई जान-बूझकर जमीन पर नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेटा था। हम लोगोंके अन्दर कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी जो ऐसे संकटके समय हमारी रक्षाके लिए हमें इस प्रकार लेटा देती थी। उस समय मनमें आपसे आप यह विचार उत्पन्न होता था कि हमारे नाशका समय निकट आ रहा है और उससे बचनेके लिए लोग अनजानमें ही अनेक प्रकारके यत्न कर बैठते थे। इतनेमें कोई चीज बहुत तेजीके साथ आकर मेरे बाएँ पैरमें लगी। साथ ही मुझे झापके चिल्लानेकी आवाज सुनाई पड़ी। वह मेरे पास ही लेटा हुआ था।

मैंने चिल्लाकर कहा—झाप, जल्दी यहाँसे उठकर भागो।

उस समय मुझे यही ध्यान हुआ था कि हम सब लोग खुले मैदानमें बहुत ही अरक्षित अवस्थामें पड़े हुए हैं। मेरी बात सुनते ही झाप लड़खड़ाता हुआ उठा और भागा। मैं भी उसके साथ ही दौड़ पड़ा। हम लोगोंको एक झाड़ीके उस पार पहुँचना था और वह झाड़ी हम लोगोंकी ऊँचाईसे अधिक ऊँची थी। झापने उसकी एक डाल पकड़ ली और मैंने उसके पैर पकड़कर उसे ऊपर उठाया। वह चिल्लाया। मैंने उसे जोरसे झटका दिया जिससे वह उछलकर उस पार जा पहुँचा। एक कुदानमें मैं भी उसके पास पहुँच गया और पानीसे भरी एक खाईमें जा गिरा जो उस झाड़ीके पीछे थी।

हम लोगोंके मुँहमें बहुत सी मिट्टी और कीचड़ लग गया था; पर हम लोग इन बातोंका कहाँ तक ध्यान कर सकते थे! इसमें सन्देह नहीं कि छिपनेके लिए हम लोगोंको वह एक अच्छा स्थान मिल गया था। वहींसे हम लोग गरदन निकालकर बाहर देखने लगे। ज्यों ही किसी गोलेके आनेका सर्राटा सुनाई देता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था, त्यों ही हम लोग पानीमें डुबकी लगा जाते थे। कोई दस बारह बार इस तरह सिर निकालने और डुबकी लगाने पर मैं बहुत थक गया।

क्राप भी इस अवस्थामें रहनेके कारण बहुत दुःखी हो रहा था। वह बोला—चलो भाई, यहाँसे बाहर निकलें। नहीं तो मैं इस पानीमें डूब जाऊँगा।

मैं—तुम्हें कहाँ चोट लगी है ?

क्राप—मैं समझता हूँ कि शायद घुटनेमें लगी है।

मैं—क्या तुम दौड़ सकते हो ?

क्राप—मैं समझता हूँ कि शायद।

मैं—अच्छा तो फिर बाहर निकलो।

सड़कके पास ही एक और खाई थी। हम लोग वहाँसे निकलकर उसीकी ओर दौड़ पड़े। हम लोगोंके पीछे बराबर गोले आकर गिरते थे। वह सड़क गोले-बारूदके गोदामकी ओर जाती थी। हम लोगोंने देखा कि अगर हम लोग इसी तरह दौड़ते रहे और इसी तरह गोले बरसते रहे तो हमारी खैरियत नहीं। इसलिए सीधी सड़क छोड़कर हम लोग एक तरफ मुड़ गये और खेतोंमेंसे होते हुए आगे बढ़ने लगे।

पैरमें चोट लगनेके कारण क्रापसे चला नहीं जाता था, इसलिए वह रास्तेमें ही गिर पड़ा और बोला—तुम बढ़ो, मैं अभी आता हूँ।

पर मैंने उसे वहाँ उस अवस्थामें छोड़ना उचित नहीं समझा, इसलिए बाँह पकड़कर उसे हिलाया और कहा—चलो चलो, उठो। जहाँ तुम एक बार गिरे कि फिरसे यहाँसे किसी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उठनेके काबिल न रह जाओगे। चलो, जल्दी करो। मैं तुम्हें सहारा देकर ले चलूँगा

अन्तमें हम लोग किसी तरह एक छोटे गड्ढेमें पहुँच गये जो सैनिकोंके रहनेके लिए बना था। वहाँ पहुँचकर मैंने उसके घाव पर पट्टी बाँधी। उसे घुटनेसे कुछ ऊपर चोट लगी थी। इसके बाद मैं अपने आपको देखने लगा। मेरे पाजामे और बाँह में खून लगा हुआ था। क्रापने मेरे घाव पर पट्टी बाँध दी। अब क्राप की ऐसी दशा हो गई थी कि वह बिलकुल चल-फिर नहीं सकता था। हम लोगोंको तो यही आश्चर्य हो रहा था कि वह इतनी दूर कैसे चला आया ! मैं तो समझता हूँ कि केवल भयके कारण वह यहाँ तक चलकर आनेमें समर्थ हुआ था। उस समय यदि हम लोगोंके पैर कट जाते तो भी शायद हम लोग किसी न किसी तरह यहाँ पहुँच ही जाते। पैर न रह जाने पर हमारा धड़ ही उछलता हुआ चलता और किसी रक्षित स्थानमें अवश्य पहुँच जाता।

मैं अब भी कुछ दूर तक रेंगकर चल सकता था। थोड़ी देर बाद हम लोगोंको पाससे जाती हुई घायलोंको ले जानेवाली एक गाड़ी दिखाई दी। मैंने उस परके आदमियोंको पुकारा। उन्होंने आकर हम लोगोंको उठा लिया। वह गाड़ी पहलेसे ही घायलोंसे भरी हुई थी। उस गाड़ी पर एक चिकित्सक भी था जिसने हम लोगोंकी छातीमें औषधसे भरी हुई एक सूई लगा दी। यह सूई इसलिए लगाई गई थी जिसमें हम लोगोंके घावमें जहर न पैदा हो जाय।

अस्पतालमें पहुँचकर हम लोगोंने कुछ ऐसा तार बैठा लिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि हम दोनोंको पास ही पास बिस्तर मिल गया। वहाँ हमें पीनेके लिए शोरबा मिला जो हम जल्दी जल्दी पी गये। यद्यपि इधर हम लोगों को प्रायः खाने-पीनेकी अच्छी चीजें मिला करती थीं, तो भी हम लोग सदा भूखे ही बने रहते थे—हमारी भूख किसी तरह मिटती ही नहीं थी।

शोरबा पी चुकनेके बाद मैंने कहा—क्राप, अब हम लोग घर भेज दिये जायँगे।

क्राप—हमें आशा तो ऐसी ही करनी चाहिए। पर सबसे पहले मैं यह जानना चाहता हूँ कि मुझे हुआ क्या है।

धीरे-धीरे हम लोगोंका दरद बढ़ने लगा और घाव परकी पट्टियाँ आगकी तरह जलने लगीं। प्यास भी बहुत बढ़ गई थी और हम लोग बराबर पानी पीते जाते थे।

क्राप—मुझे घुटनेसे कितने ऊपर चोट लगी है?

मैं—करीब चार इंच ऊपर।

मैंने यह बात झूठ कही थी। वास्तवमें उसे घुटनेसे प्रायः एक इञ्च ऊपर चोट आई थी। पर यह बात बतलाकर मैं उसे और अधिक चिन्तित नहीं करना चाहता था।

कुछ देर ठहरकर वह बोला—मैंने तो अपने मनमें निश्चय कर लिया है। यदि यहाँ डाक्टरोंने मेरी टाँग काट दी तो मैं किसी न किसी प्रकार अपने जीवनका अन्त कर डालूँगा। मैं लँगड़ा-लूला होकर जीता रहना नहीं चाहता।

इस प्रकार तरह तरहकी बातें सोचते हुए हम लोग वहीं पड़े रहे और इस प्रतीक्षामें रहे कि अब क्या होता है।

× × × ×

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन्ध्या समय हम लोग वहाँ पहुँचाये गये, जहाँ अस्त्र-चिकित्सा होती थी। मुझे मनमें बहुत अधिक भय होने लगा और मैं सोचने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए; क्योंकि यह बात यहाँ सभी लोग अच्छी तरह जानते थे कि डाक्टर लोग जरा सा बहाना मिलते ही हाथ-पैर काट डालते हैं। यहाँ डाक्टरोंके पास काम इतना अधिक रहता है कि वे औषध आदि की सहायतासे अथवा चीर-फाड़ और सी-साकर घावोंको अच्छा करनेका समय ही नहीं पाते। इसलिए सबसे सीधा रास्ता उन्होंने यही निकाल रखा है कि घायल अंग ही काट डाला जाय। यह काम बहुत जल्दी हो जाता है और इसमें उन्हें अधिक झगड़ा-बखेड़ा नहीं करना पड़ता। उसी समय मुझे कैमेरिकका ध्यान हो आया। मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो, मैं उन लोगोंको क्लोरोफार्म कभी न सुँघाने दूँगा; चाहे इस काममें मुझे दो चार डाक्टरोंकी खोपड़ियाँ ही क्यों न तोड़नी पड़ें।

डाक्टरने आकर मेरे घावका अन्दाज लगानेके लिए उसके आस-पास सूई गड़ाना आरम्भ किया जिससे मेरी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। उस प्रकाशमें डाक्टरोंके चीर-फाड़के औजार जहरीले जानवरोंकी तरह चमक रहे थे। मेरे घावमें असह्य पीड़ा हो रही थी। दो अरदलियोंने मेरे दोनों हाथ कसकर पकड़ लिये। उनमेंसे एकसे मैंने किसी तरह अपना हाथ छुड़ा लिया और इस प्रकार हाथ पटका कि डाक्टरका चश्मा टूटता टूटता बच गया। मुझे इस प्रकार छटपटाते देखकर वह जल्दीसे पीछे हट गया और क्रोधसे पागल होकर चिल्ला उठा—जल्दी इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बदमाशको क्लोरोफार्म सुँघाओ।

क्लोरोफार्मका नाम सुनकर मैं ठंढा पड़ गया। मैंने बहुत ही शान्त भावसे कहा—डाक्टर साहब, आप मुझे क्षमा करें। मैं चुपचाप पड़ा रहूँगा। पर आप कृपाकर मुझे क्लोरोफार्म न सुँघावें।

डाक्टर—अच्छा तो फिर घाव देखने दो।

यह कहकर डाक्टरने अपना यन्त्र फिर उठाया। उसका रंग गोरा था और अवस्था तीस वर्षसे अधिक नहीं थी। उसकी आँखों पर सोनेका भद्दा चश्मा लगा हुआ था। अब मेरी समझमें यह आने लगा कि वह मुझे केवल कष्ट देना चाहता है, क्योंकि वह हाथसे तो घावमें सलाई फेर रहा था और आँखों से मेरे मुँहकी ओर देख रहा था। मेरा यही जी चाहता था कि उसे धक्का देकर हटा दूँ।

कुछ देर बाद उसने गोलेमेंका एक टुकड़ा मेरे घावमेंसे निकालकर मुझे दिखलाया। इतनी देर तक मैंने अपने आपको जो सँभाल रखा था, उससे वह प्रसन्न जान पड़ता था, क्योंकि अब उसने मेरा पैर धीरेसे एक पटरी पर फैला दिया और मुझसे कहा—अब तुम कल घर भेज दिये जाओगे। इसके बाद मेरे पैर पर एक प्रकार का प्लास्टर लगा दिया गया। जब मैं लौटकर फिर क्रापके पास पहुँचा, तब मैंने उससे कहा—ऐसा जान पड़ता है कि कल सवेरे अस्पतालकी कोई रेल-गाड़ी आवेगी।

कुछ देर बाद मैंने उससे यह भी कहा कि हम लोगोंको किसी उपाय से सैनिक डाक्टरको मिला रखना चाहिए जिसमें यहाँसे रवाना होते समय भी हम लोग एक साथ ही रखे जायँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस प्रकारकी व्यवस्था सरजेन्ट-मेजरके ही हाथमें रहती थी, इसलिए मैंने उसके हाथमें धीरेसे दो सिगार पकड़ा दिये और तब उसे अपना अभिप्राय कह सुनाया। उसने उन सिगारों को सूँघकर पूछा—क्या इसमेंके और भी सिगार तुम्हारे पास हैं?

मैं—मेरे पास भी हैं और मेरे उस साथीके पास भी हैं। कल जब हम लोग अस्पतालवाली रेल गाड़ीमें सवार होंगे, तब उसकी खिड़कीमेंसे हम लोग आपको ऐसे बहुत से सिगार दे सकेंगे।

उसने सब बातोंका मतलब समझ लिया और फिरसे उन सिगारोंको सूँघकर कहा—अच्छा, सब ठीक हो जायगा।

रात भर हम लोगोंको एक मिनटके लिए भी नींद नहीं आई। हमारे वार्डमें उस रातको सात आदमी मरे थे। एक आदमी मरनेसे कुछ ही देर पहले टूटे-फूटे सुरमें कुछ गाने भी लगा था। एक और आदमी था जो मरनेसे कुछ पहले अपने विस्तरसे उठकर खिड़कीके पास जा पहुँचा था। वहाँ वह इस प्रकार जा लेटा था कि मानों वह वहाँसे अन्तिम वार बाहरका दृश्य देखना चाहता था।

× × × ×

हम लोगोंके स्ट्रेचर रेलवेके प्लाटफार्म पर पड़े हुए थे। हम लोग गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय पानी बरस रहा था और वहाँ ऊपर छत या छायाकी चीज नहीं थी। हम लोगोंके कम्बल भी पतले थे; और हम लोगोंको यहाँ आये प्रायः दो घन्टे हो चुके थे।

सरजेन्ट-मेजर को हम लोगोंकी उतनी ही चिन्ता थी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जितनी माताको अपने बच्चोंकी हुआ करती है। यद्यपि उस समय मेरी अवस्था खराब हो रही थी, तो भी मैं यह नहीं भूला था कि मुझे इस समय अपना काम कैसे निकालना चाहिए। मैं बीच-बीचमें उसे सिगारका पैकेट दिखला दिया करता था और एकाध सिगार उसे पेशगीके तौर पर दे भी देता था। इसके बदलेमें सरजेन्ट-मेजरने हम लोगों पर एक मोमजामा भी ओढ़ा दिया था।

अचानक मैंने क्रापसे कहा—यार हम लोगोंका वह पलंग और बिछौ........।

क्राप—और वह आराम-कुरसियाँ ?

उसका कहना ठीक था। वह आराम-कुरसियाँ भी बहुत बढ़िया थीं। सन्ध्याके समय हम लोग उन कुरसियों पर लाट साहब की तरह डटकर बैठा करते थे और यह भी सोचते थे कि इसे दूसरोंको घन्टेके हिसाबसे भाड़े पर दिया करेंगे। एक घण्टेका भाड़ा एक सिगरेट लेंगे। यह एक अच्छा-खासा रोजगार हो जाता और इससे हम लोगोंकी एक अच्छी आमदनी खड़ी हो जाती।

अपनी इन सब चीजोंका ध्यान करके हम लोग मनमें बहुत दुःखी हुए। उनका हम लोग अच्छा उपयोग कर सकते थे। यदि हम लोगोंको यहाँसे आज न चलकर एक दिन बाद चलना होता तो कैजिन्सकी जरूर किसी न किसी तरह हम लोगोंका पता लगा लेता और वे सब चीजें लाकर हमारे पास पहुँचा जाता।

हम लोगोंकी कम्बख्त तकदीर भी कैसी खराब है! हमारे थैलोंमें बढ़िया भुना हुआ सूअरका गोश्त है और हमारे पेटमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्पताल का रद्दी भोजन भरा है। पर इस समय हम लोग इतने दुर्बल हो रहे हैं कि कुछ कर ही नहीं सकते।

सवेरे जब रेल-गाड़ी आई, तब तक हम लोगोंके स्ट्रेचर बिलकुल भींग गये थे। सरजेन्ट-मेजरने ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि हम दोनों आदमी एक ही डब्बे में रखे गये। वहाँ घायलोंकी सेवा-शुश्रूषा करनेवाली दाइयोंकी भीड़ लगी थी। क्रापको तो नीचेवाली बेंच पर लेटा दिया गया और मेरा बिस्तर उसके ठीक ऊपर लटकनेवाली पटरी पर लगा।

अचानक मेरे मुँहसे निकल गया—वाह, बहुत बढ़िया !

दाईने पूछा—क्या बात है ?

मैंने बिस्तर पर निगाह डाली। उस पर बहुत बढ़िया और साफ मलमलकी चादर बिछी थी। अभी तक उस पर लोहेकी इस्तरीके दाग ज्योंके त्यों बने थे। और इधर मेरी कमीज ऐसी थी जो छः हफ्तोंसे बिलकुल धुली ही नहीं थी और हदसे ज्यादा मैली-कुचैली थी।

दाईने बहुत भलमनसतसे पूछा—क्या तुम स्वयं ऊपर चढ़कर अपने बिस्तर पर नहीं जा सकते हो ?

मैं—मैं ऊपर चढ़ तो अवश्य सकता हूँ, पर पहले बिस्तर परकी चादर हटा लो।

दाई—यह क्यों ?

मैंने कुछ संकोचपूर्वक कहा—मैं तो सूअरोंकी तरह गन्दा हो रहा हूँ। भला ऐसी अवस्थामें क्या मुझे उस पर लेटना चाहिए ? वह मैली........।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दाई—यदि वह कुछ मैली भी हो जायगी तो कोई चिन्ताकी बात नहीं है। हम लोग उसे फिर धो डालेंगे।

मैंने कुछ उत्तेजित होकर कहा—नहीं नहीं, यह बात ठीक नहीं है।

मैं अपने आपको किसी तरह उस साफ बिस्तर पर सोनेके योग्य नहीं समझता था।

दाई—जब तुम लोग खाइयोंमें इतने दिनों तक पड़े रह सकते हो, तब क्या हम लोग एक चादर भी नहीं धो सकतीं ?

मैंने उसकी ओर देखा। वह युवती और देखनेमें अच्छी थी और उसके कपड़े-लत्ते भी बहुत साफ-सुथरे थे। यही क्यों, यहाँकी सभी चीजें साफ-सुथरी थीं। यहाँ का सामान देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह अफसरोंके सिवा मामूली सिपाहियोंके लिए भी है। यहाँकी सफाई देखकर बहुत आश्चर्य होता था और सहसा किसीको इन बिस्तरों पर पैर रखनेका साहस नहीं होता था।

पर वह दाई सहजमें माननेवाली नहीं थी, इसलिए उसने फिर मुझसे वही आग्रह किया। अन्तमें मैंने भी यही उचित समझा कि उसे साफ-साफ बतला दूँ कि मैं क्यों उस बिस्तर पर नहीं सोना चाहता। जब उसने पूछा कि तुम इसपर सोनेसे इतना क्यों घबराते हो, तब मैं बोला—मेरे कपड़ोंमें जूएँ भरी हैं।

वह हँस पड़ी और बोली—चलो अच्छी बात है। एक दिन वे भी इस बिस्तर पर आनन्दसे रह लेंगी।

अब मैंने अधिक इन्कार करना उचित न समझा और बिस्तर पर पहुँचकर चादर तान ली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतनेमें मुझे ऐसा जान पड़ा कि किसीने मेरे बिस्तर पर हाथ रखा है। मैंने देखा तो सामने सरजेन्ट-मेजर खड़ा था। मैंने उसे सिगार दे दिये और वह उन्हें लेकर चलता बना।

घन्टे भर बाद हम लोगोंको ज्ञात हुआ कि गाड़ी चल रही है।

× × × ×

रातको अचानक मेरी नींद खुल गई। क्रापको भी बहुत बेचैनी थी। रेल गाड़ी मजेमें चली जा रही थी। वहाँ मैं जिस तरह आरामसे पड़ा था, उससे यही मालूम होता था कि मैं अपने घर पर ही हूँ। मैंने क्रापको पुकारा।

उसने धीरेसे कहा—हाँ, कहो क्या है ?

मैं—तुम जानते हो कि यहाँ पेशाबखाना कहाँ है ?

क्राप—मैं समझता हूँ कि वह दाहिनी ओर जो दरवाजा है, वह पेशाबखानेका ही है।

मैं—अच्छा जरा जाकर देख तो आऊँ।

उस समय गाड़ीमें अँधेरा था। मैं धीरेसे नीचे उतरनेका प्रयत्न करने लगा। पर नीचे कोई ऐसी चीज ही नहीं मिलती थी जिस पर पैर रखकर मैं उतरता। इसलिए मैं धीरे-धीरे नीचे खिसकने लगा। मेरे जिस पैरमें घाव था, उससे तो कोई सहायता मिलती ही न थी, इसलिए मैं नीचे फर्श पर गिर पड़ा।

मेरे मुँहसे निकल गया—तेरा सत्यानाश हो !

क्राप—क्या हुआ ? गिर पड़े ?

मैं झुँझलाकर बोला—यह तो तुम्हें धमाकेकी आवाजसे ही समझ लेना चाहिए था। मेरा सिर........।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे डिब्बेके पिछले भागका दरवाजा खुला। एक दाई हाथमें रोशनी लिये हुए पहुँची और मुझे देखने लगी।

आपने उससे कहा—मेरा साथी ऊपरसे गिर पड़ा है।

वह एक हाथसे मेरी नाड़ी देखने लगी और दूसरे हाथसे मेरा माथा सहलाने लगी। उसने मुझसे पूछा—तुम्हें बुखार तो नहीं है ? मालूम तो नहीं होता।

मैं—नहीं, मुझे बुखार नहीं है।

वह—क्या तुम कोई स्वप्न देख रहे थे ?

मैंने सोचा कि इसे अपनी भूल क्यों बतलाऊँ, इसलिए मैंने कहा—शायद·········।

वह अपने स्वच्छ नेत्रोंसे मेरी ओर देखने लगी। उसके रूप और सुन्दर व्यवहारका मुझ पर कुछ ऐसा जादू चल गया था कि मैं उसे यह बतला ही नहीं सका कि मैं क्या चाहता हूँ।

उसने मुझे उठाकर बिस्तर पर लेटा दिया। पर जब वह चली गई, तब मैं फिर नीचे उतरनेका प्रयत्न करने लगा। यदि उसकी अवस्था अधिक होती तो मैं बहुत सहजमें उसे बतला सकता था कि मैं क्या चाहता था। पर उसकी अवस्था पचीस वर्षकी थी, इसलिए मैं उसे यह नहीं बतला सकता था कि मैं पेशाब करना चाहता हूँ।

उस अवसर पर आपने मेरी सहायता की। वह मेरी तरह लज्जाशील नहीं था और न उसे इसी बातका ध्यान रहता था कि मेरी किसी बातका दूसरेपर क्या प्रभाव पड़ता है। जब वह दाई कुछ दूर चली गई, तब आपने उसे फिर बुलाया। जब वह लौटकर आई, तब उसने कहा—देखो, यह··········।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर इससे अधिक क्राप भी कुछ न कह सका, क्योंकि मेरी तरह वह भी नहीं जानता था कि ऐसी लज्जाकी बात स्त्रियोंसे किस तरह खूबसूरतीसे कही जा सकती है । वहाँ युद्ध-क्षेत्रमें तो हम लोग अपनी इस प्रकारकी इच्छा और आवश्यकता केवल एक शब्दमें प्रकट कर दिया करते थे, पर यहाँ एक स्त्रीसे यह बात कहना············। इतनेमें उसे अपने स्कूलके दिन याद आ गये। स्कूलोंमें जिस तरह हम लोग अपने शिक्षकसे पेशाब करनेके लिए बाहर जानेकी आज्ञा माँगते थे, उसी प्रकार उसने यहाँ उस दाईसे भी कहा—यह इस कमरेसे बाहर जाना चाहता है।

दाई—यदि यही बात है तो उसे अपनी यह घायल टाँग लेकर नीचे नहीं उतरना चाहिए था। इसके बाद उसने मेरी ओर घूमकर पूछा—तुम क्या चाहते हो ?

पर फिर भी मेरे मुँहसे आवाज ही नहीं निकलती थी, क्योंकि मैं यह जानता ही नहीं था कि यहाँ इस प्रकारकी आवश्यकताओंके लिए किन किन पारिभाषिक शब्दोंका प्रयोग किया जाता है। पर शायद वह मेरा मतलब समझ गई, इसलिए उसने पूछा—लघु या दीर्घ ?

कैसी आफत थी ! मैं पसीनेसे तर हो रहा था। बहुत कठिनतासे झिझकते हुए मैंने कहा—बस जरा सा लघु·····।

मेरा मतलब हल हो गया। मुझे एक बोतल मिल गई। उसीमें मैंने पेशाब किया। कुछ घण्टोंके अन्दर सभी लोगोंको ऐसी हाजत हुई और सवेरा होने तक तो हम सभी लोग अपनी ऐसी आवश्यकताएँ प्रकट करनेमें अभ्यस्त हो गये । अब कोई झूठी लज्जा या संकोच करता ही नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रेल-गाड़ी धीरे धीरे चल रही थी। बीच-बीचमें वह ठहर भी जाती थी और जो घायल मर जाते थे, वे उतार दिये जाते थे। इस कामके लिए उसे प्रायः ठहरना पड़ता था।

आपको ज्वर हो आया था। पर मेरी तबीयत उतनी ज्यादा खराब नहीं थी। मुझे मामूली दर्द हो रहा था। पर सबसे बड़ी आफत यह थी कि मुझे ऐसा जान पड़ता था कि मेरे पैरमें जहाँ प्लैस्टर लगाकर पट्टी बाँधी गई थी, वहाँ पट्टीके अन्दर मुझे जूएँ काटती हुई जान पड़ती थीं। उनके कारण बहुत अधिक खुजली होती थी और मैं किसी तरह उस जगह खुजला ही नहीं सकता था।

दिन भर हम लोग सोया करते थे। खिड़कियोंमें से आस-पासके गाँवों और खेतों के सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ते थे। तीसरी रातको हम लोग हरबेस्थल नामक स्थानपर पहुँचे। मुझे दाईसे मालूम हुआ कि आप दूसरे स्टेशन पर उतार दिया जायगा, क्योंकि उसे ज्वर चढ़ा है। इस पर मैंने उससे पूछा—यह गाड़ी कहाँ तक जायगी ?

दाई—कोलोन तक।

उसके चले जाने पर मैंने आपसे कहा—देखो दोस्त, मैं एक ऐसी तरकीब करता हूँ कि यहाँ भी हम लोग एक साथ ही रहेंगे। हमारा तुम्हारा साथ न छूटने पावेगा।

जब दोबारा दाई लौटकर आई, तब मैंने खूब जोरसे साँस खींचकर उसकी हवा मुँह और सिरमें भर ली। मेरा चेहरा फूलकर लाल हो गया। मुझे उस अवस्थामें देखकर उसने मेरे पास रुककर पूछा—क्या तुम्हें दर्द हो रहा है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने बहुत अधिक पीड़ा सूचित करते हुए कहा—हाँ अचानक बहुत तेज दर्द शुरू हो गया है।

वह मुझे एक थरमामेटर देकर आगे बढ़ गई। अब यदि मैंने यहाँ अपनी तरकीब न लड़ाई तो मानों इतने दिनों तक कैजिन्स्की-के साथ मेरा रहना ही वृथा हुआ। सेना विभागके ये थरमामेटर पुराने सिपाहियोंके लिए नहीं होते; ये तो खाली नये सिपाहियोंका बुखार बतला सकते हैं। अगर किसी तरह इनमेंका पारा ऊपर चढ़ा दिया जाय तो फिर वह वहीं ठहरा रहता है, नीचे नहीं गिरता।

मैंने थरमामेटर अपनी बगलमें दबा लिया और उसके नीचेका भाग अँगूठेसे खूब जोर से दबाया। इसके बाद मैंने उसे कुछ झटका दिया। इस क्रियासे उसका पारा १०० डिग्रीसे कुछ ऊपर चला गया। पर इतनेसे ही मेरा काम नहीं चल सकता था; इसलिए मैंने उसके पेंदेके पास एक दियासलाई जलाकर दिखलाई जिससे वह १०२ डिग्रीके लगभग जा पहुँचा।

इसके बाद जब वह दाई लौटकर आई, तब मैंने थोड़ी-थोड़ी देर पर जोर-जोरसे साँस लेना शुरू किया, आँखें फुलाकर उसकी ओर देखा और कृत्रिम विकलता दिखलाकर इधर-उधर छटपटाने लगा। जब वह और पास आई, तब मैंने धीरेसे कहा—बाप रे, अब तो नहीं रहा जाता।

उसने एक कागज पर लिख लिया कि मुझे कितना बुखार चढ़ा है। मैं अच्छी तरह जानता था कि जब तक बिलकुल लाचारी न हो जायगी, तब तक मेरे पैरकी प्लैस्टरवाली पट्टी नहीं खोली जायगी। पर इतना अवश्य हुआ कि दूसरे स्टेशन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर आप और मैं दोनों साथ-ही-साथ उतार दिये गये।

× × × ×

कैथोलिक अस्पतालमें हम दोनों एक साथ ही रखे गये। यह भी हम लोगोंका सौभाग्य ही था कि हम लोग कैथोलिक अस्पतालमें पहुँचाये गये थे। ये सब अस्पताल अपनी उत्तम व्यवस्था और बढ़िया भोजनके लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। हमारी गाड़ीसे जो रोगी और घायल उतारे गये थे, उन्हींसे सारा अस्पताल भर गया था। हमारे साथियोंमेंसे बहुत से लोग ऐसे थे जिनके बचनेकी बहुत ही कम आशा थी। आज यहाँ डाक्टर बहुत ही कम थे, इसलिए आज हम लोगोंकी व्याधियों आदिकी कोई जाँच नहीं हुई। रबरके पहियों पर लगे हुए छोटे पतले पलंग बराबर इधरसे-उधर आते जाते थे जिन पर हाथ-पैर पसारे हुए घायल और रोगी पड़े रहते थे। उस प्रकार हाथ-पैर फैलाकर पड़े रहना भी कोई मामूली काम नहीं था। उस अवस्थामें दूसरोंको देख-देखकर ही हम लोग ऊब गये थे। यहाँ सिर्फ उसी हालतमें आराम मिलता था जब कि आदमी सो जाता था।

रातके समय यहाँ और भी आफत रहती थी। रात भर किसीको सोना ही नहीं मिलता था। जब सबेरा होनेको होता था, तब कुछ झपकी सी आ जाती थी। कुछ दिन चढ़ते ही मेरी नींद खुल गई। सामनेका दरवाजा खुला हुआ था और बाहरके बरामदेसे अनेक प्रकारके शब्द आ रहे थे। और सब लोग भी जाग पड़े। पास ही एक ऐसा आदमी था जो यहाँ कई दिनोंसे पड़ा था। उसने हम लोगोंको बतलाया कि यहाँ नित्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सवेरे सब दाइयाँ मिलकर ईश्वर-प्रार्थना करती हैं। यहाँका दरवाजा इसलिए खोल दिया जाता है कि आप लोग भी उसे सुनकर पुण्यके कुछ भागी हों।

इसमें सन्देह नहीं कि यह बात है तो बहुत अच्छी, पर इससे हम लोगोंके सिर और हड्डियोंमें पीड़ा होने लगती है।

मेरे मुँहसे निकल गया—रात भर बाद इसी समय तो रोगियोंको कुछ नींद आती है और इसी समय ऐसी बेहूदा बातें!

उस रोगीने कहा—जितने सामन्य रोगी होते हैं, वे यहीं ऊपर रखे जाते हैं और इसी लिए यहाँ प्रार्थना की जाती है।

क्राप कराहने लगा। मुझे कुछ क्रोध आ गया, इसलिए मैंने डाँटकर कहा—चुपचाप पड़े रहो।

कोई एक ही मिनट बाद एक दाई आ पहुँची। उसके वस्त्रोंमें से कुछ तो काले थे और कुछ सफेद, और उन वस्त्रोंमें वह बहुत ही सुन्दर जान पड़ती थी। एक रोगीने उससे कहा—यदि आप कृपा करके यह दरवाजा बन्द कर दें तो बहुत अच्छा हो।

वह बोली—बाहर हम सब लोगोंकी ईश्वर-प्रार्थना हो रही है, इसी लिए इस समय यह दरवाजा खोल दिया जाता है।

रोगी—पर हम लोग सोना चाहते हैं।

वह मुस्कराती हुई बोली—परन्तु निद्राकी अपेक्षा प्रार्थना सुनना बहुत अच्छा है। और फिर अब तो सात बज गये हैं।

क्राप फिर कराहने लगा। मैंने चिल्लाकर कहा—दरवाजा बन्द कर दो।

पर मेरी बात पर भी उसने कोई ध्यान नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा जान पड़ता था कि वह हम लोगोंका अभिप्राय ही नहीं समझती थी। वह बोली—पर हम लोगोंकी प्रार्थना तो आप लोगोंके लिए भी होती है।

मैं—जो हो, दरवाजा बन्द कर दो।

वह दाई तुरन्त हमारे कमरेसे चली गई और दरवाजा खुला ही छोड़ गई। बाहर प्रार्थना होती चलती थी।

मैं आपेसे बाहर होकर बोला—मैं तीन तक गिनती गिनूँगा। और अगर इतनेमें यह प्रार्थना बन्द न हुई तो मैं एक शगूफा छोड़ूँगा।

एक और रोगी बोल उठा—मैं भी जरूर कुछ गुल खिलाऊँगा।

मैंने पाँच तक गिनती गिनी। इसके बाद मैंने एक बोतल उठाई और जोरसे दरवाजेके बाहर बरामदेमें फेंकी। वहाँ जमीन पर गिरते ही वह चूर-चूर हो गई। तुरन्त बहुत सी दाइयाँ आकर एक साथ ही हम लोगों पर बिगड़ने लगीं।

हम सब लोगोंने फिर चिल्लाकर कहा—दरवाजा बन्द करो।

लाचार होकर सब दाइयाँ वहाँसे चली गईं। कम अवस्थावाली जो दाई पहले आई थी, वह सबके बादमें गई। चलते समय उसने कुछ त्योरी चढ़ाकर कहा—सब धर्मभ्रष्ट और काफिर हैं।

पर इतना अवश्य था कि चलते समय वह दरवाजा बन्द कर गई थी। हम लोगों की जीत हो गई।

× × × ×

दोपहरके समय अस्पताल का निरीक्षक आया और हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगोंको उलटी-सीधी बातें सुनाने लगा। वह हम लोगोंको तरह तरहकी धमकियाँ भी देने लगा। पर अस्पताल का निरीक्षक या इन्सपेक्टर भी वैसा ही होता है, जैसा कमसरियट का या उसी तरह का और कोई इन्स्पेक्टर होता है; जो कन्धे पर परतला लगाये और उसमें तलवार लटकाये रहता है और जिसकी कोई रंगरूट भी परवाह नहीं करता। इसलिए हम लोगोंने उसे बकने दिया। हम लोग सोच रहे थे कि आखिर वह हम लोगों का कर ही क्या सकता है।

उसने पूछा—किसने बोतल फेंकी थी?

मैं सोच ही रहा था कि उसे बतलाऊँ या न बतलाऊँ कि मैंने बोतल फेंकी थी कि इतनेमें एक रोगी बोल उठा—मैंने फेंकी थी।

इतना कहकर वह रोगी उठकर बैठ गया। उसकी दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। हम लोगोंकी समझमें ही न आता था कि उसने यह दोष अपने सिर क्यों लिया।

निरी०—तुमने फेंकी थी?

रो०—हाँ, मैंने फेंकी थी। व्यर्थ ही हम लोगोंको जगा दिया गया था, इसलिए हमें बहुत तकलीफ हुई थी और हमारा मिज़ाज खराब हो गया था। मैं आपेसे बाहर हो गया था और मेरी समझमें नहीं आता था कि मैं क्या कर रहा हूँ। उसी हालतमें मैंने बोतल उठाकर फेंकी थी।

निरीक्षकने जेबसे एक किताब निकालकर उससे पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

वह बोला—जोसेफ हमचर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरीक्षक उसका नाम लिखकर वहाँसे चल गया।

हम लोगोंको बहुत ही कुतूहल हो रहा था। सब लोग उससे पूछने लगे—तुमने अपना नाम क्यों बतलाया? तुमने तो बोतल फेंकी नहीं थी।

उसने उसी तरह बिगड़कर कहा—कोई परवाह नहीं! मुझे तो गोली तक मार देनेका लाइसेन्स मिला हुआ है।

हम सब लोगोंकी समझमें बात आ गई। जिसके पास गोली चलानेका लाइसेन्स हो, वह जो चाहे सो कर सकता है।

उसने अपनी बातको और भी स्पष्ट करते हुए कहा—एक बार मेरा दिमाग कुछ खराब हो गया था, इसलिए मुझे उसका एक प्रमाणपत्र मिल गया है। उसमें लिखा है कि कभी-कभी मैं कोई ऐसा खराब काम भी कर बैठता हूँ, पर उसके लिए मैं जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। बस तभीसे मेरी खूब मजेमें कटती है। किसीकी मुझसे कुछ कहनेकी हिम्मत ही नहीं होती और न कोई मेरा कुछ कर ही सकता है।

कुछ देर ठहरकर वह फिर बोला—जो बोतल फेंकी गई थी, उससे मुझे बहुत आनन्द आया था अगर कल सवेरे फिर दरवाजा खुला तो हम लोग फिर इसी तरह बोतल फेंकेंगे।

उसकी इन बातोंसे हम लोगोंको बहुत अधिक आनन्द आया। अब हम लोगोंने समझ लिया कि जब तक जोसेफ हमचर हम लोगोंके साथ है, तब तक हम लोग जो चाहें, सो कर सकते हैं।

अब हम लोगोंको ले जानेवाले पहिएदार पलंग आये, पर उनके चलनेमें कोई शब्द नहीं होता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब लोगोंकी पट्टियाँ कसकर बाँधी गईं। हम लोग बैलकी तरह हाँफ रहे थे।

× × × ×

हमारे कमरेमें आठ आदमी थे। हम लोगोंमें पीटर नामका एक घायल था जिसे सबसे ज्यादा और खराब चोट आई थी। उसके बाल काले रंगके और घुँघराले थे। उसके फेफड़ेमें बहुत कड़ी चोट आई थी। उसके पास ही फ्रान्ज वाचर नामक एक और घायल था जिसकी बाँहमें गोली लगी थी। पहले तो उसका घाव उतना खराब नहीं जान पड़ता था, पर बादमें कुछ बिगड़ गया था। तीसरी रातको उसने हम लोगोंको पुकारकर कहा कि जरा घन्टी बजाओ और किसी दाईको बुलाओ। उसे ऐसा जान पड़ता था कि उसकी कोई नस फट गई है और उसमें से खून बहने लगा है।

मैंने जोरसे घण्टी बजाई, पर दाई नहीं आई। हम सभी लोगोंको फिरसे नई पट्टियाँ बाँधी गई थीं, इससे सभीको बहुत दर्द हो रहा था और इसलिए आगे पीछे सभी लोग उसे कई-कई बार बुला चुके थे। कोई कहता था कि मेरा पैर इस तरह फैला दो और कोई कहता था कि इसे इस तरह ऊँचा कर दो। कोई उससे पानी लाने को कहता था और कोई कहता था कि मेरा तकिया झाड़ दो। अन्त में वह बुढ़िया अनखाती और बड़-बड़ाती हुई चली गई थी और जाते समय दरवाजा बन्द कर गई थी। इस बार घण्टीकी आवाज सुनकर भी उसने यही समझा होगा कि कोई रोगी इसी प्रकारके किसी मामूली कामके लिए बुला रहा है; और इसी लिए वह इस बार नहीं आ रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ देर तक हम लोग प्रतीक्षा करते रहे। जब वह नहीं आई, तब फ्रान्जने कहा—फिर घण्टी बजाओ।

मैंने फिर घण्टी बजाई, पर वह अबकी भी नहीं आई। हम लोगोंके विभाग में रातके समय रोगियोंकी देख-रेख करनेके लिए केवल एक ही दाई नियुक्त थी, इसलिए हम लोगोंने सोचा कि शायद वह किसी दूसरे कमरेमें किसी रोगीके पास गई है। इसलिए मैंने फ्रान्जसे पूछा—क्यों जी, क्या तुम ठीक समझते हो कि तुम्हें खून बह रहा है? अगर खून न बहता होगा तो फिर हम लोगोंको खरी-खोटी सुननी पड़ेगी।

फ्रान्ज—मेरी पट्टी बिलकुल तर हो गई है। क्या कोई रोशनी नहीं जला सकता?

पर यहाँ रोशनी भी नहीं जलाई जा सकती थी। बिजली की रोशनी जलानेका जो बटन था, वह दरवाजेके ऊपर था और हम लोगोंमें से कोई उठकर खड़ा नहीं हो सकता था। मैंने फिर खूब जोरसे घण्टी बजाई। अब मैंने समझा कि शायद वह दाई सो गई है। इसमें सन्देह नहीं कि उन लोगोंको यहाँ बहुत अधिक काम करने पड़ते थे, और सभी दाइयाँ बहुत थकी हुई थीं। ऊपरसे तुर्रा यह था कि उन्हें ऐसी प्रार्थना करनी पड़ती थी जिसका कभी अन्त ही नहीं होता था।

गोली चलानेके लाइसेन्सदार जोसेफ हमचरने कहा—अगर कहो तो मैं फिर बोतल फेंकूँ।

मैं—अरे जब वह घण्टी नहीं सुनती, तब बोतलकी आवाज क्या सुनेगी।

अन्तमें दरवाजा खुला और वह बुढ़िया बड़बड़ाती हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आई। जब उसने फ्रान्जका उतना अधिक कष्ट देखा, तब कहा—अगर यही बात थी तो किसीने मुझे बुलाया क्यों नहीं ?

मैं—मैं तो कबसे घण्टी बजा रहा हूँ, पर कोई सुने तब तो। हम लोगोंमेंसे कोई उठकर तो तुम्हारे पास जा ही नहीं सकता था।

फ्रान्जकी बाँहसे बेतरह खून बह रहा था, इसलिए दाईने उसकी पट्टी खोलकर फिरसे अच्छी तरह बाँध दी। सबेरे हम लोगोंने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था। कारण यही था कि रातको उसके शरीरसे बहुत अधिक रक्त निकल गया था। नहीं तो उससे पहलेवाली सन्ध्याको हम लोगोंने जब उसे देखा था, तब वह अच्छा और तन्दुरुस्त जान पड़ता था। अब दाई बराबर बीच-बीचमें आने लगी।

× × × ×

स्वस्तिक दलमें कभी-कभी कुछ स्वयंसेविकाएँ भी रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा करनेके लिए आकर सम्मिलित हो जाती हैं। उनका स्वभाव तो बहुत हँसमुख होता है, पर उन्हें सेवा-शुश्रूषा करनेकी विशेष शिक्षा नहीं मिली रहती। जब ऐसी स्वयंसेविकाएँ हम लोगोंके बिस्तर झाड़कर फिरसे बिछाती हैं, तब उनके कारण हम लोगोंको कष्ट पहुँचता है। उस समय वे इतनी अधिक भयभीत हो जाती हैं कि उनके कारण हमारी पीड़ा और भी बढ़ जाती है।

उन्हींमें साधु वर्गकी कुछ संसारत्यागी स्त्रियाँ भी होती हैं जिनका काम अपेक्षाकृत बहुत अच्छा होता है। वे हम लोगोंको उठाना-बैठाना अच्छी तरह जानती हैं; पर यदि वे लोग कुछ अधिक हँसमुख होतीं तो और भी अच्छा होता। उनमें से कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो बहुत ही खुश-मिजाज होती हैं और उन्हें हम सर्वश्रेष्ठ कह सकते हैं। उनमें से एक का नाम लिबरटिन है जो सबसे अच्छी है। उसमें यह गुण है कि उसे दूरसे देखते ही सब रोगी बहुत प्रसन्न हो जाते हैं। उसकी तरह कुछ और साधुनी भी हैं, पर लिबरटिन उन सबसे बढ़कर है। यदि वह कहे तो उसके लिए रोगी आगमें भी कूद सकते हैं। यहाँ हम सब लोगोंके साथ उनका व्यवहार इतना अच्छा होता है कि कभी किसीको उनकी शिकायत करनेका कोई मौका ही नहीं मिल सकता। युद्ध-क्षेत्रमें जो अस्पताल होते हैं, उनमें तो रोगीकी जान पर सदा आफत-सी बनी रहती है।

फ्रान्ज वाचरकी शक्ति जो एक बार क्षीण हुई, वह फिर लौटकर नहीं आई। एक दिन लोग उसे उठाकर ले गये और फिर वह लौटकर हम लोगोंमें नहीं आया। जोसेफ हमचर उसके सम्बन्धकी सब बातें जानता है। उसने पहले ही कह दिया था—अब हम लोग उसे फिर नहीं देख सकेंगे। इन लोगोंने उसे ले जाकर मुर्दोंवाले कमरेमें रख दिया है।

क्रापने पूछा—मुर्दोंवाले कमरेसे तुम्हारा क्या मतलब है ?

हमचर—वही जिसमें मरनेवाले रोगी ले जाकर रखे जाते हैं।

क्राप—वह कमरा कहाँ है और कैसा है ?

हमचर—इस इमारतके कोनेमें एक कमरा है। जिन लोगों के बचनेकी कोई आशा नहीं होती, वे वहीं ले जाकर रख दिये जाते हैं। उसमें दो पलंग हैं।

मैं—आखिर वे लोग ऐसा क्यों करते हैं ?

हमचर—रोगियोंको मरनेसे पहले वहाँ ले जानेमें उन लोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को यह सुभीता होता है कि कब्रिस्तान वहाँ से पास पड़ता है। और फिर इसमें एक यह भी मसलहत हो सकती है कि किसी एक रोगीको मरते हुए देखकर और रोगी भी उसके साथ सहानुभूति दिखलानेके लिए न मर जायँ। और जब कहीं एकाध रोगी ही रहता है, तब उसकी देखरेख भी अच्छी तरह होती है।

मैं—पर वहाँ अकेलेमें स्वयं उस रोगीके मनकी क्या दशा होती होगी ?

हमचरने कन्धे हिलाते हुए कहा—साधारणतः उस समय उसकी अवस्था ऐसी ही रहती है कि उसे इस बातका पता ही नहीं चलता कि मैं कहाँ लाया गया हूँ और यहाँ मेरे साथ कोई दूसरा भी है या नहीं।

मैं—क्या उस कमरेका हाल सब रोगी जानते हैं ?

हमचर—सबका हाल तो मैं नहीं जानता, पर जो रोगी कुछ अधिक समय तक यहाँ रह जाता है, वह उसका हाल अवश्य जानता है।

× × × ×

तीसरे पहर फ्रान्ज वाचरके पलंग पर एक नया रोगी लाकर रख दिया गया। तीन चार दिन बाद अस्पतालवाले उस रोगीको भी वहाँ से उठाकर ले गये। उस समय हमचरने एक विशेष प्रकारकी मुद्रा बनाई थी। इस तरह हम लोगोंने वहाँ कई रोगियोंको आते और जाते हुए देखा था।

प्रायः ऐसा होता है कि रोगीके पलंगके पास उसके सम्बन्धी आकर बैठ जाते हैं और रोने-धोने या बेढंगेपनसे तरह तरहकी बातें करने लगते हैं। एक बुढ़िया थी जो वहाँसे किसी तरह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हटना ही नहीं चाहती थी। पर वह रात भर वहाँ रखी भी नहीं जा सकती थी; इसलिए किसी तरह वहाँसे उसे हटाया गया। दूसरे दिन वह फिर बहुत सवेरे आ पहुँची, पर उतने सवेरे नहीं आई जितने सवेरे उसे आना चाहिए था; और उसे आनेमें जरूर कुछ देर हो गई थी; क्योंकि जब वह अस्पतालमें आई, तब उस आदमीको वहाँसे उठा ले गये थे जिसके पास वह आई थी और उसकी जगह दूसरा आदमी लाकर रख दिया गया था। अब उसे वहाँ जाना पड़ा जहाँ मुरदे रखे जाते हैं। वह अपने साथ उस रोगीको देनेके लिए कुछ सेब लाई थी, जो वह चलते समय हम लोगोंको दे गई।

इसके बाद पीटरकी हालत खराब होने लगी। उसका बुखार बराबर बढ़ता जाता था। एक दिन रबरके पहियोंवाला पलंग उसके बिस्तरके पास आ खड़ा हुआ। उसे देखकर उसने पूछा—आप लोग मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?

उत्तर मिला—उस विभागमें जहाँ घाव पर पट्टी बाँधी जाती है।

लोगोंने उसे उठाकर पहियेदार पलंग पर रखा। पर उस समय दाईसे एक भूल हो गई। उसने सोचा कि मुझे इसका कोट लेनेके लिए यहाँ दोबारा न आना पड़े, इसलिए उसने उसी पलंग पर उसका कोट भी रख दिया। पीटर समझ गया कि ये लोग मुझे कहाँ ले जाना चाहते हैं, इसलिए वह अड़ गया और बोला—मैं तो यहीं रहूँगा।

पर लोगोंने उसे ढकेलकर जबरदस्ती ले जाना चाहा। वह बहुत ही क्षीण स्वरमें चिल्लाया—मैं मुर्दोंवाले कमरेमें नहीं जाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दाई—नहीं, हम लोग तो तुम्हें वहाँ ले चलते हैं, जहाँ पट्टी बाँधी जाती है।

पीटर—तो फिर मेरा कोट क्यों साथ ले चल रहे हो ?

इससे अधिक पीटरसे कुछ कहा नहीं गया। उसके गलेमें कफ भर आया था। उसने धीरेसे कहा—मैं यहीं रहूँगा।

लोगोंने उसकी बातका कोई उत्तर नहीं दिया और उसका पलंग ढकेलते हुए ले गये। दरवाजेके पास पहुँचकर उसने उठकर बैठनेका प्रयत्न किया। उसका सिर लटक गया और उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। उसने चिल्लाकर कहा—मैं फिर यहीं आऊँगा।

दरवाजा बन्द हो गया। हम सब लोग बहुत उत्तेजित हो गये थे, पर किसीके मुँहसे कोई बात नहीं निकलती थी। अन्तमें जोसेफने कहा—बहुतसे लोग यही कहते-कहते यहाँसे चले गये; पर जो यहाँसे गया, वह फिर कभी लौटकर यहाँ न आया।

× × × ×

मेरा घाव चीरा गया और मुझे दो दिन तक कै होती रही। डाक्टरके सेक्रेटरीका कहना था कि मेरी टूटी हुई हड्डी अब नहीं जुड़ेगी। एक और आदमीकी हड्डियाँ इसी तरह टेढ़ी हो गई थीं, इसलिए वह फिरसे तोड़ी गई हैं।

हमारे कमरेमें दो नवयुवक सिपाही आये हैं जिनके पैर चिपटे हो गये हैं। जब बड़ा डाक्टर गश्तमें आया, तब उन लोगोंको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला—हम लोग बहुत जल्दी ये पैर ठीक कर देंगे। बस मामूली सी चीर-फाड़ करनी होगी और ये पैर बिलकुल ठीक हो जायँगे। (दाईसे) इन लोगोंके नाम लिखकर इन्हें भरती कर लो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्योंही वह डाक्टर कमरेसे बाहर निकला, त्योंही जोसेफने, जो सब बातें अच्छी तरह जानता था, उन्हें सचेत कर दिया—उसने कहा—देखो, इन लोगोंको चीर-फाड़ न करने देना। यह इन पुराने खुर्राटोंका खास वैज्ञानिक चकमा है। ये लोग इसी तरह अपना जाल फैलाते हैं; और जो इनके जालमें फँसता है, वह फिर कभी जीता नहीं निकलता। तुम लोगोंके पैर चिपटे हो गये हैं; इसलिए ये लोग तुम्हारे पैर काट डालेंगे और उनकी जगह काठके पैर लगा देंगे। तब फिर जन्म भर तुम लोगोंको बैसाखीके सहारे चलना पड़ेगा।

उन युवकोंमेंसे एकने पूछा—तो फिर आखिर हमें करना क्या चाहिए?

हमचर—बस यही कि जब तुम्हारे पैर काटनेके लिए कहें, तब तुम कह दो कि हम पैर नहीं काटने देंगे। तुम लोग यहाँ अपने घावोंका इलाज कराने आये हो, पैरोंका इलाज कराने नहीं आये हो। जब तुम लोग युद्ध-क्षेत्रमें थे, तब क्या इन पैरोंके कारण तुम्हें कोई कष्ट होता था? अभी तो भला तुम लोग चल-फिर भी सकते हो; पर जब एक बार इन लोगोंका हाथ लग जायगा, तब लुंले और लुँजे हो जाओगे। डाक्टर तो तुम लोगोंके पैरों पर अपनी परीक्षा करना चाहता है। इन डाक्टरोंके लिए परीक्षा करनेका यह बहुत अच्छा अवसर हाथ आया है और इस अवसरसे ये लोग पूरा लाभ उठाना चाहते हैं। यहाँ कमसे कम दस बारह आदमी ऐसे हैं जो दिन-रात उन लोगोंके फेरमें पड़े रहते हैं जिनकी यह डाक्टर अस्त्र-चिकित्सा करता है। उनमेंसे बहुत से लोग ऐसे हैं जो बरसोंसे यहाँ पड़े हैं। उनमेंसे एक भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आदमी ऐसा नहीं है जो पहलेकी अपेक्षा कुछ भी अच्छी तरह चल-फिर सकता हो। और सबके पैरों पर प्लैस्टर लगाकर पट्टी बाँध दी गई है। हर छः महीने बाद डाक्टर फिर उन लोगों-को पकड़ता है और नये सिरसे उनकी हड्डियाँ तोड़ता है; और हर बार यही कहता है कि अबकी बारकी अस्त्र-चिकित्सा बहुत अच्छी और सफल हुई है। बस तुम मेरी एक बात याद रखो। जब एक बार तुम जी कड़ा करके कह दोगे कि हम अस्त्र-चिकित्सा नहीं करावेंगे, तब फिर उसे अस्त्र उठानेका साहस ही न होगा।

उनमें से एक नवयुवकने कुछ विरक्त होकर कहा—अरे भाई, हमारा सिर धड़से उड़ जाय, इससे तो यही अच्छा है कि हमारे पैर ही न रहें। यदि इस बार फिर हम लोगोंको लौटकर युद्ध-क्षेत्रमें जाना पड़ा तो न जाने वहाँ हम पर क्या बीतेगी। मैं तो यही अच्छा समझता हूँ कि यहाँ उन लोगोंकी जो इच्छा हो, सो वे कर लें और हम लोगोंको किसी तरह घर भेज दें। युद्ध-क्षेत्रमें मर जानेसे तो यही अच्छा है कि हम लोग लँगड़े-लूले होकर जीते रहें—फिर चाहे काठके पैर लगाकर ही हम लोगोंको क्यों न चलना पड़े।

पर दूसरा नवयुवक हम्हीं लोगोंकी तरह था और वह किसी तरह अपने पैर नहीं कटवाना चाहता था। दूसरे दिन सवेरे ही डाक्टरने उन दोनोंको पकड़ा और उन्हें बहुत तरहसे ऊँच-नीच समझाकर पैर कटानेके लिए राजी कर ही लिया। भला वे बेचारे मामूली सिपाही कर ही क्या सकते थे और इतने बड़े डाक्टरके सामने उनकी चल ही क्या सकती थी! डाक्टर उन्हें उठा ले गया और क्लोरोफार्म सुँघाकर और उनके पैर काटकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर उन्हें उसी बेहोशीकी दशामें वहाँ छोड़ गया। उनके पैरोंपर प्लैस्टर लगाकर पट्टी बाँध दी गई थी।

× × × ×

क्रापकी दशा बहुत ही बुरी हो गई थी। डाक्टरने उसे ले जाकर उसकी टाँग काट दी थी। उसके पैरका जाँघसे नीचेका सारा हिस्सा ही काट डाला गया था। वह इतना अशक्त हो गया था कि अब उसमें बोलनेकी भी शक्ति न रह गई थी। वह इतना दुःखी था कि एक बार उसने यहाँ तक कह डाला था कि अबकी बार ज्यों ही रिवाल्वर मेरे हाथमें आवेगी, त्यों ही मैं आत्महत्या कर लूँगा।

इसी बीचमें कुछ और नये रोगी आ पहुँचे। एक कमरेमें उनमें से दो अन्धे आदमी रखे गये। दाइयाँ जब उन्हें खिलाने लगती थीं, तब उनके हाथमें चाकू नहीं रहता था। इसका कारण यह था कि एक बार खिलाते समय उनमेंसे एकने दाईके हाथसे चाकू छीन लिया था। लेकिन इतने सतर्क रहने पर भी वहाँ एक दुर्घटना हो ही गई। एक दिन सन्ध्याकी बात है कि दाई उनमेंसे एकको भोजन करा रही थी। इतनेमें बाहरसे बुलाहट हुई और दाईको वहाँसे बाहर जाना पड़ा। तश्तरी और काँटा टेबुल पर ही पड़ा रह गया। उस अन्धेने झपटकर वह काँटा उठा लिया और अपनी पूरी शक्तिसे अपनी छातीमें भोंक लिया। इसके बाद उसने एक जूता उठाया और उस जूतेसे वह काँटा उसी तरह ठोंकने लगा जिस तरह हथौड़ीसे ठोंका जाता है। हम लोगोंने अस्पतालवालोंको बुलानेके लिए चिल्लाना शुरू किया। उसकी छातीमेंसे काँटा निकालनेके लिए कमसे कम तीन आदमियोंकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जरूरत थी। काँटेकी भुथरी नोकें उसकी छातीमें दूर तक अन्दर चली गई थीं। बहुत कठिनतासे उसकी छातीमेंसे काँटा निकाला गया और उसकी मरहम पट्टी की गई। उस दिन वह रात भर हम लोगोंको गालियाँ देता रहा। हम लोगोंका अपराध यही था कि हमने चिल्लाकर अस्पतालवालोंको वहाँ बुला लिया था। सवेरे देखा गया तो उसकी डाढ़ बैठ गई थी और मुँह खुल ही नहीं सकता था।

फिर पलंग खाली होने लगे। नित्य हम लोग इसी प्रकार पीड़ा और कष्ट देखा करते थे और रोना-चिल्लाना सुनते थे। मुर्दोंका कमरा बहुत छोटा था और मरनेवालोंकी संख्या बराबर बढ़ती जाती थी। यहाँ तक कि रातके समय हमारे कमरोंमें ही कई आदमी मर गये थे। दाइयाँ जितने आदमियोंकी व्यवस्था कर सकती थीं, उनकी अपेक्षा कहीं अधिक आदमी मरते थे।

एक दिन हमारे कमरेका दरवाजा खुला और एक पहियेदार पलंग लुढ़कता हुआ आता दिखाई दिया। उस पर पीटर बैठा हुआ था। यद्यपि वह बहुत दुबला हो गया था और उसका रंग बिलकुल पीला पड़ गया था, तो भी वह तना हुआ बैठा था; और ऐसा जान पड़ता था कि वह किसी बातमें कोई भारी बाजी जीतकर आ रहा है। हँस-मुख लिबरटिनने उसे फिर उसके पुराने पलंग पर लेटा दिया। उसे लोग मुर्दोंवाले कमरेमें ले गये थे और वहाँसे वह अच्छा होकर लौटा था। हम लोग तो बहुत पहलेसे समझ चुके थे कि वह मर गया।

अपने पलंग पर बैठकर चारों ओर देखते हुए उसने कहा—बतलाओ, अब तुम लोग क्या कहते हो?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस समय जोसेफ हमचरको भी यह मानना पड़ा कि मैंने आज पहले-पहल यह देखा है कि कोई आदमी मुर्दोंवाले कमरेमें जाकर लौटा है।

धीरे-धीरे हम लोगोंमें से कुछ लोगोंको उन्होंने उठकर खड़ा हो जाने दिया और हम लोग किसी तरह चलने-फिरनेके योग्य हो गये। मुझे टेककर चलनेके लिए दो बैसाखियाँ मिलीं। पर मैं उनका बहुत अधिक उपयोग नहीं करता था। जिस समय मैं कमरेमें इधर-उधर टहलता था, उस समय मुझसे आपकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं जाता था। पर मैं जिधर-जिधर जाता था, उधर-उधर वह बहुत ही विलक्षण प्रकारसे मेरी ओर देखता था और उसकी उसी विलक्षण दृष्टिके सामने मेरी निगाह नहीं उठती थीं। इसलिए मैं प्रायः कमरेके बाहरवाले बरामदेमें चला जाता था। वहाँ वह मुझे नहीं देख सकता था।

नीचेके खंडमें ऐसे रोगी थे जिनके पेट और सिरमें घाव थे अथवा जिनके दो-दो अंग काट डाले गये थे। दाहिनी ओरके कमरोंमें ऐसे रोगी थे जिनके जबड़े, नाक, कान और गरदन आदिमें घाव थे अथवा जिनके शरीरमें गैसका जहर भर गया था। बाईं ओरके कमरोंमें ऐसे रोगी थे जिनके फेफड़े, अंडकोश, मूत्राशय या आँतों आदिमें घाव थे अथवा जो अन्धे हो गये थे। यहीं आने पर आदमीको पता चलता है कि युद्ध-क्षेत्रमें सिपाहियोंके किन-किन अङ्गोंमें और कैसे-कैसे घाव होते हैं।

दो आदमी धनुष-टंकारसे पीड़ित थे जो शीघ्र ही मर गये। उनका रंग बिलकुल पीला पड़ गया था और हाथ-पैर जकड़ गये थे। यहाँ तक कि उनका सारा शरीर निर्जीव हो गया था और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवल आँखोंमें ही प्राण बच रहे थे। बहुत से घायल ऐसे थे जिनके हाथ-पैर बिलकुल चिथड़ा हो गये थे। वे अंग एक छोटी टिखटी पर रखकर और पलंगके बाहर लटका दिये गये थे और उनके नीचे बरतन रख दिये गये थे। उन घावोंमें से मवाद टपक टपककर उन्हीं बरतनोंमें गिरता था। वह मवाद इतना अधिक होता था कि दो तीन घन्टेमें ही नीचेका बरतन भर जाता था। कुछ ऐसे रोगी भी थे जिनके हाथ-पैर पट्टी बाँधकर पलंगसे बाहर निकाल दिये गये थे और उनमें भारी बोझ बाँधकर नीचे लटका दिया गया था। यह इसलिए होता था कि जिसमें वे हाथ या पैर अन्दरकी ओर न खींच सकें। मैंने ऐसे रोगियोंको भी देखा था जिनकी आँतों में इतना बड़ा घाव हो गया था कि आँतोंमें ऊपरसे देखने पर मल साफ दिखाई देता था। अस्पतालके मुन्शीने मुझे एक्स किरणों द्वारा लिये हुए कई ऐसे चित्र भी दिखाये थे जो टूटी हुई हड्डियों, घुटनों और कन्धों आदिके लिये गये थे।

मनुष्य सहजमें यह कल्पना ही नहीं कर सकता कि ऐसे ऐसे छिन्न-भिन्न शरीरों पर भी ऐसे मानवी सिर लगे होते हैं जिनमें जीवनकी नित्य-क्रियाएँ होती रहती हैं। और यह केवल एक अस्पतालका हाल है। जरमनी, फ्रान्स और रूस आदि सभी देशोंमें ऐसे ऐसे हजारों लाखों अस्पताल इसी प्रकारके रोगियोंसे भरे पड़े हैं। जहाँ मनुष्यों की इस प्रकार और इतनी अधिक दुर्दशा होती है, वहाँ युद्धके विरुद्ध कोई बात कहना, लिखना या सोचना भी मूर्खता नहीं तो और क्या है! जब हजारों वर्षोंकी सभ्यता और संस्कृति भी इस प्रकारके दुष्कृत्य न रोक सकी और इस तरहके हजारों लाखों अस्पताल ऐसे रोगियोंसे

Direct attack on Culture

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरते ही रहते हैं, तब इसके विरुद्ध कुछ कहना या करना नितान्त निरर्थक ही है। युद्धका वास्तविक स्वरूप अस्पतालमें ही दिखाई देता है।

मैं बिलकुल नवयुवक हूँ और मेरी अवस्था बीस वर्षसे अधिक नहीं है; तो भी मैं जानता ही नहीं कि जीवनमें सुख कैसा होता है। मुझे तो अपने चारों ओर दुःख, कष्ट, पीड़ा, निराशा, मृत्यु और भीषण भय आदिका ही राज्य दिखाई देता है। मैं तो बराबर यही देखता आ रहा हूँ कि आदमियोंको मारनेके लिए उनपर शिकारी जानवरोंकी तरह दूसरे आदमी कैसे छोड़े जाते हैं और वे लोग किस तरह चुपचाप बिना समझे-बूझे बेवकूफ बनकर, आज्ञाकारी होकर और निरीहतापूर्वक आपसमें एक दूसरेकी हत्या करते हैं। संसारमें जितने बड़े बड़े बुद्धिमान् हैं, वे बराबर ऐसे ही उपाय निकालते रहते हैं और ऐसे ही शब्दोंका प्रयोग करते रहते हैं जिनसे ये सब कृत्य कुछ और भी संस्कृत हो जायँ और लोग अधिक सहनशीलतापूर्वक निरन्तर ऐसे नाशक कार्योंमें लगे रहें। संसार भरमें हमारी अवस्थाके नवयुवक ये सब बातें चुपचाप देखते रहते हैं और इनका अनुभव करते रहते हैं। भला यदि हम सब नवयुवक अपने अपने पिताके पास पहुँचकर इन सब दुर्दशाओंका ठीक-ठीक वर्णन उन्हें सुनावें, तो क्या हो? और फिर यदि किसी समय किसी प्रकार युद्ध समाप्त हो जाय तो वे लोग हमसे और किस कामकी आशा कर सकते हैं? इधर बरसोंसे हम लोग केवल दूसरोंकी हत्या ही करते रहे हैं। हमने अपने जीवनमें जो पहला काम सीखा, वह यही हत्या करनेका था। जीवन सम्बन्धी हमारे ज्ञानकी सीमाका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मृत्यु तक पहुँचकर ही अन्त हो जाता है और हम जानते ही नहीं कि मृत्युके सिवा जीवनका और भी कोई लक्ष्य या उद्देश्य है। पर आगे चलकर हम लोगोंका क्या होगा ? और हम लोग कौनसा अच्छा काम कर सकेंगे ?

× × × ×

हमारे कमरेमें अवस्थामें जो सबसे अधिक रोगी है, उसका नाम लेवेन्डोस्की है। इस समय उसकी अवस्था चालिस वर्षकी है और वह दस महीनोंसे अस्पतालमें पड़ा है। उसके पेटमें एक भारी घाव लगा था जो अभी तक अच्छा नहीं हुआ है। अब इधर दो-तीन हफ्तेसे उसकी अवस्था कुछ सुधरी है और वह उठकर कमरेमें किसी तरह इधर-उधर चलने-फिरने लगा है।

इधर कई दिनोंसे वह बहुत अधिक उत्तेजित हो गया है। उसकी स्त्रीने पोलैंडसे उसके पास एक पत्र भेजा है। उस पत्रमें उस स्त्रीने लिखा है कि मैंने आने-जानेके किराये भरको काफी रुपया जमा कर लिया है और मैं जल्दी ही तुम्हें देखनेके लिए आ रही हूँ।

अब तो वह घरसे यहाँ आनेके लिए चल भी चुकी है और शायद दो ही एक दिनमें यहाँ आ पहुँचना चाहती है। लेवेन्डोस्कीकी भूख बिलकुल मारी गई है; यहाँ तक कि वह हरी तरकारियाँ भी नहीं खा सकता और एक दो ग्रास खाकर ही थाली सामनेसे हटा देता है। वह प्रायः हाथमें अपनी स्त्रीका पत्र लिये हुए कमरेमें टहला करता है। हममेंसे हर एकको उसने वह पत्र दस-दस और बारह-बारह बार पढ़ाया है। उस परकी मोहर और तारीख तो ईश्वर जाने सैकड़ों बार देखी गई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है या हजारों बार। लिफाफे पर लोगोंके चरबी और मैल आदिसे भरे हाथ इतने अधिक पड़े हैं कि अब उस पर लिखा हुआ पता भी साफ नहीं पढ़ा जाता। इतना सब कुछ होने पर भी जो होनी थी, वही हुई। लैवेन्डोस्कीको बुखार आ गया और उसे फिर पलंग पर पड़ जाना पड़ा।

उसने इधर दो वर्षोंसे अपनी स्त्रीको नहीं देखा था। इसी बीचमें उसकी स्त्रीको एक बच्चा भी हो गया था जिसे वह अपने साथ यहाँ ला रही थी। पर इन सब बातोंके सिवा कुछ और भी ऐसी बात थी जिसेकी लैवेन्डोस्कीको चिन्ता हो रही थी। उसने सोचा था कि जब मेरी स्त्री यहाँ आवेगी, तब मुझे अस्पतालसे कुछ समयके लिए बाहर जाने की आज्ञा मिल जायगी। उसकी इस आशाका एक गूढ़ रहस्य था। यों तो देखनेमें यही बहुत जान पड़ता है कि किसी आदमीने अपनी स्त्रीको देख लिया और उससे बातें कर लीं। पर जब एक आदमी इतने दिनोंके बाद अपनी स्त्रीको पाता है, तब वह उसे देखने और उससे बात-चीत करनेके सिवा यदि किसी प्रकार सम्भव हो तो कुछ और भी करना चाहता है।

लैवेन्डोस्कीने इस विषयमें हम लोगोंसे पहले ही बहुत अच्छी तरह सब बातें कर ली थीं। सेनामें इस प्रकारकी बातोंके सम्बन्धमें कोई किसीसे परदा नहीं करता। और सबसे बड़ी बात यह है कि इस प्रकारकी बातें करनेमें किसीको कोई अनौचित्य भी नहीं दिखाई देता। हम लोगोंमें कुछ ऐसे रोगी भी थे जो कुछ अच्छे हो गये थे और इसी बीचमें कई बार बाहर निकलकर कस्बेमें घूम-फिर आये थे। उन लोगों ने उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कई अच्छे स्थानोंका पता भी बतला दिया था और कई बगीचों आदिका हाल भी सुना दिया था। उसने समझ लिया था कि किन स्थानों पर पहुँचकर मैं अपनी स्त्री से दिल खोलकर मिल सकता हूँ। यहाँ तक कि एक आदमीने उसे एक छोटे कमरेका भी पता बतला दिया था।

पर अब तो इन सब बातोंका कोई उपयोग ही नहीं हो सकता था। अब तो लैवेन्डोस्की फिर बीमार होकर पलंग पर पड़ गया था। फिर भी वह यही सोचता कि अगर यह मौका मेरे हाथसे निकल गया तो फिर मेरे लिए जीवनमें कोई आनन्द ही न रह जायगा, मेरे समस्त सुखोंका यहीं अन्त हो जायगा। हम लोगोंने बहुत कठिनतासे उसे समझा-बुझाकर शान्त किया और उससे वादा किया कि जिस तरह होगा, हम लोग तुम्हारी यह कठिनता दूर कर देंगे।

दूसरे दिन तीसरे पहर उसकी स्त्री आ पहुँची। वह नाटे कदकी थी और उसकी आँखें बहुत ही चंचल थीं। वह काले रंगका एक बढ़िया कोट पहने थी जिसमें कई तरह के फीते टँके हुए थे। ईश्वर जाने वह कोट उसे कहाँ मिला था।

वह धीरे-धीरे कुछ बड़बड़ाती हुई दरवाजेके पास आकर खड़ी हो गई। शायद वह यह देखकर कुछ भयभीत-सी हो गई थी कि अन्दर कमरेमें हम लोग छः आदमी थे।

उसे देखते ही लैवेन्डोस्की बहुत ही उत्कट रूपसे अंडकोश खुजलाता हुआ बोला—आओ, आओ, अन्दर चली आओ। इन लोगोंसे डरनेकी कोई बात नहीं है।

उसने कमरेमें आकर हम सब लोगोंसे हाथ मिलाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसकी गोदमें एक तौलियेमें लपेटा हुआ बच्चा था। वह बच्चा उसने बाहर निकालकर दिखलाया। साथ ही एक बड़ी थैलीमें से एक दूसरा तौलिया निकाला और उससे बच्चेको अच्छी तरह पोंछकर साफ किया। अब उसकी घबराहट दूर हो गई थी, इसलिए वह निश्चिन्त होकर अपने पतिसे बातें करने लगी।

लैवेन्डोस्की बहुत ही बेचैन हो रहा था और रह रहकर बहुत ही दुःखित भावसे हम सब लोगोंकी ओर देखता था।

अब लैवेन्डोस्कीके लिए उपयुक्त समय आ गया था, क्योंकि डाक्टर गश्त लगाकर चला गया था। अब यदि बहुत होगा तो शायद कोई एकाध दाई घूमती-फिरती इधर आ निकलेगी। इसलिए हम लोगोंमें से एक आदमी उठकर बाहर का हाल-चाल देखने गया और आकर सिर हिलाता हुआ बोला—यहाँ तो कहीं कोई चिड़िया का पूत भी नहीं दिखाई देता। बस अब तुम अपना काम शुरू करो।

दोनों आपसमें धीरे-धीरे बातें करने लगे। स्त्रीका चेहरा कुछ लाल हो आया और वह कुछ घबराई-सी जान पड़ी। हम सब लोग हँस-हँसकर उसे बढ़ावा देने लगे और कहने लगे—'अजी इसमें हर्ज ही क्या है ?' यहाँ तो सब प्रकारके आचार-विचार और शिष्टाचारका बहुत पहले ही श्राद्ध हो चुका था। यदि शिष्टाचार होगा, तो दूसरे स्थानों और अवसरोंके लिए होगा। यहाँ उस कम्बख्तका क्या काम ! यहाँ तो बढ़ई लैवेन्डोस्की है जो युद्धमें घायल होनेके कारण लुंज हो गया है और उसके सामने उसकी स्त्री है। फिर न जाने इन दोनोंमें कब भेंट हो। वह स्त्री से मिलना चाहता है और जैसे हो वह अवश्य मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस समय लैवेन्डोस्की उठकर बैठ नहीं सकता था, केवल करवट बदल सकता था, इसलिए हम लोगोंने उसकी पीठके पीछे दो तीन तकिये रख दिये। बच्चा थोड़ी देरके लिए क्रापको दे दिया गया। हम सब लोगोंने उधरसे पीठ फेर ली। उस स्त्री ने भी अपना काला कोट उतारकर बिस्तरके नीचे रख दिया। हम सब लोग उधर पीठ करके ताश खेलने और जोर जोरसे चिल्लाने लगे।

हम लोगोंका खेल इतना जमा कि हम लैवेन्डोस्कीको बिलकुल भूल ही गये। थोड़ी देरमें बच्चा रोने लगा। यद्यपि क्राप उसे बहुत कुछ बहलाता और झुलाता रहा, पर वह किसी तरह चुप ही नहीं होता था। जब हम लोगोंने उधर देखा, तब बच्चा मुँहसे दूध की बोतल लगाये हुए था और उसकी पीठ उसकी माँकी पीठके साथ सटी हुई थी। उधर उन लोगोंका काम पूरा हो चुका था।

अब हम सब लोग अपने आपको एक बहुत बड़े परिवार के रूपमें समझने लगे थे। वह स्त्री बहुत प्रसन्न थी और लैवेन्डोस्की पसीनेसे तर पड़ा हुआ हाँफ रहा था।

थोड़ी देर बाद लैवेन्डोस्कीने अपनी स्त्रीका थैला खोला। उसमें खाने-पीनेकी कई अच्छी-अच्छी चीजें निकलीं। उसने उसमेंसे मांसका एक अच्छा टुकड़ा निकाला और चाकूसे उसके कई बहुत छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले।

वह बहुत ही सुन्दर मुद्रासे एक-एक टुकड़ा हम लोगोंको दिखलाता था और उसकी स्त्री वह टुकड़ा लेकर हममें से एक एकके पास आती थी और हमें दे जाती थी। अब वह पहलेकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपेक्षा विशेष सुन्दर जान पड़ने लगी थी। हम लोगोंको मांस देते समय वह बराबर मुस्कराती रहती थी। हम सब नवयुवक उसे 'माँ' कहकर पुकारते थे जिससे वह बहुत प्रसन्न होती थी और हम लोगोंके तकिये और बिछौने झाड़ती थी।

× × × ×

कुछ हफ्तोंके बाद मैं उस कमरेमें जाने लगा जहाँ मालिश होती थी। वहाँ रोज मेरे पैरमें मालिश होने लगी। मेरा हाथ बहुत पहले ही अच्छा हो चुका था।

युद्ध-क्षेत्रसे कुछ और नये घायल आ पहुँचे थे। अब यहाँ कपड़ोंकी पट्टियाँ बाँधना बन्द हो गया था और उनके स्थान पर एक प्रकारके सफेद मजबूत कागजकी पट्टियाँ बँधने लगी थीं। कपड़ोंकी पट्टियाँ अब सारे युद्ध-क्षेत्रमें जल्दी कहीं दिखाई ही नहीं पड़ती थीं।

जिस स्थानसे क्रापका पैर काटा गया था, उस स्थानका घाव अब अच्छी तरह भर गया था। अब वह नकली पैर लगानेके लिए यहाँसे एक और संस्थामें भेजा जानेको था। अब उसने पहलेकी अपेक्षा बोलना-चालना बहुत कम कर दिया था। वह प्रायः बोलता-बोलता बीचमें ही रुक जाया करता था और सामनेकी ओर देखने लगता था। यदि वह यहाँ हम लोगोंके साथ न होता तो शायद अब तक कभीका आत्म-हत्या कर चुका होता। पर अब उसका वह मानसिक कष्ट बहुत कुछ कम हो गया है; और जब हम लोग बैठकर ताश खेलते हैं, तब वह प्रायः हम लोगोंकी ओर देखा करता है।

अब मुझे अपना स्वास्थ्य सुधारनेके लिए छुट्टी मिल गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी माता अब मुझे घरसे कहीं जाने नहीं देना चाहती। वह बहुत अधिक दुर्बल हो गई है। अब पहलेसे उसकी हालत भी बहुत ज्यादा खराब हो गई है।

फिर मेरे लिए मेरी रेजिमेण्टसे बुलावा आ पहुँचा और मुझे फिर लौटकर युद्धक्षेत्र में जाना पड़ा।

एलबर्ट क्रापका बिछोह मुझे बहुत ही अखरा। पर सेनामें रह कर मनुष्य इस प्रकारकी बातोंका बहुत कुछ अभ्यस्त हो जाता है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

अब हम लोग दिनों और हफ्तोंकी गिनती नहीं करते, क्योंकि हम लोगोंने समझ लिया है कि इस युद्धका कभी अन्त न होगा। मैं यहाँ शीत ऋतुमें आया था। उस समय जब गोले जमीन पर गिरकर फटते थे, तब जमीनकी मिट्टीके पत्थरकी तरह सख्त टुकड़े भी उड़ उड़कर लोगोंको गोलोंकी ही तरह लगते थे। पर अब वृक्ष फिरसे हरे हो गये हैं। कभी तो हम लोगोंको युद्ध-क्षेत्रमें जाना पड़ता है और कभी हम पीछे भेज दिये जाते हैं। अब हम लोग इन बातोंके अभ्यस्त हो गये हैं। हम लोगोंने समझ लिया है कि युद्ध भी मृत्युका एक वैसा ही कारण है, जैसा कारण क्षय या अतिसार आदि रोग हैं। उन रोगों और युद्धमें केवल यही अन्तर है कि युद्धमें आदमी बहुत जल्दी-जल्दी मरते हैं, अनेक प्रकारसे मरते हैं और बहुत अधिक कष्ट भोगकर मरते हैं।

हम लोगोंके विचार गीली मिट्टीके समान हैं। ज्यों ज्यों समयमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिवर्त्तन होता है, त्यों त्यों और उन्हीं परिवर्त्तनोंके अनुसार हमारे विचारोंमें भी परिवर्तन होते हैं। जिस समय हम लोग आराम करते हैं, उस समय हमारे विचार अच्छे रहते हैं; और जब हम लोग तोपोंके सामने पहुँचते हैं, तब हमारे विचार मर जाते हैं। हमें बाहर जमीनमें भी बहुत बड़े-बड़े गड्ढे दिखाई पड़ते हैं और अपने दिलके अन्दर भी।

यह दशा केवल हमारी और हमारे साथियोंकी ही नहीं है; बल्कि युद्ध-क्षेत्रमें जितने आदमी हैं, चाहे वे हमारे पक्षके हों और चाहे शत्रुके पक्षमें हों, सबकी यही दशा है। अब तो पहलेकी सभी प्रकारकी सांसारिक बातें लोग बिलकुल भूल गये हैं। हम लोगोंकी शिक्षा-दीक्षा आदि सभीमें बहुत बड़ा अन्तर हो गया है और हमारे पुराने संस्कार बिलकुल धुल गये हैं। यहाँ तक कि उनके स्वरूपका भी किसीको ठीक-ठीक ज्ञान नहीं रह गया है। अपने उन संस्कारों और ज्ञान आदिसे हम लोग किसी किसी अवसर पर कुछ लाभ भले ही उठा लिया करें, पर साथ ही उसका कुछ अवश्यम्भावी परिणाम भी होता है; और वह परिणाम यह होता है कि हममें मिथ्या अभिमान और पक्षपात आदिका कभी कभी कुछ भाव आ जाता है, जिसे जबरदस्ती दबाना पड़ता है। मानों पहले हम सब लोग अलग अलग देशोंके सिक्के थे, पर अब गलाकर फिरसे नये साँचेमें ढाल दिये गये हैं। हम लोगोंके पुराने विभेदोंका पता लगानेके लिए अब तो स्वयं उन धातुओंकी परीक्षा करनी पड़ेगी जिन धातुओंसे ये अलग अलग सिक्के बने थे। हम लोग सबसे पहले और मुख्यतः सैनिक हैं और तब कुछ विलक्षण और लज्जित रूपमें गौणतः व्यक्ति और मनुष्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह एक बहुत बड़ा भ्रातृमंडल है जिसमें देहाती गीतोंमें की भलमनसत भी मिली है, दंडित लोगोंकी एकताका भाव भी मिला है और ऐसे लोगोंकी पारस्परिक एकताका भाव भी मिला है जो निश्चित रूपसे यहाँ मरनेके लिए ही भेजे गये हैं और जो सदा अनेक प्रकारके संकटों और मृत्युके मुखमें पड़े रहते हैं। ऐसे लोगोंको जो कुछ समय मिले, वह उन्हें विवश होकर केवल आनन्द और प्रसन्नतासे ही बिताना पड़ता है। यदि कोई इस भ्रातृमंडलके महत्वका ठीक ठीक अनुमान करना चाहे तो अवश्य ही उसका यह काम बहुत ही वीरतापूर्ण होगा। पर कठिनता तो यह है कि इस प्रकारका अनुमान करना ही कौन चाहता है?

यही करण है कि जब शत्रुके आक्रमणकी सूचना मिलती है, तब जैडनके सामने खाने-पीनेका जो कुछ सामान रहता है, उसे वह बहुत जल्दी जल्दी चट कर जाता है; क्योंकि उसे इस बातका निश्चय नहीं है कि मैं घन्टे भर बाद जीता भी रहूँगा या मर जाऊँगा। हम लोगोंने आपसमें इस बात पर बहुत कुछ वाद-विवाद किया है कि उसका इस प्रकार जल्दी जल्दी भोजन करना ठीक है या नहीं। कैजिन्स्की इस प्रकार भोजन करनेको बहुत बुरा बतलाता है और कहता है कि यदि मनुष्यके पेटमें भोजन न हो और उस दशामें उसके पेड़ू पर भारी चोट लगे तो वह चोट विशेष सांघातिक नहीं होती। पर पेट भरे रहने पर ऐसी जो चोट लगती है, उससे मनुष्यकी प्रायः मृत्यु हो जाती है।

हम लोगोंके लिए ये सब वास्तवमें बहुत बड़ी समस्याएँ हैं, बहुत बड़े विचारणीय विषय हैं; और इसके अतिरिक्त वे हमारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए और कुछ हो ही नहीं सकते। यहाँ सब लोग सदा मृत्युके मुखमें ही रहते हैं। कोई यह नहीं कह सकता कि हम कब मर जायँगे। उस अवस्था में भी जीवन नितान्त सामान्य रूपसे चलता रहता है; पर साथ ही उसकी आवश्यकताएँ बहुत हो परिमित रहती हैं। नितान्त आवश्यक बातोंके अतिरिक्त और सभी बातें गाढ़ निद्रामें पड़ी रहती हैं। हम लोग ठीक उसी अवस्थामें रहते हैं जिस अवस्थामें मानव जाति आदिम कालमें रहती थी; और कदाचित् यही कारण है कि हम लोग किसी न किसी प्रकार जीवित बचे रहते हैं। यदि हम लोगोंमें समानता और आपसदारीका इतना अधिक भाव न होता तो अब तक हम या तो कभी के पागल हो गये होते या मर गये होते और या सेना छोड़कर भाग गये होते। जो लोग उत्तरी ध्रुवमें अनेक प्रकारके अनुसन्धान करने जाते हैं, उनका एक मात्र मुख्य उद्देश्य यही होता है कि जिस प्रकार हो, अपने जीवनको रक्षा की जाय। उनकी सारी शक्तियाँ केवल जीवन-रक्षाके उपायोंमें ही लगी रहती हैं। ठीक वही बात यहाँ भी है। यहाँ और सभी बातोंका विचार केवल इसलिए छोड़ देना पड़ता है कि जिसमें शक्तिका व्यर्थ क्षय न हो। यहाँ हम लोगोंके पास अपने प्राण बचानेका इसके सिवा और कोई उपाय ही नहीं है। जिस समय मुझे और कोई काम नहीं रहता और मैं शान्तिपूर्वक एकान्तमें बैठता हूँ, उस समय पिछले दिनोंका दृश्य मेरी आँखोंके सामने एक धुँधले शीशेकी तरह आ खड़ा होता है। जब उन पिछले दिनोंके साथ मैं अपने वर्त्तमान जीवन की तुलना करता हूँ, तब मैं अपने आपको बिलकुल अजनबीके रूपमें पाता हूँ; और तब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह सोच-सोचकर मुझे बहुत अधिक आश्चर्य होता है कि लोग जिसे जीवन कहते हैं, वह किस तरह परिस्थितिके अनुसार अपना रूप बदलकर उसके अनुरूप हो जाता है। यहाँ और सभी प्रकारकी अभिव्यक्तियाँ उसी प्रकार सोई रहती हैं, जिस प्रकार जाड़ेमें बहुत से जीव सोये रहते हैं; और जीवन सदा मृत्युकी आपत्तिसे बचनेकी ही चिन्तामें लगा रहता है। वह जीवन हम लोगोंको ऐसे पशुओंके रूपमें परिणत कर देता है जिनमें कुछ सोचने-समझनेकी शक्ति ही नहीं होती, और हममें पशुओंकी सी एक आन्तरिक वृत्ति या सहज स्वभाव उत्पन्न कर देता है। वह हमें बिलकुल बोदा और मूढ़ बना देता है जिसमें भीषण भय उपस्थित होने पर हमारा हृदय खंड खंड न हो जाय। यदि हमारी विचार-शक्ति ठीक तरहसे काम करती रहे तो अवश्य ही यहाँके भीषण संकटों के भयके बोझसे ही हम-लोग दबकर मर जायँ। इसी लिए यहाँ आने पर हमारी विचार-शक्तिका ही नाश हो जाता है। इसके बदलेमें हम लोगोंमें भाईचारे और सहयोगका बहुत प्रबल भाव जाग्रत हो जाता है जिसमें हमें अकेले होनेकी चिन्ता न खा जाय। इसीसे हम लोगोंमें जंगली जानवरोंकी सी उदासीनता आ जाती है। हर समय हमारा ध्यान केवल मुख्य तत्वकी ओर ही रहता है और उसीकी धारणा पुञ्जीभूत होकर हमें अभावात्मक विचारोंका सामना करनेके योग्य बनाती है। इस प्रकार हम लोग परम बद्ध, कठोर और कृत्रिमतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं और कदाचित् ही किसी घटनाका हम लोगों पर कोई प्रभाव पड़ता हो। पर हाँ उस समय अचानक हममें एक दुःखद और भीषण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लालसाकी ज्वाला उठ खड़ी होती है।

ऐसे अवसर बहुत ही भीषण होते हैं। उनसे सिद्ध होता है कि हम लोग ऐसी घनटाओंमें जो सामंजस्य स्थापित करते हैं, वह केवल कृत्रिम होता है; और जिसे हम सीधा-सादा आराम समझते हैं, वह असल में आराम पानेके लिए होनेवाला सबसे विकट प्रयत्न है। हमारे जीवनका बाहरी रूप बहुत कुछ जंगलियोंके जीवनके समान ही होता है। पर जंगलियों में और हममें एक अन्तर होता है। जंगली लोग सदा जंगली ही बने रहते हैं, क्योंकि वे वस्तुतः, स्वभावतः और जन्मसे ही जंगली होते हैं; और यदि वे अपनी आत्मिक शक्तियों पर कुछ जोर डालें, उनसे कुछ काम लेना सीखें तो वे सभ्य और सुसंस्कृत होकर अपना सुन्दर विकास कर सकते हैं। पर हम लोगोंकी दशा इसके बिलकुल विपरीत होती है। हम लोगोंकी आन्तरिक शक्तियाँ विकासकी ओर उन्मुख नहीं होतीं, बल्कि ह्रास या पतनकी ओर प्रवृत्त होती हैं। जंगली लोग स्वभावतः असभ्य और असंस्कृत होते हैं, पर हम लोगोंको बहुत अधिक प्रयत्न करके और केवल कृत्रिम रूपसे जंगली बनना पड़ता है।

रातके समय जब मनुष्य कोई स्वप्न देखकर चौंक उठता है और स्वप्नमें देखी हुई अनेक प्रकारकी विकराल आकृतियों को देखनेके कारण उसका चित्त चंचल और घबराया हुआ होता है, उस समय वह भयभीत होकर समझता है कि अन्धकारसे उसे अलग करनेवाली सीमा कितनी छोटी और संकुचित है। हम लोगोंकी स्थिति ऐसे छोटे छोटे दीपकोंके समान है जिनके चारों ओर टूटी-फूटी और गिरी-पड़ी दीवारें होती हैं और जिनके चारों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओर निर्वाण और उन्मादका अन्धड़ जोरोंसे चलता रहता है। उसी अन्धड़में ये दीप-शिखाएँ कंपित होती रहती हैं और कभी कभी तो बिलकुल बुझनेको ही हो जाती हैं। उस समय युद्धका भीषण नाद हम दीप-शिखाओंके लिए एक आवरणका काम देता है और हम लोग आँखें फाड़ फाड़कर रातके उस अन्धकारमें देखते हैं। उस समय हमारे सोये हुए साथियोंका लगातार चलनेवाला साँस ही हम लोगोंको बहुत कुछ सहारा देता है और हम लोग प्रभात होनेकी प्रतीक्षा करते रहते हैं।

× × × ×

प्रत्येक दिन और प्रत्येक घन्टा, प्रत्येक गोला और प्रत्येक मृत्यु हमारे इस क्षीण आधारको काटती रहती है और समय उसे जल्दी-जल्दी नष्ट करता रहता है। मुझे तो यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि किस प्रकार हमारा वह आधार टूट-टूटकर हमारे चारों ओर गिर रहा है।

जरा डेटेरिंगका पागलपन सुनिये।

डेटेरिंग उन लोगोंमें से था जिन्होंने युद्ध-क्षेत्रमें आकर भी अपना मनुष्यत्व नहीं खोया था। उसका दुर्भाग्य यही था कि उसने एक बाग में आलू-बालू (विलायती मकोय) का एक पेड़ देखा था। उस समय हम लोग युद्ध-क्षेत्रसे लौटकर अपने निवास-स्थानकी ओर आ रहे थे। सड़कके मोड़ पर प्रभातके सुन्दर प्रकाशमें वह वृक्ष हम लोगोंके सामने खड़ा था। उसमें पत्तियाँ नहीं थीं और वह कलियोंके एक सुन्दर स्वच्छ ढेरकी तरह दिखाई देता था।

सन्ध्याको डेटेरिंग हम लोगोंको कहीं दिखाई न दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत देर बाद जब वह लौटकर आया, तब उसके हाथमें उसी आलू-बालूकी कलियोंसे भरी हुई कुछ टहनियाँ थीं। हम लोग उसका मजाक उड़ाने लगे और उससे पूछने लगे कि क्या कहीं तुम्हारा व्याह पक्का हुआ है ? पर उसने हम लोगोंकी बातोंका कोई उत्तर न दिया और चुपचाप जाकर अपने बिस्तर पर पड़ रहा। रातके समय मुझे कुछ खड़बड़ सुनाई दी और मुझे ऐसा जान पड़ा कि वह अपना असबाब बाँध रहा है। मुझे दालमें कुछ काला दिखाई दिया, इसलिए मैं उठकर उसके पास गया। पूछने पर उसने कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया। इसलिए मैंने उससे कहा—देखो डेटेरिंग, तुम कोई पागलपनका काम न कर बैठना।

डेटे०—नहीं नहीं, और कुछ नहीं। मुझे यहाँ नींद नहीं आ रही है।

मैं—तुम आलू-बालूकी टहनियाँ क्यों ले आये थे ?

उसने बात बहलाते हुए कहा—यदि मेरे मनमें वे टहनियाँ चुननेकी इच्छा उत्पन्न हो तो मैं क्यों न उन्हें चुनूँ ? (कुछ ठहरकर) मेरे घर पर आलू-बालूके बहुत से पेड़ हैं। जब वे फूलते हैं, तब दूरसे सफेद चादरके समान दिखाई पड़ते हैं। आज ही कल तो उनके फूलनेका समय है।

मैं—सम्भवतः तुम्हें बहुत जल्दी घर जानेकी छुट्टी मिल जायगी और तुम फिर घर जाकर खेती-बारी करने लगोगे।

उसने सिर तो हिला दिया, पर उस समय वह कुछ और ही विचारोंमें मग्न था। जिस समय किसान लोग उत्तेजित हो जाते हैं, उस समय उनके चेहरे पर कुछ अद्भुत सा भाव आ जाता है। वह भाव मूढ़ता कौर निमग्नताका मिश्रण होता है। उसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विचार-शृंखला तोड़नेके लिए मैंने उससे रोटीका एक टुकड़ा माँगा। उसने बिना कुछ कहे-सुने मुझे थोड़ी सी रोटी दे दी। मैंने कई बार देखा कि वह खूब जोरसे अपनी मुट्ठी बाँधे हुए था; इसलिए मुझे मनमें बहुत सन्देह हुआ और मैं सोया नहीं, बल्कि जागता रहा। पर कोई विशेष बात नहीं हुई। सवेरे उठकर वह मामूली तौर पर अपने सब काम करता रहा।

ऐसा जान पड़ता था कि उसने समझ लिया है कि उस पर मेरी निगाह है और मैं उसके हर एक काम पर ध्यान रखता हूँ। पर दूसरे दिन सवेरे उसका कहीं पता न चला। वह गायब हो गया था। मैंने देख तो लिया कि वह अपने स्थान पर नहीं है, पर मैंने किसीसे इस बात का जिक्र नहीं किया। मैं जानता था कि जिक्र करते ही उसकी खोज मच जायगी; और मैं उसे निकल भागनेके लिए समय देना चाहता था। सम्भव था कि वह किसी प्रकार इस देशसे निकल जाय। इस तरह बहुत से लोग यहाँसे चोरीसे निकलकर हालैंड चले गये हैं।

हाजिरीके समय वह मौजूद नहीं था। कोई हफ्ते भर बाद हम लोगोंने सुना कि युद्ध-क्षेत्रकी सैनिक पुलिसने उसे गिरिफ्तार किया है। उसने भारी भूल यह की थी कि अपने घरकी ओर ही रुख किया था। साथ ही उसने कुछ और भी दो तीन बेवकूफियाँ की थीं। एक मामूली आदमी भी समझ सकता था कि घर पहुँचनेके लिए उसका जी बहुत घबरा गया था; पर उसकी वह घबराहट भी अधिक समय तक ठहरनेवाली नहीं थी। पर युद्ध-क्षेत्रसे सैकड़ों मील दूर और पीछे रहनेवाले सैनिक न्यायालयके अधिकारियोंकी समझमें यह बात कैसे आ सकती थी?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नतीजा यही हुआ कि तबसे आज तक फिर कभी डेटेरिंगके बारेमें हम लोगोंको कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

× × × ×

पर कभी-कभी इस प्रकारकी बातें कुछ और ही ढंगसे होती हैं। यहाँ उदाहरण स्वरूप यही बतला देना यथेष्ट होगा कि बरगर इस परिणाम तक कैसे पहुँचा था।

इधर कुछ दिनोंसे हमारी खाइयों की अवस्था बहुत ही खराब हो रही थी; यहाँ तक कि उनके धुर्रे उड़ गये थे। जहाँ शत्रुका कुछ अधिक जोर लगता था, वहींसे हमारी पंक्ति टूट जाती थी। इस प्रकार खाइयोंकी नियमित लड़ाईका एक प्रकारसे अन्त हो चुका था। आक्रमण और प्रत्याक्रमण होते थे जिससे हम लोगोंको आगे-पीछे हटते-बढ़ते रहना पड़ता था और हमारी पंक्ति टूटी रहती थी। उस समय बड़े बड़े गड्ढोंमें ही घुथकर भीषण लड़ाइयाँ होती थीं। सबसे अगली पंक्ति बिलकुल टूट गई थी और सब जगह छोटे छोटे दल जमकर लड़ने लगे थे। जमीनमें गोलोंकी बर्षाके कारण जो बड़े बड़े गड्ढे बन गये थे, उन्हींमें लड़ाइयाँ होने लगी थीं।

एक बार हम लोग एक ऐसे ही बड़े गड्ढेमें ठहरे हुए थे और हम पर अँगरेजोंका आक्रमण हो रहा था। वे लोग हमारे पार्श्वमें से आकर हमारे पीछेकी ओर पहुँच गये थे। हम लोग चारों ओरसे घिर गये थे। पर उस समय आत्म-समर्पण करना भी कुछ सहज काम नहीं था। हमारे चारों ओर कोहरा और धूआँ छाया हुआ था। हमारे शत्रुओंकी समझमें यह बात आ ही नहीं सकती थी कि हम लोग आत्म-समर्पण करना चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और शायद हम लोग आत्म-समर्पण करना भी नहीं चाहते थे, क्योंकि ऐसे अवसरों पर स्वयं अपनी ही समझमें नहीं आता कि हम लोग अभी थोड़ी देरमें क्या करेंगे। हाथसे फेंके जानेवाले गोलोंके धड़ाके बराबर हम लोगोंके पास आ रहे थे। हम लोगोंके सामने एक अर्द्ध वृत्तमें हमारी मशीन गनकी गोलियोंकी वर्षा हो रही थी। मशीन गनको ठंढा करनेवाला पानी सूख गया था। उसको ठंढा करनेके लिए पानीका काम पेशाबसे लिया जाने लगा था और इस प्रकार बहुत कठिनतासे हम लोग किसी तरह मशीन गन चलाये चलते थे। पर पीछेकी ओरसे आक्रमणकारी बराबर हम लोगोंकी ओर बढ़ते चले आ रहे थे।

अब ऐसा समय आ गया था कि कुछ ही मिनटोंमें हम शत्रुके हाथमें पड़ जायँगे।

ऐसे समय बहुत ही पाससे एक और मशीन गन चलने लगी। वह हमारे पासके ही एक गड्ढेमें खड़ी की गई थी। वह मशीन गन बरगर ही कहींसे ले आया था। पीछेकी ओरसे प्रत्याक्रमण होने लगा था। अब हम लोग स्वतन्त्र हो गये थे और पीछेकी ओर हमारे जो साथी थे, उनके साथ हमारा सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

उस समय हमारा स्थान अपेक्षाकृत कुछ अधिक रक्षित हो गया था। इतनेमें भोजन-सामग्री लानेवाले एक व्यक्तिने सूचना दी कि यहाँसे कोई दो तीन सौ गजकी दूरीपर समाचार लानेवाला एक कुत्ता घायल पड़ा हुआ है!

बरगरने पूछा—कहाँ?

उस आदमीने उस स्थानका ठीक पता बतला दिया। बरगर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस कुत्तेको लानेके लिए निकला। उसने यह भी सोचा था कि यदि वह कुत्ता लाया न जा सकेगा तो उसे वहीं गोली मारकर खतम कर दूँगा। यदि यही घटना आजसे छः मास पहले हुई होती तो बरगर अधिक समझदारीसे काम लेता और उस कुत्तेको लानेके लिए इतना चिन्तित न होता। पर इस समय की परिस्थिति ही कुछ ऐसी हो गई थी कि उसने अपने आप को जोखिममें डालकर भी यह काम कर ही डालना चाहा। हम लोगोंने उसे रोकना चाहा; पर वह किसी तरह न माना और वहाँसे चल ही दिया। उसके चलते समय हम लोगोंने उससे यही कहा कि तुम पागल हो गये हो। पागलपनकी इस प्रकारकी घटनाओंका परिणाम प्रायः बहुत ही भीषण हुआ करता है; और इनके प्रतिकारका एक मात्र उपाय यही है कि जिसे इस प्रकारका पागलपन सवार हो, उसे दो चार आदमी पकड़कर जमीन पर बैठ जायँ और किसी तरह वहाँसे जाने न दें। पर कठिनता तो यह थी कि बरगर छः फुट लम्बा जवान था और हमारे साथियों में सबसे अधिक बलवान था। उसे इस प्रकार रोक रखना भी कोई सहज काम नहीं था।

उसे गोलियोंकी वर्षाके बीचमें से होकर जाना था, इसलिए उसका यह काम और भी ज्यादा पागलपनका था। उसके इस पागलपनका प्रभाव और लोगों पर भी पड़ने लगा और वे वहाँ से निकल भागनेका प्रयत्न करने लगे। यहाँ तक कि एक आदमी ने तो हाथों, पैरों और दाँतोंसे जमीन खोदकर अपने आपको गड्ढेमें गाड़नेका भी प्रयत्न आरम्भ कर दिया।

यह ठीक है कि प्रायः इस प्रकारकी घटनाएँ किसी ओरसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तेजन मिलने पर ही होती हैं, परन्तु इस प्रकारके किसी बहाने पर ध्यान देना ही तो पागलपनका एक लक्षण है। जो बरगर एक कुत्तेको मारनेके लिए गया था, उसके पेडूमें बहुत बड़ा घाव लगा। इसके बाद जो आदमी उसे वहाँसे उठाकर लानेके लिए गया था, उसके पैरमें भी एक गोली लगी थी।

× × × ×

म्यूलरकी मृत्यु हो गई। किसीने बहुत पाससे उसके पेट पर गोली चलाई थी। गोली लगनेके बाद आध घन्टे तक वह जीता रहा और होशमें था। पर उसे पीड़ा बहुत अधिक हुई थी।

मरनेसे पहले उसने अपनी नोट बुक मेरे सपुर्द कर दी थी और अपने वे जूते भी मुझे दे दिये थे जो उसने किसी समय कैमेरिकसे पाये थे। मैंने वे जूते पहन लिये, क्योंकि वे मेरे पैरमें बहुत ठीक आते थे। मेरे बाद वे जूते जैडन को मिलेंगे, क्योंकि मैंने उसे वचन दे दिया है।

हम लोगोंने म्यूलरको किसी प्रकार कब्रमें गाड़ तो दिया है, पर यह आशा नहीं है कि कब्रमें भी वह अधिक समय तक शान्तिपूर्वक रह सकेगा। हम लोग बराबर पीछे की ओर हटते चले जा रहे हैं। अँगरेजों और अमेरिकनोंकी बहुत सी नई पलटनें हम लोगोंके सामने आ पहुँची हैं। उनके पास खाने-पीने का सामान भी बहुत अधिक है और बहुत सी नई तोपें भी हैं। साथ ही बहुत से नये हवाई जहाज भी हैं।

पर हम लोग बहुत ही अधिक शक्तिहीन हो गये हैं और भूखों मर रहे हैं। हम लोगोंको बहुत ही निकृष्ट भोजन मिलता है और उसमें इतनी ज्यादा रद्दी चीजें मिली रहती हैं जिनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खानेसे आदमी बीमार पड़ जाता है। जरमनीके कारखानेदार बहुत अमीर हो गये हैं और हम लोगोंको इतने अधिक दस्त आने लग गये हैं कि मानों हमारी आँतें ही गल गई हैं। पाखानोंके आस-पास हमेशा बहुत बड़ी भीड़ लगी रहती है। जरा एक बार हमारे देशके लोग आकर देखते कि हम लोग किस दुर्दशामें पड़े हुए हैं। सब लोग सूखकर काँटा हो गये हैं, सबके चेहरे पीले पड़ गये हैं, कमर झुक गई है, खूनके दस्त आ रहे हैं, पेटमें बेचैन करनेवाले मरोड़ होते हैं और इतने अधिक दस्त आते हैं कि लोग कहते हैं कि बार बार पाजामा ठीक करना व्यर्थ है, उसे खुला ही रहने देना चाहिए, क्योंकि आखिर दस पाँच मिनट में फिर भी दस्त मालूम होगा ही और फिर पाजामा खोलना पड़ेगा ही।

हम लोगोंका तोपखाना भी गोलेबारीसे बरबाद हो गया है। हमारे पास बहुत ही थोड़े गोले बच रहे हैं और हमारी तोपें इतनी खराब हो गई हैं कि उनके गोले ठीक निशाने पर लगते ही नहीं। प्रायः हमारे गोले हम्हीं लोगों पर गिरते हैं और शत्रुकी अपेक्षा हमारा ही अधिक नाश करते हैं। हम लोगोंके पास घोड़े भी बहुत ही कम रह गये हैं। हमारी सहायताके लिए जो नये सैनिक आये हैं, वे बिलकुल लड़के हैं और उनके बदनमें खूनका नाम नहीं है। वे एक छोटा सा बोझ भी नहीं उठा सकते। वे तो मरना जानते हैं। संख्यामें वे हजारों हैं, पर युद्ध आदिके सम्बन्धमें उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं है। उन्हें जहाँ भेज दो, वे वहीं चले जाते हैं और जाते ही गोलियों और गोलोंके शिकार हो जाते हैं। एक बार एक अकेले उड़ाकेने ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बालकोंकी दो कम्पनियोंको मजाक ही मजाकमें खतम कर डाला था। उन्हे रेल-गाड़ीसे उतरते देर भी नहीं हुई थी कि वे मार डाले गये। उन्हें तब तक यह भी ज्ञान नहीं हुआ था कि गोले-बारीके समय किस तरह आड़में छिपकर प्राण बचाने चाहिएँ।

यह सब दशा देखकर कैजिन्स्कीने मुझसे कहा—अब जरमनी बहुत जल्दी आदमियोंसे खाली हो जायगा।

अब हम लोगोंने यह आशा तो बिलकुल छोड़ ही दी है कि इस युद्धका कभी अन्त होगा। युद्धकी समाप्तिका तो हम लोगोंको कभी ध्यान ही नहीं आता। यहाँ आदमी गोली खाकर मर सकता है अथवा घायल हो सकता है और तब अस्पताल जा सकता है। वहाँ यदि उसका हाथ या पैर न काट डाला जाय तो कमसे कम वहाँका बड़ा डाक्टर, जिसकी छाती पर युद्ध सम्बन्धी सेवाओंका कोई पदक होता है, उससे कहता है—"यदि एक टाँग कट ही गई तो तुम्हारा क्या हर्ज हो जायगा? यदि तुम बच गये तो टाँग कट जाने पर फिर तुम्हें युद्ध-क्षेत्रमें लौटकर जाना नहीं पड़ेगा। तुम सेनासे अलग कर दिये जाओगे।" बस इसी प्रकारकी बातें समझाकर वहाँ उसका हाथ या पैर काट डाला जाता है।

कैजिन्स्की एक किस्सा कहा करता है जो सारे युद्ध-क्षेत्रमें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक बहुत प्रसिद्ध है। वह किस्सा एक डाक्टरका है। वह डाक्टर अस्पताल में अच्छे होनेवाले घायलोंकी सूचीमें से नाम पढ़ा करता था और बिना उन आदमियोंकी ओर देखे ही कह देता था कि यह आदमी युद्धके लिए उपयुक्त है, इसे युद्धमें भेज दो। वहाँ आदमियोंकी बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आवश्यकता है। एक बार उसके सामने एक ऐसा आदमी आया जिसका एक पैर कटा हुआ था और उसकी जगह लकड़ीका पैर लगा था। उसे भी बिना देखे ही डाक्टरने युद्धके उपयुक्त बतला दिया और युद्ध-क्षेत्रमें भेजनेकी आज्ञा दे दी। इस पर वह आदमी बोला—जी हाँ, मैं जरूर युद्धके-उपयुक्त हूँ, क्योंकि अभी तो मेरा एक ही पैर कटा है और उसकी जगह लकड़ीका पैर लगा है। पर फिर भी मैं युद्ध-क्षेत्रके लिए उपयुक्त हूँ। इस बार जब मैं युद्ध-क्षेत्रमें जाऊँगा, तब यदि वहाँ मेरा सिर कट गया तो मैं लकड़ीका सिर बनवाऊँगा, आपकी ही तरह बड़ा डाक्टर बनूँगा।

उस आदमीका यह उत्तर सुनकर हम लोग खूब हँसते हैं।

अच्छे डाक्टर भी हो सकते हैं और यहाँ बहुत से अच्छे डाक्टर हैं भी। पर फिर भी प्रत्येक सिपाहीका एक बार नहीं, सैकड़ों बार डाक्टरी मुआयना होता है; और किसी न किसी मुआयनेमें वह किसी ऐसे हजरत डाक्टरके पाले पड़ जाता है कि युद्धके लिए उपयुक्त न होने पर भी वह उपयुक्त ठहरा दिया जाता है और उसी दशा में उसे फिर युद्ध-क्षेत्रमें जाना पड़ता है।

इसी तरहके और भी बहुत से किस्से हैं जो इससे भी बढ़कर अद्भुत हैं। पर हाँ विद्रोह आदिसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारी सेनामें विद्रोह होनेकी जो अफवाहें उड़ती हैं, वे झूठी हैं। हमारी सेनामें झूठ, जालसाजी, अन्याय और कमीनापन जरूर ही बहुत ज्यादा होता है। इस लड़ाईमें जीत होनेकी किसीको कोई आशा नहीं रह गई है। सब लोग निराश और हतोत्साह होकर लड़ते हैं। हम लोग दिन पर दिन कमजोर होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाते हैं और पीछे हटते जाते हैं और उसी अवस्थामें हम लोगों पर बराबर आक्रमण भी होते रहते हैं। और यही क्या कम बुरा है ?

टैंक हम लोगोंके लिए बहुत ही भीषण हो गये हैं। उन्हें देखकर हम लोग जितने अधिक भयभीत होते हैं, उतने और किसी चीजसे भयभीत नहीं होते।

जो तोपें हम लोगों पर गोले चलाती हैं, उन्हें तो हम लोग देख नहीं सकते, क्योंकि वे तो हम लोगोंसे मीलों दूर आड़में होती हैं। शत्रुके जो पैदल सैनिक हम लोगों पर आक्रमण करते हैं, उनसे भी भयभीत होनेका कोई विशेष कारण नहीं है, क्योंकि आखिर वे भी हम्हीं लोगोंकी तरह आदमी हैं। पर इन टैंकोंको देखकर हम लोग बहुत घबरा जाते हैं। पहियों पर लुढ़कते हुए चलनेवाले ये बड़े-बड़े मकान न तो गड्ढा देखते हैं और न खाई। ऊँची-नीची जमीन एक ही तरहसे पार करते चलते हैं और इनमेंकी तोपें हम लोगों पर गोले बरसाती हैं। ये टैंक लोहेके बड़े-बड़े और विकराल जन्तु होते हैं जो मुरदों और घायलोंको भी नहीं छोड़ते। उन्हें देखते ही हम लोग काँपने लगते हैं उनके विकराल रूप और भारी बोझके सामने हमारे अस्त्र-शस्त्र तिनकोंकी तरह पिस जाते हैं और हाथसे फेंके जानेवाले गोलोंका भी उन पर कोई प्रभाव नहीं होता।

इसके अतिरिक्त और भी न जाने यहाँ कितनी तरहके ऐसे नये उपकरण बराबर आते रहते हैं, जो एक सिरेसे सर्वनाश ही करते चलते हैं।

साथ ही दस्त, पेचिश, इन्फ्लुएन्जा आदि अनेक भीषण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोग भी हैं जो इन्हीं उपकरणोंकी तरह एक सिरेसे सर्वनाश ही करते हैं। मानों चारों ओर मृत्यु और नाशका ही राज्य है।

हम लोगोंके लिए केवल तीन ठिकाने हैं—खाइयाँ, अस्पताल और कब्रें। इनके सिवा यहाँ किसीके लिए और चौथा कोई ठिकाना नहीं है।

× × × ×

एक आक्रमणमें हमारी कम्पनीका कमाण्डर बरटिन्क मारा गया। वह उन साहसी और योद्धा अफसरोंमें से था जो हर भारी लड़ाईमें सबसे आगे रहते हैं। हम लोगोंने प्रायः दो वर्ष तक उसकी अधीनतामें काम किया था और इस बीचमें वह एक बार भी घायल नहीं हुआ था। पर आखिरमें उसे कुछ तो होना ही था; इसलिए वह मारा ही गया।

हम लोग एक गड्ढेमें पहुँचकर लड़ रहे थे कि इतनेमें चारों ओरसे घिर गये। बारूदके धूएँके साथ पेट्रोलकी गन्ध चारों ओर भरी हुई थी। इतनेमें दो आदमी दिखाई दिये जो चारों ओर आगकी लपटें फेंकते चलते थे। उनमें से एकके सिर पर तो एक पीपा था और दूसरेके हाथमें उसका नल था। उस पीपेमें कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ भरे थे जो बाहर निकलते ही हवाके साथ मिलकर आगकी लपटें पैदा करते थे; और वे पदार्थ उसी नलके द्वारा बाहर निकलते थे। इस प्रकार वे दोनों जहाँ पहुँचते थे, वहाँ आगकी उन्हीं लपटोंसे हमारे सैनिकोंको जला डालते थे। वे हम लोगोंसे थोड़ी ही दूर पर थे। पर यदि वे जरा और पास आ जाते तो अवश्य ही हम सबका अन्त कर देते। उस समय हम लोग वहाँसे हटकर पीछे भी नहीं जा सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोग उन दोनों आदमियों पर गोलियाँ चलाने लगे। पर वे हम लोगोंके और पास आ पहुँचे और हम लोगोंको अपने सामने भीषण विपत्ति दिखाई दी। उस समय हमारा कमांडर बरटिन्क भी हम लोगोंके साथ ही उस गड्ढेमें था। जब उसने देखा कि हम लोग उन दोनों आदमियों पर ठीक तरहसे गोलियाँ नहीं चला सकते, क्योंकि शत्रुओंकी गोलियोंसे बचनेके लिए हमें काफी आड़में रहना पड़ता है, तब वह एक बन्दूक ले कर गड्ढेसे बाहर निकल पड़ा और बाहर खुली जमीन पर लेट-कर उन दोनों आदमियों पर निशाना साधने लगा। उसने गोली चलाई भी, पर इसी बीचमें एक गोली उसे भी आकर लगी, क्योंकि शत्रुओंने उसे देख लिया था। गोली लगने पर भी उसने उसी प्रकार जमीन पर पड़े-पड़े कई गोलियाँ चलाईं। पर अन्त में उसके हाथसे बन्दूक गिर पड़ी और वह फिर गड्ढेमें उतर आया। साथ ही उधर वह आदमी भी बरटिंककी गोलीसे गिर पड़ा जो सिरपर रासायनिक पदार्थोंका पीपा लिये हुए था। उसके पीपेसे जो आग निकली, उसीसे वह आदमी जल मरा।

बरटिन्ककी छातीमें घाव लगा था। थोड़ी देर बाद गोलेका एक टुकड़ा आकर उसे लगा जिससे उसकी ठुड्डी उड़ गई। बाद में वही टुकड़ा जाकर लीयरको लगा जिससे उसके चूतड़में भारी घाव हो गया। उसके घावसे बहुत तेजीके साथ खून बहने लगा और वह कोहनीके सहारे लेटकर कराहने लगा। उस समय उसके घावकी कोई मरहम-पट्टी भी नहीं हो सकती थी। उसकी अवस्था उस नलके समान हो रही थी जो बराबर खाली होता जा रहा था। कुछ ही मिनटोंके बाद वह मर गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(यदि वह स्कूलमें गणितमें सबसे तेज लड़का था तो इस समय उसका यह गुण उसके किस काम आ सकता था ?)

× × × ×

इसी प्रकार कई महीने बीत गये। सन् १९१८ की ग्रीष्म ऋतु बहुत ही भीषण सिद्ध हुई और उसमें बहुत अधिक रक्त-प्रवाह हुआ। हर तरफ कतले-आम मचा रहता था। हम सभी लोग यह बात बहुत अच्छी तरह समझ गये थे कि हम लोग लड़ाईमें हार रहे हैं। हम लोग बराबर पीछे हटते जा रहे थे और यह समझते थे कि अबकी हमपर जो भारी आक्रमण होगा, उसके बाद हम लोग किसी तरह आगे बढ़ने या प्रत्याक्रमण करनेके योग्य न रह जायँगे। अब हम लोगोंकी तरफ न तो आदमी ही रह गये थे और न गोला-बारूद ही।

लेकिन फिर भी लड़ाई जारी थी; मरनेका काम बराबर चला............।

१९१८ की ग्रीष्म ऋतुमें हम लोगोंके मनकी अवस्था भी बहुत कुछ बदल गई थी। अब हम लोगोंमें अपने प्राणोंका जितना अधिक मोह उत्पन्न हुआ था, उतना आज तक पहले कभी नहीं हुआ था। हमारे चारों तरफ चरागाहोंमें अनेक प्रकार के फूल फूले हुए थे, घासपर तितलियाँ उड़ती फिरती थीं, ठंढी और अँधेरी कोठरियोंमें भी सन्ध्याके समय काफी गरमी हो जाती थी, आकाशमें सुन्दर तारे छिटकते थे और उन्हींकी छाया में हम लोग सोते और तरह-तरहके स्वप्न देखते थे। पर साथ ही सब लोगोंको अपने-अपने प्राण बचानेकी चिन्ता लगी थी। हाय ! जीवन, तू भी कैसा प्यारा है !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९१८ की ग्रीष्म ऋतुमें हम लोगोंको अनेक प्रकारकी विपत्तियाँ सहनी पड़ी थीं और वे सब विपत्तियाँ हम लोगोंने शान्त होकर सही थीं। पर सबसे अधिक शान्ति-पूर्वक हम लोगोंने एक ही विपत्ति सही थी। वह विपत्ति और कुछ नहीं, युद्ध-क्षेत्रके लिए फिरसे प्रस्थान था। चारों ओर शान्ति और क्षणिक सन्धिके सम्बन्धमें तरह-तरहकी और बे-सिर-पैरकी अफवाहें उड़ती थीं जो हम लोगोंके दिलोंमें घर कर रही थीं। और इन्हीं अफवाहोंके कारण हम लोगोंको युद्ध-क्षेत्रकी ओर बढ़ना और भी अधिक कष्टकर प्रतीत होता था।

१९१८ की ग्रीष्म ऋतुमें हम लोगोंको जीवन जितना दूभर हुआ था और युद्धसे हमें जितना भय लगता था, उतना उससे पहले और कभी नहीं लगा था। जब शत्रुओंकी ओरसे गोलोंकी वर्षा होती थी, तब हम लोग जमीन पर लेट जाते थे, मुट्ठियोंसे कसकर जमीन को पकड़ लेते थे और केवल एक ही बातका ध्यान रखते थे। हम लोग मनमें यही कहते थे कि अब तो युद्धकी समाप्ति है। अब यह गोलेबारी क्यों होती है? अब तो इसे बन्द करो।

१९१८ की ग्रीष्म ऋतुमें हम लोगोंमें युद्धकी समाप्तिके सम्बन्धमें एक नई आशाका संचार हुआ था और सब लोग शान्तिके लिए परम अधीर हो रहे थे। साथ ही सबके मनमें घोर निराशा भी छाई हुई थी और मृत्युका भीषण आतंक भी छाया हुआ था। सब लोगोंके मनमें एक ही प्रश्न बना रहता था। अब ये लोग इस लड़ाईका अन्त क्यों नहीं करते? और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युद्धकी समाप्तिकी ये अफवाहें ठीक क्यों नहीं उतरतीं ?

× × × ×

यहाँ इतने ज्यादा उड़ाके हैं और उन्हें अपने आप पर इतना अधिक विश्वास है कि वे एक-एक आदमीको चुनकर इस तरह उसका पीछा करते है, जिस तरह शिकारके समय खरगोशका पीछा किया जाता है। जहाँ एक जरमन हवाई जहाज दिखाई देता है, वहाँ उसे नष्ट करनेके लिए अँगरेजों और अमेरिकनोंके पाँच पाँच और छः छः हवाई जहाज आ पहुँचते हैं। जहाँ एक भी भूखा-प्यासा और मारा-पीटा जरमन सिपाही दिखाई देता है, वहाँ उसकी हत्या करनेके लिए पाँच पाँच और छः छः मोटे-ताजे और हृष्ट-पुष्ट शत्रु आ पहुँचते हैं। जहाँ जरमनोंके लिए बड़ी रोटी होती है, वहाँ शत्रुओंके लिए गोश्तके पचास-पचास डिब्बे होते हैं। हम लोग युद्धमें परास्त नहीं हुए हैं, क्योंकि हम लोग शत्रुओंकी अपेक्षा अच्छे सैनिक हैं और हमारा अनुभव भी उनकी अपेक्षा कहीं अधिक है। पर शत्रुओंने बहुत अधिक संख्यामें पहुँचकर हम लोगोंको कुचल डाला है और पीछे हटा दिया है।

वर्षा होने लगी है। आकाशमें काले काले बादल छाये हैं, जमीन खूनसे काली हो गई है और काली मरी चारों ओर फैली हुई है। ज्यों ही हम जरा भी बाहर निकलते हैं, त्यों ही हमारे सब कपड़े वर्षाके जलसे भींग जाते हैं और हमें बराबर उसी तरह भींगे रहना पड़ता है। हमारे कपड़े और शरीर कभी सूखने ही नहीं पाते। जो लोग अभी तक बड़े बड़े बूट पहनते हैं, वे उनके ऊपरी भागमें इसलिए बालूकी थैलियाँ बाँध लेते हैं जिसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कीचड़ जल्दी उन बूटोंके अन्दर न घुसने पावे। हमारे सब सामान पानीसे तर हो गये हैं और जमीन भी बिलकुल तर हो गई है। उसमें जगह-जगह पानी, कीचड़ और खूनके गड्ढे बने हैं और उन्हीं गड्ढोंमें घायल, मुरदे और जीते बचे हुए आदमी सभी जल्दी-जल्दी समाये जाते हैं।

उसी अवसर पर हम पर गोलोंकी वर्षा होती है और सिपाही बच्चोंकी तरह रोते चिल्लाते हैं। दिन भर उसी तरह रोने-चिल्लाने और कराहनेके बाद अन्तमें वे लोग रातके समय तड़प-तड़पकर प्राण दे देते हैं। कोई उन्हें पानी देनेवाला भी नहीं—कोई उन्हें पूछनेवाला भी नहीं।

हम लोगोंके शरीर मिट्टी हो रहे हैं और आँखें आँसुओंकी तलैया हो रही हैं। अब तो हम लोगोंको यह भी पता नहीं है कि हम जीते हैं या मर गये।

जिस गड्ढेमें हम लोग थे, उसमें गरमी बहुत बढ़ गई और मारे उमसके हम लोगोंको बहुत कष्ट होने लगा। ग्रीष्म ऋतुके अन्तमें एक दिन सन्ध्या समय जब कैजिन्सकी भोजन ला रहा था, तब रास्तेमें गोली लगनेके कारण घायल हो गया। उस समय वहाँ केवल हम्हीं दो आदमी थे। गोली उसे घुटनेके नीचे आगेकी ओर नलीमें लगी थी। मैंने उसके घावपर पट्टी बाँधी। उसने बहुत दुःखी होकर कहा था—अन्तमें चलते-चलाते मुझे भी गोली लग ही गई।

मैंने उसे धैर्य दिलाते हुए कहा—कौन जानता है कि अभी यह लड़ाई कितने दिनों तक चलेगी! इससे कमसे कम इतना तो हुआ कि अब यहाँ रहनेसे तुम्हारी बचत हो गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके घावमेंसे बहुत ज्यादा खून बहने लगा। मैं चाहता था कि कहींसे जाकर उसके लिए एक स्ट्रेचर ले आऊँ, पर साथ ही मैं उसे यहाँ अकेला नहीं छोड़ सकता था। इसके सिवा मैं यह भी नहीं जानता था कि यहाँ आस-पासमें किस जगह स्ट्रेचर मिलते हैं।

कैजिन्सकीका शरीर कुछ अधिक भारी नहीं था, इसलिए मैंने उसे पीठ पर लाद लिया और उस स्थानकी ओर चला जहाँ घायलोंकी मरहम-पट्टी होती है।

रास्तेमें दो जगह बैठकर हम लोग सुस्ताये थे। पीठ पर लदकर चलनेमें कैजिन्सकीको बहुत कष्ट होता था। साथ ही घावमें बहुत पीड़ा भी हो रही थी। उस समय हम लोग आपसमें बहुत कम बोलते थे। मैंने अपने कोटका कालर खोल दिया था और मैं बहुत तेजीके साथ साँस ले रहा था। मैं पसीनेसे तर हो रहा था और मेरा चेहरा इतना परिश्रम करनेके कारण लाल हो गया था। पर साथ ही मैं उससे यह भी कहता था कि जैसे हो, यहाँसे जल्दी निकल चलना चाहिए, क्योंकि यहाँ ज्यादा ठहरना खतरेसे खाली नहीं है।

मेरे आग्रह करने पर वह फिर आगे चलनेके लिए तैयार हो गया। वह एक पेड़का सहारा लेकर अपनी अच्छी टाँग पर खड़ा हो गया। मैंने बहुत ही सावधानीसे उसका घायल पैर उठाया और तब वह उछलकर मेरी पीठपर आ गया। उसका अच्छा पैर भी मैंने बगलमें दबा लिया।

उस समय उसे उठाकर ले चलना मेरे लिए और भी कठिन हो रहा था। रास्तेमें हम लोगोंको प्रायः गोलोंका सर्राटा सुनाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पड़ता था। जहाँ तक तेजीके साथ हो सकता था, मैं पैर बढ़ाये चलता था; क्योंकि कैजिन्सकीके पैरसे खून बराबर जमीन पर टपक रहा था। जो गोले हमारे आस-पास आकर गिरते और फटते थे, उनसे अपने आपको बचाना हम लोगोंके लिए बहुत कठिन हो रहा था। पर जब तक हम लोग रक्षित स्थानमें पहुँचे, तब तक गोलेबारी खतम हो चुकी थी।

हम लोग एक छोटे गड्ढेमें इस आसरे बैठ गये कि जब गोलेबारी खतम हो, तब यहाँसे आगे बढ़ें। मेरे पास पानीवाली बोतलमें कुछ चाय थी जो मैंने कैजिन्सकीको पिलाई। इसके बाद हम लोगोंने एक सिगरेट पीया। मैंने बहुत ही दुःखी होकर कहा—देखो मित्र, अब आखिर हम लोगोंको एक दूसरेसे अलग होना ही पड़ेगा।

उसने मेरी बातका कोई उत्तर नहीं दिया और चुपचाप मेरी ओर देखता रहा।

मैं—तुम्हें याद है कि उस रोज रातको हम लोगोंने कितनी कठिनतासे वह हंस पाया था? और वह दिन याद है जब कि मैं पहली बार घायल हुआ था और तुम मुझे युद्ध-स्थलसे ले आये थे? उस समय मैं कितना रोता था! इस बातको करीब-करीब तीन बरस हो चुके।

उसने खाली सिर हिला दिया।

कैजिन्स्कीके भावी वियोगका विचार मुझे अभीसे दुःखी और चिन्तित करने लगा। मैं सोचने लगा कि जब कैजिन्सकी चला जायगा, तब यहाँ मेरा एक भी मित्र न रह जायगा।

मैं—यदि तुम्हारे अस्पतालसे लौटनेके पहले ही शान्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्थापित हो जाय तो भी जैसे होगा, हम लोग एक दूसरेसे अवश्य मिलेंगे।

उसने कुछ दुःखी होकर पूछा—क्या तुम यह समझते हो कि जब मैं अच्छा हो जाऊँगा, तब डाक्टर लोग मुझे फिर युद्ध के उपयुक्त बतलावेंगे ?

मैं—जहाँ तुमने कुछ दिन आराम किया, वहाँ तुम बहुत अच्छे हो जाओगे। तुम्हारे घुटनेका जोड़ तो बिलकुल ठीक है। तुम्हारा पैर फिर बिलकुल अच्छा हो जायगा।

कैजि०—अच्छा मुझे एक और सिगरेट दो।

मैं—सम्भव है कि हम लोग बादमें मिलकर कुछ और काम भी कर सकें।

यद्यपि उस समय मैं बहुत ही दुःखी हो रहा था, तो भी मैं सोचता था कि जो कैजिन्सकी मुझे संसारमें सबसे अधिक प्रिय है और जिसके साथ मैंने बड़ी-बड़ी विपत्तियोंमें भी बहुत आनन्द के साथ तीन बरस बिताये हैं, उस कैजिन्स्कीसे फिर मेरी भेंट न हो, यह असम्भव है।

मैं—भाई कैजिन्स्की, चाहे जो हो, पर तुम मुझे अपने घर का पता अवश्य लिखा दो; और यह लो मैं तुम्हें अपना पता भी लिखे देता हूँ।

मैंने अपना पता उसकी नोट बुकमें लिख दिया और उसका पता अपनी नोट बुकमें लिख लिया। यद्यपि वह इस समय मेरे पास ही बैठा हुआ था, तो भी मैं अभीसे अपने आपको अकेला समझ रहा था। कभी-कभी मैं यह भी सोचता था कि मैं खुद ही अपने पैरमें गोली मार लूँ जिससे मैं भी इसके साथ ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्पतालमें रहूँ और मुझे इससे अलग न होना पड़े ।

अचानक कैजिन्स्कीकी घबराहट बहुत बढ़ गई और उसका चेहरा पीला पड़ गया। वह बोला—चलो, हम लोग आगे चलें ।

मैंने फिर उसे उसी तरह पीठपर लाद लिया और आगे बढ़ने लगा। जहाँ तक होता था, मैं इस बातका पूरा ध्यान रखता था कि उसके घायल पैरमें किसी तरह झटका न लगने पावे ।

मेरा गला सूख गया था—और मुझे सब चीजें चक्कर खाती हुई दिखाई देती थीं। तो भी जैसे तैसे मैं उसे लेकर उस स्थान पर जा ही पहुँचा जहाँ घायलोंकी मरहम-पट्टी होती है ।

वहाँ पहुँचकर और कैजिन्सकीको पीठपरसे उतारकर मैं जमीनपर बेदम होकर बैठ गया। पर मुझसे बैठा नहीं रहा गया, इसलिए मैं जमीनपर लेट गया। थोड़ी ही देर बाद मैं फिर उठ बैठा। उस समय मेरे हाथ और पैर काँप रहे थे। फिर मैंने अपनी बोतलमेंसे निकालकर पानी पिया। पानी पीते समय मेरे होंठ भी काँप रहे थे। पर फिर भी मैं यह सोचकर प्रसन्न हो रहा था कि किसी प्रकार कैजिन्सकीके प्राण तो बचे ।

एक अरदलीने मुझसे कहा—तुमने फजूल ही इतनी तकलीफ की ।

उसकी बातका मतलब मेरी समझमें न आया और मैं उसकी ओर देखने लगा ।

वह फिर बोला—यह तो बिलकुल मुरदा है ।

मैं अब भी उसकी बातका मतलब न समझ सका। मैंने कहा—इसके पैरके नीचेवाले भागमें गोली लगी है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अरद०—खैर, देखा जायगा।

मैंने उसकी ओरसे मुँह फेर लिया। मेरी आँखें उस समय भी पथराई हुई थीं। मुझे फिर पसीना आ गया, यहाँ तक कि मेरी पलकोंके ऊपर भी पसीनेकी बूँदें जमा हो गईं। मैंने सिर और आँखों परका पसीना पोंछते हुए कैजिन्स्की की ओर देखा। वह जमीनपर चुपचाप पड़ा था। मैंने समझा कि वह बेहोश हो गया है।

अरदलीने धीरे से कहा—अजी मैं खूब अच्छी तरह समझता हूँ। वह मर गया है। अगर मेरी बात न मानो तो शर्त्त लगा लो।

मैंने सिर हिलाकर कहा—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अभी दस मिनट पहले तक वह मुझसे बातें कर रहा था। उसे खाली गश आ गया है।

कैजिन्स्कीके हाथ गरम थे। मैंने उसका सिर और कन्धे उठाकर अपनी एक बाँह पर रख लिये। मैं उसकी कनपटियों पर चाय मलना चाहता था। मुझे ऐसा जान पड़ा कि मेरी उँगलियाँ नम हो गई हैं। जब मैंने अपना हाथ उसके सिरके नीचेसे निकाला, तब मैंने देखा कि मेरी उँगलियोंमें खूब खून लगा हुआ है। अरदलीने फिर कहा—देखा ?

अब मेरी समझमें आया कि रास्तेमें फिर कहीं गोलेका कोई टुकड़ा कैजिन्स्कीके सिरमें भी लगा था जिसका मुझे पता भी नहीं चला था। उसके सिरमें पीछेकी ओर एक बहुत ही छोटा सा छेद हो गया था। कोई बहुत ही छोटा टुकड़ा आकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके सिरमें लगा था, पर उसकी जान लेनेके लिए वही काफी था। कैजिन्स्की सचमुच मर गया था।

मैं धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो गया।

जमादारने पूछा—क्या तुम इसकी तनख्वाहवाली किताब और सब चीजें ले जाओगे ?

मैंने सिर हिलाकर स्वीकृति सूचित की। उसने वे सब चीजें मुझे दे दीं।

अरदलीको कुछ आश्चर्य-सा हुआ। उसने मुझसे पूछा—क्या तुम इसके कोई रिश्तेदार हो ?

मैं—नहीं, मैं उसका कोई रिश्तेदार नहीं हूँ।

क्या मैं चल रहा हूँ ? क्या अभी तक मेरे पैर ज्योंके त्यों हैं ? मैंने आँखें ऊपर उठाईं। फिर मैं इधर-उधर देखनेका प्रयत्न करने लगा। मुझे ऐसा जान पड़ता था कि मेरे चारों ओर कोई बहुत बड़ा चक्कर है और मैं उसके ठीक बीचमें खड़ा हूँ। संसारकी और सभी बातें ज्योंकी त्यों थीं। केवल कैजिन्स्की मर गया था।

फिर मैं नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ।

बारहवाँ परिच्छेद

शरद् ऋतु आ गई है। अब मेरे पुराने साथियोंमेंसे एक भी नहीं बचा है। अपने दरजेसे हम लोग सात आदमी यहाँ आये थे और उनमें से एक मैं ही बच रहा हूँ।

सभी लोग शान्ति और क्षणिक सन्धिकी बातें करते हैं। सभी लोग प्रतीक्षामें हैं। अगर इस बार भी लड़ाई बन्द होनेकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफवाह ठीक न निकली तो लोग विद्रोही हो जायँगे। इस समय शान्तिके सम्बन्धमें लोगोंकी आशाएँ बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं; और यदि वे आशाएँ पूरी न हुई तो अवश्य ही भारी उपद्रव खड़ा होगा। यदि शान्ति न हुई तो क्रान्ति अवश्य होगी।

मेरे पेटमें कुछ गैस चली गई थी, इसलिए मुझे चौदह दिनका समय आराम करनेके लिए मिला है। मैं एक छोटे से बागमें दिन भर धूपमें बैठा रहता हूँ। अब मुझे भी यह विश्वास होने लग गया है कि शीघ्र ही क्षणिक सन्धि हो जायगी; और उसके बाद हम सब लोग घर चले जायँगे।

मेरे विचार यहीं आकर रुक जाते हैं; और आगे नहीं बढ़ते। अब मेरे मनमें केवल कोमल भाव उठते हैं। कभी अपने प्राणोंका मोह होता है, कभी घरकी याद आती है और कभी इन सब झंझटोंसे छुटकारा पानेकी इच्छा होती है। पर फिर भी मैं निरुद्देश्य हूँ—मुझे अपने सामने कोई उद्देश्य या आदर्श नहीं दिखाई देता।

यदि हम लोग सन् १९१६ में लौटकर अपने अपने घर चले गये होते तो अपनी कष्ट-सहिष्णुता और अनुभवके बल पर हम लोग बड़े-बड़े तूफानोंका बहुत सहजमें मुकाबला कर सकते। पर अब तो हम लोग थककर बिलकुल शिथिल हो गये हैं और हममें साहस या बलका नाम भी नहीं रह गया है। अब न हमारा कोई दृढ़ आधार है और न हममें किसी प्रकारकी आशा ही रह गई है। अब हम लोग बिलकुल मुरदोंके समान होकर घर पहुँचेंगे। अब हम लोग संसारमें कोई काम करनेके योग्य न रह जायँगे।

अब लोग न तो हमारी बातें ही समझ सकेंगे और न हमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कदर ही जानेंगे। जो पीढ़ी हम लोगोंसे पहले हो चुकी है, अर्थात् जो लोग अवस्थामें हमसे बड़े हैं, उनका पहलेसे घर भी मौजूद है और वे पहले कोई काम भी करते रहे हैं। यदि यहाँ उन्होंने हम लोगोंके साथ तीन-चार बरस बिताये हैं, तो भी उनकी कोई विशेष हानि नहीं हुई है। अब वे लोग घर जाते ही फिर अपने अपने काममें लग जायँगे और युद्धको बिलकुल भूल जायँगे। और जो पीढ़ी हम लोगोंके बाद पैदा हुई है, वह हम लोगोंके लिए बिलकुल नई होगी और हमें ढकेलकर अलग कर देगी। पर हम लोग तो स्वयँ अपने लिये भी फालतू होंगे। हम लोग भी बड़े अवश्य होंगे, पर फिर भी किसी कामके न रह जायँगे। हममेंसे कुछ लोग तो जैसे-तैसे किसी काममें लग जायँगे, पर अधिकांश लोग व्यर्थ इधर-उधर मारे मारे फिरेंगे। धीरे-धीरे समय बीतता जायगा और अन्तमें हम लोग बिलकुल चौपट हो जायँगे।

पर जो जो बातें इस समय मैं सोच रहा हूँ, वे शायद पागलपनकी और निराशा-पूर्ण हैं। बहुत सम्भव है कि मेरे ये सब विचार भी आगे चलकर धूलकी तरह उड़ जायँ। जिस समय मैं फिर जाकर बागमें अपने प्रिय वृक्षोंके नीचे बैठूँगा और उनकी पत्तियोंकी खड़खड़ाहट सुनूँगा, उस समय शायद मेरे भी ये विचार न रह जायँ और उनमें कोई बड़ा परिवर्त्तन हो जाय। आगे चल कर फिर बहुत सी नई नई बातें और नई-नई घटनाएँ होंगी, नये नये आदमियोंसे परिचय होगा, हम नये नये स्वप्न देखेंगे, पुस्तकोंमें नये नये विचार पढ़ेंगे, नई नई स्त्रियोंसे मिलकर प्रेमालाप करेंगे और इन सब बातोंके कारण हम फिर नष्ट हो जायँगे। ये सब बातें इस गोलेबारी और इस निराशासे नष्ट नहीं हो सकतीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहाँके वृक्षोंके पत्ते सुनहले और बहुत ही सुहावने जान पड़ते हैं। बेरके वृक्षोंमें पत्तियोंके बीचमें लाल-लाल बेर लगे हुए हैं। आस-पासके देहातोंकी सड़कें बहुत ही साफ सुथरी दिखाई पड़ती हैं। शराबखानोंमें रोज नई नई गप्पें सुनाई पड़ती हैं और तरह तरह की अफवाहें उड़ती हैं।

मैं उठकर खड़ा हो गया।

इस समय मैं बहुत शान्त हूँ। महीने और वर्ष आया करें, वे मुझसे कुछ ले नहीं सकते और न मेरा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं। मैं इतना अकेला हूँ और आशाओंसे इतना अधिक रहित हूँ कि मैं बिना किसी प्रकारके भयके भली भाँति उन सबका सामना कर सकता हूँ। जिस जीवनने मुझे इतने दिनों तक बड़े बड़े संकटोंसे बचाया है, वह अभी तक मेरे हाथों और नेत्रोंमें वर्त्तमान है। पर मैं यह नहीं जानता कि मैं अभी तक उसे अपने वशमें कर सका हूँ या नहीं। जो हो, जब तक वह जीवन मुझमें वर्त्तमान है, तब तक वह अपने लिए कोई न कोई मार्ग स्वयं ही और अवश्य ही निकाल लेगा। मेरे मनमें जो इच्छा शक्ति है, उसकी भी वह कोई परवाह न करेगा और अपना रास्ता आप ही बना लेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह अक्तूबर १९१८ में मारा गया था। जिस दिन वह मरा था, उस दिन सारे युद्ध-क्षेत्रमें बहुत अधिक शान्ति थी। इतनी अधिक शान्ति थी कि सेना-विभागने अपनी सारी रिपोर्ट केवल एक इसी वाक्यमें समाप्त कर दी थी—"पश्चिमी युद्ध-क्षेत्रमें पूर्ण शान्ति है।"

वह जमीन पर आगेकी ओर गिरा था; और ऐसा जान पड़ता था कि वह सोया हुआ है। किसीने उसे उलटकर देखा तो उसे ऐसा जान पड़ा कि उसने मरनेके पहले कुछ अधिक कष्ट नहीं उठाया था। उसके मुख पर बहुत अधिक शान्ति विराज रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस प्रकार मृत्युके आनेसे बहुत प्रसन्न था।

SPS
891.433 R 16 A
15232

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आँखों-देखा महायुद्ध

दूसरा खंड।

"आँखों-देखा महायुद्ध" वास्तव में इस या किसी दूसरी पुस्तक का नाम नहीं है, बल्कि एक प्रकार से इस पुस्तकमाला का ही नाम है। अँगरेजी में महायुद्ध से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से उपन्यास हैं और हमारा विचार है कि उनमें से बहुत अच्छे और चुने हुए उपन्यास इसी नाम से माला रूप में खंडशः प्रकाशित किये जायँ। फलतः इस माला का प्रत्येक खंड एक स्वतन्त्र उपन्यास होगा और इसके किसी दूसरे खंड के साथ उसका कोई सम्बन्ध न होगा। इस माला की दूसरी पुस्तक या दूसरा खण्ड भी प्रेस में भेजा जारहा है और आशा है कि आगामी अगस्त मास तक तैयार होजायगा। यह दूसरा खण्ड अमेरिका के सुप्रसिद्ध समाचार पत्र-प्रतिनिधि और उपन्यास-लेखक अरनेस्ट हेमिग्वे कृत A farewell to Arms नामक सुप्रसिद्ध उपन्यास का छायानुवाद है। यह उपन्यास अमेरिकन साहित्य का एक बहुत बड़ा रत्न समझा जाता है और आस्ट्रियन तथा इटैलियन युद्ध-क्षेत्रों से सम्बन्ध रखता है। इसमें युद्ध सम्बन्धी बातों के अतिरिक्त एक बहुत ही सुन्दर और मनोरंजक प्रेम-कथा भी सम्मिलित है: अतः युद्ध सम्बन्धी उपन्यासों में भी और साधारण प्रेम-सम्बन्धी उपन्यासों में भी यह प्रथम श्रेणी का उपन्यास माना गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग ५०० और मूल्य अनुमानतः ३)

देवेन्द्रचन्द्र विद्याभास्कर,

विद्याभास्कर बुक डिपो, काशी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE